कक्षा १०

मैथिली

नेपाल सरकार
शिक्षा, विज्ञान तथा प्रविधि मन्त्रालय
पाठ्यक्रम विकास केन्द्र
सानोठिमी, भक्तपुर

मैथिली

कक्षा १०

नेपाल सरकार
शिक्षा, विज्ञान तथा प्रविधि मन्त्रालय
पाठ्यक्रम विकास केन्द्र
सानोठिमी, भक्तपुर

प्रकाशक : नेपाल सरकार
शिक्षा, विज्ञान तथा प्रविधि मन्त्रालय
पाठ्यक्रम विकास केन्द्र
सानोठिमी, भक्तपुर

© सर्वाधिकार प्रकाशकमा

पाठ्यक्रम विकास केन्द्रको लिखित स्वीकृतिबिना यसको पुरै वा आंशिक भाग हुबहु प्रकाशन गर्न, परिवर्तन गरेर प्रकाशन गर्न, कुनै विद्युतीय साधनमा उतार्न वा अन्य रेकर्ड गर्न र प्रतिलिपि निकाल्न पाइने छैन । पाठ्यपुस्तक सम्बन्धमा सुझाव भएमा पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, समन्वय तथा प्रकाशन शाखामा पठाइदिनुहुन अनुरोध छ ।

पहिलो संस्करण : वि. सं. २०८०

हाम्रो भनाइ

विद्यालय तहको शिक्षालाई उद्देश्यमूलक, व्यावहारिक, समसामयिक र रोजगारमूलक बनाउन विभिन्न समयमा पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक विकास तथा परिमार्जन गर्ने कार्यलाई निरन्तरता दिइँदै आएको छ । विद्यार्थीमा राष्ट्र राष्ट्रियताप्रति एकताको भावना पैदा गराई नैतिकता, अनुशासन र स्वावलम्बन जस्ता सामाजिक एवम् चारित्रिक गुणका साथ आधारभूत भाषिक तथा गणितीय सिपको विकास गरी विज्ञान, सूचना प्रविधि, वातावरण र स्वास्थ्यसम्बन्धी आधारभूत ज्ञान र जीवनपयोगी सिपका माध्यमले कलासौन्दर्यप्रति अभिरुचि जगाउन, सिर्जनशील सिपको विकास गराउनु र विभिन्न जातजाति, लिङ्ग, धर्म, भाषा, संस्कृतिप्रति समभाव जगाई सामाजिक मूल्य र मान्यताप्रतिको सहयोगात्मक र जिम्मेवारीपूर्ण आचरण विकास गराउनु आजको आवश्यकता बनेको छ । यही आवश्यकता पूर्तिका लागि विद्यालय शिक्षाका लागि राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूप, २०७६ को सैद्धान्तिक मार्गदर्शनअनुसार मैथिली भाषाको यो नमुना पाठ्यपुस्तक विकास गरिएको हो ।

यस पाठ्यपुस्तकको लेखन तथा सम्पादन श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि र देवेन्द्र मिश्रबाट भएको हो । यसलाई यस रूपमा ल्याउने कार्यमा यस केन्द्रका महानिर्देशक डा. लेखनाथ पौडेल, प्रा.डा. दानराज रेग्मी, श्री अमृत योञ्जन-तामाङ, श्री जयप्रकाश श्रीवास्तव, श्री अम्बरजङ लिम्बू, श्री टुकराज अधिकारी र श्री इन्दु खनालको विशेष योगदान रहेको छ । यस पुस्तकको लेआउट डिजाइन श्री भक्तबहादुर कार्कीबाट भएको हो । उहाँहरूलगायत यसको विकासमा संलग्न सम्पूर्णप्रति केन्द्र हार्दिक कृतज्ञता प्रकट गर्दछ ।

पाठ्यपुस्तकलाई शिक्षण सिकाइको महत्त्वपूर्ण साधनका रूपमा लिइन्छ । अनुभवी शिक्षक र जिज्ञासु विद्यार्थीले पाठ्यक्रमद्वारा लक्षित सिकाइ उपलब्धिलाई विविध स्रोत र साधनको प्रयोग गरी अध्ययन अध्यापन गर्न सक्छन् । यस पाठ्यपुस्तकलाई सकेसम्म क्रियाकलापमुखी र रुचिकर बनाउने प्रयत्न गरिएको छ तथापि यसमा अझै भाषा प्रयोग, भाषाशैली, विषयवस्तु तथा प्रस्तुति र चित्राङ्कनका दृष्टिले कमीकमजोरी रहेको हुन सक्छन् । तिनको सुधारका लागि शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक, बुद्धिजीवी एवम् सम्पूर्ण पाठकहरूको समेत महत्त्वपूर्ण भूमिका रहने हुँदा सम्बद्ध सबैको रचनात्मक सुझावका लागि पाठ्यक्रम विकास केन्द्र हार्दिक अनुरोध गर्दछ ।

वि.स. २०८०

पाठ्यक्रम विकास केन्द्र

विषयसूची

पाठ	शीर्षक	पृष्ठ सङ्ख्या
पाठ : १ कविता	कर्त्तव्य	१
पाठ : २ पौराणिक कथा	नल-दमयन्ती	१३
पाठ ३ जीवनी	महाकवि विद्यापति	२५
पाठ : ४ प्राविधिक निबन्ध	कम्प्यूटर	४०
पाठ : ५ मनोवाद	यात्राक महत्त्व	५२
पाठ : ६	व्यावसायिक पत्र	६३
पाठ : ७ कविता	दिव्य भूमि मिथिला	७८
पाठ : ८ सामाजिक कथा	जनकाक सङ्कल्प	८७
पाठ : ९ सांस्कृतिक निबन्ध	नेपालक इन्द्रधनुषी संस्कृति	९८
पाठ : १० जीवनी	महान दार्शनिक प्लेटो	१०९
पाठ : ११ कथा	सुगरक बाप	१२०
पाठ : १२ सामाजिक निबन्ध	विदेहक नगरी	१२९
पाठ : १३	मिथिला-गान	१४६
पाठ : १४ एकाङ्की	कतेक जतनसँ	१५७
पाठ : १५ कथा	विघटन	१७५
पाठ : १६	तिरहुता	१८६

कर्त्तव्य

■ *सुन्दर झा 'शास्त्री'*

पाथरकेँ बरु चूड़ि खाएब, पर करब ने हम किछु चोरी ।
बाट पड़ल जँ स्वर्णकलश हो, तकरो लघु बुझि छोड़ी ॥
निम्नमुखी महिला सलज्ज हो, पुरुष उर्ध्वमुख चाही ।
पुरुष सिंह बनि मेटू श्रमसँ, तबधल पेटक धाही ॥

हाथ-पएरसँ काज लेब नहि, लोथ बनब सदिकाले ।
नाङड़-लुल्ह बनब से पाछु, काटत कर्मक व्याले ॥
परधन आ परदारक प्रति, लोभी बनिकऽ ललचाएब ।
अप्पन धन आ पत्नीकेँ, गुण्डासँ कोना बचाएब ?

दोसरक बेटी-पुतोहुपर, दऽ कुदृष्टि बनु कामी ।
अपना घरकेर नारीजन तँ, रहौ सती पतिगामी ॥
चाही निज-कल्याण सबहुँ यदि, रहू कुकर्मसँ दूरे ।
स्वाद पाएब आमक कहु कोना, रोपब गाछ बबूरे ॥

अपने रुचि अनुकूल सभक प्रति राखू सम व्यवहारे ।
आनक भूख मेटएबाहेतुक, त्यागू अपन अहारे ॥
काम, क्रोध, मद, लोभप्रभृति, षड्रिपुकेँ जँ द्रुत नाशी ।
भूपरहक ई नरक त्यागि सब, बनबै स्वर्गक वासी ॥

शब्दार्थ

स्वर्णकलश	= सोनाक घैल	लघु	= तुच्छ, छोट
निम्नमुखी	= निच्चामुहे	उर्ध्वमुख	= उपरमुहे
तबधल	= धधकैत	परदार	= दोसराक स्त्री
व्याले	= साँप	कुदृष्टि	= खराब नजरि
सम	= बराबरि	आहार	= भोजन
द्रूत	= अति शीघ्र	मद	= घमण्ड
प्रभृति	= जकाँ, सदृश	भूपरहक	= पृथ्वी परहक

षड्रिपु = छओगोट शत्रु (षड्रिपुमे छओगोट शत्रु अबैत अछि। ईसभ अछि– काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, मात्सर्य)

अभ्यास

श्रवण-शिल्प (सुननाइ)

१. कविताकेँ शिक्षकसँ सुनिकऽ गति, यति आ लय मिलाकऽ सस्वर वाचन करैत एक-दोसरकेँ सुनाउ।

२. कविताकेँ शिक्षकसँ सुनिकऽ निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर दिअ :

(क) बाटमे स्वर्णकलश भेटलापर की करबाक चाही ?

(ख) पेटक धाही कथीसँ मेटएबाक चाही ?

(ग) अपन कल्याण चाहनिहारकेँ कथीसँ दूर रहबाक चाही ?

(घ) आनक भूख मेटएबाक लेल की करबाक चाही ?

३. कविताकेँ फेरोसँ सुनिकऽ निम्नलिखित रिक्त स्थानकेँ उपयुक्त शब्दसँ भरू :

(क) महिलाकेँ ..... हेबाक चाही।

(ख) हाथ-पएरसँ काज नहि लेलापर ..... बनऽ पड़ि सकैछ।

(ग) दोसरक बेटी-पुतहुपर ..... नहि देबाक चाही।

(घ) बबूरक गाछ रोपलापर ..... क स्वाद कोनाकऽ भेटत ?

(ङ) अपने रुचि अनुसार दोसरक प्रति ..... व्यवहार रखबाक चाही।

कथन-शिल्प (बजनाइ)

४. कविताकेँ लयबद्ध रूपमे गाबिकऽ कक्षामे सुनाउ ।

५. कक्षाक सभ विद्यार्थी चारि समूहमे विभाजित भऽ प्रत्येक समूह एक-एकटा श्लोकक अर्थ कहू ।

६. 'कर्त्तव्य' शीर्षकक एहि कवितामे किएक एहन उपदेशसभ देल गेल अछि, अपन-अपन विचार प्रस्तुत करू ।

पठन-शिल्प (पढ़नाइ)

७. कविताकेँ सस्वर वाचन करू ।

८. कविताकेँ पढ़िकऽ निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर लिखू :

(क) कर्त्तव्य नामक कविताक रचयिता के छथि ?

(ख) कर्त्तव्य कविताक कविक मोताबिक महिला केहन होएबाक चाही ?

(ग) कर्त्तव्य कवितामे निकम्मा आदमीक तुलना कथीसँ कएल गेल अछि ?

(घ) कवि कामी पुरुष ककरा कहलनि अछि ?

(ङ) आनक भूख मेटएबाक हेतु की करऽ पड़त ?

९. समुचित उत्तरमे ठीक (√) चिह्न लगाउ :

(क) कोन वस्तुकेँ छोट बूझिकऽ छोड़ि देबाक चाही ?

☐ पाथर ☐ स्वर्ण

☐ कलश ☐ स्वर्णकलश

(ख) ककरा प्रति लोभी बनिकऽ नहि ललचएबाक चाही ?

☐ अपन धन ☐ दोसराक स्त्री

☐ अपन पत्नी ☐ पिताक घड़ी

(ग) हमरासभकेँ कथीसँ दूर रहबाक चाही ?

☐ काजसँ ☐ पढ़ाइसँ

☐ अपन घरसँ ☐ कुकर्मसँ

(घ) **हमरासभक जीवन कोन कारणसँ नारकीय बनल अछि ?**

☐ कामसँ ☐ क्रोधसँ

☐ लोभसँ ☐ उपर कहल गेल सभटासँ

लेखन-शिल्प (लिखनाइ)

१०. कविताक आधारपर निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर लिखू :

(क) लोभी बनलासँ की परिणाम भऽ सकैत अछि ?

(ख) "रोपब गाछ बबूरे"– ई कहबाक तात्पर्य की अछि ?

(ग) कवितामे "पुरुष सिंह" बनबाक लेल किएक कहल गेल अछि ?

(घ) एहि कवितामे मनुष्यक छओटा शत्रु ककरा कहल गेल अछि ?

(ङ) एहि कविताक कविक सम्बन्धमे किछु जानकारी खोजिकऽ लिखू । एकरा लेल इन्टरनेटक प्रयोग कएल जा सकैछ ।

११. निम्नलिखित पद्यांशक सप्रसङ्ग व्याख्या करू :

(क) पाथरकेँ बरु चूड़ि खाएब, पर करब ने हम किछु चोरी ।
बाट पड़ल जँ स्वर्णकलश हो, तकरो लघु बुझि छोड़ी ॥

(ख) काम, क्रोध, मद, लोभप्रभृति षड्रिपुकेँ जँ द्रुत नाशी ।
भूपरहक ई नरक त्यागि सब, बनबै स्वर्गक वासी ॥

१२. निम्नलिखित पद्यांशक भावार्थ लिखू :

चाही निज कल्याण सबहुँ यदि, रहू कुकर्मसँ दूरे ।
स्वाद पाएब आमक कहु कोना, रोपब गाछ बबूरे ॥

१३. 'कर्त्तव्य' कविताक शीर्षकक सार्थकता सिद्ध करू ।

१४. निम्नलिखित शब्दसभक अर्थ लिखैत अपन वाक्यमे प्रयोग करू :

निम्नमुखी, उर्ध्वमुख, परदार, कामी, कुकर्म, मद, षड्रिपु ।

सिर्जनात्मक अभ्यास

(क) कर्त्तव्य नामक कवितामे कवि कीसभ कहऽ चाहैत छथि, स्पष्ट करू ।

(ख) कवितामे कहल गेल ई कथन "निम्नमुखी महिला सलज्ज हो, पुरुष उर्ध्वमुख चाही" सँ अहाँ सहमत छी कि असहमत ? कारणसहित अपन विचार लिखू ।

(ग) कर्त्तव्य नामक कवितामे उपदेश कएलजकाँ अहाँ अपन समुदायक लेल उपयोगी नीतिगत उपदेशसभ गद्यात्मक अथवा कवितात्मक रूपमे लिखू ।

(घ) विद्यार्थीक कर्त्तव्य विषयपर लगभग १५० शब्दक एकटा निबन्ध लिखू ।

व्याकरण

१५. 'कर्त्तव्य' शीर्षक कवितामे रहल क्रियासभ खोजिकऽ उपयुक्त वर्तमानकाल आ भविष्यत कालक रूपावलीक आधारपर ओहि क्रियासभकेँ वाक्य बनाउ ।

जेना : क्रिया : खाएब

वाक्य : सन्दिग्ध पूर्ण भविष्यतकाल– हमसभ खएने रहब ।

१६. भूतकाल आ वर्तमान कालक विभिन्न पक्षक प्रयोग करैत गत वर्षक दशमी छुट्टीमे कएल गेल काजसभक विवरण लिखू । शुरू एना कएल जा सकैछ :

परुकाँ दशमी छुट्टीमे हम विभिन्न स्थानक भ्रमण कएलौँ । .....

१७. 'कर्त्तव्य' शीर्षक कवितामेसँ आ आनो-आन पाठसँ निच्चामे बुनका नहि लागल ड अथवा ढ आ बुनका लागल ड़ अथवा ढ़ रहल शब्दसभ खोजू आ एहिमे उच्चारणक की भेद अछि, बाजिकऽ पता लगाउ ।

ध्यान राखू : मैथिली भाषामे ढ आ निच्चामे बुनका लागल ढ़क उच्चारण अलग-अलग होइत अछि । ढ़क उच्चारण रह होइत अछि । जेना : बूढ़, लेढ़ल, टेढ़, सीढ़ी ।

एहि शब्दसभक उच्चारण बूढ, लेढल, टेढ, सीढी नहि करबाक चाही ।

बुनका नहि लागल ढक उच्चारण होइबला शब्दसभ : ढोल, ढेपा, ढील, आदि ।

तहिना ड आ बुनका लागल ड़क सम्बन्धमे सेहो इएह नियम लगैत अछि । जेना : सड़क, गड़कब, मोड़, गड़ल आदिमे डक निच्चा बुनका लागल अछि आ डमरू, डिबिया, डहकन, डर आदिमे बुनका नहि लागल अछि ।

द्रष्टव्य : उपर्युक्त उदाहरणसभसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे शब्दक प्रारम्भमे रहल ड अथवा ढ होइत अछि आ मध्य वा अन्तमे अधिकांशतः ड़ अथवा ढ़ होइत अछि ।

एहि तथ्यक आधारपर मैथिली पुस्तकमे रहल विभिन्न पाठसभमेसँ ड़ आ ढ़ लागल शब्दसभक खोज करू आ अभ्यास पुस्तिकामे लिखू ।

१८. निम्नलिखित अनुच्छेदमे उपयुक्त स्थानपर विराम चिह्न (पूर्णविराम, अल्पविराम, अर्द्धविराम, प्रश्नवाचक चिह्न, विस्मयादिबोधक चिह्न) लगाउ :

हम कहियो चोरी नहि करब लोकक वस्तुपर लोभ नहि करब एहन प्रतिज्ञा कएने छी की अहूँ एहन प्रतिज्ञा करब कवि सुन्दर झा शास्त्री कहैत छथि कल्याण जँ चाहैत छी तँ कुकर्मसँ दूर रहू अपने एकर अर्थ बुझलौं कि नहि अपन घरक स्त्रीगणक प्रतिष्ठा बचबऽ चाहैत छी तँ दोसरक बेटी-पुतहुपर खराब दृष्टि नहि रखबाक चाही बुझि गेलौं ने हेतै नमस्कार ।

भाषातत्त्व सम्बन्धी किछु विशेष जानकारी

निच्चा देल गेल भूतकालक विभिन्न पक्षक धातु रूपावलीक अध्ययन करू :

(क) सामान्य भूतकाल (दा धातु)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हम देलहुँ	हमरासभ देलहुँ
मध्यम पुरुष	तोँ देलह । अहाँ देलहुँ । अपने देलहुँ ।	तोँसभ देलह । अहाँसभ देलहुँ । अपनेलोकनि देलहुँ ।
अन्य पुरुष	ओ देलनि	ओलोकनि देलनि ।

(ख) अपूर्ण भूतकाल (दा धातु)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हम दैत छलहुँ । हम दऽ रहल छलहुँ (छलौं) ।	हमरालोकनि दैत छलहुँ । दऽ रहल छलहुँ ।
मध्यम पुरुष	तोँ दैत छलह । अहाँ दैत छलहुँ । अपने दैत छलहुँ ।	तोँसभ दैत छलह । अहाँसभ दैत छलहुँ । अपनेलोकनि दैत छलहुँ ।
अन्य पुरुष	ओ दैत छलाह । ओ दैत छलीह ।	ओलोकनि दैत छलाह । ओलोकनि दैत छलीह ।

(ग) पूर्ण भूतकाल (दा धातु)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हम देलहुँ / देने छलहुँ (छलौं)	हमसभ देलहुँ / देने छलहुँ ।
मध्यम पुरुष	तोँ देलह / देने छलह । अपने देलहुँ । दैत छलहुँ ।	तोँसभ देने छलह । अहाँसभ देने छलहुँ । अपनेलोकनि देने छलहुँ ।
अन्य पुरुष	ओ देलनि । ओ देलक ।	ओलोकनि देलनि ।

(घ) आसन्न भूतकाल (खा धातु)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हम जलखै खएने छी ।	हमसभ/हमरालोकनि जलखै खएने छी ।
मध्यम पुरुष	तोँ जलखै खएने छह । अहाँ जलखै खएने छी ।	तोँसभ जलखै खएने छह । अहाँसभ जलखै खएने छी । अपनेलोकनि जलखै खएने छी ।
अन्य पुरुष	ओ जलखै खएने अछि ।	ओसभ/ओलोकनि जलखै खएने छथि ।

(ङ) सन्दिग्ध भूतकाल (खा धातु)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हम खाइत रहितहुँ ।	हमसभ/हमरालोकनि खाइत रहितहुँ ।
मध्यम पुरुष	तोँ जलखै खाइत रहितह । अहाँ जलखै खाइत रहितहुँ ।	तोँसभ खाइत रहितह । अहाँसभ/अहाँलोकनि खाइत रहितहुँ ।
अन्य पुरुष	ओ जलखै खाइत रहितए ।	ओलोकनि जलखै खाइत रहितथि ।

(च) हेतुहेतमद् भूतकाल (खा धातु)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हम चाहितहुँ तँ खइतहुँ ।	हमरालोकनि खइतहुँ ।
मध्यम पुरुष	तोँ चाहितह तँ खइतह । तोँ चाहितहक तँ खइतहक ।	तोँसभ खइतह । अहाँसभ खइतहुँ । अपनेलोकनि खइतहुँ ।
अन्य पुरुष	ओ चाहैत तँ खाइत ।	ओलोकनि चाहितथि तँ खइतथि ।

उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष आ अन्य पुरुषक सर्वनामक सङ्ग क्रियापदक पदसङ्गति सम्बन्धमे निम्नलिखित तालिकाक अध्ययन करू :

वर्तमानकाल

पुरुष आ वचन	सर्वनाम	क्रियाक पदसङ्गति
उत्तम पुरुष : एकवचन	हम	सुतैत छी, खाइत छी, जाइत छी आदि
उत्तम पुरुष : बहुवचन	हम, हमसभ, हमरालोकनि	सुतैत छी, खाइत छी, जाइत छी आदि
मध्यम पुरुष : एकवचन	तोँ, तूँ	सुतैत छेँ, खाइत छेँ, जाइत छेँ आदि
	अहाँ, अहाँसभ, अपने	सुतैत छी, खाइत छी, जाइत छी आदि
अन्य पुरुष : एकवचन	ई, ओ	सुतैत अछि, खाइत अछि, जाइत अछि, जाइछ आदि
अन्य पुरुष : बहुवचन	ईसभ, ओसभ, अपनेलोकनि	सुतैत छथि, खाइत छथि, जाइत छथि आदि

भूतकाल

पुरुष आ वचन	सर्वनाम	क्रियाक पदसङ्गति
उत्तम पुरुष : एकवचन	हम	सुतलहुँ, सुतैत छलहुँ, खाइत छलहुँ, खएलहुँ आदि
उत्तम पुरुष : बहुवचन	हम, हमसभ, हमरालोकनि	सुतलहुँ, सुतैत छलहुँ, खाइत छलहुँ, खएलहुँ आदि

मध्यम पुरुष : एकवचन	तोँ, तूँ	सुतैत छलेँ, खाइत छलेँ, जाइत छलेँ, गेलेँ आदि
	अहाँ, अहाँसभ, अपने	सुतलहुँ, सुतैत छलहुँ, खाइत छलहुँ, खएलहुँ आदि
अन्य पुरुष : एकवचन	ई, ओ	सुतैत छल, सुतल, खएलक, खाइत छल आदि
अन्य पुरुष : बहुवचन	ईसभ, ओसभ, अपनेलोकनि	सुतैत छलाह, खाइत छलाह, जाइत छलथि आदि

भविष्यतकाल

पुरुष आ वचन	सर्वनाम	क्रियाक पदसङ्गति
उत्तम पुरुष : एकवचन	हम	सुतब, खाएब आदि
उत्तम पुरुष : बहुवचन	हम, हमसभ, हमरालोकनि	सुतब, खाएब, पढ़ब, लिखब आदि
मध्यम पुरुष : एकवचन	तोँ, तूँ	सुतबेँ, खएबेँ, पढ़बेँ, लिखबेँ आदि
	अहाँ, अहाँसभ, अपने	सुतब, खाएब, पढ़ब, लिखब आदि
अन्य पुरुष : एकवचन	ई, ओ	सुतत, खाएत, पढ़त, लिखत आदि
अन्य पुरुष : बहुवचन	ईसभ, ओसभ, ओलोकनि	सुततताह, लिखताह, पढ़ताह, खएताह आदि

१९. वर्तमान काल आ भविष्यतकालक निम्नलिखित धातु रूपावलीक अध्ययन करू आ एहने आओरो क्रियासभक रूपावली बनाउ ।

(क) सामान्य वर्तमानकाल (जा धातु)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हम जाइत छी / जाइछी ।	हमरालोकनि जाइत छी /जाइछी ।
मध्यम पुरुष	तोँ जाइत छह । तूँ जाइ छेँ । अहाँ जाइत छी ।	तोँसभ जाइत छह । अहाँसभ जाइत छी । अपनेलोकनि जाइत छी ।
अन्य पुरुष	ओ जाइत अछि ।	ओसभ/ओलोकनि जाइत छथि ।

(ख) तत्कालिक वर्तमानकाल (जा धातु)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हम जा रहल छी ।	हमरालोकनि जा रहल छी ।
मध्यम पुरुष	तोँ जा रहल छह । तूँ जा रहल छेँ । अहाँ जा रहल छी ।	तोँसभ जा रहल छह । अहाँसभ जा रहल छी । अपनेलोकनि जा रहल छी ।
।अन्य पुरुष	ओ जा रहल अछि । ओ जा रहल छथि ।	ओलोकनि जा रहल छथि ।

(घ) सन्दिग्ध वर्तमानकाल (जा धातु)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हम जाइत होएब ।	हमसभ जाइत होएब ।
मध्यम पुरुष	तोँ जाइत होएबह । अहाँ जाइत होएब । अपने जाइत होएब ।	तोँसभ जाइत होएबह । अहाँसभ जाइत होएब । अपनेलोकनि जाइत होएब ।
अन्य पुरुष	ओ जाइत रहत ।	ओलोकनि जाइत रहताह ।

(ङ) सामान्य भविष्यतकाल (जा धातु)

पा्रुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हम जाएब ।	हमरालोकनि जाएब ।
मध्यम पुरुष	तोँ जएबह । अहाँ जाएब ।	तोँसभ जएबह । अहाँसभ जाएब । अपनेलोकनि जाएब ।
अन्य पुरुष	ओ जएताह ।	ओलोकनि जएताह ।

(च) अपूर्ण भविष्यतकाल (जा धातु)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हम जाइत रहब ।	हमसभ जाइत रहब ।
मध्यम पुरुष	तोँ जाइत रहबह । अहाँ जाइत रहब । अपने जाइत रहब ।	तोँसभ जाइत रहबह । अहाँसभ जाइत रहब । अपनेलोकनि जाइत रहब ।
अन्य पुरुष	ओ जाइत रहताह ।	ओलोकनि जाइत रहताह ।

(च) सन्दिग्ध पूर्ण भविष्यतकाल (जा धातु)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हम गेल रहब ।	हमसभ गेल रहब ।
मध्यम पुरुष	तोँ गेल रहबह । अहाँ गेल रहब । अपने गेल रहब ।	तोँसभ गेल रहबह । अहाँसभ गेल रहब । अपनेलोकनि गेल रहब ।
अन्य पुरुष	ओ गेल रहत ।	ओलोकनि गेल रहताह ।

विराम चिह्न

सम्प्रेषणक लेल अन्य भाषाजकाँ मैथिलीमे सेहो अक्षरक अतिरिक्त चिह्नसभक प्रयोग होइत अछि। ई चिह्नसभ विराम चिह्न कहबैत अछि। मैथिली भाषाक लेखनमे प्रयुक्त मुख्य विराम चिह्नसभ आ ओकर प्रयोग निम्न प्रकारेँ देल गेल अछि :

(१) **अल्पविराम** (,)

थोड़ कालधरि ठहरबाक लेल अल्पविरामक प्रयोग कएल जाइत अछि। एकर प्रयोग निम्न स्थितिमे होइछ :

।क) एकेटा वाक्यमे दूसँ बेसी पद वा वाक्यांश अएलापर अन्तिम दू पद वा वाक्यांशकेँ छोड़ि सभक बीच अल्पविराम प्रयोग होइछ। जेना : महानन्द गरीब, इमानदार, बुद्धिमान आ परिश्रमी अछि।

(ख) सम्बोधनक पश्चात। जेना : हे भगवान, हमरा उद्धार करू।

(ग) उद्धरणक पूर्व। जेना : हरि कहलक, "हम आइ नहि जा सकब।"

(२) **अर्द्धविराम** (;) :

अनेको वाक्यसभकेँ एके वाक्यमे जोड़लापर प्रत्येक वाक्यक पश्चात अर्द्धविरामक प्रयोग होइछ। जेना : पानि नहि पड़ल; खेतीक काज बन्द भऽ गेल; घरमे अन्न नहि अछि; आब जिअब कोना ?

(३) **पूर्णविराम** (।) :

प्रत्येक वाक्यक अन्तमे पूर्णविरामक प्रयोग होइछ। जेना : हरि पढ़त। तत्पश्चात ओ घर जाएत।

(४) **प्रश्नवाचक** (?) :

प्रत्येक प्रश्नवाचक वाक्यक अन्तमे प्रश्नवाचक चिह्नक प्रयोग होइछ।

जेना : अहाँ की लेब ?

(५) **विस्मयादिबोधक** (!) :

हर्ष, विषाद, शोक, क्रोध आदि भावनाक अभिव्यक्ति जाहि पदमे भेल हो ओहि पदक पश्चात विस्मयादिबोधक चिह्नक प्रयोग होइछ ।

जेना : अहा ! ई कतेक रमणीय स्थान अछि ।

एहि चिह्नक प्रयोग कोनो व्यक्ति-विशेषकेँ सम्बोधन कएलापर सेहो होइछ । जेना : मोहन ! अहाँ ध्यानपूर्वक पढ़ू ।

(६) **सापेक्ष विराम** (: , –) :

कोनो सूची वा अर्थ स्पष्ट करबाक निर्देशन देलापर सापेक्ष विरामक प्रयोग होइछ । जेना : लिङ्गक भेद एहि रूपेँ अछि : स्त्रीलिङ्ग आ पुलिङ्ग । निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर दिअ :

(७) **उद्धरण** (" " , ' ') :

कोनो उक्तिकेँ जहिनाक तहिना रखलापर उद्धरण चिह्नक प्रयोग होइछ । जेना : "देसिल बयना सब जन मिट्ठा"– महाकवि विद्यापति

(८) **योजक** (-) :

दू वा दूसँ बेसी शब्दकेँ परस्पर मिलएबाक अथवा एके पदमे लिखबाक लेल योजक चिह्नक प्रयोग होइछ । जेना : मान-अपमान, प्रज्ञा-प्रतिष्ठान आदि ।

(९) **कोष्ठक** ( ) :

कोनो वाक्य अन्तर्गत कोनो पद-विशेषक अर्थ स्पष्ट करबाक वा क्रम जनएबाक लेल कोष्ठक चिह्न प्रयोग होइछ । जेना : दशरथ (अयोध्याक राजा) केँ चारि पुत्र भेलनि । (१), (२), (३), (४) आदि क्रम लिखबामे । मुदा आइकाल्हि अङ्कक आगू विन्दु देबाक सेहो प्रचलित अछि । जेना : १. २. ३. ४. आदि ।

(१०) **लाघव चिह्न** (.) :

कोनो शब्दकेँ संक्षिप्त रूपमे लिखबाक लेल लाघव चिह्नक प्रयोग होइछ । जेना : पं. (पण्डित), डा. (डाक्टर), प्रो. (प्रोफेसर) आदि ।

(११) **दीर्घताबोधक चिह्न** (' **अथवा** ऽ) :

कोनो शब्दक उच्चारणमे दीर्घता बोध करएबाक लेल जाहि चिह्नक प्रयोग कएल जाइछ तकरा दीर्घताबोधक कहल जाइत अछि । जेना : भानस भऽ गेल । हम अहाँकेँ पाइ द' देब ।

नल-दमयन्ती

■ *शशिनाथ ठाकुर*

निषध राज्यक राजा वीरसेनक पुत्र नल अत्यन्त रूपवान छलाह । बुझि पड़ैत छल जेना ब्रह्मा हुनका अलग ढङ्गक साँचमे गढ़ने होएथिन । हुनका देखितहिं देरी लोक ततेक ने मोहित भऽ जाइत छल जे सभ भूख-पिआस मेटा जाइत छलैक । एमहर विदर्भ राज्यमे भीम नामक एकटा पराक्रमी राजा छलाह । हुनका एकोटा सन्तान नहि छलनि । तेँ ओ अत्यन्त दुखी रहैत छलाह ।

एक दिनक बात अछि– दमन नामक एकटा ऋषि हुनक दरबारमे पहुँचलाह । राजा ऋषिक पूर्ण सत्कार कएलनि । एहिसँ प्रसन्न भऽकऽ ऋषि एक पुत्री तथा तीन पुत्र प्राप्त करबाक आशीर्वाद देलथिन । एहि आशीर्वादक परिणामस्वरूप रानीक गर्भसँ एक पुत्री आ तीन पुत्रक जन्म भेल । पुत्रीक नाम दमयन्ती तथा पुत्रक नाम क्रमशः दम, दान्त आ दमन राखल गेल । ओना सभ सन्तान तेजस्वी छलथिन, मुदा ओहूमे दमयन्तीक गुण अवर्णनीय छल । हुनक रूपक आगू रति सेहो लजा जाइत छलीह । रतिकेँ सभसँ बेसी रूपवती कहल जाइत छनि, जे कि कामदेवक पत्नी छथिन ।

युवावस्था प्राप्त कएलाक बाद नल आ दमयन्तीक सौन्दर्यक चर्चा सभतरि होबऽ लागल । लोकसभ नलक आगूमे दमयन्तीक चर्चा आ दमयन्तीक आगूमे नलक चर्चा करैत नहि अघाइत छल । तँ दुनूमे एक-दोसराक प्रति अनुराग उत्पन्न होएब स्वाभाविके छल । ई अनुराग दिनानुदिन बढ़िते गेल ।

एक दिनक बात अछि– नल अपना उपवनमे टहलि रहल छलाह । तखनहि एकटा हंस उड़ैत-उड़ैत ओहि उपवनमे पहुँचल । ओकर पाँखि सोनाक छलैक । राजा नल ओकरा पकड़बाक चेष्टा कएलनि । एहिपर हंस राजासँ बहुत अनुनय-विनय कएलक जे हमरा छोड़ि दिअ, हम राजकुमारी दमयन्तीक समक्ष अहाँक नीकजकाँ प्रशंसा करब, जाहिसँ ओ अहाँकेँ छोड़िकऽ दोसर ककरो अपना मोनमे नहि अनतीह । ई सुनि राजा नल हंसकेँ छोड़ि देलथिन ।

हंस उड़ैत-उड़ैत दमयन्तीक आगाँ पहुँचल । हंसक सुन्दरता देखि दमयन्ती सेहो ओकरा पकड़बाक प्रयास कएलनि । एहिपर हंस बाजल– "हे दमयन्ती, अहाँ हमरा पकडू नहि, हम नलक विषयमे एकटा महत्त्वपूर्ण बात कहि रहल छी– ओ अश्विनीकुमारजकाँ गुणी आ सुन्दर छथि । मनुष्यमे हुनकासँ बेसी सुन्दर आन केओ नहि अछि । अहाँ हुनका पतिक रूपमे वरण करू ।"

एमहर राजा भीम दमयन्तीक विवाहक हेतु स्वयंवर आयोजन कएलनि । देश-विदेशसँ राजालोकनि स्वयंवरमे पहुँचऽ लगलाह । इन्द्र, अग्नि, वरुण तथा यम सेहो आकाशमार्गसँ आबि रहल छलाह । मार्गमे राजा नलक भेँट हुनकालोकनिसँ भेलनि । ओसभ राजा नलसँ कहलथिन जे अहाँ हमरालोकनिक दूत बनिकऽ जाउ आ दमयन्तीकेँ कहबनि जे हमरालोकनिमेसँ ककरो वरण करथि । राजा नल कहलथिन जे हम हुनका समक्ष कोना पहुँचब ? ओहिठाम बहुत कड़ा पहरा रहैत छैक । एहिपर देवतालोकनि नलकेँ अदृश्य होएबाक वरदान देलथिन ।

राजा नल अदृश्य भऽकऽ राजकुमारी दमयन्तीक लग पहुँचलाह आ सभ बात दमयन्तीसँ कहलथिन । मुदा दमयन्ती कहलथिन जे ई बात सम्भव नहि भऽ सकैछ । कारण, हम पतिक रूपमे राजा नलकेँ वरण कऽ चुकल छी । एहिपर राजा नल मुग्ध भऽ गेलाह ।

स्वयंवर लागल छल । देवतालोकनि सेहो नलेक रूपमे स्वयंवरमे पहुँचलाह आ एमहर नल तँ छलाहे । एहना स्थितिमे पाँचटा नलकेँ देखि दमयन्ती किङ्कर्त्तव्यविमूढ़ भऽ गेलीह । ओ असली नल देखएबाक हेतु महादेवसँ प्रार्थना कएलनि । एहिपर असली नलक देहसँ घाम छुटऽ लगलनि आ पलक खसऽ लगलनि । तखन दमयन्ती असली नलक गरदनिमे वरमाला पहिराकऽ पतिक रूपमे हुनका वरण कएलनि ।

ई देखि कलियुगकेँ ईर्ष्या भेलैक । तँ ओ नलकेँ परेशान करबामे लागि गेल । एहना स्थितिमे नलक बुद्धि भ्रष्ट भऽ गेलनि । ओ अपन भाइ पुष्करसँ जुआमे सभ राजपाट हारि गेलाह । सङहि पुष्कर एहन चाण्डाल भाइ निकलल जे हुनका दमयन्तीसहित राज्य छोड़बाक हेतु बाध्य कऽ देलकनि । अतः ओ दमयन्तीक सङ्ग एमहर-ओमहर बौआए लगलाह ।

किछु दिनक बाद कलियुग हंसक रूप धारण कऽ नलक समक्ष पहुँचल । ओ अपन वस्त्र हंसपर धऽ देलनि । वस्त्र देहपर पहुँचैतदेरी कलियुग वस्त्र लऽकऽ उड़ि गेल । एहना स्थितिमे राजा नल नाङट भऽ गेलाह । तखन विवश भऽकऽ दमयन्तीक आधा आँचर फाड़िकऽ पहिरि लेलनि आ दमयन्तीकेँ सुतले छोड़ि विदा भऽ गेलाह । एमहर दमयन्ती उठलीह तँ नलकेँ नहि पाबि विचलित भऽ गेलीह । ओ नलकेँ एमहर-ओमहर ताकऽ लगलीह । तखनहि एकटा अजगर आएल आ दमयन्तीकेँ गीड़ऽ लागल । एहिपर दमयन्ती करुण-क्रन्दन करऽ लगलीह । हुनक करुण-क्रन्दन सुनिकऽ एकटा व्याधा आएल । ओ अजगरकेँ अपन शरसँ मारि देलक । अजगरकेँ मारलाक बाद ओ दमयन्तीक सङ्ग बलात्कार करऽ चाहलक । मुदा दमयन्तीक सतीत्वक प्रभावसँ ओ भष्म भऽ गेल ।

किछु कालधरि बौअएलाक बाद दमयन्ती एकटा महात्माकेँ देखलनि । हुनका ओ अपन पीड़ा सुनौलनि । ओ दमयन्तीकेँ पतिसँ भेँट होएबाक वरदान देलथिन । वरदान देलाक बाद महात्मा अलोपित भऽ गेलाह । दमयन्ती बौआइत-बौआइत चेदि-नरेशक दरबारमे पहुँचलीह । ओ अपन सभ परिचय आ व्यथा रानीसँ कहलथिन । हुनक वृत्तान्त सुनि रानी बहुत भावविह्वल भऽ गेलीह । कारण, दमयन्ती हुनक बहिनक बेटी छलीह । तेँ ओ नलकेँ खोजबाक हेतु जी-जानसँ प्रयास करऽ लगलीह ।

ओमहर नल जङ्गलमे बौआ रहल छलाह । तखनहि जङ्गलमे भयङ्कर आगि लागि गेल । आगिक बीचसँ 'बचाउ, बचाउ' शब्द आबि रहल छल । शब्द सुनि नल ओहिठाम पहुँचलाह । ओहिठाम ओ देखलनि जे एकटा नाग आगिमे फँसल अछि । नल विना अपन जानक परबाहि कएनहि आगिमे कुदि गेलाह आ नागकेँ बचा लेलथिन । मुदा प्राण-रक्षाक बदलामे नाग हुनका डसि लेलकनि । नागक विषसँ हुनक सम्पूर्ण शरीर कारी भऽ गेलनि । एहिपर नल विक्षुब्ध भऽकऽ नागकेँ पुछलथिन, "अहाँ हमर उपकारक बदलामे एना किएक कएलहुँ ?" तखन नाग बाजल, "हे राजा नल, हम कर्कोटक नाग छी । अहाँपर कलियुग सवार छल । तेँ हम अहाँकेँ डसि लेलहुँ । हमरा विषक प्रभावसँ कलियुग धीरे-धीरे भष्म भऽ जाएत आ अहाँ पुनः सभ किछु प्राप्त करब ।"

एकर बाद नल अयोध्याक राजा ऋतुपर्णक दरबारमे पहुँचलाह । ओ अपन नाम बदलिकऽ सहीसक काज करऽ लगलाह । किछु दिनक बाद राजा ऋतुपर्णकेँ ओ अश्वविद्या सिखा देलथिन । प्रत्युपकारमे राजा ऋतुपर्णसँ ओ द्यूतविद्या सिखलनि ।

एमहर विदर्भ-राजकेँ अपन बेटी भेटि गेल छलनि, मुदा जमाए नहि भेटल छलथिन । तेँ अपन जमाएक खोजमे सुदेव नामक ब्राह्मणकेँ पठौलनि । खोजक क्रममे सुदेव अयोध्या गेलाह । ओ जखन दरबारमे पहुँचलाह तँ देखैत छथि जे नल सहीसक काज कऽ रहल छथि । राजा नलकेँ एहन काज करैत देखि ब्राह्मण अत्यन्त दुखी भेलाह । ओ राजा ऋतुपर्णसँ सभ बात कहलथिन । ई सुनि राजा ऋतुपर्ण सेहो अत्यन्त दुखी भेलाह । ओ नलसँ क्षमा माङि हुनका आदरक सङ्ग विदा कएलनि ।

एकर बाद नल सासुर पहुँचलाह । ओहिठाम दमयन्ती हुनक प्रतीक्षामे व्यग्र छलथिन । दमयन्तीकेँ पाबि नल अन्यन्त हर्षित भेलाह । ओतबए हर्ष दमयन्तीकेँ सेहो भेलनि ।

सासुरमे किछु दिन रहलाक बाद राजा नल दमयन्तीक सङ्ग अपन राज्यमे पहुँचलाह । ओ जुआ खेलएबाक हेतु पुष्करकेँ ललकारलनि । नलक ललकार सुनि पुष्कर जुआ खेलएबाक हेतु तैयार भेल । द्यूतविद्यामे पारङ्गत भऽ गेलाक कारणे ओ पुष्करकेँ जुआमे हरा देलनि । हरौलाक बाद अपन गमाएल राज्य पुनः प्राप्त कएलनि । सङहि शत्रुवत व्यवहार कएलाक बादो ओ पुष्करकेँ क्षमा कऽ देलथिन ।

शब्दार्थ

रूपवान	= सुन्दर	पराक्रमी	= वीर
अवर्णनीय	= जकर वर्णन करब सम्भव नहि हो	रति	= कामदेवक पत्नी, अति सुन्दरी
अनुराग	= आकर्षण	अनुनय-विनय	= नेहोरा, हारि-गोहारि
अश्विनीकुमार	= सूर्यक पुत्र, अति सुन्दर	अदृश्य	= अलोपित, नहि देखाएब
वरण	= चयन, अवधारब	मुग्ध	= मोहित, दङ्ग
किङ्कर्त्तव्यविमूढ़	= असमञ्जसक अवस्था	ईर्ष्या	= डाह
विक्षुब्ध	= अशान्त, दुखी	विचलित	= चिन्तित, अस्थिर
अश्वविद्या	= घोड़चढ़ीक कला	प्रत्युपकार	= उपकारक बदला
करुण-क्रन्दन	= पीड़ासँ चिचिएनाइ	व्याधा	= शिकारी
शर	= तीर, वाण	द्यूतविद्या	= जुआ खेलएबाक कला
हर्षित	= खुशी	अलोपित	= अदृश्य, नहि देखाएब
ललकार	= चुनौती	भावविह्वल	= आकुल-व्याकुल

अभ्यास

श्रवण-शिल्प (सुननाइ)

१. **कथाक शुरुक चारिटा अनुच्छेद शिक्षकसँ सुनू आ निम्नलिखित वाक्यसभ ठीक वा गलत की अछि, छुटिआउ :**

(क) वीरसेन राजा नलक पुत्र छलाह ।

(ख) विदर्भ राज्यक राजा भीम ऋषिक आशीर्वादसँ पहिने सन्तानहीन छलाह ।

(ग) दमयन्ती राजा वीरसेनक पुत्री छलीह ।

(घ) राजा नल हंसकेँ पकड़िकऽ मारि देलनि ।

(ङ) नल आ दमयन्ती बिआहसँ पहिनहि एक-दोसरसँ प्रेम करऽ लागल छलथि ।

२. **कथाक कोनहुँ दूटा अनुच्छेद शिक्षकसँ सुनिकऽ श्रुतिलेखन करू ।**

३. **कथाक अन्तिम पाँचटा अनुच्छेद शिक्षकसँ सुनिकऽ निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर कहू :**

(क) नल किएक आगि लागल स्थानपर पहुँचलाह ?

(ख) आगिमे जरबासँ बचाओल गेल नागक नाम की छल ?

(ग) राजा ऋतुपर्णसँ नल कोन विद्या सिखलनि ?

(घ) राजा नलकेँ अयोध्याक दरबारमे देखि ब्राह्मण किएक दुःखी भेलाह ?

४. **नल दमयन्ती कथा सुनिकऽ एहि कथाक मुख्य घटनासभ बिन्दुगत रूपेँ कहू ।**

कथन-शिल्प (बजनाइ)

५. **निम्नलिखित शब्दसभक शुद्ध-शुद्ध उच्चारण करू :**

अवर्णनीय, अदृश्य, करुण-क्रन्दन, प्रत्युपकार, द्यूतविद्या, विक्षुब्ध ।

६. **'नल-दमयन्ती' कथाक शीर्षक कतेक सार्थक अछि, विचार-विमर्श करू ।**

७. **अहाँकेँ सुनल-जानल कोनो पौराणिक कथा सिलसिला मिलाकऽ कक्षामे सुनाउ ।**

पठन-शिल्प (पढ़नाइ)

८. एक गोटे पहिल अनुच्छेद, दोसर गोटे दोसर अनुच्छेद आ एहिना सभटा अनुच्छेद बेरा-बेरी सस्वर पढ़ू ।

९. कथाक आधारपर निम्नलिखित कथन के ककरा कहलक अछि, कापीमे लिखू :

(क) हम राजकुमारी दमयन्तीक समक्ष अहाँक नीकजकाँ प्रशंसा करब ।

(ख) अहाँ हमरालोकनिक दूत बनिकऽ जाउ ।

(ग) बचाउ, बचाउ ।

(घ) अहाँपर कलियुग सवार छल ।

(ङ) अहाँ हमरा पकड़ू नहि ।

१०. निम्नलिखित प्रश्नसभक एक-एक वाक्यमे उत्तर दिअ :

(क) नल किनक पुत्र छलाह ?

(ख) भीम कोन देशक राजा छलाह ?

(ग) सन्तान प्राप्तिक आशीर्वाद भीमकेँ के देलकनि ?

(घ) देश-विदेशक राजासभ विदर्भ राज्य किएक जाइत छलाह ?

(ङ) स्वयंवरसँ पूर्व दमयन्ती नलकेँ की कहलथिन ?

(च) दमयन्ती असली नलकेँ कोना चिन्हलनि ?

(छ) व्याधा किएक भष्म भऽ गेल ?

(ज) दमयन्तीक बात सुनिकऽ रानी किएक भावविह्वल भऽ गेलीह ?

(झ) सुदेवक दुखी होएबाक कारण की छल ?

(ञ) नलक ललकार सुनि पुष्कर की कएलक ?

११. ठीकमे (✓) आ गलतमे (✗) चिह्न लगाउ

(क) रानीक गर्भसँ चारि पुत्र जन्म लेलक । ( )

(ख) नल-दमयन्तीक बीच एक-दोसराक प्रति अनुराग बढ़िते गेल । ( )

(ग) हंसक बात सुनि नल ओकरा पकड़ि लेलथिन । ( )

(घ) दमयन्तीसँ हंस कहलकनि जे नल बहुत कुरूप छथि । ( )

(ङ) असली नलक देहसँ घाम छुटऽ लगलनि । ( )

(च) नलक देहपर कलियुग सवार छलनि । ( )

(छ) वरदान देलाक बाद महात्मा अलोपित भऽ गेलाह । ( )

(ज) कर्कोटक नागक कटलासँ नलकेँ फायदा भेलनि । ( )

(झ) शत्रुवत व्यवहारक कारणे नल पुष्करकेँ दण्ड देलथिन । ( )

१२. कथाक आधारपर निम्नलिखित घटनासभकेँ क्रम मिलाकऽ लिखू :

(क) राजा नल अपन गमाएल राज्य पुनः प्राप्त कएलनि ।

(ख) नल राजा भीमक पुत्री दमयन्तीसँ प्रेम करैत छलाह ।

(ग) हुनकर बिआह दमयन्तीसँ भेलनि ।

(घ) राजा नल रूपवान आ गुणवान छलाह ।

(ङ) नल विदर्भ राज्यक राजा छलाह ।

(च) राजा नल राजा वीरसेनक पुत्र छलाह ।

(छ) नल भेष बदलिकऽ दमयन्ती लग गेलाह ।

लेखन-शिल्प (लिखनाइ)

१३. निम्नाङ्कित प्रश्नसभक संक्षिप्त उत्तर लिखू :

(क) हंस नलक हाथसँ कोना मुक्त भेल ?

(ख) दमयन्ती किएक किङ्कर्त्तव्यविमूढ़ भऽ गेलीह ?

(ग) कर्कोटक नलकेँ की कहलकनि ?

(घ) विदर्भक राजाकेँ जमाए कोना भेटलथिन ?

(ङ) राजा ऋतुपर्णक दरबारमे नल की करैत छलाह ?

(च) राजासँ द्युतविद्या सिखलासँ नलकेँ की लाभ भेलनि ?

१४. निम्नलिखित शब्दसभकेँ वाक्यमे प्रयोग करू :

वरण, ईर्ष्या, बाध्य, विचलित, आशीर्वाद, भष्म, रूपवान, अनुराग ।

१५ निम्नलिखित वाक्यकेँ शुद्ध कऽ लिखू :

औमहर नल जङ्गल मे बौबा रहल छलीह । तखनही ओत आगी लागी गेलाह ।

१६ विवेचनात्मक उत्तर दिअ :

(क) राजा नलकेँ कलियुग कोन-कोन कष्ट देलकनि ?

(ख) नल-दमयन्ती कथासँ अहाँकेँ की शिक्षा भेटैत अछि ?

सृजनात्मक अभ्यास

(क) अहाँकेँ सुनल वा बुझल कोनो धार्मिक वा पौराणिक कथा करीब २०० शब्दमे लिखू ।

वर्णविन्यास

१७. कक्षा ९ मे उल्लेख कएल जा चुकल छल जे शब्दक अन्तमे जँ ह्रस्व इ (ि) अथवा ह्रस्व उ क मात्रा (ु) अछि तँ ओहि मात्राक उच्चारण अन्तिम अक्षरसँ पहिनहि करऽ पड़ैत छैक । जेना :

लिखाइमे	उच्चारणमे
छथि	छइथ
पलखति	पलखइत
मानि	माइन
लागनि	लागइन
भालु	भाउल
मासु	माउस
सासु	साउस
धनुषा	धउनषा

(क) कथामे रहल निम्नलिखित शब्दसभक उच्चारण करू :

बुझि, कएलनि, सभतरि, टहलि, कहि, एहि, गरदनि, सिखलनि ।

(ख) आब एहेन उच्चारण रहल अधिकसँ अधिक शब्दसभ पाठसँ सङ्कलित कऽकऽ लिखू ।

व्याकरण

१८. (क) एहि पाठमेसँ वा आनहुँ कोनहुँ पाठसँ उपसर्ग वा प्रत्यय लागल क्रियापदसभ चुनिकऽ ओकरासभकेँ "विशेषण/नाम ं प्रत्यय" वा "उपसर्ग ं नाम/विशेषण" क स्वरूपमे राखू । जेना ः

उदाहरण ः जड़ि (नामं आएब (प्रत्यय) = जड़िआएब ।

१९. (क) मूल धातु आ नाम धातुमे की अन्तर अछि, कक्षामे विचार-विमर्श करू आ कोनहुँ दशटा नामधातु खोजिकऽ लिखू ।

२०. धातुसँ कोनो क्रिया बुझल जाइत अछि । से क्रिया कोनो व्यक्तिक व्यापारसँ (मानसिक वा शारीरिक) सिद्ध होइत अछि । काज कएनिहार प्रायः स्वयं अपनहि काज करैत अछि, मुदा जँ से नहि भऽ कर्ता अनकासँ काज करबैत अछि तँ क्रियाक एहि रूपकेँ प्रेरणार्थक क्रिया कहल जाइत अछि । जेना ः

चौधरीजी गाछ कटबएलथि ।

एहिठाम **कटबएलथि** प्रेरणार्थक क्रिया अछि, किएक तँ चौधरीजी अपनहि स्वयं गाछ नहि काटि दोसरासँ काज करओने छथि । **काट** धातुक क्रिया **काटब** आ तकर प्रेरणार्थक क्रिया थिक **कटबाएब** ।

तहिना, **लिख** धातुक क्रिया थिक **लिखब** आ तकर प्रेरणार्थक क्रिया अछि **लिखाएब** वा **लिखबाएब** आदि ।

प्रश्न ः निम्नलिखित धातुसभकेँ क्रिया आ प्रेरणार्थक क्रियामे रूपान्तरित करू ः

धातु	क्रिया	प्रेरणार्थक क्रिया
लिख	लिखब	लिखाएब, लिखबाएब
सुत		
घुम		
पढ़		
खा		
दौड़		
रोप		
पिट		

द्रष्टव्य ः एहने आओरो धातुसभ खोजिकऽ क्रिया आ प्रेरणार्थक क्रिया बनाउ ।

२१. आइ, काल्हि, परसू, हरदम, पाछु, पाछाँ, लग, दूर, चुपेचाप, नहि, हँ, प्रायः, भरिसक आदि शब्दसभ निपात कहबैत अछि ।

प्रस्तुत कथामे रहल एहन निपातसभ खोजिकऽ लिखू आ तकरा वाक्यमे प्रयोग करू ।

२२. एहन शब्द जे विस्मय, हर्ष, आश्चर्य आदि आन्तरिक भावक उद्रेकमे मुहसँ बहराए ओहि मनोभावकेँ व्यञ्जित करैत अछि, से विस्मयादिबोधक शब्द वा अन्तर्व्यञ्जक कहबैत अछि । जेना :

छी छी, ई की कएलहुँ यौ ? मरतोरी, तोहूँ चल एलेँ ?

एहि वाक्यसभमे "छी छी, मरतोरी" विस्मयादिबोधक शब्द थिक ।

अहाँक दैनिक प्रयोगमे आबऽ वला एहन विस्मयादिबोधक शब्दसभ कमसँ कम बीसटा खोजिकऽ लिखू आ तकरासभकेँ वाक्यमे सेहो प्रयोग करू ।

भाषातत्त्व सम्बन्धी किछु जानकारी

सामान्य धातु आ नामधातु

कोनहुँ उपसर्ग अथवा प्रत्यय लगाएल क्रियाक जे मूल स्वरूप होइत अछि, तकरा मूल धातु वा सामान्य धातु कहल जाइत अछि । जेना

खा, सुत, लिख, नाच, गा, पढ़, घुम, चल आदि ।

मुदा संज्ञा वा विशेषणक आगाँ "आएब" वा "ऐब" प्रत्यय लगाकऽ जे क्रिया बनाएल जाइछ, तकरा नामधातु कहल जाइत अछि । जेना :

अकछ (संज्ञा) + आएब (प्रत्यय) + अकछाएब (नामधातु)

आसकति (संज्ञा) + आएब (प्रत्यय) + असकताएब (नामधातु)

जड़ि (संज्ञा) + आएब (प्रत्यय) + जड़िआएब (नामधातु)

दनदन (विशेषण) + आएब (प्रत्यय) + दनदनाएब (नामधातु)

सोझ (विशेषण) + आएब(प्रत्यय) + सोझिआएब / सोझराएब (नामधातु)

निपात

भाषाक मुख्य उपादान नाम ओ आख्यात (समापी आ असमापी क्रिया) सँ भिन्न शब्द जकर लिङ्ग, वचन वा पुरुषक आधारपर रूप नहि बदलैत अछि, से निपात कहबैछ ।

जेना : ओ **नहुँ नहुँ** चलि रहल अछि । हम **भरि दिन** भुखले रहि गेलहुँ । गाछक **निच्चा** बैसू ने ।

एहि वाक्यसभमे "नहुँ नहुँ, भरि दिन, निच्चा" निपात थिक ।

निपातकेँ दू श्रेणीमे राखल जा सकैछ :

(१) अन्वित निपात आ (२) अवधारक वा स्वच्छन्द निपात

(१) **जे निपात कोनहु क्रियाक काल, स्थान, रीति, आवृत्ति, विधि निषेध, अनिश्चय आदिक बोध करबैछ, से अन्वित निपात थिक । जेना :**

(क) कालवाचक : आइ, काल्हि, परसू, तेसुरकाँ, पहिने, नित, सबेरे, अनगुतिए, दिनराति, हरदम, अनुखन, दिनानुदिन, तुरन्त, लगले, भिनसर, बेरखन आदि ।

(ख) स्थानवाचक : पाछु, आगाँ, आगु, पाछाँ, उपर, निच्चा, लग, दूर, बाहर, भीतर, कात आदि ।

(ग) रीतिवाचक : नहुँ-नहुँ, झट, भलेँ, सहे-सहे, चुपेचाप, एकटक, लगातार, निधोख, कने-कने आदि ।

(घ) आवृत्तिवाचक : बेरि बेरि, बरमहला, खुचुर खुचुर आदि

(ङ) विधिनिषेधवाचक : नहि, हँ, बेस, हेतै आदि ।

(च) अनिश्चयवाचक : भरिसक, प्रायः, कदाचित आदि ।

(२) **जे निपात कोनो शब्दकेँ उन्मुक्त वा अवरुद्ध कऽ दैत अछि, से स्वच्छन्द वा अवधारक निपात कहबैछ । जेना :**

(क) ए वा ओक मात्रा : हम भाते खाएब । (आन किछु नहि) ।

हम भातो खाएब । (आनो वस्तु)

(ख) ए वा ओ जोड़ल : हम कोबिए खाएब (आन किछु नहि)

हम कोबियो खाएब । (आओरो तरकारीक सङ्ग)

(ग) इ आ उ क मात्रा : घरहिमे, घरहुमे

विस्मयादिबोधक शब्द

एहन ध्वनि वा शब्द जे विस्मय, हर्ष, आश्चर्य आदि आन्तरिक भावक प्रवाहमे मुहसँ बहराएवला मनोभावकेँ व्यञ्जित करैत अछि, से विस्मयादिबोधक शब्द वा अन्तर्व्यञ्जक कहबैत अछि ।

किछु विस्मयादिबोधक शब्दसभ भावानुसार निच्चा देल गेल अछि :

(क) सहमतिक भाव : हँ, हूँ, बेस, अच्छा, ठीक, जी, जी हँ, जी हजुर, जी सरकार

(ख) विमति : अहँ, उहूँ, नहि, एह, हए (ग) घृणा : छी छी, छी, दुर छी, दुत्तोरी, मरतोरी

(घ) विस्मय : अएँ, अरे, मर, मर तोरीके (ङ) प्रशंसा : बाह, खूब, चाबस, बलिहारी, बधाइ

(च) संवेदना : अह, चुह चुह (छ) प्रसन्नता : आहा

(ज) प्रतिवाद : धत्, दुत्, धुरजो, धौरजो (झ) आतङ्क : बाप रे बाप, अरे, बा, दैआ गय दैआ

(ञ) पीड़ा : आह, ओह, हाय, ईह, इस्स (ट) क्रोध : रे, अरे, हुँह

(ठ) अभिवादन : प्रणाम, नमस्कार, दण्डोत बाबा

(ड) ध्यानाकर्षण : अए, अओ, हय, हओ, ने, रओ, गए, गौ

महाकवि विद्यापति

मैथिलीक आकाशमे विद्यापति एकटा एहन नक्षत्रराज भेलाह जनिका लऽक ऽ हमरालोकनि आन-आन भाषा-भाषीक समक्ष गौरवक अनुभव क ऽ रहल छी। बङ्गालीलोकनि हिनक कृतिसँ मुग्ध भऽक ऽ हिनका बङ्गाली बनएबाक अथक प्रयास सेहो कएलनि, मुदा ओलोकनि सफल नहि भेलाह। महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री, जस्टिस शारदाचरण मित्र, बाबू नगेन्द्रनाथ गुप्त आदि बङ्गाली विद्वानलोकनि मानि लेलनि जे विद्यापति बङ्गाली नहि, मिथिलावासी छलाह आ मैथिलीमे गीत लिखलनि। एहि दिशामे काज कएनिहार जॉर्ज ग्रियर्सन निश्चित रूपसँ धन्यवादक पात्र छथि जे सर्वप्रथम विद्यापतिकेँ बङ्गालीसँ बिहारी प्रमाणित कएलनि।

विद्यापतिक जन्म सन १३६० ई.मे बिस्फी गाममे भेल छलनि। बिस्फी सम्प्रति भारतीय राज्य बिहारक मधुबनी जिलामे पड़ैत अछि। ई बिशैबारगढ़ मूलक काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण छलाह। मुदा जहियासँ बिस्फी गाम उपार्जन कएलनि तहियासँ हिनक मूल बिशैबार बिस्फी भ ऽ गेलनि। हिनक पिताक नाम गणपति ठाकुर तथा माताक नाम हासिनी देवी छलनि। कहल जाइत अछि जे कपिलेश्वर महादेवक आराधना क ऽ गणपति ठाकुर एहन पुत्ररत्न प्राप्त कएने छलाह। मिथिलाक प्रसिद्ध विद्वान हरि मिश्रसँ ई शिक्षा ग्रहण कएने छलाह। पक्षधर मिश्र हिनक सहपाठी छलथिन।

ई एकटा मनोवैज्ञानिक तथ्य अछि जे जखन केओ समाजमे उच्च पदपर आसीन भ ऽ जाइत अछि तँ ओकर विद्वेषी ओकर व्यक्तित्वकेँ छोट करबाक हेतु नाना प्रकारक बातसभ कर ऽ लगैत अछि। एहन विद्वेषीमे एकटा केशव मिश्र सेहो छलाह। ओ अपन द्वैतपरिविष्ट नामक धर्मशास्त्र-ग्रन्थमे 'ये केञ्चन भागवतः ग्राम याचकः नर्तकाः' कहिक ऽ विद्यापतिक उपहास कएने छथि। अर्थात ओ राजदरबारमे

भागवतक वाचन करैत छलाह, तेँ भगवतिया भेलाह । ओ राजा शिवसिंहसँ बिस्फी ग्राम उपहारस्वरूप पओने छलाह, तेँ ग्राम-याचक भेलाह । आ देशी भाषामे गीत बनौलनि, तेँ नटुआ भेलाह । मुदा अपसोचक बात ई अछि जे केशव मिश्र आइ जीवित नहि छथि । जँ ओ आइ जीवित रहितथि तँ विद्यापतिक लोकप्रियता देखिक' हुनक माथ लाजसँ झुकि जइतनि ।

विद्यापतिक पिता गणपति ठाकुर राजा गणेश्वरक दरबारमे मन्त्री छलाह । तेँ ओ नेन्नहिसँ अपन पिताक सङ्ग गणेश्वरक दरबारमे जाइत-अबैत छलाह । गणेश्वरक बाद कीर्तिसिंह राजा भेलाह । अतः ओ हिनका दरबारमे जाए-आब' लगलाह । एही कीर्तिसिंहक नामपर विद्यापति अपन पहिल पुस्तक कीर्तिलता लिखलनि । एकर भाषा अपभ्रंश (संस्कृत-प्राकृत मिश्रित मैथिली) अछि, जकरा ओ अवहट्ट कहने छथि । एहि भाषापर हुनका गर्व सेहो छलनि । देखल जा सकैत अछि ओहि पुस्तकक पहिल पल्लवक ई पाँति–

देसिल बयना सब जन मिट्ठा ।

तेँ तैसन जम्पओ अवहट्ठा ॥

अर्थात देशी भाषा (अपन भाषा) सभकेँ मीठ लगैत छैक । तेँ हम एहि भाषामे एकर रचना कएल ।

हुनक मोनमे इहो शङ्का छलनि जे ज्योतिरीश्वरजकाँ हमरो एहि भाषाकेँ देखिक' संस्कृतक पण्डितलोकनि हँसताह । कारण, ओहि समयमे न्याय आ मीमांसाक अध्ययन तथा टिप्पणी लिखब मैथिल पण्डितलोकनिक प्रिय वस्तु छलनि । मुदा विद्यापति एहि मार्गकेँ बदलिक' ज्योतिरीश्वरजकाँ अपन नव मार्ग धएलनि । ई नव मार्ग विषय-वस्तु तथा भाषा दुनू स्तरपर छल । तेँ हुनकर भाषाक सम्बन्धमे लिख' पड़लनि–

बालचन्द विज्जावइ भाषा ।

दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा ॥

ओ परमेश्वर हर सिर सोहइ ।

ई णिच्चइ णाअर मन मोहइ ॥

अर्थात बालचन्द्र तथा मैथिली भाषा देखिक' दुर्जन लोककेँ हँसी नहि लगतनि । कारण, बालचन्द्रमा शिवक मस्तकपर शोभैत छनि आओर ई भाषा 'बुझिनिहार' लोकक मन मोह' वला अछि । एहिठाम हमरालोकनिकेँ ई नहि बिसरबाक चाही जे विद्यापति एहि भाषाकेँ बालचन्द्रसदृश ठाढ़ कएने छथि ।

एकर बाद विद्यापति एहि भाषामे कीर्तिपताका सेहो लिखलनि । एहि दुनू ग्रन्थमे कीर्तिसिंहक कीर्ति आदिक वर्णन अछि । एहि दुनू ग्रन्थक अतिरिक्त ओ संस्कृतमे भू-परिक्रमा, पुरुष-परीक्षा, लिखनावली, शैवसर्वस्वसार, गङ्गावाक्यावली, दानवाक्यावली, दुर्गाभक्ति-तरङ्गिणी, विभागसार, न्यायपत्तल, ज्योतिषदर्पण, वर्षकृत्य, गोरक्षविजय (नाटक), मणिमञ्जरी (नाटक) आदि ग्रन्थक रचना कएलनि ।

जतऽ भू-परिक्रमामे विद्यापति मुख्य तीर्थसभक वर्णन कएने छथि ओतऽ लिखनावलीमे पत्रलेखन-शैलीक विवरण । एहि दुनू ग्रन्थक रचना क्रमशः राजा देवसिंह तथा राजा पुरादित्यक आदेशपर भेल छल । बाँकी जे विभिन्न ग्रन्थसभ अछि ओहिमे विभिन्न वस्तुसभक वर्णन अछि आ विभिन्न राजालोकनिक आदेशपर लिखल गेल । जेना– राजा शिवसिंहक आदेशपर लिखल गेल पुरुषपरीक्षामे ललितकथाक रूपमे धार्मिक तथा राजनीतिक विषयक वर्णन अछि। ठीक एहिना दुर्गाभक्ति-तरङ्गिणीमे दुर्गाक महिमा तथा दुर्गापूजाक विधिसम्बन्धी बात नरसिंहदेवक आदेशपर लिखल गेल । शैवसर्वस्वसारमे भवसिंहसँ लऽकऽ विश्वासदेवीधरिक राजाक कीर्तिकथाक सङहि शिवपूजा-विधिक उल्लेख अछि ।

एहि तरहेँ देखल जाए तँ ओ गीतकारेटा नहि, अपितु यात्रावृत्तान्त लेखक, कथाकार, पत्रलेखक, निबन्धकार तथा नाटककार सेहो छलाह । मुदा सभसँ बेसी हुनका ख्याति भेटलनि गीतकारक रूपमे । एहि रूपमे ओ अमर भऽ गेलाह । हुनक गीतक सम्बन्धमे ग्रियर्सन कहने छथि– 'भलहि हिन्दू धर्मक सूर्य अस्त भऽ जाए आ ओहो समय आबि जाए जखन कृष्णक स्तुतिक लेल लोकमे विश्वास आ श्रद्धा नहि रहि जाइक जे हमरालोकनिक अस्तित्वक औषधि अछि, तथापि विद्यापतिक गीतक प्रति जे अनुराग अछि ओ कहियो कम नहि होएत, जाहिमे ओ राधा-कृष्णक चर्च कएने छथि ।'

विद्यापतिक जतेक गीतसभ अछि ओहिमे अधिकांश गीतसभ शृङ्गार-रस प्रधान अछि, जाहिमे संस्कृत साहित्यक अनुसार वयःसन्धि, नखशिख, विरह, अभिसार, सद्यःस्नाता, कौतुक, मान, मिलन आदिक वर्णन बहुत मनमोहक ढङ्गसँ कएल गेल अछि। उदाहरणक रूपमे नखशिख वर्णनक एकटा गीत देखल जा सकैछ, जकर पहिल पंक्ति अछि–

माधव की कहब सुन्दरि रूपे ।

कतन जतन विहि आनि समारल, देखल नयन सरूपे ॥

विद्यापतिक उपर्युक्त गीत समस्त भारतीय भाषा-संसारमे अद्वितीय मानल गेल अछि । एहि गीतपर मोहित भऽकऽ महाकवि सूर तथा कवि चन्द सेहो एहि प्रकारक गीत लिखबाक चेष्टा कएलनि, मुदा जे उँचाइ विद्यापति अपना गीतमे दऽ सकलाह ओ उँचाइ हिनकालोकनिसँ सम्भव नहि भऽ सकल ।

विद्यापति एकटा साहित्यिके व्यक्ति मात्र नहि, अपितु ओ एकटा सफल कूटनीतिज्ञ सेहो छलाह । एकर पुष्टि एहि तथ्यसँ होइत अछि जे जखन यवन सेना हुनक प्रिय राजा शिवसिंहकेँ पकड़िकऽ दिल्ली लऽ गेलनि तँ ओ अपन कूटनीतिक प्रयाससँ हुनका छोड़ाकऽ पुनः मिथिला अनलनि । एहि क्रममे दिल्लीक बादशाहकेँ जखन अपन परिचय देलथिन तँ ओ कहलकनि जे तोँ अपनाकेँ कवि कहैत छह तँ अपन कौशल देखाबह । एहिपर विद्यापति कहलथिन जे हम अदृश्य चीजक वर्णन कऽ सकैत छी । तखन हुनक आँखिपर पट्टी बान्हि देल गेलनि ।

कोनो-कोनो ठाम उल्लेख अछि जे सन्नुकमे बन्न कऽकऽ हुनका इनारमे धऽ देल गेलनि आ कतेकोठाम इहो उल्लेख अछि जे हुनका कोठलीमे बन्न कऽ देल गेलनि । मुदा ई दुनू बात विश्वसनीय नहि बुझना

जाइछ । कारण, जाहिठाम दरबार लगैत छल होएत ओहिठाम इनार रहब असङ्गत बुझि पड़ैत अछि। दोसर जँ विद्यापति चिचिया-चिचियाकऽ गबितथि तखनहि बादशाह तथा अन्य दरबारीलोकनिकेँ सुनबामे अबितनि । एहना स्थितिमे पट्टीए समीचीन बुझना जाइत अछि। खैर, तखन एकरा बाद जे नृत्याङ्गना नृत्य कएलनि ओकर बोल निम्नाङ्कित रूपेँ देलनि–

सजनि निहुरि फुकू आगि ।

तोहर कमल भमर मोर देखल, मदन उठल जागि ॥

कहल जाइछ जे विद्यापतिक एहि रचनाकौशलसँ प्रभावित भऽ ओ शिवसिंहकेँ मुक्त कऽ देलक ।

राजा शिवसिंह जनप्रेमी तथा स्वच्छन्द प्रकृतिक लोक रहबाक कारणे पुनः दिल्ली बादशाहक आज्ञाक उल्लङ्घन करऽ लगलाह। अतः ओ कुपित भऽकऽ हिनकापर चढ़ाइ कऽ देलकनि। एहिबेरक लछन-करम ठीक नहि छल, तेँ शिवसिंह अपन सभसँ विश्वासी व्यक्ति विद्यापतिक सङ्ग महारानीलोकनिकेँ राजा पुरादित्यक ओहिठाम पठा देलथिन। एहि घटनासँ दूटा बात साबित होइत अछि– पहिल तँ विद्यापति जाहि राजाक ओहिठाम रहलाह ओहि राजाक विश्वासपात्र बनल रहलाह आ दोसर, कोनो आन राजाक समक्ष कोना-की बर्ताव कएल जाए, तकर ज्ञान हिनका नीकजकाँ छलनि। ई दुनू बात हिनक व्यक्तित्वक उल्लेखनीय पक्ष अछि।

विद्यापति कतेको राजा तथा रानीक दरबारमे रहलाह। यथा– गणेश्वर, भवेश्वर, कीर्तिसिंह, देवसिंह, शिवसिंह, पद्मसिंह, विश्वासदेवी, रत्नसिंह तथा धीरसिंह। एहिमे गणेश्वरक बध कऽ भवेश्वर राजा भेल छलाह। कीर्तिसिंह दिल्लीक बादशाहक सहयोगसँ भवेश्वरक पुत्रकेँ मारि हत्याक बदला लऽ राज्य फिर्ता लेलनि । शिवसिंह युद्धभूमिसँ लापता भऽ गेलाह । कतेको राजासँ हुनकालोकनिक स्वाभाविक मृत्युक कारणे विद्यापतिक सङ्ग छुटि गेलनि । एहि तरहेँ ओ गणेश्वरसँ धीरसिंहधरिक घटनाकेँ देखैत-देखैत भीतरसँ टुटि गेल छलाह । तेँ अधिकांश गीतमे धैर्य रखबाक प्रेरणा देनिहार महान आशावादी कवि निराशावादीमे बदलि गेलाह। एहना स्थितिमे ओ कहि उठलाह–

माधव हम परिणाम निरासा ।

यवनक आक्रमण एवं जल्दी-जल्दी नेतृत्व परिवर्तनक कारणे मिथिलाक आर्थिक आ सामाजिक स्थिति सुदृढ छल से नहि कहल जा सकैत अछि। कारण, ई परिपाटी देखल गेल अछि जे जखन कोनो क्षेत्रपर यवन सेना आक्रमण करैत छल तँ ओसभ ओहि क्षेत्रक धङरचास कऽ दैत छल। रूपमती स्त्रीलोकनिक आत्मा ओकरासभक अत्याचारसँ कलपि उठैत छलनि। राज्यक लोकसभ त्राहिमाम-त्राहिमाम करऽ लगैत छल। एहना स्थितिमे गार्हस्थ्य जीवन छिन्न-भिन्न भऽ जाइत छलैक। एहि विकट परिस्थितिमे गार्हस्थ्य जीवनसँ पलायनोन्मुख समाजकेँ पुनः गार्हस्थ्य जीवनमे घुमएबाक हेतु विद्यापति एहि शिवगीतक रचना करैत देखल जाइत छथि–

बेरि-बेरि अरे सिव, मोजे तोहि बोलञो

किरिस करिअ मन लाए ।

एतबए नहि, विद्यापतिक समयमे मिथिलामे बहुविवाहक प्रथा छल । स्वयं राजा शिवसिंह छओटा विवाह कएने छलाह । स्त्रीकेँ भोगक वस्तु मानल जाइत छल । तेँ लोक बुढ़ोमे विवाह करबाक हेतु आतुर रहैत छल । एकर चित्र हमरालोकनिकेँ विद्यापतिक दोसर गीतमे भेटैत अछि–

आगे माइ, हम नहि आजु रहब एहि आङ्गन ।

जञो बुढ़ होएत जमाए ॥

मिथिलाक किछु वर्गमे ई देखल जाइत अछि जे जखन पति-पत्नीमे कोनो प्रकारक झगड़ा होइत छैक तँ पत्नी अपन बेटा-बेटीकेँ कखियाक॰ नैहर चलि दैत अछि । ई परिपाटी विद्यापतिकालीन मिथिलामे सेहो छल । एकर चित्रण हमरालोकनिकेँ विद्यापतिक निम्नाङ्कित गीतमे भेटैत अछि–

चलली भवानी तेजिअ महेश ।

कर धए कार्तिक गोद गणेश ॥

उपर्युक्त शिवगीतकेँ देखैत ई बात सरासर गलत होएत जे विद्यापति खाली रजनीए-सजनीमे लागल रहलाह । किछु समीक्षकलोकनि एहू बातकेँ बिसरि जाइत छथि जे घन-घन घनन घुघुर कत बाजए, हन-हन कर तुअ कातावला भैरवी वन्दना सेहो ओ लिखलनि जे वीररसकेँ साकार करैत अछि । एहि तरहेँ हम देखैत छी जे विद्यापति अपन कलमरूपी तरुआरिकेँ चारूदिस नीकजकाँ भँजलनि । इएह कारण अछि जे विद्यापतिकेँ जतेक उपाधि देल गेलनि ओतेक उपाधि संसारक कोनो कवि नहि पाबि सकलाह । आइ ई हमरालोकनिक समक्ष कविकोकिल, कविकण्ठहार, कविरञ्जन, कविशेखर, सुकवि, महाकवि, दशावधान, पञ्चानन, अभिनव जयदेव आदि उपाधिसँ जानल जाइत छथि ।

मिथिलाक एहि नक्षत्रक सन १४५० ई.मे देहावसान भ॰ गेलनि । यद्यपि हिनक जन्म आ मृत्युक साल विद्वानलोकनिक बीच मतान्तरक विषय अछि, तथापि मास तिथिमे कोनो विवाद नहि अछि । कारण, एकर उल्लेख हमरालोकनिकेँ भेटि गेल अछि–

विद्यापतिक आयु अवसान ।

कार्तिक धवल त्रयोदशि जान ॥

शब्दार्थ

नक्षत्रराज = चन्द्रमा

कृति = कार्य, रचना

अथक = नहि थाकऽ वला

मतैक्य = एकमत

तथ्य = सत्य

विद्वेषी = विरोधी

याचक = मङनिहार, माङऽ वला

अपभ्रंश = बिगड़ल रूप

प्राकृत = प्रचलित बोलचालक भाषा

बयना = भाषा

तैसन = ओहन

बालचन्द्र = द्वितीयाक चन्द्रमा

दुहु = दुनू

दुज्जन = दुर्जन

हासा = हँसी

णिच्चइ = निश्चय

णाअर = नगर (विशेष अर्थमे बुझनुक लोक)

वयःसन्धि = चढ़ैत जुआनी

नखशिख = नहसँ लऽकऽ केशधरि (सभ अङ्ग)

विरह = वियोग

सद्यःस्नाता = तुरत स्नान कएल स्त्री/युवती

कौतुक = आश्चर्य

अभिसार = नायक वा नायिकाक मिलन स्थलपर जाएब

कतन = कतेक

जतन = जतनसँ, प्रयाससँ

विहि = ब्रह्मा

समारल	= बनाओल
नयन	= आँखि
स्वरूपे	= प्रत्यक्ष, चित्र
पल्लवराज	= कमल
चरण-युग	= दुनू पएर
अद्वितीय	= जकर जोड़ा नहि हो
कूटनीतिज्ञ	= विपक्षीकेँ अपना पक्षमे अनबामे माहिर
सजनि	= सखी (विशेष अर्थमे सुन्दरी)
लीला	= खेल
बन्धनमोचन	= बन्धनसँ मुक्त
सुदृढ	= मजगूत
मन लाए	= मन लगाकऽ
भैरवी	= भगवती
कविकोकिल	= ओहन कवि जकर आवाज कोइलीसन हो
कविकण्ठहार	= जनिक गीत सभक कण्ठमे बसल हो, अर्थात जनिक गीत सभक कण्ठक हार बनि गेल हो
कविरञ्जन	= जे कवि मन प्रसन्न करऽवला होथि
कविशेखर	= जे कवि सभ कविक मुकुट होथि
सुकवि	= जे कवि सभसँ उत्तम होथि
महाकवि	= जे कवि सभ कविसँ श्रेष्ठ होथि
दशावधान	= जाहि कविक ध्यान दशो दिशामे जाइत होइनि
पञ्चानन	= सङ्गीतमे स्वर साधनक रीतिकेँ जननिहार
अभिनव जयदेव	= नव जयदेव (जयदेव संस्कृतक पैघ कवि रहथि)
आयु अवसान	= आयुक समाप्ति
धवल	= इजोरिया
त्रयोदशि	= त्रयोदशी तिथि

अभ्यास

श्रवण-शिल्प (सुननाइ)

१. **पाठक पहिल दूटा अनुच्छेद शिक्षकसँ सुनिऽ निम्नलिखित वाक्यसभ ठीक वा गलत की अछि, छुटिआउ :**

(क) विद्यापतिक गीतसभ मैथिली भाषामे अछि ।

(ख) विद्यापतिक जन्मस्थान वर्तमान नेपालमे पड़ैत अछि ।

(ग) विद्यापतिक गुरुक नाम हरि मिश्र छल ।

(घ) विद्यापति नाटक सेहो लिखने छथि ।

(ङ) विद्यापतिक सहपाठीक नाम पक्षधर मिश्र छल ।

२. **पाठक तेसर अनुच्छेदक (ई एकटा मनोवैज्ञानिक.....भुकि जइतनि) श्रुति लेखन करू ।**

३. **पाठक अन्तिम तीनटा अनुच्छेदसभ शिक्षकसँ सुनू आ निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर कहू आ लिखू :**

(क) महेशकेँ छोड़िऽ भवानी ककरा-ककरा सङ्गमे लऽऽ चललीह ?

(ख) लोककेँ गिरहस्थीमे मोन लगबऽ लेल विद्यापति कोन गीत लिखलनि ?

(ग) विद्यापतिकेँ कोन-कोन उपाधिसभ देल गेलनि ?

(घ) विद्यापतिक निधन कोन मास आ तिथिमे छेल ?

कथन-शिल्प (बजनाइ)

४. **निम्नलिखित शब्दसभक शुद्ध-शुद्ध उच्चारण करू :**

महामहोपाध्याय, द्वैतपरिविष्ट, शैवसर्वस्वसार, अद्वितीय, स्वच्छन्द, गार्हस्थ्य, पलायनोन्मुख, समीक्षक ।

५. **निम्नलिखित शब्दसभकेँ अर्थ स्पष्ट होएबाक हिसाबें वाक्यमे प्रयोग करू :**

तरुआरि, कूटनीतिज्ञ, कीर्तिकथा, यात्रावृत्तान्त, अस्तित्व, मनोवैज्ञानिक, ग्राम याचक, दुर्जन ।

६. **पाठमे उल्लिखित विद्यापतिक गीतसभक पूर्ण पाठ इन्टरनेटक माध्यमसँ ताकू । विद्यापतिक आनो-आन गीतसभ सामाजिक सञ्जालमे ताकिऽ सुनू आ कक्षामे गाबिऽ सुनाउ ।**

पठन-शिल्प (पढ़नाइ)

७. पाठक प्रत्येक अनुच्छेद बेरा-बेरी सस्वर वाचन करू ।

८. निम्नाङ्कित प्रश्नक एक-एक पाँतिमे उत्तर दिअ ।

(क) बङ्गालीसभ विद्यापतिक कृतिसँ मुग्ध भऽकऽ की करऽ लगलाह ?

(ख) जॉर्ज ग्रियर्सन की प्रमाणित कएलनि ?

(ग) विद्यापतिक जन्म कहिया भेल छलनि ?

(घ) विद्यापति किनकासँ शिक्षा ग्रहण कएने छलाह ?

(ङ) विद्यापतिक जन्म कतऽ भेल छलनि ?

(च) विद्यापतिक समयमे संस्कृतक पण्डितलोकनिकेँ की प्रिय छलनि ?

(छ) विद्यापतिकेँ सभसँ बेसी ख्याति कथीसँ भेटलनि ?

(ज) लिखनावलीमे कोन चीजक विवरण अछि ?

(झ) विद्यापतिकेँ कविकण्ठहार किएक कहल जाइत छनि ?

(ञ) विद्यापतिक देहावसान कहिया भेलनि ?

९. निम्नाङ्कित गद्यांशकेँ पढ़ू आ पुछल गेल प्रश्नसभक उत्तर दिअ :

यवनक आक्रमण एवं जल्दी-जल्दी नेतृत्व परिवर्तनक कारणे मिथिलाक आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति सुदृढ छल से नहि कहल जा सकैत अछि। कारण, ई परिपाटी देखल गेल अछि जे जखन कोनो क्षेत्रपर यवनक सेना आक्रमण करैत छल तँ ओसभ ओहि क्षेत्रक धऽरचास कऽ दैत छल। रूपमती स्त्रीलोकनिक आत्मा कलपि उठैत छलनि। राज्यक लोकसभ त्राहिमाम-त्राहिमाम करऽ लगैत छल। एहना स्थितिमे गार्हस्थ्य जीवनसँ पलायनोन्मुख समाजकेँ पुनः गार्हस्थ्य जीवनमे घुमएबाक हेतु विद्यापति शिवगीतक रचना करैत देखल जाइत छथि।

प्रश्नसभ :

(क) मिथिलाक सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति किएक सुदृढ नहि छल ?

(ख) रूपमती स्त्रीलोकनिक आत्मा किएक कलपि उठैत छलनि ?

(ग) यवनसभ आक्रमण कालमे की करैत छल ?

(घ) गार्हस्थ्य जीवन किएक छिन्न-भिन्न भऽ जाइत छल ?

(ङ) विद्यापति लोककेँ गार्हस्थ्य जीवनमे घुरएबाक लेल की कएलनि ?

१०. उपर्युक्त गद्यांशक सारांश एक तिहाइमे लिखू ।

लेखन-शिल्प (लिखनाइ)

११. निम्नाङ्कित शब्दसभक अर्थ स्पष्ट करू

कविकोकिल, कविकण्ठहार, कविरञ्जन, कविशेखर, सुकवि, महाकवि, पञ्चानन, अभिनव जयदेव ।

१२. निम्नाङ्कित प्रश्नसभक संक्षिप्त रूपमे उत्तर दिअ :

(क) विद्यापतिक विद्वेषी अपना पुस्तकमे की कहलनि अछि ?

(ख) विद्यापतिकेँ भाषाक सम्बन्धमे की लिखऽ पड़लनि ?

(ग) ग्रियर्सन विद्यापतिक गीतक सम्बन्धमे की कहलनि अछि ?

(घ) विद्यापति राजा शिवसिंहकेँ कोना छोड़ौलनि ?

(ङ) विद्यापति आशावादीसँ निराशावादीमे किएक बदलि गेलाह ?

(च) महारानीलोकनि विद्यापतिएक सङ्ग राजा पुरादित्यक ओहिठाम किएक पठाओल गेलीह ?

(छ) विद्यापतिक समयमे मिथिलामे केहन प्रथा छल ?

१३. रिक्त स्थानक पूर्ति करू

(क) देसिल बयना सबजन मिट्ठा ।

..... ॥

(ख) .....।

दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा ॥

(ग) विद्यापतिक आयु अवसान ।

..... ॥

(घ) ओ परमेश्वर हर सिर सोहइ ।

..... ॥

(ङ) बेरि-बेरि अरे सिव, मोत्रे तोहि बोलत्रो

..... ॥

(च) आगे माइ हम नहि आजु रहब एहि आङन ।

..... ॥

(छ) ..... ।

कर धए कार्तिक गोद गणेश ॥

१४. सही उत्तरमे ठीक चिह्न (✓) लगाउ

अ. विद्यापतिक जन्मक वर्ष अछि–

(क सन १२६० ई. (ख) सन १३४० ई.

(ग) सन १४६० ई. (घ) सन १५६० ई.

आ. मैथिली भाषा देखिकऽ किनका नहि हँसी लगतनि ?

(क) दुर्जनकेँ (ख) पण्डितकेँ

(ग) आधुनिक लोककेँ (घ) आन भाषाभाषीकेँ

इ. मुख्य-मुख्य तीर्थसभक वर्णन अछि–

(क) कीर्तिलतामे (ख) भू-परिक्रमामे

(ग) गोरक्षविजयमे (घ) न्यायपत्तलमे

ई. कोन ग्रन्थ विद्यापतिक नहि अछि ?

(क) विभागसार (ख) शैवसर्वस्वसार

(ग) वर्णरत्नाकर (घ) पुरुषपरीक्षा

उ. विद्यापति छलाह–

(क) कथाकार तथा निबन्धकार (ख) पत्र लेखक तथा गीतकार

(ग) नाटककार तथा यात्रावृत्तान्त लेखक (घ) सभ विधाक लेखक

ऊ. विद्यापति महारानीलोकनिकेँ लऽकऽ पहुँचलाह–

(क) यवनक ओहिठाम (ख) पद्मसिंहक ओहिठाम

(ग) पुरादित्यक ओहिठाम (घ) गणेश्वरक ओहिठाम

ए. **विद्यापति शिवकेँ की करऽ कहैत छथिन ?**

(क) व्यापार करऽ (ख) दुखियासभक खबरि लेबऽ

(ग) खेती-पथारी करऽ (घ) भाङ छोड़ऽ

१५. निम्नाङ्कित विन्दुक आधारपर विद्यापतिक जीवनी लिखू :

(क) जन्म, जन्मस्थान (ख) पारिवारिक लोक

(ग) कृतित्व (घ) संसारसँ टुटबाक कारण

(ङ) मृत्यु

१६. विश्लेषणात्मक उत्तर दिअ :

(क) प्रमाणित करू जे विद्यापति गीतकारेटा नहि, आन विधासभक लेखक सेहो छलाह ।

(ख) नायिका-वर्णनक अतिरिक्त अहाँकेँ विद्यापतिक गीतमे आओर कीसभ भेटैत अछि ?

सृजनात्मक अभ्यास

(क) अपन तर्कद्वारा सिद्ध करू जे विद्यापति क्रान्तिकारी कवि छलाह ।

१७. अहाँक समुदायमे जँ केओ साहित्यकार वा राजनीतिक व्यक्ति छथि तँ हुनका सम्बन्धमे जानकारी प्राप्त करू आ हुनकर जीवनी निम्नलिखित विन्दुसभक आधारपर लिखू :

जन्म, शिक्षा, व्यवसाय वा पेशा, उल्लेख्य काज, प्रेरणादायी भूमिका, मृत्यु तिथि (जँ निधन भेल हो तँ) ।

१८. पाठक दोसर आ तेसर अनुच्छेदसभसँ दशटा विन्दु टिपाउत करू ।

वर्णविन्यास

१९. पाठमेसँ श, ष आ स लागल शब्दसभ सङ्कलित करू । एकरासभक उच्चारणमे की भिन्नता अछि, अनुभव करू । स्मरण इहो राखू जे षक उच्चारण बेसी काल ख सेहो होइत अछि । जेना : धनुषाक उच्चारण धउनखा, विषक उच्चारण विख, दोषक उच्चारण दोख, ओषधक उच्चारण ओखध इत्यादि । ष लागल किछु शब्द ताकिकऽ लिखू आ षक उच्चारण ख होइत अछि कि नहि, जाँच करू ।

व्याकरण

२०. निम्नलिखित अनुच्छेदमे रहल रेखाङ्कित शब्दसभ क्रियाविशेषण थिक । एहिसभकेँ अभ्यास पुस्तिकामे उतारू :

जखन भूकम्प आएल तखन हमसभ घरसँ बाहरे बैसल छलहुँ । एकाएक घर हिलऽ लागल आ ठीक हमरासभक आगाँ एकटा घर धाँहिसँ खसि पड़ल । जतऽ हम बैसल छलहुँ, ओतऽ चरचराकऽ धरती फाटऽ लागल । लोकसभ एकसङ्ग एमहर-ओमहर दौगऽ लागल । तुरत हम काठमाण्डू फोन कएलहुँ । देश-विदेशसँ फोन आबऽ लागल । किएक तँ सभकेओ परेशान छल । अचानक फोन बन्द भऽ गेल । भरिसक नेटवर्क बाधित भऽ गेल छल । लगले कम्पन बन्द भऽ गेल, मुदा देह एमहर ओमहर भसिआ रहल छल ।

द्रष्टव्य : एहि क्रियाविशेषणसभकेँ अपन वाक्यमे प्रयोग करू ।

२१. निम्नलिखित अनुच्छेदमे रहल रेखाङ्कित शब्दसभ सम्बन्धार्थक अव्यय थिक । एहिसभकेँ अभ्यास पुस्तिकामे उतारू :

दशमीसन आन पावनि नहि होइत अछि । लगभग सभकेओ ई पावनि दश दिनधरि मनबैत अछि । घरक भीतर तँ पूजापाठ होइते छैक, बाहरोमे ओतबए धूम मचल रहैत छैक । दश दिनधरि मनाओल जाएवला ई पर्व सभक लेखेँ ओतबए महत्त्व रखैत अछि । एहि पावनिक खातिर लोक निकट आ दूरक शहरसँ सेहो गाम अबैत अछि । एकर अतिरिक्त लोक औकात अनुसार मनोयोगपूर्वक ओरिआओन करैत अछि । परिजनसहित सभकेओ एकठाम बैसिकऽ बुजुर्गद्वारा प्रदत्त आशीर्वाद ग्रहण करैत अछि ।

२२. निम्नलिखित अनुच्छेदमे रहल रेखाङ्कित शब्दसभ समुच्चयबोधक अव्यय अर्थात संयोजक शब्द थिक । एहिसभकेँ अभ्यास पुस्तिकामे उतारू :

राम आ श्यामक बीच नीक मित्रता तथा समझदारी छैक । तेँ ओसभ सङ्गेसङ्ग रहैत अछि । यद्यपि ओसभ आर्थिक रूपेँ समान नहि अछि, मुदा ओसभ एक-दोसराकेँ सदति मदति करैत रहैत अछि । ओसभ प्रसन्न रहैत अछि, किएक तँ आपसी सहयोग आओर सहकार्यसँ ओसभ चाहे केहनो विपति आबि जाइक, तकर समाधान कऽ लैत अछि ।

२३. निम्नलिखित शब्दसभकेँ पढ़ू आ तालिका अनुसार क्रियाविशेषण, सम्बन्धार्थक अव्यय आ संयोजक छुटिआकऽ अभ्यास पुस्तिकामे लिखू :

आइधरि, लगातार, जखनहि, बिना, समान, तुल्य, परन्तु, परञ्च, देखा-देखी, कदाचित, दिशि, समक्ष, आओ, आ, वा, बारम्बार, लेल, लग, पछाति, लगभग, समीप, अतएव, जाहिसँ,

उपरान्त, अनेरे, धरि, भरि, पूर्वक, तथापि, अतिरिक्त, किन्तु, हेतु, भीतर, तथा, बराबर, उनटा, मार्फत, पर्यन्त ।

क्रियाविशेषण	सम्बन्धार्थक अव्यय	संयोजक
आइधरि	समीप	परन्तु ....
....	....	....
....	....	....

भाषातत्त्व सम्बन्धी किछु जानकारी

जाहि शब्दमे लिङ्ग, वचन आदिक कारणे कोनो विकार वा रूपान्तरण नहि होइत अछि, तकरा अव्यय कहल जाइत अछि । जेना : धरि, आ, उपरान्त आदि ।

अव्यय पाँच प्रकारक होइत अछि :

(१) क्रिया विशेषण (२) सम्बन्धार्थक (३) संयोजक (४) विस्मयादिबोधक (५) शब्दांश

(१) **क्रिया विशेषण** : जाहि शब्दसँ क्रिया, विशेषण आ दोसर क्रियाविशेषणक विशेषता बताओल जाइछ, तकरा क्रियाविशेषण कहल जाइत अछि । जेना :

(क) स्थितिवाचक : एतऽ, ओतऽ, जतऽ, ततऽ, आगू, पाछू, भीतर, बाहर, लग-पास, दूर, फराक, सोझाँ, कात, माझ, बीच, एमहर, ओमहर, एतहु, सर्वत्र, दहिना, बामा ।

(ख) कालवाचक : ऐखन, तैखन, जैखन, एखन, तखन, जखन, एखनहि, सदिखन, तुरत, आइधरि, लगातार, दिनभरि, बारम्बार, नित्य, बहुधा, पुनि, फेर, अति, अत्यन्त, किछु, थोड़, बस, केवल, अधिक, कम, थोड़-थोड़ ।

(ग) रीतिवाचक : एना, ओना, कोना, भने, नीके, चुप-चाप, नहु-नहु, अनेरे, अकस्मात, अचानक, स्वयं, सह-सह, भरिसक, अनायास, अवश्य, निःसन्देह, सत्ते, अलबत्ते, वस्तुतः, हँ, नहि, जी, एहिद्वारे, तँ, हेतु, जनु, सन, टा, मात्र ।

(२) **सम्बन्धार्थक अव्यय** : जे अव्यय सम्बन्ध कारकक आगाँ आबए तकरा सम्बन्धार्थक अव्यय कहल जाइछ । जेना : धनक विनु ककरो काज नहि चलैत अछि ।

एहि ठाम विनु सम्बन्धार्थक अव्यय थिक ।

किछु आओर उदाहरण : निच्चा, तर, समक्ष, दिशि, लेल, निमित्त, खातिर, सिवा, अलावा, बदला, जगह, सहित, अधीन, तक, धरि, पर्यन्त, लेखेँ ।

(३) **संयोजक वा समुच्चयबोधक अव्यय :** जे अव्यय दू वा दूसँ बेसी शब्दसभकेँ जोड़िक संयुक्त बनाबए तकरा संयोजक कहल जाइछ। जेना : राम **आओर** श्याम गाम गेल।

एहिठाम **आओर** संयोजक अछि।

संयोजकक किछु उदाहरण : आ, वा, अथवा, किंवा, कि, तेँ, परन्तु, किन्तु, मगर, बल्कि, परञ्च, हेतु, अतः, अतएव, किएक तँ, जँ, यद्यपि, तथापि, तैओ, चाहे, अर्थात।

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

मैथिलीमे अनेक एहन शब्दसभक प्रयोग होइत अछि जकर उच्चारण मात्रा वा वर्णक थोड़बे हेरफेरक अतिरिक्त प्रायः समान अछि, मुदा ओकर अर्थमे भिन्नता रहैत अछि। एकर अर्थगत सूक्ष्म अन्तर नहि बुझलापर शब्दक गलत प्रयोग होएबाक सम्भावना रहैत अछि। एहन शब्दसभ सुनबामे समान (श्रुतिसम) होइत अछि, मुदा एकरासभक अर्थ भिन्न होइत अछि। किछु एहन श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द निम्नलिखित अछि, एहन-एहन आओरो श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दसभ अपनहिसँ ताकिक लिखू :

(१) अंश = हिस्सा
अंस = कान्ह

(२) अदत्त = कञ्जूस
अदन्त = बिनु दाँतक मालजाल

(३) अन्न = खएबाक वस्तु
अन्य = दोसर

(४) असक्त = आसक्तिसँ युक्त
अशक्त = शक्तिहीन

(५) अखढ़िया = अखाढ़ापर शिक्षित
अखरिया = अक्षरजीवी

(६) अनिल = हवा
अनल = आगि

(७) अविराम = लगातार
अभिराम = सुन्दर

(८) आदि = प्रारम्भ
आदी = अभ्यस्त

(९) कल्लोल = समुद्रक लहरि
कलोल = कोलाहल

(१०) एना = एहि तरहेँ
ऐना = मूँह देख वला सीसा

(११) काँच = अपरिपक्व
काच = सीसा

(१२) कूल = नदीक किनार
कुल = वंश

(१३) चालि = गति
चाली = कीरा

(१४) चिर = स्थायी
चीर = वस्त्र

(१५) जलद = मेघ
जलज = कमल

(१६) दिन = सूर्योदयसँ सूर्यास्तक समय
दीन = गरीब

(१७) नाश = नष्ट
नाँस = हरक अगिला भाग

(१८) प्रसाद = कृपा
प्रासाद = भवन

(१९) पूरा = पूर्ण
पूड़ा = नाकक पूड़ा,

(२०) फाट = दड़ारि
फाँट = हिस्सा

कम्प्यूटर

कम्प्यूटर शब्द अङरेजी शब्द कम्प्यूट (compute) सँ बनल अछि, जकर अर्थ होइछ गणना कएनाइ। कम्प्यूटर शब्दकेँ मैथिली, नेपाली, हिन्दी भाषासभमे सुसाङ्ख्य अर्थात सुन्दर तरीकासँ सङ्ख्याक गणना करऽ वला उपकरण कहल जाइत अछि। मुदा सुसाङ्ख्य शब्दक स्थानपर अङरेजी शब्द कम्प्यूटरक प्रयोग प्रचलित अछि। ओना आधुनिक कम्प्यूटर सङ्ख्यात्मक गणना मात्र नहि कऽ मानव-जीवनक हरेक क्षेत्रमे उपयोगी अछि।

विगत शताब्दीसभमे विज्ञानक अनेक आविष्कारसभ भेल, जे जीवनक हरेक आयाममे सहजता अनलक अछि। मुदा ओहि आविष्कारसभमे कम्प्यूटर आधुनिक प्रविधिक महानतम खोज छी। प्राणी जगतक लेल ई एहन उपहार थिक जे कोनहु प्रकारक कार्य कऽ सकैत अछि। कम्प्यूटरक प्रयोग हरेक क्षेत्रमे व्यापकता प्राप्त कएने जा रहल अछि। मानव-जीवनक कोनहु क्षेत्र एकर प्रयोगसँ बचल नहि अछि।

मानल जाइत अछि जे यन्त्रयुक्त आधुनिक स्वरूपक पहिल कम्प्यूटरक आविष्कार ब्रिटिश गणितज्ञ चार्ल्स बैबेज कएलनि। हुनकाद्वारा १८३३ सँ १८७१ ईस्वीक अवधिमे ई आविष्कार कएल गेल। चार्ल्स बैबेजक एहि आविष्कारसँ पहिने कम्प्यूटर ओहि मनुक्खकेँ कहल जाइत छल, जे दिनभरि बैसिकऽ जोड़-घटाओ, गुणा-भाग करैत छल।

चार्ल्स बैबेजक कम्प्यूटरकेँ विकसित कऽ आधुनिक कम्प्यूटरक निर्माण भेल, जकर इतिहास १९३७ ईस्वीसँ प्रारम्भ होइत अछि। कम्प्यूटरक इएह स्वरूप एखनधरि अनवरत विकसित होइत गेल अछि। आधुनिक कम्प्यूटरक इतिहासकेँ तीन पीढ़ी (generation) मे विभाजित कएल गेल अछि :

पहिल पीढ़ी (First Generation) : एहि पीढ़ीकेँ वन जी (1G) कहबाक प्रचलन अछि। एहि पीढ़ीक पहिल विद्युतीय डिजिटल कम्प्यूटर डा. जॉन भी. एटानासोफ आ क्लीफर्ड बेरीद्वारा १९३७ ईस्वीमे निर्माण कएल गेल छल। नव विकसित कम्प्यूटर होएबाक कारणे एकरा चामत्कारिक तँ मानल गेल, मुदा बहुत बेसी भरिगर होएबाक कारणे ई सामान्य प्रयोगमे अननाइ असहज छल।

दोसर पीढ़ी (Second Generation) : एहि पीढ़ीकेँ टू जी (2G) कहबाक प्रचलन अछि। एकर प्रयोग १९४७ ईस्वीसँ कएल गेल। एहि पीढ़ीक आविष्कारसँ डिस्क, टेप, प्रिन्टर मेशिन आदिक प्रयोग प्रारम्भ भेल।

तेसर पीढ़ी (Third Generation) : थ्री जी (3G) कहल जाइत एहि कम्प्यूटरक प्रयोग १९६३ ईस्वीसँ प्रारम्भ भेल, जे अद्यावधि विकसित होइत गेल अछि। एही क्रममे १९८० ईस्वीमे माइक्रोसफ्ट डिस्क अपरेटिङ सिस्टम (Microsoft - Disk Operating System) क जन्म भेल। एकरा संक्षिप्तमे Ms-DOS कहल गेलैक। वर्तमान पीढ़ीक एही कम्प्यूटरक कारणे व्यक्तिगत कम्प्यूटर Personal Computer अर्थात PC क डेस्कटप आ लैपटपक प्रयोग सम्भव भऽ सकल। डेस्कपर राखिकऽ चलाओल जाइत किछु पैघ आकारक कम्प्यूटरकेँ डेस्कटप कहल जाइत अछि। एहिमे मनीटर अलग आ हार्ड डिस्क, रैम आदि उपकरणयुक्त बक्सा आकारक सीपीयू (Central Processing Unit) अलग रहैत अछि। बादमे विलियम बिल मौग्रिज नामक इञ्जीनियरद्वारा लैपटपक वर्तमान स्वरूप विकसित कएल गेल। एहिमे सीपीयू तथा सभटा उपकरण भीतरेमे रहैत छैक। नव पीढ़ीक वर्तमान कम्प्यूटर अत्यधिक उन्नत आ विकसित अछि। ई छोट, हल्लुक, तेज आ प्रभावशाली अछि।

आब वैज्ञानिकलोकनि चारिम पीढ़ी (Fourth Generation) अर्थात 4G क कम्प्यूटर विकसित करबादिस उन्मुख छथि। कहल जा रहल अछि जे आबऽ वला समयमे कम्प्यूटर मनुक्खक दिमागसँ सेहो बेसी काज कऽ सकत। विश्वास कएल जा रहल अछि जे वर्तमान पीढ़ीक कृत्रिम बौद्धिकता (Artificial Intelligence) वला कम्प्यूटरसँ बेसी आगाँ बढ़िकऽ वास्तविक बौद्धिकता (Real Intelligence) राखत। एखन माउसक माध्यमसँ कम्प्यूटरकेँ निर्देश देल जाइत अछि, जे विकसित भऽकऽ ध्वनि-निर्देशसँ काज करत। एहि दिशामे किछु काज भइयो गेल छैक।

कम्प्यूटरक अन्तर्गत मुख्य दूटा भाग होइत अछि : (१) हार्डवेयर आ (२) सफ्टवेयर। कम्प्यूटरक भौतिक अङ्गसभ मनीटर, माउस, कीबोर्ड, हार्ड डिस्क, प्रोसेसर आदि धातु, सीसा वा प्लास्टिक आदिसँ बनल आँखिसँ देखल जाएवला भागसभकेँ कम्प्यूटरक हार्डवेयर कहल जाइत अछि। मुदा कम्प्यूटरक हार्ड डिस्कमे राखल आ संरक्षित कएल जाइत इन्टरनेट ब्राउजर, भिडियो चलएबाक प्रणाली आदिकेँ सफ्टवेयर कहल जाइत अछि।

प्रारम्भमे गणनेटाक लेल प्रयोग होइत कम्प्यूटरक आइकाल्हि मानव आ वनस्पति जगतक हरेक क्षेत्रमे प्रयोग कएल जाइत अछि। गृह-निर्माण, इञ्जीनियरिङ, फिल्म-निर्माण, सुरक्षा-व्यवस्था, बैङ्क-

कारोबार, शिक्षा, व्यापार आदिमे ई सहायक भऽ रहल छैक। शिक्षक, लेखक, वैज्ञानिक, कार्यालयक कर्मचारी आदि विविध व्यवसायक लोक अनुसन्धान, सूचनाक आदान-प्रदान, अभिलेख-भण्डारण-संरक्षण आदिक लेल कम्प्यूटरपर निर्भर रहैत छथि। कम्प्यूटरक प्रयोगक सम्बन्धमे किछु जानकारी निम्नलिखित अछि :

शैक्षणिक सामग्रीक रूपमे प्रयोग : शिक्षा-क्षेत्रमे शिक्षण-सिखाइक लेल कम्प्यूटरक प्रयोग कएल जाइत अछि। औपचारिक, अनौपचारिक तथा दूरशिक्षणद्वारा प्रदान कएल जाइत शिक्षाकेँ इन्टरनेट तथा भिडियो आधारित कक्षाक माध्यमसँ सञ्चालन कएल जाइत अछि। ई काज विशेष प्रभावकारी आ उत्पादक होइत अछि।

स्वास्थ्य आ चिकित्सा क्षेत्रमे प्रयोग : स्वास्थ्य सम्बन्धी अनुसन्धानसभक लेल कम्प्यूटर अत्यन्त उपयोगी होइत अछि। हृदयक चालिक जानकारी लेबऽ वला इसीजी जाँच, रेडियोथेरापी आदि कम्प्यूटरक विना सम्भव नहि छल। चिकित्सकीय प्रतिवेदनसभ आब कम्प्यूटरक माध्यमसँ देल जाइत अछि। चिकित्सा-क्षेत्रमे भऽ रहल नव-नव प्रयोग आ खोजक जानकारी प्राप्त करबाक लेल पत्रिका वा पुस्तकपर निर्भरता सेहो कम्प्यूटरेक कारण कमैत जा रहल अछि।

वित्तीय संस्थामे प्रयोग : आइकाल्हि बैङ्क आ आनो-आन वित्तीय संस्थासभ अपन कारोबार कम्प्यूटरक माध्यमसँ करैत अछि। नेटवर्किङक माध्यमसँ आइ एक बैङ्कक पैसा देश-विदेशक कोनहु बैङ्कमे प्राप्त कएल जा सकैछ। ए.टी.एम.क माध्यमसँ सहजतासँ कत्तहु पाइ निकालब आसान भऽ गेल छैक। ईसभ कम्प्यूटरक आविष्कार विना सम्भव नहि छल। आब तँ बिजली, टेलिफोन, पेयजल आदिक बिल कम्प्यूटरक प्रयोगसँ भुगतान कएल जा रहल अछि। बजारमे सामानसभ खरिदारीक लेल सेहो कम्प्यूटरीकृत प्रणाली व्यापक भेल जा रहल छैक।

यातायात क्षेत्रमे प्रयोग : इन्टरनेटक माध्यमसँ बस, रेलगाड़ी, जहाज आदिक आगमन आ प्रस्थानक समयक जानकारी सहज रूपसँ प्राप्त कएल जा सकैछ। कोनहुँ सवारी साधनक टिकट लेबाक लेल वा सीटक अग्रीम आरक्षणक लेल आब कतहु जाए नहि पड़ैत छैक, घरे बैसल इन्टरनेटसँ ई काज सम्भव भऽ जाइत अछि।

सूचनाक आदान-प्रदानमे प्रयोग : कम्प्यूटरमे इन्टरनेटक प्रयोग कएलासँ संसारक कोनहु क्षेत्रमे रहल व्यक्तिसँ श्रव्य, दृश्य, श्रव्य-दृश्य संवाद सहज भऽ गेल अछि। दू वा दूसँ बेसी शहर वा देशमे रहनिहार लोकसभ भिडियो-कन्फ्रेन्स कऽ पैघ-पैघ सम्मेलनक आयोजन कऽ सकैत छथि। विगतमे डाकद्वारा महिनो-महिनामे पहुँचऽ वला चिट्ठी-पत्री आब कम्प्यूटरद्वारा इमेल कएलासँ किछु सेकेण्डक समयमे पहुँचि जाइत अछि।

राज्यक सुरक्षा-व्यवस्थामे प्रयोग : आधुनिक समयमे देशक वाह्य तथा आन्तरिक सुरक्षाक लेल जे विविध साधनक प्रयोग होइत अछि, ताहिमे कम्प्यूटर अति आवश्यक साधन अछि। सुरक्षा-प्रणालीमे

प्रयुक्त मिसाइल तथा अन्य उपकरणक निर्माण, मरम्मत आदिक लेल कम्प्यूटर मुख्य प्रसाधन होइछ। कम्प्यूटर सैनिक तथा सेनाप्रमुखक बीचमे सम्पर्क स्थापित करबाक द्रूत साधन होइत अछि। सुरक्षाक अन्य निकायमे सेहो एही प्रक्रियासँ कम्प्यूटरक प्रयोग होइत आएल अछि।

मुद्रण तथा चित्रणमे प्रयोग : घर-निर्माण करबाक लेल नक्शा निर्माण, पत्र-पत्रिका प्रकाशन, पोथी-पुस्तकसन पाठ्य सामग्रीक प्रकाशन, आकृति तथा ढाँचा निर्माण, चित्राङ्कन आदि काज सहज आ द्रूत गतिमे होएबाक मुख्य कारण अछि कम्प्यूटर।

एकर अतिरिक्त फिल्म देखनाइ, खेल खेलएनाइ, गीत-सङ्गीत सुननाइ आ दृश्य-सामग्रीक आनन्द लेनाइ आदि मनोरञ्जन आ समय बितएबाक साधनक रूपमे सेहो कम्प्यूटरक प्रयोग कएल जा सकैछ।

संसारमे कम्प्यूटरक आविष्कार जतेक युगान्तकारी घटना छल, ओतबए महत्त्वपूर्ण आविष्कार इन्टरनेटकेँ मानल जाइत अछि। कम्प्यूटर एक साधन अछि तँ इन्टरनेट एक प्रविधि। कम्प्यूटर आ इन्टरनेटक जुगलबन्दीसँ वस्तुतः संसारमे सूचना-क्रान्ति आबि गेल। कम्प्यूटरीकृत मोबाइल-फोन तथा अन्य साधनसभक माध्यमसँ अखन विश्वक अधिकांश लोक क्षणभरिमे संसारभरिक अनेको बात देखि, सूनि, जानि सकैत अछि। पछिला समयमे कम्प्यूटर आ इन्टरनेटक उपयोगसँ अनेक प्रकारक सामाजिक सञ्जाल सञ्चालन भऽ रहल छैक। एहि सञ्जालसभक माध्यमसँ लोक अपन मोनक बात, आवश्यक सन्देश तथा सूचनाक सम्प्रेषण त्वरित रूपमे कऽ सकैत अछि। आइकाल्हि एहि साधनसभक प्रयोग बहुतो लोक कऽ रहल अछि। एहन किछु सामाजिक सञ्जालसभक नाम अछि : फेसबुक, ह्वाट्सएप, क्यूक्यू, वीचैट, क्यूजोन, टम्बलर, इन्स्टाग्राम, ट्वीटर, गूगल प्लस, बैडू ताइबा, स्काइपी, भाइबर, पिन्टेरेस्ट, लिङ्कडीन, टेलीग्राम इत्यादि। एहिमेसँ किछु लोकप्रिय सामाजिक सञ्जालक सम्बन्धमे संक्षिप्त जानकारी एहिठाम प्रस्तुत अछि :

फेसबुक : अमेरिकी राज्य कैलिफोर्नियाक मेनलो पार्क नामक स्थानपर मुख्यालय राखि २००४ ईस्वीमे मार्क जुकरवर्ग, क्रीस ह्यूज, डस्टीन मेस्कोविज, इडवार्डो सेभरीनद्वारा फेसबुकक स्थापना कएल गेल। वर्तमानमे दू अरबसँ बेसी लोकद्वारा प्रयोगमे आनल गेल ई विश्वक सभसँ लोकप्रिय सामाजिक सञ्जाल अछि। स्थापनाक प्रारम्भिक समयमे एकर प्रयोग सीमित मात्रामे होइत छल। सन् २००६ मे ई १३ वर्षसँ बेसी वयसक लोक लेल खुला कएल गेल छल।

यूट्यूब : २००५ ईस्वीमे स्थापित, एखन गुगल कम्पनीक स्वामित्वमे रहल युट्यूब श्रव्य-दृश्य सामग्रीक श्रवण आ सम्प्रेषणक लोकप्रिय साधन अछि। अमेरिकाक कैलिफोर्नियाक सैन ब्रूनोमे एकर कार्यालय छैक। पछिला समयमे श्रव्यदृश्य माध्यमक प्रसारण तथा व्यवसायक सेहो एक प्रमुख माध्यम बनि गेल अछि यूट्यूब।

ह्वाट्स एप मैसेञ्जर : खास कऽ आधुनिक स्मार्टफोनक लेल उपयुक्त ई सञ्जाल प्रसिद्ध याहू कम्पनीक पूर्व कर्मचारीलोकनिद्वारा २००९ ईस्वीमे कैलिफोर्नियाक माउन्टेन भ्यू नामक स्थानपर स्थापित कएल गेल । ध्वनि सन्देश आ भिडियो सन्देशक सम्प्रेषणक लेल ई बहुत लोकप्रिय साधन सिद्ध भऽ रहल अछि ।

उपर्युक्त सामाजिक सञ्जालक अतिरिक्त आओरो अनेको साधनसभ इन्टरनेटक सुविधा रहल स्थानपर कम्प्यूटरक माध्यमसँ सहजतापूर्वक प्रयोग कएल जा सकैछ आ घरे बैसल अपन मोनक बात वा खबरि चटपट सम्प्रेषित एवं ग्रहण कएल जा सकैछ ।

एहि तरहेँ कम्प्यूटर बहुतरास कार्य करबाक लेल हमरासभक दक्षतामे अभिवृद्धि कएलक अछि । कम्प्यूटर डिजिटल प्रारूपमे लाखो पृष्ठक जानकारी सङ्ग्रहित कऽ सकैत अछि । एहिमे पैघ-पैघ सूचनाकेँ संरक्षित कएल जा सकैत अछि । कोनो दस्तावेज़केँ तैयार करबाक लेल, सम्पादित करबाक लेल आ सहेजिकऽ रखबाक लेल वर्ड प्रोसेसिङ सफ्टवेयरक उपयोग कएल जा सकैछ । कम्प्यूटरेक कारणसँ कागजरहित कार्यालयक अवधारणा अन्ततः अपन आकार लऽ रहल अछि । कम्प्यूटरकेँ अध्ययनक माध्यमक सङहि एक मनोरञ्जन उपकरणक रूपमे सेहो प्रयोग कएल जाइत अछि ।

मुदा, कतबो लाभदायी वस्तुक किछु ने किछु हानि सेहो देखल जाइत अछि । जँ सही प्रयोग नहि कऽ दुरुपयोग कएल गेल वा असावधानी राखल गेल तँ ओहिसँ नोक्सानी सेहो होइत छैक । कम्प्यूटरक किछु नकारात्मक पक्षसभ सेहो अछि, जे निच्चा देल जा रहल अछि :

कम्प्यूटरमे नव-नव प्रविधि द्रूत गतिएँ विकसित भऽ रहल अछि । तेँ एकर हार्डवेयर आ सफ्टवेयरक निरन्तर स्तरोन्नति करैत रहऽ पड़ैत छैक, जाहिमे अतिरिक्त समय आ खर्च लगैत अछि । कम्प्यूटरमे भाइरस आ मेलवेयरक खतरा हरदम रहैत अछि, जे कम्प्यूटरमे सञ्चित तथ्यसभकेँ नष्ट कऽ दैत छैक वा बिगारि दैत छैक । अतः कम्प्यूटरमे रहल महत्त्वपूर्ण आ संवेदनशील डाटा सुरक्षित रखबाक लेल विभिन्न एन्टीभाइरसक उपयोग करैत रहऽ पड़ैत छैक । तहिना कम्प्यूटरक प्रयोगमे व्यापकता अएलाक बाद कम्प्यूटरक ज्ञान नहि भेनिहार लोकक रोजगार क्षमतापर नकारात्मक असर भेल अछि । वर्तमान समयमे कम्प्यूटर चलएबामे असमर्थ लोककेँ निरक्षरजकाँ मानल जाइत अछि । एहन निरक्षरक लेल रोजगारीक अवसर कम भेटैत अछि । निश्चित दूरीमे नहि रहि आ बेसी कालधरि कम्प्यूटर चलेलासँ आँखि आ शरीरक आनो अङ्गमे रोग लगबाक सम्भावना रहैत अछि ।

विद्यार्थीसभद्वारा अध्ययन-सामग्रीक अतिरिक्त भिडियो गेम, फिल्म, अन्य अनुपयुक्त सामग्रीक अवलोकन कएलासँ पढ़ाइ बिगड़ैत छैक । सामाजिक सञ्जालसभक अनावश्यक आ अनुचित प्रयोग कएलासँ कतेको समस्या उत्पन्न होइत छैक आ साइबर क्राइम अन्तर्गत दण्डित होएबाक सम्भावना सेहो रहैत छैक ।

तेँ कोनहुँ क्षेत्रक आ व्यवसायक लोककेँ कम्प्यूटरक चामत्कारिक लाभ लेबाक चाही आ एहिसँ सम्भावित खतरासभसँ बचल रहबाक चाही ।

शब्दार्थ

उपकरण = यन्त्र, साधन
आयाम = क्षेत्र, विधा
पीढ़ी = पुस्ता
गणितज्ञ = गणितक विशेषज्ञ
अनवरत = निरन्तर
अद्यावधि = एखनधरि, एखनहु
कृत्रिम = बनौआ, अवास्तविक, मानव निर्मित
पेयजल = पिबए वला पानि
बौद्धिकता = ज्ञान, बुद्धिमान होएबाक अवस्था
व्यापक = अधिक दूरधरि पसरल
ध्वनि-निर्देश = आवाजसँ देल जाइत निर्देशन
प्रस्थान = गेनाइ, विदाह भेनाइ
अभिलेख = वचन/वृत्तान्तक लिखित विवरण
वाह्य = बाहिरी
वित्तीय = आर्थिक, रुपैया-पैसासँ सम्बन्धित
सम्प्रेषण = पठेनाइ, प्रेषित कएनाइ
प्रणाली = व्यवस्था, प्रक्रिया, कार्यविधि, पद्धति
आगमन = अएनाइ, आबि गेनाइ
अग्रीम = अगाउ, समयसँ पहिनहि
मुद्रण = छपबाक काज, छपनाइ
त्वरित = अत्यन्त कम समयमे, जल्दी, तुरत
मुख्यालय = मुख्य कार्यालय रहल स्थान
वयस = उमेर
द्रूत = तेज गतिमे
स्तरोन्नति = स्तर वा गुणकेँ आगाँ बढ़एनाइ
भण्डारण = सञ्चय करबाक काज, जमा कएनाइ
औपचारिक शिक्षण = स्कूल/कॉलेजमे विद्यार्थीक रूपमे पढ़ाइ
अनौपचारिक शिक्षण = स्कूल जएबाक उमेरक बाद घरेमे कएल गेल पढ़ाइ
दूर-शिक्षण = रेडियो/टीभी/इन्टरनेटक माध्यमसँ कएल गेल पढ़ाइ
आरक्षण = पहिनहिसँ छेकल गेनाइ, अग्रीम रूपेँ सुरक्षित करबाक काज

अभ्यास

श्रवण-शिल्प (सुननाइ)

१. **पाठक अन्तिम अनुच्छेद शिक्षकसँ सुनू आ निम्नलिखित वाक्यसभ सत्य अछि कि असत्य, कहू :**

(क) कम्प्यूटरक स्तरोन्नति करबाक लेल खर्च नहि लागैत अछि ।

(ख) कम्प्यूटरक प्रयोग नहि जानऽ वलाक रोजगारी घटल अछि ।

(ग) विद्यार्थीसभक पढ़ाइमे कम्प्यूटरक अत्यधिक प्रयोग नकारात्मक प्रभाव दैत अछि ।

(घ) सामाजिक सञ्जाल कहियो काल दण्डित सेहो करा सकैछ ।

(ङ) कम्प्यूटरमे एकबेर सञ्चित कएल गेल तथ्य कहियो नष्ट नहि होइत अछि ।

२. **पाठक शुरुआती चारिटा अनुच्छेद प्रारम्भसँ "विभाजित कएल गेल अछि" धरि शिक्षकसँ कमसँ कम तीनबेर सुनू आ निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर लिखू :**

(क) कम्प्यूटरकेँ मैथिलीमे की कहल जाइत अछि ?

(ख) मानव जीवनक कोन क्षेत्रमे कम्प्यूटरक प्रयोग होइत अछि ?

(ग) पहिल कम्प्यूटरक आविष्कार के कएलनि ? कहिया कएलनि ?

(घ) आधुनिक कम्प्यूटरक इतिहास कहियासँ प्रारम्भ होइत अछि ?

३. **पाठक कोनहु दूटा अनुच्छेद श्रुतिलेखन करू ।**

कथन-शिल्प (बजनाइ)

४. **निम्नलिखित शब्दसभ शुद्धसँ उच्चारण करू :**

विद्युतीय, व्यक्तिगत, बौद्धिकता, शैक्षणिक, स्वास्थ्य, आरक्षण, सम्प्रेषित, स्तरोन्नति, दण्डित ।

५. **अङरेजी भाषाक निम्नलिखित शब्दसभ मैथिलीओमे जहिनाके तहिना प्रयोग करऽ पड़ैत छैक । किएक तँ एकर मैथिलीकरण कएनाइ कि तँ असम्भव अछि वा कम बोधगम्य अछि । एहि शब्दसभक मैथिली अर्थ गुगलसँ खोजिकऽ कहबाक प्रयास करू :**

डिजिटल, डिस्क, लैपटप, मनीटर, माउस, हार्डवेयर, सफ्टवेयर, भिडियो, बैङ्क, टेलिफोन, फेसबुक, स्मार्टफोन ।

६. अङरेजी भाषासँ आएल आओरो विदेशज वा आगन्तुक शब्दसभ पाठमेसँ ताकिकऽ सभकेँ सुनाउ ।

७. कम्प्यूटरसँ होइबला हानिसभक सम्बन्धमे अपन मनतब कक्षामे बाजिकऽ प्रस्तुत करू ।

पठन-शिल्प (पढ़नाइ)

८. पाठक अनुच्छेदसभ बेरा-बेरी शुद्धपूर्वक सस्वर पढ़ू आ से पढ़बामे कतेक समय लागल, अभिलेख राखू । उएह अनुच्छेद पढ़बामे सभसँ कम समय कोन विद्यार्थीकेँ लगलैक, पता लगाउ ।

९. पाठकेँ पढ़ू आ एहिमे रहल मुख्य-मुख्य तथ्यसभक टिपाउत करू ।

१०. पाठकेँ पढ़िकऽ निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर लिखू :

(क) देश-विदेशक लोकसभ अलग-अलग स्थानपर रहिकऽ सेहो कोना सम्मेलन कऽ लैत अछि ?

(ख) फेसबुककेँ सभसँ लोकप्रिय सामाजिक सञ्जाल किएक मानल जाइत छैक ?

(ग) बैंकक ग्राहकक लेल कम्प्यूटर कोन तरहेँ उपयोगी अछि ?

(घ) चारिम पीढ़ीक कम्प्यूटरक की विशेषता हएत ?

(ङ) 'लैपटप' नाम किएक पड़ल ?

लेखन-शिल्प (लिखनाइ)

११. निम्नलिखित शब्दसभकेँ वाक्यमे प्रयोग करू :

प्रणाली, उपकरण, कारोबार, संरक्षण, अनुसन्धान, मुद्रण, लोकप्रिय, सम्प्रेषण, संवेदनशील, अनुपयुक्त ।

१२. निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर लिखू :

(क) कम्प्यूटरकेँ विज्ञानक अनुपम उपहार किएक कहल गेल अछि ?

(ख) चार्ल्स बैबेजक आविष्कारसँ पहिने कम्प्यूटर ककरा कहल जाइत छलैक ?

(ग) इन्टरनेटक मदतिसँ कथी-कथीक रकम भुगतान कएल जा सकैछ ?

(घ) युट्यूब कोन तरहेँ व्यवसायक रूप लऽ रहल अछि ?

(ङ) कम्प्यूटरक सन्दर्भमे भाइरस आ मेलवेयर ककरा कहल जाइत छैक ?

१३. निम्नलिखित पाठ्यांशक भाव विस्तार करू :

(क) कम्प्यूटरेक कारणसँ कागजरहित कार्यालयक अवधारणा अन्ततः आकार लऽ रहल अछि ।

(ख) कम्प्यूटर आ इन्टरनेटक जुगलबन्दीसँ वस्तुतः संसारमे सूचना-क्रान्ति आबि गेल ।

१४. निम्नलिखित प्रश्नसभक विवेचनात्मक उत्तर दिअ :

(क) कम्प्यूटर वरदानक सङहि अभिशाप सेहो सिद्ध भऽ रहल अछि ।

(ख) आवश्यकता आविष्कारक जननी थिक ।

सृजनात्मक अभ्यास

पाठमे उल्लिखित सामाजिक सञ्जालसभक नामक आतिरिक्त आओरो सञ्जालसभक नाम, प्रारम्भ वर्ष, आविष्कारक, प्रयोगकर्ताक अनुमानित सङ्ख्या तथा सङ्केत चिह्न ताकिकऽ लिखू (आवश्यक हुअए तँ गुगलसँ सेहो ताकल जा सकैछ) । एकटा उदाहरण देल जाइत अछि ।

सञ्जालक नाम	प्रारम्भ वर्ष	मुख्य कार्यालय	आविष्कारक	अनुमानित प्रयोगकर्ता	सङ्केत चिह्न
फेसबुक	२००४ ई.	कैलिफोर्निया	मार्क जुकरवर्ग, आदि	करीब दू अरब	

व्याकरण

१५. निम्नलिखित अनुच्छेदमे प्रयोग भेल संज्ञा (नाम) शब्दकेँ रेखाङ्कन करू :

शशिबाबूकेँ घरडीहक स्थान बड्ड कम । परिवार बड्ड पैघ । आ दशरथ झाक आङन शशिबाबूक देवालसँ सटले छनि पश्चिमदिस । जँ दशरथ झा अपन आङनक पुबरिया हिस्सासँ बारह धूर जमीन शशिबाबूक हाथेँ बेचि लेथि तँ तकर मूल्यक रूपमे चम्पाक बिआहमे हजार-बारह सए टका देबामे शशिबाबूकेँ कोनो कष्ट नहि होएतनि । .....शशिबाबू उद्धार करबाक लेल नहि, बारह धूर घरडीह किनबाक लेल दशरथ झाक आङन आएल छथि । अस्तु, रामगञ्जबालीक गप्पसँ हुनका कोनो प्रसन्नता नहि भेलनि । ओ विरक्त भेलाह जे रामगञ्जबाली मूल कथापर नहि आबि व्यर्थ समय नष्ट कऽ रहल छथि.....लोक अनेरे सन्देह करत जे शशिबाबू किएक अपन पड़ोसियाक आङनमे एत्तेक कालधरि एकान्त कोठलीमे बैसल छथि ।

१६. निम्नलिखित अनुच्छेदमे रेखाङ्कित शब्दसभसँ सर्वनाम, विशेषण आ क्रियापद छुटियाउ :

खाएल-खेलाएल देह । ओना एहिबेरक कातिकमे सत्रहममे प्रवेशे कएलक अछि जनका, मुदा देह छैक जे केराक थम्हजकाँ डगडग कऽ रहल छैक । अखाड़ा खेलाएल सुडौल .... पेट पचकल आ सीना उगल । गैंड़ल-गैंड़ल बाँहि, ताहिपर चानीक चमकैत बाजुबन्द....। रामायण-महाभारतमे वर्णित कोनो सुदर्शन पुरुषजकाँ । आइ दिन ओकर दादी बजैत रहै जे बलु हमर पोता एगो सौँसे भैँसके दूध एसगरे पीबै हबे .... । से साँचे ....गामक कोनो लवका-लुवान अखाड़ापर ओकर बाँहि नहि उनाड़ि सकै छै । जहन जनका मुङरदम्म भाँजऽ लगै छै तँ सरोह देखऽ वलासभकेँ ठकमुरगी लागि जाइ छै । ओ रुकबाक नामे नइ लै छै । अन्तमे गुरु तपेसर पहलमानके कहऽ पड़ै छै जे दोसरोके मेहनति करऽ दही जनका । तपेसर पहलवान एहि अखाड़ाक गुरु अछि । पुरान पहलमान । एक-एक पसेरीके बाँहि आ दुनू कान बुच्च । बल आ दाउ-पँच दुनूक जानकार । ओ कहै छै जे 'जनकामे एक हाथीके बल हइ । अइ बेरक झण्डाक पहलमानीमे ओकरा भुकना पहलमानसँ भिड़ेबै ।'

पाँच हाथक लक्का जुआन । मोछक पम्ह करिया रहल छै । जहन ओ सरकारी पोखरिक दछिनबरिया मोहाड़पर आएल तँ ओकरा कानमे कठालवला बुढ़बाक परातीक मधुर स्वर पड़लै । घूर लग बैसि कठालवला अपन अराध्यदेवकेँ गोहरा रहल छल–

'हम ने जियब बिनु राम .....हे जननी ऽऽऽ

हम ने जियब बिनु राम....'

ओइ दिन जनकाकेँ कठालवलाक पराती बड़ पसिन पड़लै । ओ तिलक सिंह बाबाक थान लग बैसि पराती सुनऽ लागल । ओ बैसबाक बहाना बनाबऽ चाहैत छल । आन दिन जनका कठालवलाकेँ पाखण्डी कहैत छलै । जहन ओ साँझमे नचारी आ भोरमे पराती गाबए तँ ओकर प्रतिक्रिया होइक–

'जतेक काल गीत गबै छह ततेक कालमे एक कट्ठा कोबी किए ने कमा लै छह...!'

ओना भरि दिन खेतमे घुरिआएल रहैए कठालवला ....मुदा भोर-साँझ ओ अपन अराध्यदेवकेँ गोहराएब नहि बिसरैए । ओकर कहब छैक–

'रे मरदे.....पहिने कर्म कर आ तखन फलके आश ...। भगवानो ओकरे मदति करै छथिन जे अपन काज इमानदारीसँ करैए....।'

१७. पाठक निम्नलिखित अनुच्छेदसँ संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आ क्रियापद छुटियाकऽ अलग-अलग तालिकामे लिखू :

कम्प्यूटर शब्द अङरेजी शब्द कम्प्यूट (compute) सँ बनल अछि, जकर अर्थ होइछ गणना कएनाइ । कम्प्यूटर शब्दकेँ मैथिली, नेपाली, हिन्दी भाषासभमे सुसाङ्ख्य अर्थात सुन्दर तरीकासँ

सङ्ख्याक गणना करऽ वला उपकरण कहल जाइत अछि, मुदा सुसाङ्ख्य शब्दक स्थानपर अङरेजी शब्द कम्प्यूटरक प्रयोग प्रचलित अछि। ओना आधुनिक कम्प्यूटर सङ्ख्यात्मक गणना मात्र नहि कऽ मानव-जीवनक हरेक क्षेत्रमे उपयोगी अछि।

विगत शताब्दीसभमे विज्ञानक अनेक आविष्कारसभ भेल, जे जीवनक हरेक आयाममे सहजता अनलक अछि। मुदा ओहि आविष्कारसभमे कम्प्यूटर आधुनिक प्रविधिक महानतम खोज आ प्राणी जगतक लेल एहन उपहार थिक जे कोनहु प्रकारक कार्य कऽ सकैत अछि। कम्प्यूटरक प्रयोग एतेक व्यापकता प्राप्त कएने जा रहल अछि जे मानव-जीवनक कोनहु क्षेत्र एकर प्रयोगसँ बचल नहि अछि।

मानल जाइत अछि जे यन्त्रयुक्त आधुनिक स्वरूपक पहिल कम्प्यूटरक आविष्कार ब्रिटिश गणितज्ञ चार्ल्स बैबेजद्वारा १८३३ सँ १८७१ ईस्वीक अवधिमे कएल गेल। चार्ल्स बैबेजक एहि आविष्कारसँ पहिने कम्प्यूटर ओहि मनुक्खकेँ कहल जाइत छल, जे दिनभरि बैसिकऽ जोड़-घटाओ, गुणा-भाग करैत छल।

चार्ल्स बैबेजक कम्प्यूटरकेँ विकसित कऽ आधुनिक कम्प्यूटरक निर्माण भेल, जकर इतिहास १९३७ ईस्वीसँ प्रारम्भ होइत अछि। कम्प्यूटरक इएह स्वरूप एखनधरि अनवरत विकसित होइत गेल अछि। आधुनिक कम्प्यूटरक इतिहासकेँ तीन पीढ़ी (generation) मे विभाजित कएल गेल अछि।

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रियापद

अनुकरणात्मक शब्द

आन भाषाजकाँ मैथिलीमे सेहो दूटा शब्द एक्कहि सङ्ग प्रयुक्त भऽ वाक्यक अन्य शब्दक विशेषता वा किछु विशेष गुणक बोध करबैत अछि। एहन शब्द द्विरुक्ति अथवा अनुकरणात्मक शब्द कहबैत अछि। जेना :

हमर गाए कारी **खुटखुट** अछि। पण्डितजी उज्जर **धपधप** धोती पहिरने छथि।

द्रष्टव्य : एहि वाक्यसभमे **खुटखुट** आ **धपधप** अनुकरणात्मक शब्द वा द्विरुक्ति थिक ।

किछु अनुकरणात्मक शब्दसभ निम्नलिखित अछि :

खट-खट, भट-भट, लट-लट, पट-पट, चक-चक, खल-खल, चम-चम, चप-चप, छट-छट, टन-टन, भुस-भुस, झल-झल, भन-भन, भर्र-भर्र, घर्र-घर्र, फुर-फुर, मिस-मिस, ढाउस, टँस, डग-डग, सट-सट, बक-बक, धाँहि-धाँहि, टाँहि-टाँहि, ढन-ढन, छम-छम, फट-फट आदि ।

द्रष्टव्य : उपर्युक्त अनुकरणात्मक शब्दसभकेँ वाक्यमे प्रयोग करू । जेना :

हमरा गाछक आम **पिअर ढाउस** अछि । अनारक बिआ लाल टँस अछि ।

यात्राक महत्त्व

■ *विजेता चौधरी*

स्थान- इसकुल-बसक बीचबला सीट

समय- कातिक मासक एकटा भोरहरिया

पात्र- सुनीता मण्डल

(सुनीता मण्डल जनकपुरधामस्थित नमूना विद्यालयक कक्षा १० मे अध्ययनरत छात्रा छथि । हुनका अपना कक्षाक अव्वल विद्यार्थी मानल जाइत छनि । विद्यालयक वार्षिक शैक्षिक भ्रमणक क्रममे शिक्षक-शिक्षिकासभक सङ्ग कक्षा १० क चालीस विद्यार्थीक समूह सप्तरी जिलामे अवस्थित छिन्नमस्ता भगवतीक दर्शन, भ्रमण हेतु जा रहल अछि । भ्रमणक लेल स्कूल-बसक व्यवस्था कएल गेल अछि । छिन्नमस्ता भगवती मन्दिरकेँ शक्तिपीठ मानल गेल अछि । सुनिता लोकसभक मुहेँ सुनने छथि जे एहि क्षेत्रमे देश-विदेशक लोकसभ भ्रमणक लेल अबैत अछि । बसमे यात्राक समयमे सुनिताक मोनमे छिन्नमस्ता मन्दिरक सम्बन्धमे विभिन्न विचारसभ आबि रहल छैक ।)

अहाहा ...., कतेक सुन्दर आ शान्त परिसर हेतैक ! चारूभर हरियरीसँ छारल । एहन ठाम नहि जएबाक मोन ककरा हेतैक !

मिथिलामे सेहो एतेक सुन्दर ओ ऐतिहासिक पर्यटकीय स्थल छैक से तँ हमरा बुझले नहि रहए । सप्तरी जिलाक मुख्यालय राजविराज आ आसपासक लोक बड़ भागमन्त छथि जे हरसट्ठो एहि मन्दिरक दर्शन-भ्रमण करैत रहैत छथि ।

(सामाजिक शिक्षाक शिक्षकद्वारा देल गेल छिन्नमस्ता मन्दिर परिशरक चित्र देखैत) वाह, कतेक विशाल आ साफ पोखरि छैक ! आ से मन्दिरसँ सटले । एहिठाम नहा-सोनाक लोक पवित्र मोनसँ भगवतीक दर्शन करैत अछि कहाँदन ।

ओहोहो, कतेक ठण्ढा पानि हेतैक, मोन होइत अछि हम ओतऽ जाइते देरी एक चुरुक पीबि ली । हेडमिस हमरासभकेँ एहि पोखरिक जानकारी पहिने नइ देलनि नइ तँ हमहुँसभ एत्तहि नहैतहुँ आ भरिमोन हेलितहुँ । (रुसल सनके मुह बनबैत अछि)

ओना सभगोटे नहाए लगितै तँ भ्रमण-तालिका सेहो गड़बड़ा सकैत छलैक। जे होउक, मन्दिरक भ्रमणसँ बहुतरास नव तथ्यक जानकारी भेटत आइ। नव-नव ज्ञान प्राप्त हएत।

हेडमिस कहैत छलीह जे राजविराजसँ मन्दिर मात्र १० किलोमीटरक दूरीमे अवस्थित छैक जे सड़क मार्गसँ जोड़ल छैक। बाटक रमणीयता सेहो ततबए आकर्षक छै। जनकपुरे क्षेत्रजकाँ दूर-दूरधरि पसरल खेत, पाकिकऽ निहुरल धानक शीषसँ सम्पूर्ण धर्ती स्वर्णप्रदेशसन लगैत हेतैक। एहनमे भोरुका सुरुजक किरण चकमक-चकमक करैत कतेक मनोरम दृश्य बनबैत हेतैक !

(चित्रमे मन्दिरक भीतर रहल मूर्त्तिसभकेँ देखि मुस्किआइत) ओहो, कहल जाइ छै जे करिया पाथरसँ बनल ई मूर्ति बहुते कलात्मक छैक ! मुदा देवीक गर्दनि कटल छनि अर्थात मस्तक नहि छनि, तेँ देवीक नाम छिन्नमस्ता राखल गेल छैक कहाँदन।

किछु गोटेक कहब छैक जे मिथिलामे भेल मुसलमानी आक्रमणमे मन्दिरसभकेँ क्षति पहुँचएबाक क्रममे सखड़ेश्वरी मन्दिरकेँ सेहो ढाहि देल गेलैक। मन्दिरक अन्तर्गृहमे रहल महिषासुर मर्दिनी भगवतीक मूर्त्ति सेहो तोड़िक पोखरिमे फेकि देल गेलैक। बहुत वर्ष बाद पोखरिक जिर्णोद्धार भेलापर भगवतीक मुड़ी कटल मूर्त्ति भेटल आ एखनुक मन्दिरमे स्थापित कएल गेल। हम एकठाम पढ़ने रही जे इतिहासकारोसभक इएह कहब छनि जे मिथिलापर भेल मुसलमानी आक्रमणमे एहिठामक मन्दिर आ मूर्तिसभ क्षत-विक्षत कऽ देल गेल छल, जाहिसँ एहिठामक मूल देवीक सिर टूटल छनि।

गे दाइ ! कतेक रहस्यसभ छैक ! तेँ ने एहि भगवतीकेँ छिन्नमस्ता कहल जाइछै ! जे होउक, मुदा ई मन्दिर जतेक ऐतिहासिक छैक ओतबए दर्शनीय सेहो।

(बसक खिड़कीसँ बाहर तकैत) हमरासभक सामाजिक शिक्षक कहैत छलखिन जे ई मन्दिर सखड़ा भगवतीक नामसँ सेहो प्रसिद्ध अछि। ई मन्दिर जइठाम अवस्थित छैक, ओहि जगहक नाम सेहो सखड़ा छैक। ई सखड़ेश्वरी भगवती सेहो कहाइत छथि। सर कहने छलाह जे एकरा शक्रेश्वरीक अपभ्रंश सेहो मानल जाइत अछि। राजेविराज रहनिहार मिथिलाक प्रसिद्ध इतिहासकार हरिकान्त लाल दासक अनुसार राजा शक्रसिंह देव एहि मन्दिरक निर्माण करौने छलाह। हुनके नामसँ भगवतीक नाम पड़लनि शक्रेश्वरी, जे अपभ्रंसित होइत सखड़ेश्वरी भेल आ एहि स्थानक नाम सखड़ा सेहो पड़ि गेल कहाँदन। ई शक्रसिंह कर्णाटवंशक राजा छलाह, जाहि वंशक राज्यकालमे मिथिलाक नीक विकास भेल छल। हिनकासभक राजधानी सिमरौनगढ़ छलनि, जे अखन प्रदेश नं. २ के पश्चिममे रहल बारा जिलामे पड़ैत छैक। जे होउक, एक्कहिटा मन्दिरक दू-दूटा प्रचलित नाम हमरा एकर आओर तहधरि जाए लेल प्रेरित कऽ रहल अछि। आजुक भ्रमणक बाद एकटा विस्तृत संस्मरण विद्यालयक स्मारिकामे लिखब आ संक्षिप्त वर्णन इस्कुलक भितही-पत्रिकामे सेहो देबैक।

सखड़ा मन्दिरक पीठाधीशसँ सेहो आइ गपसप करब आ मन्दिरक सम्बन्धमे आओरो जनतब लेब। विश्वास अछि जे ओ राजा शक्रसिंहवला सन्दर्भक पुष्टि करताह। हुनकासँ पूछब जे बारहम शताब्दीमे निर्मित एहि मन्दिरक जिर्णोद्धार आ पुनर्निर्माण कहिया भेल छैक ? वाह ! ई तँ सहीमे ऐतिहासिक जानकारी भेटत। तेँ तँ यात्रा महत्त्वपूर्ण होएबाक बात सरसभ कहैत रहैत छथि। भ्रमणक सङ्ग नव-नव जानकारी भेटैत छैक आ बौद्धिक विकास सेहो होइत छैक। से बात एकदम ठीक बुझा रहल अछि। मुदा जिज्ञासा बढ़ि गेल अछि जे मन्दिरक पहिनुका स्वरूप केहन रहल हएतैक !

(बस रुपनी बजार पहुँचि गेल अछि आ आब पूर्व-पश्चिम लोकमार्ग छोड़ि राजविराजदिस घुमि गेल अछि।)

राजविराजक नाम अबिते राजविराजसँ प्रकाशित सखड़ेश्वरी भगवती दर्शन नामक पुस्तकमे कहल गेल तथ्य मोन पड़ि गेल । ओहि पुस्तक अनुसार वर्तमान मन्दिर वि.सं २०४३ सालमे भारतक लोकप्रिय नेता आ तत्कालीन केन्द्रीय मन्त्री ललितनारायण मिश्रद्वारा बनबाओल गेल छैक । कहल जाइत अछि जे नेता मिश्र एकबेर विमान दुर्घटनामे पड़ि गेल छलाह आ ताहि सङ्कटक अवस्थामे सखड़ा भगवतीकेँ गोहरबैत रहलाह आ बाँचि गेलाह कहाँदन । तकरा बाद भगवतीप्रति लतिबाबूक मोनमे अगाध श्रद्धा भेलनि आ ओ ई मन्दिर बनबौलनि । ओना सुनने छी जे सखड़ा मन्दिरक प्रति नेपाल आ भारत दुनूदिसक मिथिलावासीसहित आम लोकमे अगाध आस्था पाओल जाइत अछि ।

(राजविराजसँ बस बाहर भऽकऽ सखड़ा लगिचा गेल अछि ।)

अहाहा ! आब तँ मन्दिरो देखा रहल अछि । मन्दिरक विषयमे अनेक किंवदन्तीसभ प्रचलित छैक । एहिमे की-कतेक सत्यता छै आ मन्दिरक महिमा कते छै से तँ स्वयं देखबे-बुझबे करब आइ । मन्दिरक अनेक पक्षक विषयमे जनबाक उत्कण्ठा आओर बढ़ि गेल अछि । मुदा एहिबेर तँ स्कूलक समूहमे छी तेँ बेसी रहबाक समय नहि भेटत । बादमे माए-बाबूजी सङ्गे एहिठाम आएब तँ आओर भरिमोन जानकारी लेब ।

(ताबतहिँ गाड़ीक हर्न जोड़-जोड़सँ बजैत छैक आ सबकेँ बेरा-बेरी पंक्तिबद्ध भऽ उतरबाक लेल कहल जाइत अछि । सुनीतासहित सभ विद्यार्थी गाड़ीसँ उतरिकऽ मन्दिरदिस विदा होइत अछि । सुनिता अपन डायरी लेबऽ नहि बिसरैत अछि ।)

शब्दार्थ

मनोवाद = स्वयंसँ मनहि मन कएल गेल संवाद

परिसर = क्षेत्र, इलाका (compound)

नानाभाँति = विभिन्न प्रकारक, बहुत रास

अव्वल = उत्कृष्ट, सभसँ उत्तम

आँजुर = नाओ-सदृश जोड़ल हाथ

रहस्यमय = गुप्त जानकारी रहल

ऐतिहासिक = इतिहासमे उल्लेख, इतिहास सम्बन्धी

अपभ्रंश = शब्दक बिगड़ैत आ बदलैत जाइत उच्चारण वा हिज्जे

पर्यटकीय = घुमबायोग्य, दर्शनयोग्य

जिर्णोद्धार = पुरान संरचनाक पुनः सुधार वा निर्माण

जिज्ञासा = जनबाक इच्छा

भितही-पत्रिका = मोख पत्रिका, भित्तापर साटल जाइत एक पन्नाक पत्रिका

भागमन्त = भाग्यक बलवान

अगाध = अथाह, बड़ गहींर

हरसट्ठो = हरदम, निरन्तर

रमणीय = सुन्दरता

निहुरल = झुकल

उत्कण्ठा = लालसा, इच्छा

मूल = प्रमुख

क्षतविक्षत = ध्वस्त, टुटलफुटल

अन्तर्गृह = भीतरी भाग वा क्षेत्र

संस्मरण = अपन अनुभवक वृत्तान्त

अभ्यास

श्रवण-शिल्प (सुननाइ)

१. **पाठक अन्तिम दूटा अनुच्छेद शिक्षकसँ सुनिकऽ निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर लिखू :**

(क) सखड़ेश्वरी भगवतीक वर्तमान मन्दिर के बनबौने रहथि ?

(ख) ललित बाबू ई मन्दिर किएक बनबौने रहथि ?

(ग) सखड़ेश्वरी मन्दिरक वर्तमान स्वरूपक निर्माण कहिया भेल ?

(घ) मन्दिरमे रहल मूर्त्तिक महिमा ललित बाबू कोना बुझलथि ?

२. **पूरे पाठ शिक्षकसँ सुनिकऽ मन्दिर आ एकर परिसरक कोनो पाँचटा विशेषतासभ विन्दुगत रूपेँ टिपाउत करू ।**

३. **पाठक कोनहुँ एकटा अनुच्छेद शिक्षकसँ सुनिकऽ श्रुति-लेखन करू ।**

कथन वा वाचन-शिल्प (बजनाइ)

४. भगवतीक 'छिन्नमस्ता' नाम किएक पड़ल ? पाठक आधारपर विचार प्रस्तुत करू ।

५. निम्नलिखित शब्दसभक उच्चारण करू :

अव्वल, छिन्नमस्ता, प्राङ्गण, पर्यटकीय, क्षत-विक्षत, संस्मरण, बौद्धिक, उत्कण्ठा, अन्तर्गृह ।

६. उपर्युक्त शब्दसभकेँ अपन वाक्यमे प्रयोग कऽकऽ कहू आ लिखू ।

पठन-शिल्प (पढ़नाइ)

७. पाठक अनुच्छेदसभ हाओभाओसहित बेरा-बेरी सस्वर पढ़ू ।

८. पाठकेँ पढ़िकऽ निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर दिअ :

(क) ई शैक्षिक भ्रमण कोन मासमे कएल गेल अछि ?

(ख) सप्तरी जिलाक लोककेँ किएक भागमन्त कहल गेल अछि ?

(ग) धर्ती किएक स्वर्णप्रदेशसन लगैत अछि ?

(घ) शक्रसिंह के छलाह ?

(ङ) ललित बाबूकेँ भगवतीक प्रति अगाध श्रद्धा किएक भेलनि ?

९. निम्नलिखित अनुच्छेदक एक तृतीयांशमे सारांश लिखू :

सामाजिक शिक्षक कहैत छलखिन जे ई मन्दिर सखड़ा भगवतीक नामसँ सेहो प्रसिद्ध अछि । ई मन्दिर जइठाम अवस्थित छैक, ओहि जगहक नाम सेहो सखड़ा छैक । ई सखड़ेश्वरी भगवती सेहो कहाइत छथि । एकरा शक्रेश्वरीक अपभ्रंश सेहो मानल जाइत अछि । राजेविराज रहनिहार मिथिलाक प्रसिद्ध इतिहासकार हरिकान्त लाल दासक अनुसार राजा शक्रसिंह देव एहि मन्दिरक निर्माण करौने छलाह । हुनके नामसँ शक्रेश्वरी, सखड़ेश्वरी होइत भगवतीक नाम सखड़ा सेहो रहलनि कहाँदन । ई शक्रसिंह कर्णाटवंशक राजा छलाह, जाहि वंशक राज्यकालमे मिथिलाक नीक विकास भेल छल । हिनकासभक राजधानी सिमरौनगढ़ छलनि, जे अखन प्रदेश नं. २ क पश्चिममे रहल बारा जिलामे पड़ैत छैक । जे होउक, एक्कहिटा मन्दिरक दू-दूटा प्रचलित नाम हमरा एकर आओर तहधरि जाए लेल प्रेरित कऽ रहल अछि । आजुक भ्रमणक बाद एकटा विस्तृत संस्मरण विद्यालयक स्मारिकामे लिखब आ संक्षिप्त वर्णन इस्कुलक भितही-पत्रिकामे सेहो देबैक ।

लेखन-शिल्प (लिखनाइ)

१०. निम्नलिखित शब्दसभक विपरीतार्थक शब्द लिखू :

अव्वल, शान्त, भागमन्त, रुसल, निहुरल, मुसकिआइत, अपभ्रंश, बौद्धिक ।

११. निम्नलिखित शब्दसभकेँ वाक्यमे प्रयोग करू :

भ्रमण, आँजुर, कलात्मक, विकास, प्रचलित, आस्था, अगाध, पुनर्निर्माण, किंवदन्ती, शताब्दी ।

१२. निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर लिखू :

(क) पोखरिक पानिक बात मोनमे अएलाक बाद ओ किएक रुसलसन मुह बनबैत अछि ?

(ख) भगवतीक नाम छिन्नमस्ता किएक पड़लनि ?

(ग) भगवतीकेँ सखड़ेश्वरी किएक कहल जाइत अछि ?

(घ) आधुनिक मन्दिरक निर्माण भारतक कोन राजनेता कएने छलाह ?

(ङ) कर्णाटवंशी राजालोकनिक राजधानी कतऽ छल ? ओ स्थान एखन कतऽ पड़ैत अछि ?

(च) एहि मनोवादमे किनकर भावना व्यक्त कएल गेल अछि ?

१३. समूह (अ) मे रहल शब्दसभकेँ समूह (आ) क शब्दसभसँ जोड़ा मिलाउ :

समूह (अ)	**समूह (आ)**
(क) ललितबाबू	१. वि.सं २०४३
(ख) मन्दिरक निर्माण	२. बारा जिला
(ग) हरिकान्त लाल दास	३. भारतक लोकप्रिय नेता
(घ) मन्दिरक मूर्त्ति	४. नेपालक नेता
(ङ) सिमरौनगढ़	५. बारहम शताब्दी
(च) वर्तमान मन्दिर	६. करिया पाथर
	७. इतिहासकार

१४. पाठक कोनहु दूटा अनुच्छेदक अनुलेखन करू ।

१५. निम्नलिखित पाठ्यांशक भाव विस्तार करू :

(क) सप्तरी जिलाक मुख्यालय राजविराज आ आसपासक लोक बड़ भागमन्त छथि ।

(ख) जे होउक, एक्कहिटा मन्दिरक दू-दू टा प्रचलित नाम हमरा एकर आओर तहधरि जाए लेल प्रेरित कऽ रहल अछि ।

१६. निम्न प्रश्नसभक विवेचनात्मक उत्तर लिखू :

(क) सखड़ेश्वरी भगवतीक मन्दिरक ऐतिहासिकता पर अपन विचार प्रस्तुत करू ।।

(ख) छिन्नमस्ता मन्दिर अवस्थित रहल क्षेत्रक प्राकृतिक सौन्दर्यक वर्णन करू ।

सृजनात्मक अभ्यास

(ग) कक्षा ९ क परीक्षाफल प्रकाशित भेल दिनक अनुभवकेँ समटि एकटा मनोवाद लिखू ।

व्याकरण

१७. निच्चा लिखल उदाहरण देखू :

विदेश = देश शब्दमे वि उपसर्ग लागिकऽ विदेश शब्द बनल अछि, तेँ देश मूल शब्द थिक । तहिना घुमक्कड़ शब्द = घुम शब्दमे अक्कड़ प्रत्यय लागिकऽ घुमक्कड़ शब्द बनल अछि, तेँ घुम मूल शब्द थिक ।

निम्नलिखित शब्दसभमे मूल शब्द कोन थिक, छुटिआउ :

अनाथ, अपयश, निरुत्तर, उपराग, निरोगी, अमर, बिकाउ, सुखौँत, कुम्हरौट, गपक्कड़, लड़क्का, चुमाओन, चमकौआ, अकाज, विराग, भारतीय, बिहारी, मैथिली, प्रधानता, महानता, कठौत, घटकैती, पढुआ, गबैया, घिनाओन, मिलान, लिखाबटि ।

१८. उपर्युक्त मूल शब्दसभकेँ अपन वाक्यमे प्रयोग करू ।

१९. यात्राक महत्त्व शीर्षक मनोवादमे रहल उपसर्ग वा प्रत्यय लागल शब्दसभ ताकि मूल शब्द पता लगाउ ।

२०. (क) निम्नलिखित उपसर्ग लगाकऽ शब्दसभ बनाउ आ तकरासभकेँ अपन वाक्यमे प्रयोग करू :

अ, आ, अनु, अप, अन, अति, उत्, सं, वि, प्रति, नि, स, सु, दु ।

जेना : अ - अनाथ = अनाथ = पिताक मृत्युक बाद ओ अनाथ भऽ गेल ।

(ख) निम्नलिखित प्रत्यय लगाक॰ शब्दसभ बनाउ आ तकरासभकेँ अपन वाक्यमे प्रयोग करू :

आ, अना, अनि, आक, तोड़, इहार, इहारि, औआ, ऐत, अल, अनीय, अव्य, अत, अब, अय ।

जेना : औआ - देखौआ = देखऔआ = हमरा देखौआ गप्प नीक नहि लगैत अछि ।

२१. निम्नलिखित अनुच्छेदसँ वर्तमान काल आ भविष्यत कालक वाक्यसभकेँ पहिचान करैत अलग-अलग तालिकामे देखाउ आ क्रियासभक पक्ष सेहो छुटिआउ :

शिक्षा क्षेत्रमे आइकाल्हि नव परिवर्तनसभ भ॰ रहल अछि । नेपालक संविधानक प्रावधानसँ मेल खाइवला शिक्षा ऐन आ नियमावलीसभ बनाओल जा रहल अछि । एकर कार्यान्वयन जल्दीए हएत । शिक्षकक नियुक्ति आब आयोगेटा करत । आब हमरासभक धीयापुता केओ बिनु स्कूलक नहि रहत । बीस वर्षमे शिक्षामे आमूल परिवर्तन भ॰ चुकल रहत । बेटीकेँ पढ़एबाक लेल नव कार्यक्रमसभ बनाओल जा चुकल अछि । आइ जे अशिक्षित अछि, से आब शिक्षित भ॰ जाएत । मातृभाषाक माध्यमसँ पढ़ाइक लेल नियम-कानून बनि गेल अछि, मुदा तकर कार्यान्वयन नीकजकाँ नहि भ॰ सकल अछि । आब जल्दीए एहूदिस ध्यान देल जाएत । बेटा, बेटी सभ पढ़ैत रहत । लोकसभ सरकारी नोकरी पओने रहत । एहनमे लोक किएक ने खुशी हुअए ! देशमे नव व्यवस्था आबि रहल अछि आ लोकतन्त्रमे जनताकेँ शिक्षाक हक तँ भेटिते छैक ने !

वाक्य	वर्तमान काल कि भविष्यत काल	पक्षक नाम

भाषातत्त्व सम्बन्धी किछु विशेष जानकारी

काल आ पक्ष

क्रिया कोनो कार्य, घटना वा स्थितिक बोध करबैत अछि । क्रियासँ अभिव्यक्त ई कार्य, घटना वा स्थिति कोनो खास समय– वर्तमान, भूत, भविष्यतमे होइत अछि । जेना : गाछ खसल । एत॰ खसल क्रिया बीतल समय (भूतकाल) मे भेल घटनाक बोध करबैत अछि ।

कोनो वाक्यक क्रियामे प्रत्यय जोड़िक ओकरा वर्तमान, भूत वा भविष्यत कराओल जाइत अछि। एहि समय-सूचक प्रत्ययकेँ काल कहल जाइत अछि। जेना : उपर्युक्त वाक्यमे प्रयोग भेल क्रिया खसल मूल धातु खस आ प्रत्यय अलसँ बनल अछि, जाहिमे प्रत्यय अल बीतल (भूत) समयक बोध करबैत अछि। अतः अल कालक एकटा रूप थिक।

कालक तीन भेद होइत अछि : १. वर्तमानकाल २. भूतकाल ३. भविष्यतकाल।

१. **वर्तमानकाल :** जाहि क्रियासँ एखुनका कार्यक निरन्तरताक बोध होइछ ओकरा वर्तमानकाल कहल जाइत अछि। जेना– कुलदीप पढ़ैत अछि।

वर्तमानकालक तीन भेद (पक्ष) होइत अछि :

(क) सामान्य वर्तमानकाल (ख) तात्कालिक वर्तमानकाल (ग) सन्दिग्ध वर्तमानकाल।

द्रष्टव्य : केओ-केओ आसन्न भूतकालकेँ पूर्ण वर्तमानकाल मानि वर्तमानकालक चारि भेद मानैत छथि, जे मान्य नहि।

(क) सामान्य वर्तमानकाल : क्रियाक ओ रूप जाहिसँ कार्य व्यापार चालू समयमे होएबाक बोध होइत अछि, ओकरा सामान्य वर्तमानकाल कहल जाइत अछि। जेना– अभिनव लिखैत अछि।

(ख) तात्कालिक वर्तमानकाल : जाहि क्रियासँ ई बुझाइक जे कार्य व्यापार चालू समयमे भइए रहल अछि, ओकरा तात्कालिक वर्तमानकाल कहल जाइछ। जेना– गोपेश पुस्तक लिखि रहल अछि।

(ग) सन्दिग्ध वर्तमानकाल : जाहि क्रियाकेँ होएबामे सन्देह हो, मुदा ओकरा वर्तमानमे कोनो सन्देह नहि हो ओकरा सन्दिग्ध वर्तमानकाल कहल जाइत अछि। जेना– शिक्षकसभ पढ़बैत होएताह।

२. **भूत काल :** जाहि क्रियासँ कार्य व्यापारक समाप्तिक बोध होइछ ओकरा भूतकाल कहल जाइत अछि। जेना– छौँड़ा भागल छल।

भूतकालक छओ भेद होइत अछि :

(क) सामान्य भूतकाल (ख) आसन्न भूतकाल (ग) पूर्ण भूतकाल (घ) अपूर्ण भूतकाल

(ङ) सन्दिग्ध भूतकाल (च) हेतुहेतुमद भूतकाल।

(क) सामान्य भूतकाल : जाहि भूतकालक क्रियासँ कोनो विशेष समयक ज्ञान नहि हो, ओकरा सामान्य भूतकाल कहल जाइत अछि। जेना– सीतानन्दन नाचल।

(**ख**) **आसन्न भूतकाल** : जाहिमे क्रियाक समाप्ति तत्काले होएब सूचित होइछ, ओकरा आसन्न भूतकाल कहल जाइत अछि। जेना– फिरोज बेरहट कएने अछि।

(**ग**) **पूर्ण भूतकाल** : जे क्रिया कार्यव्यापार समाप्तिक बहुत पहिने भेल सूचना दैत हो, ओकरा पूर्णभूतकाल कहल जाइत अछि। जेना– मोहन किताब पढ़ने छल।

(**घ**) **अपूर्ण भूतकाल** : कोनो कार्यव्यापार शुरू भेल छल, मुदा ओकर समाप्तिक कोनो पता नहि, उएह अपूर्ण भूतकाल कहबैत अछि। जेना– नारायण पढ़ि रहल छल।

(**ङ**) **सन्दिग्ध भूतकाल** : सन्दिग्ध भूतकाल ओकरा कहल जाइत अछि, जाहिमे सन्देह बनल रहैत अछि जे कार्य पूरा भेल कि नहि। जेना– सुनीता पढ़ने होएतीह।

(**च**) **हेतुहेतुमद भूतकाल** : हेतुहेतुमद भूतकाल ओकरा कहल जाइत अछि, जाहिसँ ई बोध होइत अछि जे कार्य होबऽ वला छल, मुदा कारणवश नहि भऽ सकल। जेना– विद्यानन्द चाहैत तँ लिखैत।

३. **भविष्यतकाल** : भविष्यमे होबऽ वला क्रियाकेँ भविष्यत काल कहल जाइत अछि।

जेना– सुभास गीत गाओत।

भविष्यतकालक चारि भेद होइत अछि :

(क) सामान्य भविष्यतकाल (ख) अपूर्ण भविष्यतकाल

(ग) पूर्ण भविष्यतकाल (घ) सम्भाव्य भविष्यतकाल।

(**क**) **सामान्य भविष्यतकाल** : एहिसँ ई ज्ञात होइत अछि जे क्रिया भविष्यमे सामान्य रूपेँ होएत। जेना– शैलेन्द्र धुन बजाओत।

(**ख**) **अपूर्ण भविष्यतकाल** : जाहिसँ ई बोध होइत अछि जे कार्यव्यापार शुरू भऽ गेल रहत, मुदा ओ अपूर्णे रहत ओकरा अपूर्ण भविष्यतकाल कहल जाइत अछि। जेना– ज्योति गीत गबैत रहत।

(**ग**) **पूर्णभविष्यतकाल** : पूर्ण भविष्यतकाल ओकरा कहल जाइत अछि जाहिमे कार्य पूर्ण रूपेँ समाप्त भऽ गेल रहत। जेना– आयुष पत्र लिखने रहत।

(**घ**) **सम्भाव्य भविष्यतकाल** : जाहिसँ भविष्यमे कार्य होएबाक सम्भावना मात्र व्यक्त हो, ओकरा सम्भाव्य भविष्यतकाल कहल जाइत अछि। जेना– सुधानन्द भजन गाबए।

व्यावसायिक पत्र

दिनाङ्क : २०७९/०३/१६

श्री व्यवस्थापक महोदय,

श्रीजानकी पुस्तक भण्डार,

जानकीपथ, जनकपुरधाम ।

विषय : **पोथी पठएबाक सम्बन्धमे ।**

महोदय,

वर्तमान समयमे अहाँक नवीन साहित्यिक प्रकाशनक कोनो जानकारी नहि भेटल अछि । तेँ नव-नव प्रकाशित पोथीसभक सूचना देल जाए । सङहि, पूर्वप्रकाशित निम्नाङ्कित पोथीसभ पठएबाक कृपा कएल जाए :

क्र.सं.	पोथीक नाम	लेखक	प्रति
१.	भोरुकबा (उपन्यास)	डा. धीरेन्द्र	३०
२.	कादो आ कोइला (उपन्यास)	डा. धीरेन्द्र	२५
३.	काठक लोक (नाटक)	महेन्द्र मलङ्गिया	२५
४.	विदेहक नगरीसँ (कविता-सङ्ग्रह)	महेन्द्र मलङ्गिया (सम्पादक)	१०
५.	तोरा सङ्गे जएबौ रे कुजबा (कथा-सङ्ग्रह)	रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'	२०
६.	माधव नहि अएलाह मधुपुरसँ (कथा-सङ्ग्रह)	डा. रेवतीरमण लाल	१५
७.	मुना-मदन (मैथिली अनुवाद)	पं. सुन्दर झा 'शास्त्री' (अनुवादक)	२५

क्र.सं.	पोथीक नाम	लेखक	प्रति
८.	मैथिली कविता-सङ्ग्रह	भ्रमर/प्रेमर्षि (सं.)	५
९.	मिथिला टाइम्स, सम्पूर्णाङ्क	रामरीझन यादव (सं.)	५०
१०.	मिथिला-वाणी, पत्रिका	महेन्द्र मलंगिया (सं.)	५०
११.	आङन, पत्रिका	डा. योगेन्द्रप्रसाद यादव (सं.)	२०
१२.	क्षितिजक ओहिपार (कविता-सङ्ग्रह)	अयोध्यानाथ चौधरी	१०
१३.	अङ्गदायन (महाकाव्य)	रामचन्द्र झा 'रमण'	१०
१४.	मैथिली संस्कृति (अनुसन्धानात्मक ग्रन्थ)	डा. रामदयाल राकेश	१५
१५.	श्रीमद्भगवद्गीता मैथिली पद्यानुवाद	देवेन्द्र मिश्र	१५
१६.	तोरे छवि (कविता-सङ्ग्रह)	सुश्री यमुना राय	१०
१७.	कोन सुर सजाबी ? (गीत सङ्ग्रह)	धीरेन्द्र प्रेमर्षि	१५
१८.	ई हमरे कथा थिक (कथा सङ्ग्रह)	डा. राजेन्द्र विमल	२०
१९.	भगजोगनी (कविता सङग्रह)	करुणा झा	१०
२०.	सप्तरङ्गी (कविता सङ्ग्रह)	जगदीशप्रसाद यादव सुनरैत	१५
२१.	पघलैत बरफ (कविता सङ्ग्रह)	भुवनेश्वर पाथेय	२१

पोथीसभक सङ्ग कमीशन काटिकऽ बिल सेहो पठा देल जाए। भुगतानी चेकसँ कएल जाएत।

हमर पता

कुशवाहा बुक स्टॉल

मेनरोड, लहान, सिरहा, प्रदेश नं. २, नेपाल।

भवदीय,

राजेन्द्र कुशवाहा

अभ्यास

श्रवण-शिल्प (सुननाइ)

१. **एहि व्यापारिक पत्रकेँ शिक्षकसँ सुनिऽ निम्नलिखित वाक्यसभ ठीक वा गलत की थिक, लिखू :**

(क) मिथिला-वाणी पत्रिकाक सम्पादक रामरिभ्नन यादव छथि ।

(ख) पुस्तकसभक बिल भुगतानी चेकसँ कएल जाएत ।

(ग) श्रीमद्भगवद्गीता मैथिली पद्यानुवादक लेखक अमरेन्द्र यादव छथि ।

(घ) अङ्गदायन एकटा कथा सङ्ग्रह थिक ।

(ङ) ई पत्र राजेन्द्र कुशवाहा लिखने छथि ।

२. **पत्रमे देल पोथीक सूचीमेसँ कोनो १० टाक श्रुतिलेखन करू ।**

३. **पाठकेँ फेरसँ सुनिऽ निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर लिखू :**

(क) काठक लोक नामक नाटकक किताब कतेक प्रति माङल गेल अछि ?

(ख) पत्रमे उल्लिखित अनुवाद विधाक दूटा पोथीक नाम लिखू ।

(ग) जानकी पुस्तक भण्डार कतऽ अछि ?

(घ) विदेहक नगरीसँ नामक कविता सङ्ग्रहक सम्पादक के छथि ?

(ङ) लहानमे कुशवाहा बुक स्टल कतऽ अछि ?

कथन-शिल्प (बजनाइ)

४. **निम्नलिखित शब्दसभक शुद्ध-शुद्ध उच्चारण करू :**

व्यवस्थापक, कापड़ि, प्रेमर्षि, पद्यानुवाद, श्रीमद्भगवद्गीता, संस्कृति, सम्पूर्णाङ्क ।

५. **पाठमे उल्लेख कएल गेल पोथीसभमेसँ कोनो एकटाक सम्बन्धमे कक्षामे सुनाउ ।**

६. **पाठमे रहल व्यावसायिक पत्र लिखब किएक सिखबाक चाही, कक्षामे विमर्श करू ।**

७. **अपनामे विचार-विमर्श करू जे अहाँसभकेँ पाठ्यक्रममे रहल पुस्तकक अतिरिक्त साहित्यिक पुस्तकसभ पढ़नाइ आवश्यक अछि कि नहि ।**

पठन-शिल्प (पढ़नाइ)

८. **एहि व्यावसायिक पत्रकेँ पढ़िकऽ निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर लिखू :**

(क) पाठमे देल गेल पत्र कोन विषयमे लिखल गेल अछि ?

(ख) प्रस्तुत पत्र के, ककरा लिखलक अछि ?

(ग) पत्रमे पोथीक मूल्य कोना पठएबाक वचन देल गेल अछि ?

(घ) विक्रेता प्रकाशकसँ कोन-कोन पत्रिका मङबौलनि अछि ?

(ङ) व्यावसायिक पत्रमे दिनाङ्क कतऽ लिखल जाइत छैक ?

९. **पत्रकेँ एक बेर फेरोसँ पढ़िकऽ निम्नलिखित समूह (अ) मे रहल शब्दकेँ समूह (आ) सँ जोड़ा मिलाउ :**

(क) भोरुकबा	(१) नाटक
(ख) काठक लोक	(२) मैथिली अनुवाद
(ग) तोरा सङ्गे जएबौ रे कुजबा	(३) उपन्यास
(घ) मुना-मदन	(४) कविता-सङ्ग्रह
(ङ) पघलैत बरफ	(५) कथा-सङ्ग्रह
(च) मिथिला टाइम्स	(६) साक्षात्कार
	(७) सम्पूर्णाङ्क

लेखन-शिल्प (लिखनाइ)

१०. **निम्नलिखित शब्दसभक अर्थ लिखि वाक्यमे प्रयोग करू :**

नवीन, सूचना, प्रकाशन, कादो, अनुवाद, पोथी, भुगतान, कमीशन, बिल, ड्राफ्ट ।

११. **पाठमेसँ ह्रस्व इ (ि) आ दीर्घ ई (ी) लागल शब्दसभ छानिकऽ अभ्यास-पुस्तिकामे लिखू ।**

१२. **निम्नलिखित वाक्यकेँ शुद्ध कऽकऽ लिखू :**

पोथि सभहक संग कमिसन काटी कऽ बील सेहो पठा देल जाइ ।

१३. सृजनात्मक प्रश्न :

(क) पाठमे देल गेल व्यावसायिक पत्रक आधारपर ओकर प्रतिउत्तर लिखू ।

(ख) अपन घर बनएबाक सन्दर्भमे ईंटा भट्ठावलाकेँ ईंटाक दर तथा उपलब्धताक सम्बन्धमे प्रश्न करैत एकटा पत्र लिखू ।

१४. समूहमे विभाजित भऽ अपन विद्यालयक पुस्तकालयमे पाठ्यक्रमवला पुस्तकक अतिरिक्त आओर कोन-कोन पुस्तकसभ अछि, तकर समूहगत सूची तैआर करू ।

वर्णविन्यास

१५. पाठमे रहल व अक्षरयुक्त शब्दसभ सङ्कलित करू आ तकर उच्चारण ब होइत अछि, से ध्यान दिअ ।

द्रष्टव्य : मैथिलीमे कतेको ठाम वक उच्चारण ब कएल जाइत अछि, मुदा ओकरा ब रूपमे नहि लिखल जएबाक चाही ।

जेना–

उच्चारण : बैद्यनाथ, बिद्या, नब, देबता, बिष्णु, बंश, बन्दना आदि । एहिसभक स्थानपर क्रमशः वैद्यनाथ, विद्या, नव, देवता, विष्णु, वंश, वन्दना लिखबाक चाही ।

व उच्चारणक लेल ओ प्रयोग कएल जाइत अछि । जेना– ओकील, ओजह आदि ।

व्याकरण

१६. निम्नलिखित अनुच्छेदकेँ पढ़िऽ रेखाङ्कित भूतकालक क्रियापदकेँ अभ्यास पुस्तिकामे लिखू :

हमसभ खाना खएने छी आ खाइत काल टीभी देखि रहल छलहुँ । ओतबए कालमे आदित्य स्कूलक सभटा गृहकार्य कएलक । अदिति तँ गृहकार्य पहिनहि कऽ लेने छलए । एफएम सेहो चालू कएने छलहुँ । आइ मैथिली गीतक विशेष कार्यक्रम छल । तेजू गीत गओने हएत, मुदा हमसभ एफएम नहि सुनैत छलहुँ । हमसभ टीभीमे नृत्य प्रतियोगिता देखि रहल छलहुँ । ई गप्प सुनिकऽ तेजू उपराग देने हएत । ओना हमसभ जँ चाहितहुँ तँ गीत सुनितहुँ । आब पछता कऽ की हएतैक ? घरक सभगोटे खाना खएलक । सभ सुतियो रहल ।

१७. उपर्युक्त भूतकालक क्रियापदसभक पक्षकेँ नाम निम्नलिखित तालिकामे लिखू :

क्रियापदसभ	भूतकालक पक्षक नाम

१८. कोष्ठकमे देल धातु आ सङ्केतक आधारपर रिक्त स्थानकेँ भरू :

(क) महेश उपन्यास .....। (पढ़ : सामान्य भूतकाल)

(ख) हमसभ बराहक्षेत्र .....। (घुम : आसन्न भूतकाल)

(ग) अञ्जू पत्र ..... । (लिख : पूर्ण भूतकाल)

(घ) अरुण बाबू घर .....। (बना : अपूर्ण भूतकाल)

(ङ) सुषमा गीत .....। (गा : सन्दिग्ध भूतकाल)

(च) श्यामजी .....। (नाच : हेतुहेतुमद भूतकाल)

१९. भूतकालक क्रियापदमे विभिन्न पक्षक प्रयोग करैत निम्नलिखित विन्दुसभक आधारपर एकटा कथा लिखू आ एकर शीर्षक सेहो दियौक :

एकटा नढ़िया – भोजनक खोज – दुपहर – भोजन नहि भेटल – भूखसँ व्याकुल – घर घुरैत – एकटा बगीचा – अङ्गुरक लत्ती – पाकल – जीहसँ पानि – छड़पल – असफल – फेर छड़पल – लत्ती ओकर पहुँचसँ बाहर – थाकिकऽ लटुआ गेल – विदाह भऽ गेल – मोनेमन कहलक "भने ई अङ्गुर नहि खेलहुँ। ई कतेक खट्टा छैक ? – हम तँ बीमारे भऽ जाइतहुँ" – एहि कथासँ की शिक्षा भेटल ?

सन्धिविच्छेद सम्बन्धी किछु जानकारी

कखनो दूटा शब्द एक-दोसराक नजदीक आबि जाइछ। एहना स्थितिमे एहि दुनू शब्दक उच्चारणमे सुविधाक लेल पहिल शब्दक अन्तिम वर्ण आ दोसर शब्दक पहिल वर्ण एक-आपसमे मिलि जाइछ। एकर फलस्वरूप दुनू वर्णक मेलसँ एकटा नव रूप बनैत अछि। वर्णक एहि मेलकेँ सन्धि कहल जाइत अछि। जेना : सुख+अन्त = सुखान्त। एहिठाम अ + अ मिलिकऽ आ भऽ गेल अछि।

सन्धिक तीन भेद होइछ :

(१) स्वर सन्धि,

(२) व्यञ्जन सन्धि, आओर

(३) विसर्ग सन्धि ।

(१) **स्वर सन्धि :** जखन स्वरक सङ्ग स्वरक मेल होइत अछि तँ एहन मेल स्वर सन्धि कहबैत अछि । जेना : विद्या+आलय = विद्यालय, रेखा+अङ्कित = रेखाङ्कित, महा+इन्द्र = महेन्द्र, सदा+एव = सदैव, यदि+अपि = यद्यपि आदि । एहिठाम क्रमशः आ + आ = आ, आ + अ = आ, आ + इ = ए, आ + ए = ऐ आ इ + अ = य भऽ गेल अछि ।

(२) **व्यञ्जन सन्धि :** जखन व्यञ्जनक सङ्ग स्वर वा व्यञ्जनक मेल होइत अछि तँ एहन मेल व्यञ्जन सन्धि कहबैत अछि । जेना : दिक्+अन्त = दिगन्त, उत्+नति = उन्नति, अहम्+कार = अहङ्कार, उत्+चारण = उच्चारण, उत् + लास = उल्लास । एहिठाम दिक् + अन्तमे क् तथा अ स्वर आएल अछि । तेँ कक तेसर वर्ण ग भऽ गेल अछि । अर्थात दिगन्त । उत् + नतिमे त् तथा न आएल अछि । अतः त् अपन पाँचम वर्ण न् भऽ गेल अछि । अर्थात उन्नति । एहिना अन्य नियमसभ बाँकी उदाहरणमे लागू भेल अछि ।

(३) **विसर्ग सन्धि :** जखन विसर्गक सङ्ग स्वर वा व्यञ्जनक मेल होइत अछि तँ एहन मेल विसर्ग सन्धि कहबैत अछि । जेना : दुः+गति= दुर्गति, निः+छल = निश्छल, निः+रोग = निरोग, मनः+ज = मनोज । एहिठाम दुः+गतिमे विसर्गक बाद वर्गक तेसर वर्ण ग आएल अछि । तेँ विसर्गक स्थानपर र आबि दुर्गति भऽ गेल अछि । एहिना निः+छलमे विसर्गक बाद छ आएल अछि । तेँ विसर्ग शमे बदलि गेल अछि । एही तरहसँ अन्य नियमसभ अन्य उदाहरणसभमे लागू होइत अछि ।

सन्धिक विभिन्न भेदकेँ विस्तारसँ देखलापर एकर अन्यान्य भेदसभ निम्नाअनुसार होइत अछि ?

(अ) स्वर सन्धि :

दूटा स्वरक मेलसँ उत्पन्न विकारकेँ स्वर सन्धि कहल जाइत अछि । एकर पाँच भेद अछि :

१. दीर्घ स्वर सन्धि

२. गुण स्वर सन्धि

३. वृद्धि स्वर सन्धि

४. यण स्वर सन्धि

५. अयादि स्वर सन्धि ।

(क) दीर्घ स्वर सन्धि :

दीर्घ स्वर सन्धि ओकरा कहल जाइछ, जाहिमे दूटा सवर्ण स्वर मिलिकऽ दीर्घ भऽ जाइछ । जेना–

(क)	अ + अ	= आ	सुख + अन्त	= सुखान्त
	अ + आ	= आ	पुस्तक + आलय	= पुस्तकालय
	आ + अ	= आ	विद्या + अर्थी	= विद्यार्थी
	आ + आ	= आ	महा + आशय	= महाशय
(ख)	इ + इ	= ई	रवि + इन्द्र	= रवीन्द्र
	इ + ई	= ई	गिरि + ईश	= गिरीश
	ई + इ	= ई	मही + इन्द्र	= महीन्द्र
	ई + ई	= ई	नारी + ईश्वर	= नारीश्वर
(ग)	उ + उ	= ऊ	भानु + उदित	= भानूदित
	उ + ऊ	= ऊ	लघु + ऊर्मि	= लघूर्मि
	ऊ + उ	= ऊ	बधू + उत्सव	= बधूत्सव
	ऊ + ऊ	= ऊ	भू + ऊर्ध्व	= भूर्ध्व
(घ)	ऋ + ऋ	= ॠ	पितृ + ऋण	= पितॄण

(मुदा सामान्य व्यवहारमे पितृऋण चलैत अछि ।)

(ख) गुण स्वर सन्धि :

अ वा आक बाद इ वा ई, उ वा ऊ आओर ऋ आबए तँ दुनू मिलिकऽ क्रमशः ए, ओ आओर अर्

भऽ जाइत अछि । जेना–

अ + इ	= ए	देव + इन्द्र	= देवेन्द्र
अ + ई	= ए	गण + ईश	= गणेश
आ + इ	= ए	महा + इन्द्र	= महेन्द्र
आ + ई	= ए	महा + ईश	= महेश
अ + उ	= ओ	चन्द्र + उदय	= चन्द्रोदय

अ + ऊ	= ओ	समुद्र + ऊर्मि	= समुद्रोर्मि
आ + उ	= ओ	महा + उत्सव	= महोत्सव
आ + ऊ	= ओ	गङ्गा + ऊर्मि	= गङ्गोर्मि
अ + ऋ	= अर्	देव + ऋषि	= देवर्षि
आ + ऋ	= अर्	महा + ऋर्षि	= महर्षि

(ग) वृद्धि स्वर सन्धि :

जँ अ वा आक बाद ए वा ऐ आबए तँ दुनू मिलिकऽ ऐ भऽ जाइत अछि। सङहि जखन ओ वा औ

अबैत अछि तँ दुनू मिलिकऽ औ भऽ जाइछ। जेना–

अ + ए	= ऐ	मत + एकता	= मतैकता
अ + ऐ	= ऐ	परम + ऐश्वर्य	= परमैश्वर्य
आ + ए	= ऐ	सदा + एव	= सदैव
आ + ऐ	= ऐ	महा + ऐश्वर्य	= महैश्वर्य
अ + ओ	= औ	सर्व + ओषधि	= सर्वौषधि
अ + औ	= औ	वन + औषधि	= वनौषधि
आ + ओ	= औ	महा + ओजस्वी	= महौजस्वी
आ + औ	= औ	महा + औषधि	= महौषधि

(घ) यण स्वर सन्धि :

जँ इ, ई, उ, ऊ तथा ऋक बाद कोनो भिन्न स्वर आबए तँ इ-ईक स्थानपर य्, उ-ऊक स्थानपर व् तथा ऋक स्थानपर र् भऽ जाइत अछि। जेना–

इ + अ	= य्	अति + अन्त	= अत्यन्त
इ + आ	= य्	इति + आदि	= इत्यादि
इ + उ	= य्	अति + उत्तम	= अत्युत्तम
इ+ ऊ	= य्	अति + ऊष्म	= अत्युष्म
ई + अ	= य्	अङ्गुली + अग्र	= अङ्गुल्यग्र
उ + अ	= व्	अनु + अय	= अन्वय

उ + आ	= व्	मधु + आलय	= मध्वालय
उ + ए	= व्	अनु + एषण	= अन्वेषण
उ + ऐ	= व्	वधु + ऐश्वर्य	= वध्वैश्वर्य
ऊ + ओ	= व्	गुरु + ओदन	= गुर्वोदन
ऊ + औ	= व्	गुरु + औदार्य	= गुर्वौदार्य
ऋ + अ	= र्	पितृ + अर्थ	= पित्र्थ
ऋ + आ	= र्	पितृ + आदेश	= पित्रादेश

(ङ) अयादि स्वर सन्धि :

जँ ए, ऐ, ओ, औक बाद भिन्न स्वर आबए तँ एक अय्, ऐक आय्, ओक अव् तथा औक आव भऽ जाइत अछि। जेना–

ए + अ	= अय्	ने + अन	= नयन
ऐ + अ	= आय्	नै + अक	= नायक
ओ + अ	= अव्	पो + अन	= पवन
औ + आव	= आव	पौ + अक	= पावक

व्यञ्जन सन्धि

व्यञ्जनसँ स्वर अथवा व्यञ्जनक मेलसँ उत्पन्न विकारकेँ व्यञ्जन सन्धि कहल जाइत अछि। व्यञ्जन सन्धिक निम्न सात नियम अछि :

नियम १

जँ क्, च्, ट्, प्क बाद कोनो स्वर आबए तँ ओ बदलिकऽ अपनहि वर्गक तेसर वर्ण भऽ जाइत अछि। जेना –

दिक्+अम्बर = दिगम्बर (तेसर वर्ण– ग)

अच्+अन्त = अजन्त (तेसर वर्ण– ज)

षड्+आनन = षड़ानन (तेसर वर्ण– ड)

जगत्+ईश = जगदीश (तेसर वर्ण– द)

सुप्+अन्त = सुबन्त (तेसर वर्ण– ब)

नियम २

जँ क्, च्, ट्, त्, प्क आगाँ न अथवा म आबए तँ ओ बदलिक॰ अपनहि वर्गक पञ्चम वर्ण भ॰ जाइत अछि। जेना–

वाक्+मय = वाङ्मय (पञ्चम वर्ण– ङ)

षट्+मास = षण्मास (पञ्चम वर्ण– ण)

उत्+नति = उन्नति (पञ्चम वर्ण– न)

अप्+मय = अम्मय (पञ्चम वर्ण– म)

नियम ३

क्, ट्, त्, प्क आगाँ ग, ज, भ, ए, र, ल, आबए तँ ओ बदलिक॰ अपनहि वर्गक तेसर वर्ण भ॰ जाइत अछि। जेना–

अप्+भक्ष = अब्भक्ष (तेसर वर्ण– ब)

दिक्+गज = दिग्गज (तेसर वर्ण– ग)

षट्+यन्त्र = षड्यन्त्र (तेसर वर्ण– ड)

षट्+रस = षड्रस (तेसर वर्ण– ड)

सत्+गति = सद्गति (तेसर वर्ण– द)

नियम ४

जखन शसँ पूर्व त् पड़ैत अछि तँ दुनू मिलिक॰ च्छ भ॰ जाइत अछि। जेना–

सत्+शास्त्र = शच्छास्त्र

उत्+श्वास = उच्छ्वास

नियम ५

जखन तक बाद ह अबैत अछि तँ ह ध भ॰ जाइत अछि। सङहि हक पहिनेवला वर्ण अपन वर्गक तृतीय वर्ण भ॰ जाइछ। जेना–

उत् + हरण = उद्धरण

पत् + हति = पद्धति

नियम ६

जखन छसँ पूर्व लघु स्वर पड़ैत अछि तखन बीचमे च् आबि जाइत अछि। जेना–

स्व+छन्द	=	स्वच्छन्द
परि+छेद	=	परिच्छेद

नियम ७

म्क बाद जखन कोनो व्यञ्जन अबैत अछि तँ ओ अनुस्वार क वर्गक अन्तिम वर्ण (ङ्)मे बदलि जाइछ। जेना– सम्+कल्प = सङ्कल्प / सङ्कल्प

विसर्ग सन्धि

विसर्गक सङ्ग स्वर अथवा व्यञ्जनक मेलसँ जे विकार उत्पन्न होइत अछि ओकरा विसर्ग सन्धि कहल जाइत अछि। ई निम्न पाँच नियमसँ बनैत अछि।

नियम १

जँ विसर्गक बाद च-छ, ट-ठ तथा त-थ हो तँ विसर्ग बदलिकऽ क्रमशः श्, ष् एवं स् भऽ जाइत अछि। जेना–

निः+चय	=	निश्चय	निः+छल	=	निश्छल
धनुः+टङ्कार	=	धनुष्टङ्कार	ततः+ठक्कर	=	ततष्ठकर
निः+तार	=	निस्तार	दुः+थल	=	दुस्थल

नियम २.

जँ विसर्गसँ पहिने इकार अथवा उकार आबए तथा विसर्गक बाद क, ख, प, फ वर्ण आबए तँ विसर्ग बदलिकऽ ष् भऽ जाइत अछि। जेना–

निः + कपट	=	निष्कपट	निः + खलन	=	निष्खलन
निः + पाप	=	निष्पाप	निः + फल	=	निष्फल
दुः + कर	=	दुष्कर	दुः + परिणाम	=	दुष्परिणाम

नियम ३.

जँ विसर्गक पहिने इ-उ हो तथा आगाँ र आबए तँ विसर्ग हटि जाइत अछि। सङहि ह्रस्व दीर्घ भऽ जाइत अछि। जेना–

निः + रस	=	नीरस	निः + रोग	=	नीरोग
दुः + राज	=	दूराज			

नियम ४

जँ विसर्गक पहिने अ तथा आ छोड़िकऽ कोनो दोसर स्वर आबए, सङहि विसर्गक बाद कोनो स्वर वा कोनो वर्गक तृतीय, चतुर्थ एवं पञ्चम वर्ण अथवा ए, र, ल, व, ह आबए तँ विसर्गक स्थानपर र भऽ जाइत अछि। जेना–

निः + उपाय	=	निरुपाय	निः + झर	=	निर्झर
निः + जल	=	निर्जल	निः + धन	=	निर्धन
निः + मल	=	निर्मल	दुः + आत्मा	=	दुरात्मा
दुः + गन्ध	=	दुर्गन्ध	दुः + नीति	=	दुर्नीति

नियम ५

जँ विसर्गक पहिने अ आबए तथा ओकर बाद वर्गक तृतीय, चतुर्थ वा पञ्चम वर्ण आबए अथवा य, र, ल, व तथा ह आबए तँ विसर्गक स्थानपर ओ भऽ जाइत अछि। जेना–

उरः + ज	=	उरोज	पयः + द	=	पयोद
यशः + धरा	=	यशोधरा	मनः + नयन	=	मनोनयन
मनः + भाव	=	मनोभाव	मनः + रथ	=	मनोरथ
मनः + विकार	=	मनोविकार	पुरः + हित	=	पुरोहित

लोकोक्ति

लोकोक्ति दूटा शब्दसँ बनल अछि । एहिमे पहिल अछि लोक तथा दोसर अछि उक्ति । लोकक अर्थ होइछ– जनसमुदाय आ उक्तिक अर्थ होइछ– कथन । एहि कथनक पाछू कोनो ने कोनो घटना होइत अछि । आ ओहिसँ निकलल बात जखन जनसमुदायमे पसरि जाइत अछि तँ ओ लोकोक्ति बनि जाइत अछि । जेना– मटिहानीमे संस्कृत विद्यालय छल आ एखनहुँ अछि । ओहि समयमे विद्यालयमे संस्कृतक शिक्षकलोकनि रहैत छलाह जे एखनहुँ रहैत छथि । ओहि समयमे कतहु जएबा-अएबाक हेतु हुनकालोकनिक पोशाक छलनि– पाग-डोपटा । मधवापुर मटिहानीसँ सटले अछि । कोनो शिक्षक विनापाग-डोपटा लगौनहि मधवापुर चलि गेल होएताह । एहना स्थितिमे केओ पुछि देने होएतनि– 'एहि भेषमे देखैत छी ?' ओ जवाब देने होएथिन–'मधवोपुरलए पाग-डोपटा !' तहियासँ 'मधवोपुरलए पाग-डोपटा' जनसमुदायमे पसरिऽ एकटा लोकोक्ति बनि गेल, जकर अर्थ होइछ– छोट काजलए पैघ ताम-झामक कोनो काज नहि । एहिना कऽ अन्य लोकोक्तिसभ कोनो घटनासँ जन्म लेने होएत । एहिठाम किछु लोकोक्ति निम्नाङ्कित रूपेँ देल जा रहल अछि–

१. आगू नाथ ने पाछू पगहा (कोनो तरहक पारिवारिक जिम्मेदारी नहि रहब) : राम किएक नहि पानिजकाँ पाइ बहौताह ! हुनका तँ आगू नाथ ने पाछू पगहा छनि ।

२. इस्खीक मौगति माघ मास (फैसनक विपरीत बुझि कोनो वस्तुक उपेक्षा कएलासँ हानि होइत अछि) : मोहन पैंट, कमीज आ टाइ लगाकऽ जनकपुरक मेला गेलाह । चद्दरि छोड़ि देलनि गामेपर । जखन रातिमे पछबा चलल तँ दाँत कटकटाए लगलनि । एहनेठाम लोक कहैत छैक जे इस्खीक मौगति माघ मास ।

३. ईर्ष्ये नाङड़ि कटाबी तँ छओ मास व्यथे मरी (गलत प्रतिस्पर्धा) : सुन्दरकान्तजी चन्द्रकान्तजीक देखा-देखी पिताक श्राद्धमे चारि गाम जयबार कएलनि । ओहिमे भेल खर्च हुनका एखनो खेहारि रहल छनि । एहनेठाम कहैत छैक जे ईर्ष्ये नाङड़ि कटाबी तँ छओ मास व्यथे मरी ।

४. उखरिमे मूड़ी देल तँ मुसराक कोन डर (कठिन काज शुरू कएलापर भयभीत होएब उचित नहि) : महेश अपन राजनीतिक जीवन शुरू कएलाक बाद पहिलबेर तिरहुतिया गाछीमे भाषण देलनि । हुनक भाषण सुनि लोक गारि पढ़ऽ लगलनि । ई बात सुरेश महेशकेँ कहलथिन, एहिपर महेश बजलाह– जखन उखड़िमे मूड़ी देलहुँ तँ मुसराक कोन डर ।

५. ऊँटक मुहमे जीरक फोड़न (आवश्यकता बहुत आ पूर्ति बहुत कम) : शीतलजीकेँ चुनाव लड़बाक लेल दू लाख रुपैयाक आवश्यकता छलनि, मुदा भेटलनि बीस हजार । एहिपर ओ कहलथिन– ई ऊँटक मुहमे जीरक फोड़नजकाँ भऽ गेल ।

६. ऐसन झाँप ने झँपनिया जे भाफ ने आबए अङनिया (कोनो बात कानधरि नहि जाए देब) : महाबीर सुकनाक खस्सी मारिकऽ खा गेलैक, मुदा केओ नहि बुझि सकल । बहुत दिनक बाद जखन बात खुजलै तँ दिनेश बाजल– आएँ रौ, ऐसन झाँप ने झँपनिया जे भाफ ने आबए अङनिया ?

७. ओझा लेखे गाम बताह आ गामक लेखे ओझा बताह (अपनाकेँ समझदार तथा समूहकेँ नासमझ बुझब) : रामचन्द्रजी गामक लोककेँ मोजर नहि करैत छथिन । तहिना गामोवला हिनकर मोजर नहि करैत छनि । एहनेठाम कहबी छैक जे ओझा लेखे गाम बताह आ गामक लेखे ओझा बताह ।

८. गदहा खसलाह स्वर्गसँ आ रुसलाह नगरक लोकसँ (दोष अपन आ विक्षुब्ध रहब अनकासँ) : बेटा बिगड़ि गेलनि अपना चालिसँ आ मुहाबज्जी बन्न कऽ लेलनि मास्टर साहेबसभसँ । ई बात जखन कृष्णकेँ पता लगलनि तँ ओ कहलथिन– किएक नहि, गदहा खसलाह स्वर्गसँ, रुसलाह नगरक लोकसँ ।

९. घर फुटए तँ गमार लुटए (आपसी मतभेदसँ तेसर व्यक्तिकेँ लाभ) : राम आ श्याममे भैयारी झगड़ा चलि रहल छलनि । शोभाकान्त रामक पक्षमे रहिकऽ हुनकासँ बहुत रुपैया-पैसा झिकैत रहल । एहि बातपर सदिखन लोक बजैत रहैत छल जे घर फुटए तँ गमार लुटए ।

१०. चोर-चोर मसियौत भाए (दुष्टक सङ्ग दुष्टक मित्रता) : सोनमा दिनेशक आम तोड़ैत पकड़ल गेल । एकर पञ्चायत बैसल । रमुआ जे अपनहु चोर अछि, पञ्चैतीमे कहलकैक जे सोनमा आम नहि तोड़लक अछि । ई सुनि रमेश बजलाह– 'तोँ किएक ने कहबही ? चोर-चोर मसियौत भाए तँ होइते छैक ।'

११. छुछुन्नरिक माथमे चमेलीक तेल (अयोग्य व्यक्तिकेँ महत्त्वपूर्ण कार्यभार सोँपब) : एक दिन शास्त्रीजी मैथिलीक मञ्चसँ बजलाह– काज बहुत महत्त्वपूर्ण अछि । मुदा, जाहि व्यक्तिकेँ ई भार देल गेल अछि ओ बिल्कुल अयोग्य छथि । एहना स्थितिमे छुछुन्नरिक माथमे चमेलीक तेलवला बात ने भऽ जाए ।

१२. जकरे माए मरए तकरे पातपर भात नहि (उचितक त्याग) : रमेश ओतेक खर्च कऽकऽ एकटा पुस्तकालय खोललनि, मुदा लोक हुनका सदस्योक रूपमे नहि रखलकनि । एहनेठाम कहैत छैक जे जकरे माए मरए तकरे पातपर भात नहि ।

१३. दूधक दूध आ पानिक पानि (निष्पक्ष न्याय) : सुबोध बाबूकेँ सभगोटे पञ्चैतीमे बजाकऽ लऽ जाइत छनि । कारण ओ दूधक दूध आ पानिक पानि कऽ दैत छथिन ।

१४. ने रहत बाँस ने बाजत बँसुली (ने कारण रहत ने काज होएत) : एकटा नोकरक चल्ते सदिखन सोनेलालक परिवारमे झगड़ा होइत रहैत छलनि । तेँ ओ नोकरकेँ हटा देलनि । एहिपर हुनक मित्र बजलाह– नीक कएलहुँ, आब ने रहत बाँस ने बाजत बँसुली ।

१५. बरे बुड़िबक तँ विदाइ के लेत (अयोग्यताक कारणे घाटा) : राधेश्याम घर बनएबाक बास्ते बाँस-काठ मङनी कऽ रहल छलाह । मुदा हुनकर मङबाक ढङ्ग बिल्कुल अनसोहाँतसन छलनि । तेँ केओ किछु नहि देलकनि । एहनेठाम कहैत छैक जे बरे बुड़िबक तँ विदाइ के लेत ।

दिव्य भूमि मिथिला

■ *कवीश्वर चन्दा झा*

की दिव्य भूमि मिथिला हम आबि गेलौं ।
देखैत मात्र मन लक्ष्मण तृप्त भेलौं ॥
की दिव्य फूल फल वृक्ष अनन्त धान ।
पक्षी विलक्षण करै अछि रम्य गान ॥

प्रपूर्ण सत् तड़ाग की, सुधा-समान वारिसौं ।
विचित्र पद्मिनी-बनी विहङ्ग बारि-चारिसौं ॥
द्विरेफ गुञ्जि-गुञ्जिकेँ महा मदान्ध घूमिकेँ ।
सरोजिनीक अङ्ग सुप्त बार-बार चूमिकेँ ॥

शालि-गोप गीतिकाँ सुप्रीति-रीति शूनि-शूनि ।
खेत शस्य खाथि नै कुरङ्ग आँखि मूनि-मूनि ॥
सत्य तीरहूति यज्ञ-भूमि पुण्य देनिहारि ।
शास्त्रकेँ बजैत बेश कीर बैसि डारि-डारि ॥

नदी-मातृक क्षेत्र सुन्दर शस्यसौँ सम्पन्न ।
समय सिरपर होय वर्षा बहुत सञ्चित अन्न ॥
दयायुत नर सकल सुन्दर स्वच्छ सभ व्यवहार ।
सकल-विद्या-उदधि मिथिला विदित भरि संसार ॥

उत्तम हिम-गिरिवर निकट सुलभ रत्न औषधि सकल ।
पुरि महती मिथिला-पुरी ककरहु नहि देखल विकल ॥
शुभ लक्षण संयुक्त मनोगति सुन्दर-सुन्दर ।
उच्चैःश्रवा समान अश्व नृप जेहन पुरन्दर ॥

राज-कुमार उदार सकल विद्याकाँ जनइत ।
शौर्य शील सन्तोष धर्म्मवेत्ता स्मृति मनइत ॥
सकल प्रजा आनन्द-मन विहित गृहाश्रम धर्म्ममत ।
नृपतिक शुभ-चिन्तक सतत नीति-निपुण मन कर्म्ममत ॥

पशु-पक्षीसभ हृष्ट-पुष्ट नहि दुष्ट कुलक्षण ।
कृष्णसार मृग बहुत नृपति कर सभहिक रक्षण ॥
अतिशय जन सौजन्य देश मुनिजन-मनरञ्जन ।
जे ताकी से भेट कतहु नहि सृष्टि एहन सन ॥

साभार : मिथिलाभाषा रामायण, बालकाण्डसँ

शब्दार्थ

रम्य	= सुन्दर	शस्य	= धानक फसिल
प्रपूर्ण	= भरल-पुरल	कीर	= सुगा
सुधा	= अमृत	नदी-मातृक	= नदीक पटौनीपर निर्भर
तड़ाग	= पोखरि	दयायुत	= दयावान
दिव्य	= सुन्दर	शालि-गोप	= धानक खेतक रखवार
पद्मिनी	= कमलिनी	सकल	= सम्पूर्ण, सभ
विचित्र	= अदभुत	उदधि	= समुद्र
बनी	= वाटिका	विहङ्ग	= पक्षी
विदित	= प्रसिद्ध	बारि	= पानि
उच्चैःश्रवा	= इन्द्रक घोड़ा	चारि	= चलब
द्विरेफ	= भमरा	मदान्ध	= मदमातल
पुरन्दर	= इन्द्र	सरोजिनी	= कमल
विहित	= करबा योग्य	नृपति	= राजा
कुलक्षण	= खराब लक्षण	रञ्जन	= प्रफुल्लित
हिम-गिरिवर	= हिमालय पर्वत		

अभ्यास

श्रवण-शिल्प (सुननाइ)

१. **दिव्य भूमि मिथिला कविताकेँ सुनू आ बेरा-बेरी लय मिलाकऽ वाचन करू ।**

२. **कविताक पहिल आ दोसर श्लोक शिक्षकसँ सुनू आ निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर दिअ :**

(क) मिथिलाक भूमि कोन तरहक छैक ?

(ख) मिथिलाक पक्षीसभ कथीक गान करैत अछि ?

(ग) मिथिलाक तड़ागसभ केहन पानिसँ भरल अछि ?

(घ) मदान्ध भमरासभ कथीक अङ्ग चुमैत अछि ?

३. कविताक छठम आ सातम श्लोकक श्रुतिलेखन करू ।

कथन-शिल्प (बजनाइ)

४. निम्नलिखित शब्दसभक शुद्ध-शुद्ध उच्चारण करू :

विलक्षण, प्रपूर्ण, शस्य, शास्त्र, नदी-मातृक, उच्चैःश्रवा, शौर्य, हृष्ट-पुष्ट, रक्षण ।

५. निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर कहू :

(क) मिथिलाक भूमिकेँ देखैत कविक मोन केहन भऽ रहल छनि ?

(ख) कुरङ्ग अर्थात हरिन खेतक फसिल किएक नहि खा रहल अछि ?

(ग) मिथिलामे बहुत रास अन्नक सञ्चय किएक भेल अछि ?

(घ) कवितामे घोड़ा आ राजाक तुलना कथीसँ कएल गेल अछि ?

६. कविताक आधारपर मिथिलाक शिक्षा आ कृषिक अवस्थाक सम्बन्धमे विचार-विमर्श करू ।

पठन-शिल्प (पढ़नाइ)

७. कविताक तेसर आ चारिम श्लोक पढ़िकऽ निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर लिखू :

(क) मिथिलाक राजकुमार केहन होइत छलाह ?

(ख) राजाक प्रति मिथिलाक प्रजाक केहन धारणा रहैत छल ?

(ग) पशु-पक्षीसभक स्वभाव केहन होइत छलैक ?

(घ) मिथिलाक घोड़ासभक गतिक तुलना कथीसँ कएल गेल अछि ?

८. निम्नलिखित "क" समूहक शब्दसभकेँ "ख" समूहक शब्दसभसँ जोड़ा मिलाउ :

(क)	(ख)
पक्षी	पुरन्दर
कीर	रत्न औषधि
नर	हृष्ट-पुष्ट
हिम-गिरिवर	डारि-डारि
नृप	दयायुत

९. बेरा-बेरी कविताक प्रत्येक श्लोक सभकेओ लय मिलाकऽ पढ़ू आ पढ़बामे कतेक समय लागल पता लगाउ । सभसँ कम समय लगौनिहार विद्यार्थीकेँ पुरस्कृत कएल जा सकैछ ।

लेखन-शिल्प (लिखनाइ)

१०. कविताक आधारपर निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर लिखू :

(क) मिथिलामे की देखिकऽ मोन तृप्त भऽ जाइत छलैक ?

(ख) दिव्य भूमि मिथिला कवितामे भेल उल्लेखअनुसार रम्य गान के करैत छल ?

(ग) मिथिलाक तड़ाग कथीसँ भरल छल ?

(घ) जनककालीन मिथिला कोन रूपेँ संसारमे प्रसिद्ध छल ?

(ङ) मिथिलाक घोड़ासभ केहन होइत छल ?

(च) प्रजा आनन्द-मोनसँ कोना रहैत छल ?

(छ) मिथिलासन सृष्टि कविक दृष्टिएँ दोसर किएक नहि अछि ?

(ज) दिव्य भूमि मिथिला कविता कतऽ सँ उद्धृत कएल गेल अछि आ एकर रचनाकार के छथि ?

११. निम्नलिखित पद्यांशक सप्रसङ्ग व्याख्या करू :

(क) प्रपूर्ण सत् तड़ाग की, सुधा-समान वारिसौँ ।
विचित्र पद्मिनी-बनी विहङ्ग बारि-चारिसौँ ॥
द्विरेफ गुञ्जि-गुञ्जिकेँ महा मदान्ध घूमिकेँ ।
सरोजिनीक अङ्ग सुप्त बार-बार चूमिकेँ ॥

(ख) शालि-गोप गीतिकाँ सुप्रीति-रीति शूनि-शूनि ।
खेत शस्य खाथि नै कुरङ्ग आँखि मूनि-मूनि ॥
सत्य तीरहूति यज्ञ-भूमि पुण्य देनिहारि ।
शास्त्रकेँ बजैत बेश कीर बैसि डारि-डारि ॥

१२. रिक्त स्थानपर उपयुक्त शब्द राखि वाक्य पूर्ण करू :

(क) समय सिरपर होय वर्षा बहुत ..... अन्न ।

(ख) सकल ..... उदधि मिथिला विदित भरि संसार ।

(ग) शुभ ..... संयुक्त मनोगति सुन्दर-सुन्दर ।

(घ) सकल प्रजा आनन्द मन विहित ..... धर्म्म ।

(ङ) जे ताकी से भेट कतहु नहि ..... एहन सन ।

१३. निम्नलिखित शब्दसभकेँ अप्पन वाक्यमे प्रयोग करू :

तृप्त, अनन्त, पुण्य, सम्पन्न, सञ्चित, औषधि, शौर्य, शुभ-चिन्तक, कुलक्षण ।

१४. दिव्य भूमि मिथिला कवितामे प्रयोग भेल प्रकृतिसँ जुड़ल शब्दसभ खोजिकऽ लिखू ।

सृजनात्मक अभ्यास

१५. हमर गाम वा हमर शहर शीर्षक राखि एकटा कविता वा निबन्ध लिखू ।

१६. दिव्य भूमि मिथिला शीर्षक कविताक आधारपर प्राचीन मिथिलाक वर्णन करू ।

१७. दिव्य भूमि मिथिला कवितामे की मूल सन्देश सम्प्रेषण कएल गेल अछि ?

व्याकरण

१८. कवितामे प्रयोग भेल व्युत्पन्न शब्दसभ खोजिकऽ लिखू आ उदाहरण देखिकऽ एकर मूल शब्द उल्लेख करैत शब्दक बनावट सेहो तालिकामे उल्लेख करू । जेना :

व्युत्पन्न शब्द	मूल शब्द	बनावट
अनन्त	अन्त	अन + अन्त

द्रष्टव्य : नव नव शब्दसभ जोड़ैत तालिकाकेँ बढ़बैत जाउ ।

१९. दिव्य भूमि मिथिला कवितामे प्रयोग भेल क्रियापदसभ सङ्कलित करू आ ओ क्रियापदसभ सकर्मक,अकर्मक की थिक छुटिआउ । जेना :

क्रियापद	सकर्मक अथवा अकर्मक
आबि गेलौं	अकर्मक

द्रष्टव्य : तालिकाकेँ बढ़बैत जाउ ।

२०. उपर्युक्त क्रियापदसभकेँ अपन वाक्यमे प्रयोग करू । जेना :

आबि गेलौं = हम गामसँ आबि गेलौं ।

२१. कविताक निम्नलिखित शब्दसभ कोनाकऽ जुटिकऽ एकटा शब्द बनल अछि, से अवलोकन करू :

अन+अन्त = अनन्त, मद+अन्ध = मदान्ध,

मनः+गति = मनोगति, गृह+आश्रम = गृहाश्रम ।

द्रष्टव्य : एना दूटा शब्दक मेलकेँ सन्धि आ शब्दकेँ अलग कएनाइकेँ सन्धि विच्छेद कहल जाइछ । सन्धि विच्छेद कएलापर शब्दक अर्थ लगएबामे सहज होइत अछि ।

निम्नलिखित शब्दसभक सन्धि विच्छेद करबाक प्रयास करू :

उदाहरण : महेन्द्र = महा+इन्द्र

राजेन्द्र, महीश, मनोरथ, सज्जन, राजर्षि, अभ्युदय, यद्यपि, सूर्योदय, सूर्यास्त, परीक्षा, अभीष्ट ।

छन्द-परिचय

छन्द ओ काव्यात्मक रचना थिक जे मात्रा वा वर्णक सङ्ख्या, क्रम, गति, यति, लय आ तुकक नियमपर आधारित रहैत अछि । एकरे पद्य सेहो कहल जाइत अछि ।

छन्द निम्न दू प्रकारक होइत अछि :

(१) वार्णिक छन्द (२) मात्रिक छन्द ।

वर्ण अक्षरक गणनाक आधारपर निर्मित पद्यकेँ वार्णिक छन्द आ मात्राक गणनाक आधारपर रचित पद्यकेँ मात्रिक छन्द कहल जाइत अछि । मुदा आइकाल्हि अधिकांश कवितासभ छन्दक परिधिसँ बाहर

रहैत अछि, जकरा गद्य कविता कहल जाइत अछि। एतऽ छन्दबद्ध पद्यात्मक कविताक विषयमे उल्लेख कएल जाइत अछि।

असँ लऽक ज्ञधरिक अक्षर आ अनुस्वार तथा विसर्गकेँ सेहो वर्णमे गणना कएल जाइत अछि। वर्ण गणपर आधारित होइत अछि। गण आठटा होइत अछि :

यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण आ सगण।

प्रत्येक गणमे तीन-तीन वर्ण अथवा अक्षर होइत अछि। प्रत्येक गणक निर्माण निश्चित नियमक आधारपर कएल जाइत अछि। कोनोमे तीनू वर्ण ह्रस्व होइत अछि तँ कोनोमे तीनू दीर्घ। तहिना कोनोमे आदि ह्रस्व, मध्य ह्रस्व आ अन्त्य ह्रस्व होइत अछि। ह्रस्व-दीर्घ बुझबाक लेल निम्नलिखित सूत्र प्रसिद्ध अछि :

यमाताराजभानसलगा

एहिमे ह्रस्व सङ्केतक लेल (।) आओर दीर्घ सङ्केतक लेल (ऽ)क प्रयोग होइत अछि। जेना :

क्रम सङ्ख्या	गण	सूत्र/सङ्केत (लघु/गुरु)	उदाहरण
१.	यगण	।ऽऽ(यमाता)	यशस्वी
२.	मगण	ऽऽऽ(मातारा)	माहेशी
३.	तगण	ऽऽ।(ताराज)	तत्काल
४.	रगण	ऽ।ऽ(राजभा)	रागिनी
५.	जगण	।ऽ।(जभान)	जलाध
६.	भगण	ऽ।।(भानस)	भागल
७.	नगण	।।।(नसल)	सरस
८.	सगण	।।ऽ(सलगा)	सरिता

छन्दसम्बन्धी किछु पारिभाषिक शब्द :

लघु अथवा ह्रस्व : एकमात्रिक वर्ण ह्रस्व अथवा लघु कहाइत अछि। जेना अ, इ, उ, ऋ वर्ण अथवा एहि वर्णसभसँ जुड़ल क, कि, कु, कृ आदि अक्षरकेँ ह्रस्व कहल जाइत अछि।

दीर्घ अथवा गुरु : द्विमात्रिक वर्ण दीर्घ अथवा गुरु कहाइत अछि। जेना आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ तथा अनुस्वार (ं), हलन्त (्) । एहिसभसँ जुड़ल तथा संयुक्त अक्षरक अगिलका अक्षरकेँ दीर्घ अथवा गुरु कहल जाइत अछि।

यति : कविता पाठ करैत काल अथवा कोनो छन्द पढ़ैत काल बीचमे नियमित रूपसँ किछु काल रुकऽ पड़ैत छैक। एहि विश्रामकेँ यति कहल जाइत अछि। चरणक अन्तमे आ मध्यमे यति आवश्यक होइत अछि। यति होएबाक स्थानपर अर्थात रुकबाक स्थानपर नहि रुकलासँ यति-भङ्गक दोष मानल जाइत अछि।

प्रमुख वर्णवृत (वार्णिक छन्द) : वसन्ततिलका, द्रुतविलम्बित मालिनी, मन्दाक्रान्ता, शिखरिणी, शादूर्लविक्रीडित, भुजङ्गप्रयात अछि।

मात्रावृत्त (मात्रिक छन्द) : मात्रिक छन्दमे चारि मात्राक एक गण होइत अछि। एहिमे ह्रस्व एक मात्रा, दीर्घ दू मात्रा आ हलन्त आधा मात्रा मानल जाइत अछि। किछु प्रमुख मात्रिक छन्द– आर्या, गीति, उपगीति आदि अछि। दोहा, सोरठा, चौपाइ, सबैया आदि छन्द सेहो मात्रिकवृत अन्तर्गत अबैछ।

एकरा अतिरिक्त छन्दसँ मुक्त (मुक्तक) अथवा गद्य कविताक प्रचलन सेहो सम्प्रति विशेष रूपसँ पाओल जाइत अछि। एहिमे छन्दक कोनो प्रतिबन्ध नहि रहैत अछि।

जनकाक सङ्कल्प

■ *श्यामसुन्दर शशि*

ओम्हर पूर्वी आकाशमे भोरुकवा धमकलै आ एम्हर जनका ओछाओन छोड़ि देलक । रातिभरि कछर-मछर करैत रहल छल ओ । एक क्षणक बास्ते निन्न पड़लै तँ की-कहाँदन सपनामे आबऽ लगलै । से अन्हारेमे ओछाओन छोड़ि देलक । डोलडालदिस गेल । जिमदार पोखरिके पुबरिया मोहाड़परक फुलवारीमे नीमक दतमनि तोड़लक आ दाँत रगड़ैत सरकारी पोखरिदिस आगाँ बढ़ि गेल । आइ ओकर पएरमे जनु गुड़कौना लागि गेल रहै । आन दिन धीर-गम्भीर रहैवला जनका आइ फुद्दीजकाँ फुदकि रहल छल । बूझि पड़ैत छलै जेना रातिमे कोनो रोमाञ्चक सपना देखने हो, जकर महमही भोरोधरि छैहे ।

खाएल-खेलाएल देह । ओना एहिबेरक कातिकमे सतरहमे प्रवेशे कएलक अछि जनका, मुदा देह छैक जे केराक थम्हजकाँ डगडग कऽ रहल छैक । अखाड़ा खेलाएल सुडौल .... पेट पचकल आ सीना उगल । गैंड़ल-गैंड़ल बाँहि, ताहिपर चानीक चमकैत बाजुबन्द....। रामायण-महाभारतमे वर्णित कोनो सुदर्शन पुरुषजकाँ । आइ दिन ओकर दादी बजैत रहै जे बलु हमर पोता एगो सौँसे भैँसके दूध एसगरे पीबै हबे .... । से साँचे ....गामक कोनो लवका-लुवान अखाड़ापर ओकर बाँहि नहि उनाड़ि सकै छै । जहन जनका मुङरदम्म भाँजऽ लगै छै तँ सरोह देखऽ वलासभकेँ ठकमुरगी लागि जाइ छै । ओ रुकबाक नामे नइ लै छै । अन्तमे गुरु तपेसर पहलमानके कहऽ पड़ै छै जे दोसरोके मेहनति करऽ दही जनका । तपेसर पहलवान एहि अखाड़ाक गुरु अछि । पुरान पहलमान । एक-एक पसेरीके बाँहि आ दुनू कान बुच्च । बल आ दाउ-पेँच दुनूक जानकार । ओ कहै छै जे 'जनकामे एक हाथीके बल हइ । अइ बेरक झण्डाक पहलमानीमे ओकरा भुकना पहलमानसँ भिड़ेबै ।'

पाँच हाथक लक्का जुआन । मोछक पम्ह करिया रहल छै । जहन ओ सरकारी पोखरिक दछिनबरिया मोहाड़पर आएल तँ ओकरा कानमे कठालवला बुढ़बाक परातीक मधुर स्वर पड़लै । घूर लग बैसि कठालवला अपन अराध्यदेवकेँ गोहरा रहल छल–

'हम ने जिअब बिनु राम .....हे जननी ऽऽऽ

हम ने जिअब बिनु राम....'

ओइ दिन जनकाकेँ कठालवलाक पराती बड़ पसिन पड़लै । ओ तिलक सिंह बाबाक थान लग बैसि पराती सुनऽ लागल । ओ बैसबाक बहाना बनाबऽ चाहैत छल । आन दिन जनका कठालवलाकेँ पाखण्डी कहैत छलै । जहन ओ साँझमे नचारी आ भोरमे पराती गाबए तँ ओकर प्रतिक्रिया होइक–

'जतेक काल गीत गबै छह ततेक कालमे एक कट्ठा कोबी किए ने कमा लै छह...।'

ओना भरिदिन खेतमे घुरिआएल रहैए कठालवला ....मुदा भोर-साँझ ओ अपन अराध्यदेवकेँ गोहराएब नहि बिसरैए । ओकर कहब छैक–

'रे मरदे.....पहिने कर्म कर आ तखन फलके आश ...। भगवानो ओकरे मदति करै छथिन जे अपन काज इमानदारीसँ करैए....।'

सुरुज भगवानकेँ प्रकट होएबामे एखनो विलम्ब रहैक । मुदा नव कनियाँसभ बाहर-भीतर जाएब शुरु कऽ देने छलै । फरिच्छ भऽ गेने नव कनियाँसभकेँ बाहर-भीतर जाएमे कठिनाइ होइ छै ने ! पुरुष-पातसभ जे सहसह करए लगैत छैक– धार आ पोखरिके चारुकात !

ओ बैसले छल कि तपेसर पहलमान आबि गेलै । ओकरा हाथमे मुङरदम्म आ कान्हपर कोदारि रहै । जनका कोदारि लऽ तिलक बाबा थान लग गेल आ अखाड़ाके तामऽ लागल । अखाड़ाकेँ तामि देने चोट नहि लगै छै । आ माटि नीकजकाँ देहमे पचै छै । जाहि पहलमानक देहमे माटि जतेक पचतै ओकर देह ततेक सक्कत हेतै । पहलमानी खेललक । दण्ड बैसकी कएलक । मुदा आइ ओकर मोन पहलमानीमे नहि लागि रहल छलै । तपेसर पहलमान कहबो कएलकै, 'जनका ! तोरा किछु होइ छौ कि ?' मुदा ओकर देह अखाड़ापर रहै आ मोन कतौ आनेठाम टङाएल.....।

घामे-पसिने बोदरि जनका जहन आङन आएल तँ ओकर बाप हाथमे लोटा लऽ डोलडालदिस विदा भऽ गेल छल । जनकाकेँ कहलकै, 'मालजाल निकालि दही आ दुनू भैंसी दूहि ले ....। गहुमो पटेबाक बेर भऽ गेल छौ । देखियही जे कतऽ गाड़ लगतै !'

जनका बापकेँ कोनो जवाब नहि देलकै । जहन बाप किछु दूर चलि गेलै तँ नहुएँ बाजल– बुढ़बाके खालि कामे देखल रहै हइ !

ओ मालजालकेँ बाहर कएलक। पोरा ओगारि देलकै आ ओछरा बाहर सुखऽ लेल धऽ देलकै। मालजालक गाँतक कारणे ओछरा नीकजकाँ तीत गेल छलै। ओ कोनो तरहेँ ओछरा बाहर कएलक। हाथ सेहो तीत गेल छलै। सुड्घलक– खराइन महकलै। इनारपर जा मटियाकऽ हाथ धोलक आ आङन जा झबही लऽ विदा भेल भैंस दूहऽ....। पूस-माघक जड़कालाक सुरुज एखनोधरि बादलमे दुबकले छल मुदा सुरुज भगवानके ढार तऽ देबऽ पड़तै ...ओ पूब मुहेँ घूरि दूभिपर सुरुज भगवानकेँ दूधक ढार देलक आ झबही लऽ आङन गेल। माएक हाथमे झबही पकड़ा बाहर दरबज्जादिस जाइए लागल छल कि माए टोकलकै, 'आइयो कचुरी जेबही कि नइ ?'

'इस्स.....।'

जनकाक देह झुनझुना गेलै। ओ लाजे कठौत भऽ गेल....। किछु बाजल नहि, मुदा ओकर मोन कहलकै– जाएब किए नइ ?.....मुदा बुढ़बा जाए देतौ तब ने !

कचुरी जनकाक सासुर छै। जहन ओ साते बरिसके रहए तँ ओकर बिआह कचुरी भेल रहै। जनका सात बरिसके आ ओकर घरवाली पाँच बरिसके ....। आब ओ सतरहममे प्रवेश कऽ चुकल छै आ ओकर घरवाली सेहो पनरह बरिसके भऽ गेल छै। मुदा आइकाल्हि करैत-करैत एखनधरि ओकर गौना नहि भऽ सकलैए। से आब जनकाके मोन कछर-मछर कऽ रहल छै। काज-तेहारमे नोत-हँकार नइ होइ छै से बात नइ। सर-सनेस सेहो नियमित अबैत-जाइ छै। ओकर छोटका सार मार्फत हाल-खबरि सेहो आदान-प्रदान भइए रहल छै। मुदा कनिया-वरके भेँटघाट नइ भऽ रहल छै। जनका आइ सासुरदिसके जतरा निकालने अछि आ ओकर माए छै एकर सागीर्द। कहै छै, 'मर ! बेटा आ पुतोहु जुआन भऽ गेलै तँ अएतै-जएतै किए ने ? हम तँ परुँके साल गौनाके दिन पठौने रहियै ! मुदा मुहझौँसा ओकर ससुर कहै हइ जे हमर बेटी एखन बसऽ वाली नइ भेल हए....। एमरी बेर फागुनमे गौनो कराइए देबै छौँड़ाके।'

जनका जहन किछु नहि बाजल तँ माए फेरसँ बातके आगाँ बढ़ौलक–

'कने खोआ बना दै छियौ। साड़ी, बेलाउज आ साया धऽ दै छियौ। सेनुर, टिकली, ऐना, कंगही सेहो कीनि देने छियौ। सबेरे कचुरी चलि जैहेँ।'

'आ बाउ पितेतौ से ?'

'तोँ एकर चिन्ता छोड़ ने ....बुढ़बाके हम फुसला लेबै...।'

जनका दरबज्जापर गेल। सन्दुकमेसँ ब्रासलेट धोती निकाललक। चमकौआ कुर्ता निकाललक आ बिआहवला चमड़ाक बैगमे सैँतिकऽ राखि लेलक। सीताराम ठाकुर लग जा कानी कटबौलक आ साँझक प्रतीक्षा करऽ लागल

सुरुज एक बाँस उपरे रहै तहनेसँ जनकाक माए ओकरा चरिआबऽ लगलै, 'मर ! पड़ले छिही रौ ! ....जेबही नइ ?....बुझल नइ छौ जे पूसके दिन फूस होइ छै....एके रत्तिमे राति भऽ जाइ छै...।'

ओना जनकोके मोन रहै जे कखन विदा होइ ! मुदा ओ लुकझुक अन्हारमे गाम छोड़ऽ चाहैत छल, जाहिसँ गामक केओ देखि ने लैक । जँ गामक छौंड़ासभ देखि लेतै तँ काल्हिएसँ सगर गाममे अनघोल मचि जएतै जे बलु देखही कलजुगहाके, बिनु गौनेके ससुरारि चलि गेलै ।

जनका चमड़ावला बैगमे कपड़ा-लत्ता आ सर-सनेस कसलक । ब्रासलेट धोती आ चमकौआ कुर्ता पहिरलक । हाथमे छत्ता लेलक आ विदा भेल उत्तरदिस । लोकसँ आँखि बचबैत गामसँ निकलि गेल । मुदा आब आँखि बचाएब मुश्किल छलै । गामक उत्तरमे मुनि सिंह जिमदारक कचहरी छै । कचहरीक आगाँक भालसरिक गाछक निच्चा हरदम्म मजमा लगले रहै छै । जिमदार बैंतक आराम कुर्सीपर बैसल । रैतीसभ चारुकातसँ घेरने आ आगाँमे बड़का घूर पजरैत । सभक सभ मुनि सिंह जिमदारक हँमे हँ मिलबैत । जिमदार हुक्का गुड़गुड़ा रहल छल आ रैतीसभ चिलम भरिभरि देल करए । जहन जनका कचहरी लग पहुँचल तँ एक मोन भेलै जे बाट काटि दी आ जिमदार पोखरिक पूवरिया मोहाड़ दऽकऽ जे खतबेसभ रस्ता बनौने छै, ओही बाटे चलि जाइ । मुदा ओकरा महरानीजीके थानपर सगुन देबाक छलै, तेँ सोझे जएबाक बाध्यता छलै । खतबे टोलवलासभ जिमदारेक आँखिसँ बचबाक लेल पोखरिक पूवरिया मोहाड़ दऽकऽ खुरपेड़िया बनौने अछि जे बलु दारु-पानी पी कऽ मालिकके आगाँ बाटे केना जाएब ! आ कहूँ देखि लेलक तँ खल्ला उधेड़ि देत ।

जनका सुरसुराएल आगाँ बढ़ि गेल । जहन कचहरि पार कऽ लेलक तँ जानमे जान अएलै । मुदा मुनि सिंहके आँखिसँ बँचि पाएब मुश्किल छलै । से जिमदार ओकरा धोती-कुर्ता पहिरने देखिए लेलकै । भनसिया राजेसर सिंहकेँ कहलकै, 'देख तँ ओ के जा रहल छौ ?'

भनसिया दौड़ल गेल आ जनकाकेँ घिचने-तिरने घूर लग लेने आएल । ब्रासलेट धोती पहिरने, चमड़ाक बैग लटकौने आ छत्ता हाथमे लेने जनका जिमदारेक धीयापुताजकाँ लागि रहल छल । जिमदारकेँ एँड़ीक पित्त कपार चढ़ि गेलै, 'एकरे कहै छै जे माए करए कुटान-पिसान आ बेटाक नाम .....। ई धोती सोहरौने, गर्दा बहारैत कत्तऽ जा रहल छेँ ?'

जनका किछु नहि बाजल । मुदा ओकर मोन रञ्ज भऽ गेलै ।

'ई कोच्चावला सोहरौआ धोती पहिरिकऽ एहि बाटे केओ नहि जाइ छै से तोरा बुझल छौ कि नहि ?'

जनका फेर किछु नहि बाजल । मुनि सिंहक तामस दुगुन्ना भऽ गेलै । कड़किकऽ बाजल, 'किछु बजबेँ कि तताड़ि दियौ....'

वातावरणक गम्भीरता बुझैत भनसिया नोन-मिरचाइ लगौलक, 'मालिक ई छौंड़ा एक लम्मरके खच्चर

हइ । ओइ दिना एकरा कहलियै जे मालिकके दुनू भैंसीके दूध चाही....मेहमानसुन आएल छथिन तँ की कहलक से बुझलियै ?

मुनि सिंहके फेर तामस उठि गेलै, 'रे....कहबैं तब ने बुझबै ! आकि हम समुद्री पढ़ने छी जे सभके मोनक बात बुझि जेबै !'

'नइ बुझलियै मालिक.... दुनू भैंसके दूध मड़लियै तँ ई छौंड़ा कहए जे बलु एगो भैंसीके लऽ जा, एगोके दूध हम एसगरे पिबै छियै....। कहाँदुन अइ बेरके झण्डामे भुकना पहलमानसँ भिड़तै...।

'एऽऽ..... तँ पहलमानी खेलैए.....एकर सभ पहलमानी आइ हम निकालि देबै .... सोहरौआ धोती पहिरत ... !'

'आ बुझलियै मालिक....ई छौंड़ा अपनेके विरोधमे गुरमिन्टी सेहो करैत रहै हइ.....ओइ दिन बजैत रहै जे गाममे ककरो चारपर सजमनि, कदीमा, झिमनी देखै छै तँ लेमान जिमदारे करै छै .....पहिने लोक अपन देव-पितरके लेमान करौते कि जिमदारके ?'

'हँ रे ?.....देव-पितरके लबान करेबही ?..... रे , एहि गामके देव-पितर हमहीं छी से बाप नइ सिखेने छौ ? हमरा छोड़ि आर कोन देव-पितर रे ?'

भनसिया राजेसर सिंह जिमदारक तामसके आओर धधकाबऽ चाहैत छल । बाजल, 'आ हे, एकर बापो छलै एक नम्बरके अगत्ती.....। मालिक मोन हए कि नइ.....एकबेर एकर बाप जे टालमे आगि लगा देने छलए !'

जिमदार तामसकेँ पीबैत बाजल, 'देखलिही नइ ओकरा छुलछुल मुतौने रहियै !'

बापक विषयमे अनर्गल बात सूनि जनकाके असह्य भऽ गेलै । खाएल-खेलाएल बाँहि फड़कऽ लगलै । बाजल, 'तँ लोक मेहनति कऽकऽ कोनो चीज उपजौतै आ अहाँके किए दऽ देत ? लोकके अपन मुह नइ छै कि !'

'अरे, ई छौड़बा तँ हमरेसँ जवान लड़बऽ लागल ! एहि गाममे आइधरि केओ हमरासँ भरिमुह बजनहु नहि छल ।' भनसियाके आदेश देलकै, 'ठोक एकरा हरीमे । '

'हम कोन धार-बिगार केने छी जे हरीमे ठोकब ? लोकके धोती-कुर्ता पहिरैसऽ रोकि देबै अहाँ ?' जनका हिम्मत जुटाकऽ बाजल ।

मुनि सिंहक जी हजुरियासभकेँ ठकमुरगी लागि गेलै जनकाक हिम्मति देखि । किछु गोटेकेँ प्रसन्नता सेहो भेलै जे केओ मरद तँ पैदा लेलक गाममे । मुदा बेसी गोटे जिमदारेक पक्षमे बाजल– छौंड़ाके

जिवटपनी तँ देखू । मालिकसँ मूँह लगबै हइ । मालिक छोडू नइ एकरा .....नइ तँ सबटा छौंड़बा एहने बपजेठ भऽ जाएत ।'

मालिकक आदेश पबिते भनसिया ओकरा हरीमे ठोकि देलकै । जनकाक दुनू टाङ हरीमे ठोकि भनसिया ताला लगा देलकै । जनका कछमछाकऽ रहि गेल । मोन भेलै जे सभ बन्धन तोड़ि बाजजकाँ खुला आकाशमे उड़ि जाए । मुदा से सम्प्रति सम्भव नहि छलै । समयक प्रतिक्षा करबाक अपेक्षा ओकरा लग दोसर विकल्प नहि छलै । ओ अपन झोरादिस तकलक । झोरामे राखल अपन माएक हाथसँ बनाओल खोआक सुगन्धक अनुभव कएलक । पुनि पत्नीक बास्ते लऽ जाए लागल सेनुर, टिकली आ ऐना कङ्हीक मादे विचार कएलक । अन्तमे अपन घरवालीक सुन्दरताक कल्पना कएलक आ मोन मसोसिकऽ रहि गेल । ओकरा अपने आपपर ग्लानि होबऽ लगलै । गामक लोकपर तामस उठलै । पच्च दऽ थूक फेकलक– सबटा कायर गुलाम बनल हए ....। पिलुआके कहाँदन नालीएमे नीक लगै हइ....। रह सभटा नालीमे खदखद करैत । .... ओ मोनहि मोन बाजल ।

ओकर मोन विद्रोह कऽ रहल छलै– कहियाधरि सहैत रहत लोक जिमदरबाक आतङ्क ? कहियाधरि लोक पहिलुका फलफूल आ तरकारी जिमदरबाके लेमान करबबैत रहत ?' ओकर दुनू टाङ हरीमे ठोकल रहैक आ दिमागमे हरबिर्रो मचल रहै । ओ मोनहि मोन सप्पत खएलक जे सौँसे गामक छौंड़ासभकेँ सरहो खेलएबै । सभकेँ पहलमान बनेबै । एहि बेरक झण्डामे हम अवश्य पहलमानी लड़बै । मुदा भुकना पहलमानसँ नइ, जिमदार मुनि सिंहसँ .....चाहे ई जान रहए कि जाए !

शब्दार्थ

धमकलै = उगलै (विशेष अर्थमे)
डोलडाल = शौचक्रिया, पैखाना
जिमदार = जमीनदार
गुड़कौना = पहिया
फुद्दी = एक प्रकारक चिड़ैक नाम, तेज दौड़ब (विशेष अर्थमे)
रोमाञ्चक = आनन्ददायक
बाजुबन्द = बाँहिक एक गहना
बुच्च = घोकचल, छोट, नान्हिटा
सुदर्शन = सुन्दर रूप भेनिहार, देखऽमे सुन्दर लगनिहार
बोदरि = तीतल, भीजल
ठकमुरगी = विस्मयमे ठकुआएब, आश्चर्यचकित होएब
झण्डा = (विशेष अर्थमे) हनुमानजीक उत्सव, जाहिमे कलात्मक स्तूपाकार आकृति बनाओल जाइत अछि (इस्लाम धर्मावलम्बीद्वारा निर्मित दाहाजकाँ), झण्डोत्सव

सरोह = पहलमानी खेलएबाक अखाड़ा

पराती = भिनसरबामे गाओल जाएवला एक विशेष प्रकारक गीत

पाखण्डी = वास्तविक आचार-विचारक विपरीत वाह्य प्रदर्शन कएनिहार

अराध्यदेव = कुल परम्परासँ पूजित देवता, अपन खास पूज्य देवता

गोहराएब = प्रार्थना करब, नेहोरा करब

फरिच्छ = स्पष्ट, (विशेष अर्थमे) भोरमे अन्हारसँ इजोत होएबाक समय

तामऽ लागल = कोदारिसँ खेतक माटि कोड़ि-कोड़ि उनटाबऽ लागल

गाड़ = पटएबामे पानिक अपेक्षित उठान, करीन आदि पानि पटएबाक उपकरण

ओगारि देलकै = खएबालए मालक आगाँ पोआर वा घास राखि देलकै

तीत गेल = भीजि गेल

खराइन = पेसाब आदिक दुर्गन्ध

झबही = झभही, दूध नपबाक एक प्रकारक माटिक बासन

ढार = अर्घ, देवता आदिकेँ ढारिकऽ चढ़ाओल गेल जल

गौना = विदागरी, द्विरागमन

सागीर्द = सङ्गतिया, मन मिलएबला, (एहिठाम) समर्थक

पित्त = तामस

कानी कटबौनाइ = केश छँटौनाइ, कानक काते-कात छूरासँ केश मिलबएनाइ

मजमा = बैसार, सभा

खुरपेड़िया = एकपेड़िया, एक व्यक्तिक चलबा जोगर कम चाकर बाट

खल्ला = देहक चमड़ा

लेमान = लवान, नव अन्नक पहिल भोग

सोहरौने = निच्चामे जमीनदिस लटकाएब जाहिसँ बाट बहाड़लजकाँ होइत हो

रञ्ज = तामस, क्रोध, तमसाएल अवस्था

सार = निचोड़

गुरमिन्टी = षड़यन्त्रमूलक, सरसलाह

अनर्गल = असङ्गत, अनुचित

हरी = दण्ड देबाक लेल प्रचलित एकटा उपकरण, जाहिमे टाङ फँसाकऽ ताला लगा देल जाइछ

सम्प्रति = एखन, वर्तमान समयमे

ग्लानि = दुःख

गुलाम = बिनु दरमाहाक स्थायी नोकर

अभ्यास

श्रवण-शिल्प (सुननाइ)

१. **कथाकेँ शिक्षकसँ सुनू आ निच्चा देल गेल कथनसभ के कहलक अछि, से कहू :**

(क) जनकामे एक हाथीक बल हइ ।

(ख) रे मरदे .....पहिने कर्म कर आ तखन फलके आश ।

(ग) मालजाल निकालि दही ।

(घ) आ बाउ पितेतौ से ?

(ङ) एहि गामके देव-पितर हमहीँ छी ।

(च) लोकके धोती-कुर्ता पहिरैसऽ रोकि देबै अहाँ ?.

२. **कथाक अन्तिम अनुच्छेदक श्रुति लेखन करू ।**

३. **कथाकेँ फेरोसँ सुनिकऽ एकर मुख्य-मुख्य घटनासभ संक्षेपमे टिपाउत करू ।**

कथन-शिल्प (बजनाइ)

४. **निम्नलिखित शब्दसभक शुद्ध उच्चारण करू :**

पाखण्डी, फरिच्छ, दरबज्जा, गुरमिन्टी, प्रसन्नता, अनर्गल, खल्ला, सागीर्द ।

५. **एहि कथाक शीर्षक जनकाक सङकल्प कतेक उपयुक्त अछि ? अपन तर्क प्रस्तुत करू ।**

६. **अहाँ अपन सुनल-बुझल एहने कोनो कथा कक्षामे सभकेँ सुनाउ ।**

पठन-शिल्प (पढ़नाइ)

७. **कथाकेँ बेरा-बेरी सभगोटे पाँच-पाँच मिनट पढ़ू आ कतेक सङ्ख्यामे शब्द पढ़ि सकलहुँ, तकर अभिलेख राखू ।**

८. **पूरे कथाकेँ द्रूत वाचन करू आ जनकाक माएक सम्बन्धमे अपन धारणा लिखू ।**

९. **निम्नलिखित वाक्यसभमेसँ ठीकमे (✓) आ गलतमे (✗) चिह्न लगाउ ।**

(क) जनका अविवाहित अछि । ( )

(ख) जनकाक बाबूओ विद्रोही स्वभावक अछि । ( )

(ग) जनकाकेँ सब दिन पराती नीक लगैत छल । ( )

(घ) जिमदारक नाम मुनि सिंह छल । ( )

(ङ) जनकाकेँ जिमदारक आदमीसभ हरीमे ठोकि देलक । ( )

(च) जनका सतरह वर्षक उमेर पूरा कऽ लेने अछि । ( )

(छ) ब्रासलेट धोती पहिरि जनका जिमदारक धीयापुताजकाँ लागि रहल छल । ( )

१०. **निम्नाङ्कित प्रश्नसभक एक-एक वाक्यमे उत्तर दिअ ।**

(क) जनकाक पहलमानी गुरुक नाम की अछि ?

(ख) परातीक मधुर स्वर ककर छलै ?

(ग) जनका अखाड़ाकेँ किएक तामऽ लागल ?

(घ) ओछरा किएक तीत गेल छलै ?

(ङ) माए कतऽ जएबाक लेल जनकाकेँ कहलक ?

(च) ओ कोन बैगमे कपड़ासभ सैंतलक ?

(छ) कानी कटेलाक बाद ओ कथीक प्रतीक्षा करए लागल ?

(ज) मुनि सिंहक तामस किएक दुगुन्ना भऽ गेलैक ?

११. **गति, यति आ लय मिलाकऽ जनकाक सङकल्प कथाक मोनहि मोन वाचन करू ।**

लेखन-शिल्प (लिखब)

१२. **कथामे प्रयुक्त किछु शब्दसभ मैथिलीक सामाजिक बोली थिक । उदाहरणमे देल गेलजकाँ एकर मानक रूप लिखू :**

एगो = एकगोट, एकटा डोलडाल = पैखाना

झारा, लवका, हइ, हबे, गौना, जतरा, एमरी, जहन, जिमदार, केना, मेहमानसुन, लेमान, पोरा ।

१३. निम्नाङ्कित शब्दसभक वाक्य बनाउ

ठकमुरगी, पराती, दण्ड-बैसकी, ढार, नोत-हकार, भनसिया, देव-पितर, टाल, जिवटपनी, विकल्प ।

१४. निम्नलिखित प्रश्नसभक संक्षिप्त उत्तर दिअ :

(क) भालसरिक गाछतर की होइत रहै छलै ?

(ख) खतबे टोलबलासभ किएक खुरपेड़िया बनौने अछि ?

(ग) राजेसर सिंह के छल ?

(घ) एहिबेरक झण्डामे जनका कोन पहलमान सङ्गे भीड़त ?

(ङ) जनकाक बाप की कएने छल ?

(च) जनकाक हिम्मत देखिकऽ किछुगोटेकेँ किएक प्रसन्नता भेलैक ?

(छ) जनका कानी किएक छँटबौलक ?

(ज) जनकाक शारीरिक स्वरूप केहन छल ?

(झ) जनका किएक खुरपेड़िया भऽकऽ नहि गेल ?

१५. निच्चा देल गेल उद्धरणसभक भाव विस्तार करू :

(क) भगवानो ओकरे मदति करै छथिन जे अपन काज इमानदारीसँ करैए ।

(ख) पिलुआकेँ कहाँदन नालीएमे नीक लगै हइ ।

१६. कथाक आधारपर जनकाक चरित्र चित्रण करू ।

१७. जनकाक सङ्कल्प कथामे प्रयुक्त निम्नलिखित वाग्धारासभक अर्थ लिखू : (शब्दकोश अथवा गुगलमे खोजल जा सकैछ)

फुद्दीजकाँ फुदकनाइ, ठकमुरगी लगनाइ, एक हाथीक बल भेनाइ, बाहर-भीतर जाएब, लाजे कठौत भेनाइ, आँखि बचेनाइ, एँड़ीक पित्त कपारपर चढ़नाइ, नोन-मिरचाइ लगेनाइ, समुद्री पढ़नाइ ।

१८. उपर्युक्त वाग्धारासभकेँ अपन वाक्यमे प्रयोग करू ।

१९. एहि पुस्तकक आनो-आन पाठसभमे प्रयुक्त आ अहाँकेँ बुझल आनो वाग्धाराकेँ सङ्कलित करू ।

२०. कथामे प्रयुक्त 'डोलडाल, खाएल-खेलाएल' जकाँ शब्दयुग्मसभकेँ सङ्कलित करू ।

२१. प्रयोगात्मक अभ्यास :

(क) जनकाक सङ्कल्प कथामे वालविवाह, सामन्ती प्रथासन सामाजिक कुरीतिकेँ विषयवस्तु बनाएल गेल अछि। अहाँक समुदायमे विद्यमान एहन-एहन सामाजिक कुरीति कोन-कोन अछि ? सूची बनाउ।

(ख) उपर्युक्त कुरीतिमेसँ कोनो एकटाकेँ विषयवस्तु बना एकटा कथा अथवा कविता लिखू।

(ग) जनकाक सङ्कल्प कथाक टिप्पणी करैत अपन सङ्गीकेँ चिट्ठी लिखू।

(घ) निम्नलिखित विन्दुसभक आधारपर करीब १५० शब्दक एकटा कथा लिखू :

एकटा नढ़िया – एकटा गरुड़ – दुनूक मित्रता – नढ़िया नोत देलक – गरुड़ गेल – नढ़ियाक धूर्त्तपनी – थारीमे खाए देलकै – गरुड़ भरिपेट नहि – गरुड़ो नोत देलक – बदला - तमघैलमे खाए लेल – नढ़िया नहि खा सकल – शिक्षा की ?

२२. निम्नाङ्कित शब्दसभमे हिज्जे सम्बन्धी किछु अशुद्धि अछि। एकर शुद्ध रूप लिखू :

खलला, अन्तराष्ट्रिय, छौरा, वतावरन, आखीसँ, मीरचाय, कीछू, अछी, पर्राती

व्याकरण

१. वर्तमान, भूत आ भविष्यत : तीनू कालक अपूर्ण पक्षक वाक्यसभ जनकाक सङ्कल्प कथासँ वा आनो पाठसँ ताकिऽ लिखू। एकटा उदाहरण देल गेल अछि।

अपूर्ण वर्तमानकाल	अपूर्ण भूतकाल	अपूर्ण भविष्यतकाल
देह केराक थम्हजकाँ डगडग कऽ रहल छैक	जनका फुट्टीजकाँ फुदकि रहल छल।	हमर भाए मनसँ पढ़ि रहल होएत।

२. वर्तमानकाल आ भूतकालक अपूर्ण पक्षक प्रयोग करैत अहाँ गतवर्षक गर्मी छुट्टीक अनुभवक तुलना एहि वर्षक छुट्टीक अनुभवसँ करैत एकटा निबन्ध लिखू।

३. विद्यालय शिक्षा परीक्षा (एस.इ.इ.) देलाक बाद अहाँक की-की करबाक योजना अछि ? आवश्यकता अनुसार अपूर्ण भविष्यतकालक प्रयोग अवश्य करू।

नेपालक इन्द्रधनुषी संस्कृति

■ *विष्णुकुमार मण्डल*

वर्षाकालमे कहियो काल आकाशमे सात रङ्गक धनुषाकार आकृति देखल जाइत छैक, जकरा इन्द्रधनुष कहल जाइत अछि। एहिमे लाल, सन्तोला रङ्ग, पियर, हरियर, आसमानी, नील आ बैगनी सहित सात रङ्ग होइत अछि। ई सातो रङ्ग एक-दोसरसँ अभिन्न रूपेँ सम्मिश्रित रहबाक कारणे सुन्दर आ आकर्षक होइत अछि। एही तरहेँ भौगोलिक विविधताक सङ्ग नेपालक संस्कृति सेहो विभिन्न तरहक अछि। ई इन्द्रधनुष सदृश एक-दोसरसँ सम्मिश्रित होएबाक कारणे देशकेँ सुन्दर बनबैत अछि।

कोनहु समुदायमे मूल रूपमे प्रचलित भाषा, कला, साहित्य, परम्परा, चालि-चलन, रीति-रिवाज, खानपीन, पावनि-तिहार तथा संस्कारसभक समष्टिगत स्वरूपकेँ संस्कृति कहल जाइत अछि। विश्वक कुल क्षेत्रफलक ०.३ प्रतिशत भूभागमे रहल छोट देश नेपाल सांस्कृतिक विविधतासँ परिपूर्ण अछि। एहिठामक भाषा, धर्म, कला, साहित्य, पहिरन-ओढ़न, पावनि-तिहार सहित अन्य सामाजिक संस्कारसभमे सेहो विविधता अछि।

नेपालक जनसङ्ख्या लगभग पौने तीन करोड़ पहुँचि गेल अछि। एहिमे ८० प्रतिशतसँ बेसी हिन्दू, ९ प्रतिशत बौद्ध, ४.४ प्रतिशत इस्लाम, १.४ प्रतिशत इसाइ सहित सिख आ जैन आदि धर्मावलम्बीसभ

बसोवास करैत छथि । एहि तरहेँ धार्मिक रूपेँ सेहो विविधता रहल देशमे आपसी समझदारी विद्यमान अछि, जे एतुक्का सौन्दर्य मानल जाइत अछि ।

नेपालकेँ भौगोलिक रूपेँ हिमाली, पहाड़ी, मध्य तराइ आ तराइ-मधेश सहित चारि क्षेत्रमे विभाजित कएल जा सकैत अछि । हिमाली क्षेत्रक अति ठण्ढ आवोहवा आ पहाड़ी क्षेत्रक जाड़ ओतुक्का खानपीन, कृषि-उपज, रहन-सहन आदिकेँ प्रभावित करैत अछि । तहिना मध्य तराइ क्षेत्रक समशीतोष्ण तथा तराइ-मधेशक उष्ण जलवायु अनुसार एहि क्षेत्रक हरेक क्रियाकलाप चलैत अछि । एहि विविध क्षेत्रमे आर्य मूलक जनसमुदायसँ लऽकऽ भोट-बर्मेली समुदायक लोकसभक बसोवास अछि । तहिना आदिम संस्कृति आ रहन-सहनकेँ अङ्गीकार कएनिहार राउटे समुदायक बसोवास सेहो कमोबेस अछि । नेपालमे विभिन्न क्षेत्रक जलवायु अलग-अलग होएबाक कारणे ऋतुअनुसार खानपीन, पावनि-तिहार मनाओल जाइत अछि । तेँ एतुक्का संस्कृतिकेँ ऋतुप्रधान सेहो कहल जाइत अछि ।

नेपालक उत्तरमे चीन (तिब्बत) आ दक्षिणमे भारत अवस्थित रहलाक कारणे एहिठामक संस्कृति स्वाभाविक रूपेँ किछु तिब्बतसँ, तँ किछु भारतसँ मिलैत छैक । विविधतामे एकता नेपाली संस्कृतिक मूल विशेषता छियैक । नेपाली संस्कृतिमे देखल जाइत ई विविधता देशक सम्पदा आ सौन्दर्यक आधार अछि । नेपाली संस्कृतिक एहि इन्द्रधनुषीपनक विविध पक्षक सम्बन्धमे एहिठाम संक्षिप्त चर्चा कएल जा रहल अछि ।

भाषा :

विक्रम संवत २०६८ सालक जनगणनाअनुसार नेपालमे १२३ टा भाषा बाजल जाइत छैक । कुसुण्डा, द्रविड़, आग्नेय, भोट, बर्मेली आ भारोपेली सहित ५ महापरिवारक भाषा होइतो नेपालक अधिकांश जनसमुदाय भारोपेली तथा तिब्बती (भोट-बर्मेली) भाषा-परिवारक भाषा बजैत अछि । मातृभाषाक रूपमे नेपाली भाषा बजनिहारक सङ्ख्या नेपालक कुल जनसङ्ख्याक ४४.६४ प्रतिशत अछि तँ मैथिली भाषा-भाषीक सङ्ख्या ११.६७ प्रतिशत रहल अछि । तहिना भोजपुरी ५.९८, थारू ५.७७, तामाङ ५.१०, नेवारी ३.१९ आ उर्दू भाषीक सङ्ख्या २.६१ प्रतिशत रहल छैक ।

एतेक छोट भौगोलिक आकार रहल देशमे विविध भाषा-भाषी होइतो एतऽ भाषिक सहअस्तित्वक भावना अछि । एहिठामक लोक एक-दोसरक भाषाक आदर आ सम्मान करैत अछि । नेपालक संविधानमे सभटा भाषाकेँ राष्ट्रभाषाक स्थानपर राखल गेल अछि ।

साहित्य :

कोनहु भाषाक वाचित वा लिखित सामग्रीकेँ साहित्य कहल जाइत छैक । नेपालक विभिन्न कालखण्डमे साहित्य-सृजन कएल गेल अछि, जाहिमे संस्कृत, नेपाली, मैथिली, नेपाल भाषा (नेवारी), भोजपुरी, अवधी, हिन्दी, राइभाषा, तिब्बती भाषा आदि अछि । एहिठाम एकटा साहित्यक सम्मान दोसर

साहित्यकार करैत छथि। मैथिली भाषाक साहित्यकारलोकनि नेपाली, हिन्दीमे सेहो साहित्य-रचना करैत छथि आ एहिना आनो-आन भाषाक साहित्यकारलोकनि सृजनधर्ममे लागल रहैत छथि। परस्पर साहित्यिक आदरभावक उदाहरण एहि तरहेँ देखल जा सकैछ जे नेपालक मैथिली, नेपाली, हिन्दी आदि भाषाक अनेक विधाक साहित्यिक कृतिसभक अनुवाद सेहो एक-दोसर भाषामे कएल जाइत अछि।

कला :

लोकक विभिन्न तरहक व्यवहार, कल्पना आ व्यावसायिक कौशलद्वारा सृजित सन्दर्भ वा वस्तुकेँ कला कहल जाइत अछि। शुक्रनीति आदि ग्रन्थमे कलाक सङ्ख्या ६४ कहल गेल अछि। मनुष्य अपन भावक अभिव्यक्तिकेँ कलाद्वारा प्रदर्शित करैत रहैत अछि। कलाकार अपन भावकेँ क्रिया, रेखा, रङ्ग, ध्वनि आ शब्दद्वारा अभिव्यक्त करैत अछि। प्राचीन ग्रन्थसभमे कलाकेँ सात भागमे विभक्त कएल गेल अछि। ओसभ अछि– स्थापत्यकला, चित्रकला, मूर्त्तिकला, सङ्गीतकला, काव्य, नृत्य आ नाट्यकला।

नेपाल प्राचीन लोककलामे समृद्ध रहल अछि। हिमाली आ पहाड़ी क्षेत्रमे भ्याउरे, स्याब्रु, मारुनी, बालन, गौरा, टप्पा, घाटु आदि नृत्य तथा सङ्गिनी, ख्याली, रोइला, देउडा, चुड्का आदि गीत जतबए लोकप्रिय अछि, मिथिला-मधेश क्षेत्रमे झिझिया, जट-जटिन, डोमकछ, झर्री आदि नृत्य आ सोहर, बटगवनी, समदाओन, लगनी आदि गीतसभ सेहो जन-जनमे भीजल अछि। नेपालक एक स्थानक गीत-सङ्गीत आ आनो-आन कला दोसर स्थानमे अति प्रचलित आ लोकप्रिय अछि। काठमाण्डूक नेवार समुदायमे गाएल जाइत विद्यापति रचित मैथिली गीतक भास मिथिलाक भाससँ फराक अछि, मुदा भाव ओहने गहींर होइत अछि। भक्तपुरक चित्रकला आ मूर्त्तिकला तथा मिथिला चित्रकलाक अपन अलगे विशिष्टता अछि।

रहन-सहन, पहिरन-ओढ़न :

नेपालक विभिन्न स्थानक जलवायु अनुसार खानपीन, पहिरन-ओढ़न आ रहन-सहन अलग-अलग अछि। पहाड़ी आ हिमाली क्षेत्रमे सालोभरि ठण्ढ रहैत छैक, तेँ ओतुक्का लोकसभ सालोभरि गर्म वस्त्र पहिरैत अछि। दौरा-सुरुवाल, गुन्यू-चोलो, बक्खू आदि पहिरनाइ ओतुक्का लोकक बाध्यता छैक। मुदा तराइ-मधेशक गर्म जलवायुमे धोती-कुर्ता, सूती साड़ी, गोलगला, पएजामा आदि शरीरकेँ बेसी आराम दैत छैक। उत्तरी क्षेत्रक लोक सालोभरि मोट सीरक ओढ़ैत अछि, मुदा दक्षिणी क्षेत्रमे किछुए मास सीरक-कम्बलक प्रयोग कएल जाइत अछि। बिजलीक पङ्खा हिमाली क्षेत्रक लोक नहि रखैत अछि आ रूम-हीटरक आवश्यकता तराइमे कमे पड़ैत छैक। पहाड़मे बस्ती बेसी सघन नहि रहैत छैक आ घरसभ दूर-दूर रहैत छैक। तेँ एक-दोसरकेँ शोर पाड़बाक लेल जोड़सँ हाक देबाक लोकक आदते पड़ि गेल रहैत छैक। एहि तरहेँ नेपालक भौगोलिक आ जानसाङ्ख्यिक विविधताक कारणे एतुक्का खानपीन, पहिरन-ओढ़न आदिमे इन्द्रधनुषीपन अछि।

संस्कारसभ :

संस्कार शब्दक मूल अर्थ होइत छैक– तरासल गेल, परिष्कृत बोली-चाली, पहिरन, धर्म, श्रम, आर्थिक क्रियाकलाप, शिष्टाचार आदि मानवीय सभ्यताक परिचायक व्यवहार आ अभ्यास। मनुष्य एहि सभक ज्ञान अपन माए-बाप, परिवार, गुरु, सङ्गी-साथी, समाजसँ प्राप्त करैत अछि। एकर अतिरिक्त धर्मग्रन्थमे बताओल गेल संस्कारसभक सङ्ख्या १६ अछि। ई सोलहोटा संस्कार जन्म, शिक्षा, विवाह आ मृत्युसँ सम्बन्धित होइत छैक। मान्यता ई अछि जे जहिना सोनाकेँ तबेलाक बाद चमक अबैत अछि, तहिना संस्कारसँ युक्त मानवक मानसिकतामे परिवर्तन होइत अछि। नेपालक अलग-अलग समुदायमे एहि संस्कारसभक प्रक्रियामे विभिन्नता पाओल जाइत छैक। पहाड़ी भूभागक विवाहक पद्धति, श्राद्ध विधि तराइ मूलक लोकक पद्धतिसँ किछु फराक होइत अछि।

पावनि-तिहार :

नेपालक हरेक समुदायमे पावनि-तिहारकेँ संस्कृतिक मेरुदण्ड मानल जाइत अछि। मुख्यतः प्रकृतिपरक आ ऋतुपरक पावनि-तिहार रहल नेपालमे भौगोलिक आ सामाजिक आधारपर किछु-किछु भिन्नता होइतो अधिकांश पावनि-तिहारक मूल मर्म एक्कहि देखल जाइछ। दशमी, सुकराती सदृश पावनिसभ सामान्यतया देशभरि मनाएल जाइछ। मुदा खास जाति, समुदायद्वारा मनाएल जाएवला किछु पावनिसभ सेहो छैक। नेपालक मिथिला क्षेत्रमे जुड़शीतल, लबान, कोजगरा, छठि, जितिया, चौरचन, बरिसाइत आदि पर्वसभ मनाओल जाइत अछि। तहिना मिथिलासहित सम्पूर्ण तराइ-मधेशमे विवाह पञ्चमी, रामनवमी, जानकी नवमी, नागपञ्चमी रवि, रक्षाबन्धन आदि पर्वसभ विशेष रूपसँ मनाएल जाइछ। नेवारी समुदायमे गाइजात्रा, धान्यपूर्णिमा, म्ह पूजा आदि पर्वसभ आयोजित होइछ। किरात समुदायक चासोबुआ यक्वा, गुरुङ समुदायक तमु ल्होसार, तामाङ समुदायक सोनाम ल्होसार आ शेर्पासभक ग्याल्वो पर्व प्रसिद्ध अछि। बौद्धमार्गीलोकनि पञ्चदान पर्व आ इस्लाम धर्मावलम्बीसभ इद, बकरीद,

मुहर्रम आदि प्रमुखतासँ मनबैत छथि । जैन धर्मावलम्बीलोकनि महावीर जयन्तीकेँ आ सिखलोकनि गुरु गोविन्द सिंह जयन्तीकेँ प्रमुख पर्वक रूप दैत छथि ।

एहि तरहेँ नेपालमे विभिन्न समुदायद्वारा अलग-अलग पावनिसभ मनाएल जाइतो सभ समुदायक बीच धार्मिक सहिष्णुता अछि । मिथिलाक पर्व छठि, जितिया, चौरचन आब सौँसे तराइ-मधेशक होइत पहाड़ी मूलक लोकसभक बीच सेहो पसरि रहल अछि । इस्लाम धर्मावलम्बीलोकनिक इद आ दाहामे समाजक सभ समुदायक सहभागिता देखल जाइत अछि । हिन्दूसभक दिआबाती, होलीमे मुसलमान वन्धुक सेहो संलग्नता देखल जा सकैछ ।

निष्कर्ष :

नेपाल भौगोलिक हिसाबसँ छोट देश होइतो एतऽ धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषिक विविधता प्रचुर मात्रामे पाओल जाइत अछि । एही विविधतामे नेपालक सांस्कृतिक शौष्ठव सेहो निहित अछि । ठीक ओहिना जेना इन्द्रधनुषमे सम्मिश्रित सातटा रङ्गे एकर सौन्दर्य होइत अछि । जँ इन्द्रधनुषमे एक्कहि-दूटा रङ्ग रहितैक तँ ई एतेक सुन्दर नहि होइतैक, तहिना नेपालक सभ समुदायक संस्कृति एक्कहि रङ्गक रहितैक तँ ई चारि वर्ण छत्तीस जातिक फुलवारी नहि कहबितए । नेपालक विविधतापूर्ण इन्द्रधनुषी संस्कृति देशक आभूषण अछि । जँ एहि विविध सांस्कृतिक पक्षमे सहअस्तित्व आ सहकार्यक भावना हुअए तँ देशक उत्तरोत्तर समृद्धि एवं विकास अवश्यम्भावी अछि । नेपाल धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र भऽ गेलाक बाद प्रत्येक जाति आ समुदाय अपन मौलिक संस्कृति अवलम्बन करबाक लेल स्वतन्त्र अछि । नेपालसनक धार्मिक आ जातीय सद्भाव तथा सहिष्णुता आन बहुतो देशमे भेटब मुश्किल अछि ।

शब्दार्थ

आकृति = आकार

सम्मिश्रित = एक-दोसरसँ मिलल

विविधता = अलग-अलग प्रकारक अवस्था

प्रचलित = चलन-चल्तीक

आवोहवा = जलवायु

आदिम = प्राचीन, मानव-समाजक उत्पत्तिकालक

कालखण्ड = समयक निश्चित अवधि

कौशल = शिल्प, लूरि

सृजित = रचना कएल गेल

मेरुदण्ड = मुख्य आधार

शौष्ठव = सुन्दरता, उत्तमता

इन्द्रधनुषी = इन्द्रधनुष समान

सहअस्तित्व = एक-दोसरक अस्तित्व स्वीकार करबाक भावना

स्थापत्यकला = गृह-निर्माण शैली, भौतिक संरचनाकेँ बनएबाक कला

लबान = नवान्न (नव अन्न खेनाइ प्रारम्भ करबाक एक अनुष्ठान)

सहिष्णुता = मोनसँ विपरीतो बातकेँ स्वीकार करबाक भावना

उत्तरोत्तर = निरन्तर, आओरो आगाँ

विभक्त = बाँटल, विभाजित

अभ्यास

श्रवण-शिल्प (सुननाइ)

१. पाठक प्रारम्भसँ पाचम अनुच्छेदधरि शिक्षकसँ सुनू आ निम्नलिखित वाक्यसभमे रहल रिक्तस्थानकेँ उपयुक्त शब्दसँ भरू :

(क) नेपालक संस्कृति इन्द्रधनुष सदृश एक-दोसरसँ .....अछि ।

(ख) नेपाल .....विविधतासँ परिपूर्ण अछि ।

(ग) आपसी समझदारी एतुक्का .....मानल जाइत अछि ।

(घ) तराइ-मधेशक जलवायु .....अछि ।

(ङ) विविधतामे एकता नेपाली .....क मूल विशेषता थिक ।

२. पाठक अन्तिम अनुच्छेद शिक्षकसँ सुनू आ निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर लिखू :

(क) नेपालमे कोन-कोन तरहक विविधता अछि ?

(ख) नेपालक सांस्कृतिक विविधता कथीक परिचायक छियैक ?

(ग) देशक समृद्धि आ विकासक लेल की आवश्यक होइत छैक ?

(घ) नेपाल धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र भेलाक बाद की भेल अछि ?

३. पाठक पहिल अनुच्छेदक श्रुतिलेखन करू ।

कथन-शिल्प (बजनाइ)

४. **निम्नलिखित शब्दसभक शुद्ध उच्चारण करू :**

सम्मिश्रित, विद्यमान, सौन्दर्य, समशीतोष्ण, अभिव्यक्ति, स्थापत्यकला, जानसाङ्ख्यिक, पद्धति, सहिष्णुता ।

५. **भौगोलिक विविधतासँ पहिरन-ओढ़नमे पड़ल असरिक सम्बन्धमे अपन धारणा कक्षामे सुनाउ ।**

६. **कक्षाकेँ चारि समूहमे विभाजित कऽ अहाँ अपन समुदायक निम्न विषयवस्तुपर तथ्यसभ सङ्कलित करू आ तकरा कक्षामे सुनाकऽ विमर्श करू :**

(क) खानपीनक पद्धति (ख) पहिरन (ग) गीतनाद (घ) पावनि-तिहार

पठन-शिल्प (पढ़नाइ)

७. **पाठक प्रत्येक अनुच्छेद एक-एक कऽ बेरा-बेरी सस्वर पढ़िकऽ सुनाउ । पढ़बामे कतेक समय लागल, तकर अभिलेख सेहो राखू ।**

८. **निम्नाङ्कित प्रश्नसभक एक-एक वाक्यमे उत्तर दिअ :**

(क) संस्कृति ककरा कहल जाइत छैक ?

(ख) नेपालक धार्मिक विविधताकेँ एतुक्का सौन्दर्य किएक मानल जाइत अछि ?

(ग) नेपालक संस्कृतिकेँ ऋतुप्रधान किएक कहल जाइत छैक ?

(घ) साहित्य ककरा कहल जाइत अछि ?

(ङ) पहाड़क लोककेँ जोड़सँ चिकरिकऽ शोर पाड़बाक आदत किएक रहैत छैक ?

(च) संस्कार शब्दक मूल अर्थ की छियैक ?

९. **रिक्त स्थानपर कोष्ठकमे रहल शब्दसभमेसँ कोन शब्द ठीक हएत, ओहिमे चिह्न लगाउ :**

(क) पावनि-तिहार संस्कृतिक .....थिक ।

(विनाश, फल, मेरुदण्ड)

(ख) राउटे समुदाय .....संस्कृतिकेँ अङ्गीकार कएने अछि ।

(प्राचीन, आधुनिक, तिब्बती)

(ग) मैथिली नेपालमे बाजल जाएवला भाषासभमे ....स्थानपर अछि ।

(पहिल, दोसर, तेसर)

(घ) नेपालमे एक भाषाक साहित्यकेँ ....दोसर भाषाक साहित्यकार करैत अछि ।

(अपमान, तिरस्कार, सम्मान)

(ङ) नेपालक इन्द्रधनुषी संस्कृति देशक ....थिक ।

(अन्हरिया, आभूषण, अवरोधक)

१०. नेपालक संस्कृतिक की-की विशेषता छैक, विन्दुगत रूपेँ टिपाउत करू ।

लेखन-शिल्प (लिखनाइ)

११. निम्नाङ्कित शब्दसभक अर्थ स्पष्ट करैत वाक्य बनाउ :

आकृति, धर्मावलम्बी, अङ्गीकार, सहअस्तित्व, रहन-सहन, शिष्टाचार, सहिष्णुता, प्रसिद्ध ।

१२. निम्नाङ्कित प्रश्नसभक संक्षिप्त उत्तर दिअ :

(क) नेपालमे विद्यमान धार्मिक विविधताक कोनो एकटा उदाहरण दिअ ।

(ख) नेपालक अधिकांश लोक कोन भाषा-परिवारक भाषा बजैत अछि ?

(ग) नेपालमे पारस्परिक साहित्यिक आदरभावक कोन प्रमाण भेटैत अछि ?

(घ) नेवार समुदायद्वारा गाओल जाइत विद्यापति-गीतमे केहन भाव रहैत अछि ?

(ङ) धर्मशास्त्रमे बताओल गेल सोलह संस्कार कथी-कथीसँ सम्बन्धित होइत अछि ?

१३. निम्नलिखित वाक्यांशक भावार्थ स्पष्ट करू :

(क) इएह विविधता नेपालक सांस्कृतिक सौष्ठवक परिचायक सेहो छियैक ।

(ख) नेपालसनक धार्मिक आ जातीय सदभाव एवं सहिष्णुता आन बहुतो देशमे भेटब मुश्किल अछि ।

सृजनात्मक अभ्यास :

१४. निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर लिखू :

(क) नेपालक इन्द्रधनुषी संस्कृति शीर्षकक सार्थकता स्पष्ट करू ।

(ख) हमर संस्कृति : हमर गौरव विषयपर करीब १५० शब्दमे एकटा निबन्ध लिखू ।

(ग) इन्टरनेटसँ वा अपन टोल-पड़ोसक लोकसँ निम्न तथ्यसभ खोजिकऽ लिखू :

(अ) नेपालक विभिन्न समुदायद्वारा मनाओल जाएवला पावनि-तिहारक नाम

(आ) नेपालक विभिन्न समुदायक पहिरनसभक नाम

(इ) नेपाली, मैथिली, नेवारी, भोजपुरी आ अवधी भाषाक कृतिसभक नाम

(ई) नेपालक विभिन्न समुदायमे प्रचलित नाचसभक नाम

(घ) नेपाली होएबापर अहाँ केहन अनुभव करैत छी ?

(ङ) 'मिथिलाक कोढ़ : तिलक प्रथा' शीर्षकपर तीस पाँतिमे एकटा लघु निबन्ध लिखू ।

वर्ण विन्यास

१५. मैथिली भाषामे लिखैत काल कँ आ के/क" क प्रयोगमे भ्रम होएबाक सम्भावना रहैत अछि । एहि सम्बन्धमे जानकारी रखबाक चाही जे नाम शब्दक बाद कर्म कारकक अर्थमे कँक प्रयोग होइत अछि अर्थात केक उपर चन्द्रविन्दु । जेना :

ओ रमेशकँ पढ़एलक । (एहिठाम कँक उपर चन्द्रविन्दु देबाके चाही)

तहिना हमसभ लोककँ बजेलहुँ । ओ आमकँ लताम बुझैत छथि ।

मुदा सम्बन्ध कारकक अर्थमे क वा केक प्रयोग होइत अछि । एहिठाम केक उपर चन्द्रविन्दु नहि देबाक चाही । जेना :

रामक घर पैघ छैक । अथवा रामके घर पैघ छैक । (एहिठाम केक उपर चन्द्रविन्दु नहि देबाक चाही ।

आब के, क आ कँ लगाकऽ किछु शब्द लिखैत तकरा प्रयोग कऽ वाक्यसभ बनाउ आ शिक्षकसँ जाँच कराउ ।

१६. जखन एक प्रकारक अनेक पद वा शब्द अपन विभक्तिक चिह्न छोड़ि मिलिकऽ एक पद बनि जाइत अछि तँ ओ नवीन पद समस्त पद कहबैत अछि आ ओहि पदक मेल समास कहाइत अछि ।

निम्नलिखित समस्त पदसभकँ देखू :

राजाक मिस्त्री = राजमिस्त्री (समस्त पद)

ज्ञानक अनुसार = यथाज्ञान (समस्त पद)

महिमासँ मण्डित = महिमामण्डित (समस्त पद)

किछु आओर समस्त शब्दक उदाहरण :

चारिटा भुजा अर्थात हाथ भेनिहार = चतुर्भुज

गाछमे पाकल = गछपक्कू

आँखिकेँ फोड़ऽ वला = आँखिफोड़ा

गुणसँ हीन = गुणहीन

रससँ पूर्ण अर्थात भरल = रसपूर्ण

जगतक जननी अर्थात माए = जगज्जननी

बार-बार = बारम्बार

रूपक योग्यता = अनुरूप

कमलसन जकर मुख होए = मुखकमल

ग्रहक समीप = उपग्रह

कमलसन आँखि वा नयन भेनिहार = कमलनयन

गोबरसँ बनल गणेश = गोबरगणेश

प्रश्न : मैथिल संस्कृति निबन्धमे रहल एहन समस्त पदसभ ताकिकऽ लिखू आ तकरा अपन वाक्यमे प्रयोग करू ।

१७. निम्नलिखित शब्दसभकेँ विग्रह करू :

जेना : चन्द्रमुखी = चन्द्रमासन जकर मुह होइक

चौअन्नी, पीताम्बर, अनचिन्हार, आमरण, महाकवि, पदच्यूत, रामायण, प्रतिदिन, पञ्चपात्र, हथकड़ी, देवस्थल

१८. निम्नलिखित पदक विग्रहकेँ समस्त पद बनाउ :

जेना : सूर्यदिस जकर मुह घुमल हो = सूर्यमुखी

(क) ज्ञानक अनुसार

(ख) पानिक बाट

(ग) मेघक राजा

(घ) पाँच पात्रक समाहार

(ङ) नील अम्बर

(च) नहि आदि छनि जिनकर

(छ) दिशा छनि अम्बर (कपड़ा) जिनकर

(ज) कविमे श्रेष्ठ

१९. जे शब्द एक्कहि ठाम दूबेर आबिकऽ एक शब्दक बोध करबैछ, ताहि शब्दकेँ द्वित्व अथवा द्विरुक्ति कहल जाइत अछि । जेना :

कौरे-कौरे, बाधे-बाधे, पानि-पानि, हर-हर, बम-बम, राम-राम, शिव-शिव, बाप-बाप आदि ।

एहि पाठमेसँ अथवा आनो-आन पाठसभसँ अधिकसँ अधिक द्वित्व शब्द खोजू आ तकरासभकेँ अपन वाक्यमे प्रयोग करू ।

द्रष्टव्य : कतहु-कतहु द्वित्व शब्द एक सदृश होइत अछि आ कतहु किछु विकृत ।

जेना :

अढ़ाय-अढ़ाय, आन-आन, एक-एक, काउँ-काउँ, खट-खट, गन-गन, गाम-गाम, गरम-गरम, घट-घट, चम-चम, टक-टक, टन-टन । कोनाकानी, पातेपात, मालोमाल, मोनक मोन, बीटेबीट, बीचोबीच, छी-छी, टोलक-टोल, भात-तात, बाँस-ताँस, हँसै-तँसै आदि ।

२०. **जँ दू वा दूसँ बेसी शब्दसभ मिलिकऽ एकटा तेसर शब्दक रूप धारण करैछ तँ ओकरा शब्दयुग्म कहल जाइछ । जेना : अगल-बगल, अण्टसण्ट, अनेरधुनेर, आगतस्वागत, औन्हीपथारी, उभड़-खाभड़, एकछाहा, एकपिठिया, कुकुरचालि, आकाशकाँकौड़, घरहञ्ज, सङ्गतुरिया आदि ।**

किछु एहने शब्दयुग्म खोजिकऽ अपन वाक्यमे प्रयोग करू ।

महान दार्शनिक प्लेटो

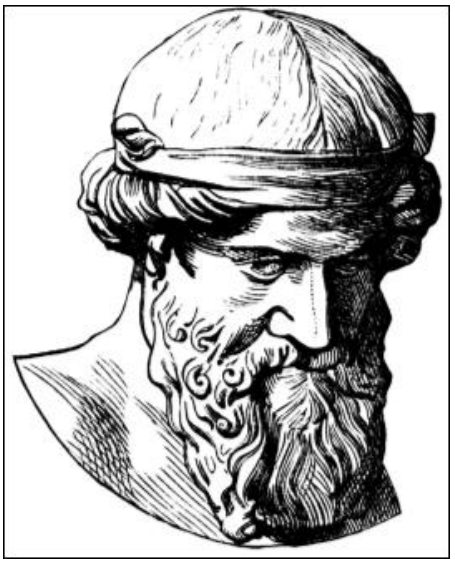

प्रसिद्ध दार्शनिक एवं राजनीतिज्ञ प्लेटोक जन्म ईसापूर्व ४२७ मे एथेन्सक एक कुलीन परिवारमे भेल छलनि। जीवनक आठ वर्ष ई सुकरातक विद्यार्थीक रूपमे व्यतीत कएने रहथि। हिनक बाल्यकाल एहन अवस्थामे व्यतीत भेलनि जखन एथेन्समे प्रजातान्त्रिक भावना निरन्तर बिगड़ैत जा रहल छल। अपन गुरु सुकरातक मृत्युसँ ई ततेक ने विचलित भऽ गेलाह जे सक्रिय राजनीतिसँ संन्यास लेबाक निर्णय कऽ लेलनि। मानव-जीवन आ समाज-सुधारक लेल प्लेटो अध्यापन कार्यसँ जुड़ि गेलाह।

ईसापूर्व ३८७ मे प्लेटो इटली आ सिसली गेलाह, जतऽ डायोनियस नामक एक निरङ्कुश राजासँ हिनक मित्रता भेलनि। ओहिठाम ई राजाकेँ द रिपब्लिकक विचारसँ अवगत करौलनि आ निरङ्कुश शासन-व्यवस्थाक आलोचना कएलनि। एहिपर राजा क्रोधित भऽ हिनका स्पार्टाक राजदूतकेँ सुपुर्द कऽ देलक। कहल जाइत अछि जे प्लेटोकेँ दास बनाकऽ बेचि देल गेल छल। बादमे मोट रकम चुकाकऽ ई दासतामुक्त भेल छलाह। एकर बाद प्लेटो घुरिकऽ एथेन्स आबि गेलाह।

ओही वर्ष प्लेटो एकेडेमी नामक विश्वप्रसिद्ध विद्यालयक स्थापना कएलनि। एकेडेमीमे विशेष कऽ सङ्गीत, गणित, कानून आ विज्ञानक पढ़ाइ होइत छल। यूरोपक पहिल विश्वविद्यालय मानल जाएवला एकेडेमीकेँ ईस्वी सन ५२९मे आबिकऽ रोमन-सम्राट जष्टोनियन बन्द करबा देलनि। सिराक्यूसक निरङ्कुश शासकलोकनिद्वारा प्लेटो दूबेर बजबाओलो गेलाह, मुदा निरङ्कुश शासनकेँ सुधारऽमे हिनका सफलता नहि भेटि सकलनि।

प्लेटो मिगारियन आ पायथागोरियन-सिद्धान्तसँ अत्यन्त प्रभावित छलाह। यथार्थमे ओ अपन गुरु सुकरातहिक विचारकेँ अपनौने छलाह। अपन जीवन कालमे हुनक राज्य सम्बन्धी विचारधारा बदलैत रहलनि। ओ राजनीति आ नीतिशास्त्रकेँ एक सूत्रमे आबद्ध कऽ ओहि लक्ष्यपर विशेष ध्यान देलनि जे राज्यकेँ प्राप्त करबाक चाही।

हुनक मान्यता छलनि जे राजनीति एकटा एहन कला छियैक जे लोककेँ सच्चरित्र आ गुणवान बनएबामे मदति करैत छैक। पूर्ण सत्यक प्राप्ति परस्पर तर्क-वितर्कसँ कएल जा सकबाक हुनक धारणा छलनि। प्लेटोक अनुसार जे देखबामे अबैत अछि से सत्य नहि होइछ, खालि सत्यक प्रतिच्छाया होइत अछि। ई शासनक तुलना कतहु पहरा देनिहार कुकुरसँ करैत छथि तँ कतहु जहाजक नाविकसँ।

प्लेटोक प्रायः सम्पूर्ण रचना संवाद-शैलीमे पाओल जाइत अछि। कहल जाइत अछि जे अपन गुरु सुकरातहिक प्रभावसँ ओ संवाद-शैलीमे लिखैत छलाह। अपन विचारकेँ रोचकता प्रदान करबाक लेल सेहो ओ सुकरातक पद्धति अपनौने छलाह। अपन तर्कक पुष्टिक लेल प्लेटो उदाहरण आ छोट-छोट खिस्सा-पिहानीक सहारा लैत सेहो देखल गेलाह अछि।

प्लेटोक कृतिसभमे द रिपब्लिककेँ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि। अन्य दू द स्टेटमैन आ द लॉग सेहो हिनक प्रमुख कृति मानल जाइत अछि। द रिपब्लिकक रचनाक बाद प्लेटो बेस लोकप्रिय भेलाह। एहि ग्रन्थक सम्बन्धमे विभिन्न विद्वान अपन-अपन विचार व्यक्त कएने छथि। रुसोक मोताबिक द रिपब्लिक राजनीतिक नहि भऽ शिक्षाक विषयमे लिखल गेल एक विशिष्ट ग्रन्थ अछि। किछु विद्वानक कहब छनि जे ई राजनीतिक सङ्ग-सङ्ग न्याय सम्बन्धी कृति सेहो छियैक। किछु गोटे एकरा नीति सम्बन्धी कृति सेहो कहलनि अछि। यथार्थमे ई एहन कृति छियैक जाहिमे सभ विषयकेँ समेटि लेल गेल अछि। एहि कृतिमे सभ क्षेत्रक वर्णन कएल गेल अछि। नेटलशीप कहैत छथि जे यथार्थमे द रिपब्लिक मानव-स्वभावक मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक एक प्रयास छियैक। हुनक विचारमे एहि कृतिक मान्यताक कारण ई छैक जे ई समाजक समस्त संस्था, वर्ग, सङ्गठन, कानून, धर्म आ कला सनक मानव-आत्माक कृति छियैक।

सुकरातकेँ फाँसी देल गेलाक बाद प्लेटो समाज आ जनताक प्रति चिन्तित भऽ उठलाह। एकरहि फलस्वरूप ओ द रिपब्लिकमे एकटा आदर्श राज्यक परिकल्पना कएलनि। कहल जाइत अछि जे जाहि तरहेँ कोनो कलाकार अपन कृति निर्माण करैत काल ओकर वास्तविक होएबा वा नहि होएबासँ सरोकार नहि रखैत अछि ताही तरहेँ प्लेटो सेहो आदर्श राज्यक कल्पना करैत काल आन कोनो बातक परवाहि नहि कएलनि। ओना प्लेटो स्वयं कहैत छथि जे साम्यवाद आ दार्शनिक वर्गक शासनपर आधारित आदर्श राज्य पाएब मोश्किल अछि। आ ओ एहि बातपर सेहो विश्वास नहि कऽ सकलाह जे एहन राज्य विश्वमे कतहु स्थापित भऽ सकैत अछि।

प्लेटो आदर्श राज्यक परिकल्पना करैत काल तीनटा शर्तक उल्लेख कएलनि अछि, जे निम्नानुसार अछि :

स्त्री आ पुरुष दुनूकेँ समान शिक्षा भेटबाक चाही आ सार्वजनिक काजसभमे दुनूक समान सहभागिता होएबाक चाही। साम्यवादक आधारपर परिवारकेँ निर्मूल कऽ देल जएबाक चाही। उच्च दर्जाक दू वर्गकेँ परिवार आ सम्पत्ति नहि देल जएबाक चाही, जाहिसँ ओसभ एकठाम रहि सकए। समाजक शुद्धीकरण दार्शनिक वर्गक शासनपर निर्भर करैत अछि।

प्लेटोक आदर्श राज्यक विशेषतासभ एहि तरहेँ अछि :

दार्शनिक वर्गक शासन : दार्शनिक वर्गक शासनक अर्थ सक्रिय गुण छियैक। विवेकक प्रतिनिधित्व करतै ई वर्ग आदर्श राज्यक सञ्चालन कऽ सकैत अछि। प्लेटोक मान्यता छनि जे राजनीतिक अधिकार एक्कहि व्यक्तिमे निहित नहि भेलापर मनुष्य आ राज्य दुनूक दुखक अन्त नहि भऽ सकैछ।

राज्यद्वारा नियन्त्रित शिक्षा : प्लेटोक लेल राज्य एकटा शैक्षिक संस्था छियैक। सभ शासककेँ एहि संस्थासँ उत्तीर्ण होबऽ पड़ैत छलैक। आरम्भमे शारीरिक शिक्षा देल जाइत छलैक। प्रायः आजीवन शिक्षा देल जाइत छलैक। निरन्तर दार्शनिक वर्गक प्राप्तिक लेल प्लेटो राज्यद्वारा नियन्त्रित शिक्षाकेँ अनिवार्य मानैत छलाह।

परिवार आ सम्पत्तिक साम्यवाद : प्लेटोक विश्वास छलनि जे परिवार आ सम्पत्तिसँ स्वतन्त्र भेलाक बादे राजकाजमे पूर्ण रूपसँ ध्यान देल जा सकैत अछि। साम्यवादक ई सिद्धान्त सैनिक वर्गपर सेहो लागू होइत छल। एहि दुनू वर्गकेँ भोजन जुमएबाक जिम्मेदारी कृषक वर्गपर रहैत छल।

काजक विशिष्टीकरण : आर्थिक आधारपर प्लेटो ई प्रमाणित करबाक चेष्टा कएलनि जे एक व्यक्ति एक्कहिटा काज नीकजकाँ कऽ सकैत अछि। एना भेलापर सम्बन्धित काजमे लोकक विशिष्टता बढ़बाक सङहि काजक परिणाम सेहो नीक आबि सकैत छैक। निर्धारित काजसँ अलग हटिकऽ ककरो किछु नहि करबाक चाही। प्रकृति जकरा जे गुण प्रदान कएने छैक ओकरा उएहटा काज करबाक चाही।

इएह काजक विशिष्टीकरण छियैक आ न्याय सेहो एहीमे छैक। प्लेटोक अनुसार एहि सिद्धान्तसँ कार्य-विभाजन सेहो स्वतः भऽ जाइत छैक।

न्याय : न्यायक शासन विना आदर्श राज्यक स्थापना नहि भऽ सकैत छैक। राज्यक न्यायक तात्पर्य आम नागरिकमे कर्त्तव्यक भावना छियैक। प्रत्येक वर्गकेँ चाही जे ओ अपन-अपन काज करए। इएह न्याय छियैक।

स्त्री आ पुरुषमे समानता : प्लेटोक धारणा छलनि जे स्त्रीगणकेँ काजमे समाविष्ट नहि कएल जएबाक कारण राज्यक आधा शक्ति कम भऽ जाइत छैक। जाहि दिन स्त्री जातिक शुद्धीकरण हएत ताही दिन राज्यमे सम्पूर्ण एकता कायम भऽ पाएत। तेँ महिला वर्गकेँ समान शिक्षा देल जएबाक चाही। प्लेटो स्पष्ट कएलनि जे विवेकक उचित परिचालन कएलापर महिलासभ सेहो दार्शनिक भऽ सकैत छथि।

कला आ साहित्यक जाँच : यथार्थमे प्लेटोक आदर्श राज्य एक सर्वाधिकारवादी देश छियैक । राज्यक नियन्त्रणहिमे सभ काज होइत छैक । प्लेटो धारणा मोताबिक ओहन कला आ साहित्यक जाँच कएल जएबाक चाही जे राज्यहितक विरुद्ध हो । अन्यथा एकर असर खराब पड़ि सकैत छैक ।

एहि तरहेँ आदर्श राज्य बनएबाक सन्दर्भमे मार्ग प्रशस्त कएनिहार प्लेटोक विचार कतोक सन्दर्भमे आइ करीब अढ़ाइ सहश्राब्दीक बादो सान्दर्भिक बुझाइत अछि । प्लेटोक अस्सी वर्षक उमेरमे निधन भेलनि । मृत्युक समयमे ओ एकटा विवाह-भोजमे सम्मिलित भऽ रहल छलाह ।

शब्दार्थ

दार्शनिक	=	दर्शनशास्त्र जननिहार, तत्त्ववेत्ता
ईसापूर्व	=	ईसा मसीहक जन्मसँ पहिने
परिकल्पना	=	मोनमे गढ़नाइ, आविष्कार करब
कुलीन	=	नीक कुलक
विचलित	=	अस्थिर, बातपर अड़ल नहि रहनिहार
अध्यापन	=	पढ़एबाक काज
निरङ्कुश	=	मनमानी कएनिहार, स्वेच्छाचारी
प्रतिच्छाया	=	प्रतिबिम्ब
निर्मूल	=	समाप्त, अन्त्य, सुड्डाह
शुद्धीकरण	=	शुद्ध करबाक काज
कृति	=	ग्रन्थ, पोथी, पुस्तक
परिचालन	=	चारूकातसँ चलाएब
सर्वाधिकार	=	सभ तरहक अधिकार
मनोवैज्ञानिक	=	मोनक प्रकृति
विश्लेषण	=	बेकछएबाक काज, कोनो चीजक अङ्गकेँ अलग-अलग कएनाइ
सहश्राब्दी	=	हजार वर्ष
साम्यवाद	=	मार्क्सद्वारा प्रतिपादित एक सिद्धान्त, जकर उद्देश्य एहन वर्गहीन समाजक स्थापना करब अछि, जाहिमे सम्पत्तिपर सभक समान अधिकार होइक आ व्यक्तिसँ सकभरि काज लऽकऽ ओकर सम्पूर्ण आवश्यकता पूर्ण कएल जाइक

अभ्यास

श्रवण-शिल्प (सुननाइ)

१. **जीवनीक पहिल आ दोसर अनुच्छेद शिक्षकसँ सुनू आ रिक्त स्थानपर उपयुक्त शब्द भरू :**

(क) प्लेटोक जन्म ..... मे भेल छलनि ।

(ख) प्लेटो .....क शिष्य छलाह ।

(ग) समाज-सुधारक लेल प्लेटो .....क कार्यमे जुड़ि गेलाह ।

(घ) सिसलीमे .....नामक राजासँ हिनकर मित्रता भेलनि ।

(ङ) दासतामुक्त भेलाक बाद प्लेटो घुरिकऽ .....आबि गेलाह ।

२. **आदर्श राज्यक परिकल्पना करैत काल प्लेटोद्वारा प्रस्तुत तीनू शर्त्त शिक्षकसँ सुनिकऽ निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर दिअ :**

(क) स्त्रीक कोन अधिकारक उल्लेख कएल गेल अछि ?

(ख) समाजक शुद्धीकरण कोन वर्गक शासनपर निर्भर करैत अछि ?

(ग) साम्यवादक आधारपर परिवारकेँ की कऽ देबाक चाही ?

(घ) शिक्षा ककराद्वारा नियन्त्रित होएबाक चाही ?

(ङ) परिवार आ सम्पत्ति कोन वर्गकेँ नहि देल जएबाक चाही ?

३. **जीवनीक कोनो दूटा अनुच्छेद शिक्षकसँ सुनिकऽ श्रुति लेखन करू ।**

कथन-शिल्प (बजनाइ)

४. **निम्नलिखित शब्दसभक उच्चारण करू :**

विशिष्टीकरण, सुपुर्द, जष्टोलियन, पायथागोरियन, प्रतिच्छाया, विश्लेषण, शुद्धीकरण, सर्वाधिकार ।

५. **निम्नलिखित प्रश्नसभक मौखिक उत्तर दिअ :**

(क) प्लेटोक जन्म कहिया भेल छल ?

(ख) ईसापूर्व ३८७ मे प्लेटो कोन विश्वप्रसिद्ध विद्यालयक स्थापना कएलनि ?

(ग) प्लेटोक गुरुक नाम की रहनि ?

(घ) पूर्ण सत्य कोना प्राप्त कऽ सकबाक प्लेटो विश्वास करैत छलाह ?

(ङ) प्लेटोक रचनासभ केहन शैलीमे पाओल जाइत अछि ?

(च) कोन कृति प्लेटोकेँ अत्यधिक लोकप्रिय बनौलकनि ?

(छ) समाज आ जनताक प्रति प्लेटो कखन चिन्तित भऽ उठलाह ?

(ज) पाठमे प्लेटोक राज्यक कएटा विशेषताक उल्लेख भेल अछि ?

(झ) प्लेटोक देहावसान केहन अवस्थामे भेलनि ?

६. प्लेटोद्वारा स्त्री आ पुरुषमे समानताक सम्बन्धमे प्रस्तुत विचार अहाँकेँ केहन लगैत अछि, कक्षामे विमर्श करू ।

पठन-शिल्प

७. निम्नलिखित शब्दसभक अर्थ बताउ :

प्रसिद्ध, परिवार, विद्यार्थी, कुलीन, प्रजातन्त्र, गुरु, कानून, विज्ञान, सूत्र ।

८. प्लेटोक आदर्श राज्यक सातटा विशेषता कक्षामे पढ़िकऽ सुनाउ ।.

९. प्लेटोक जीवनीकेँ फेरसँ पढ़िकऽ सही वाक्यमे (✓) आ गलतमे (×) चिह्न लगाउ :

(क) मानव-जीवन आ समाज-सुधारक लेल प्लेटो अध्यापन कार्यसँ जुड़ि गेलाह । ( )

(ख) अपन तर्कक पुष्टिक लेल प्लेटो खिस्सा-पिहानीक सहारा लेलनि अछि । ( )

(ग) दार्शनिक वर्गक शासनपर आधारित राज्य पाएब मोश्किल अछि । ( )

(घ) भोजन जुटएबाक जिम्मेदारी शासकपर रहैत छैक । ( )

(ङ) विवेकक उचित परिचालनसँ महिलासभ सेहो दार्शनिक भऽ सकैत अछि । ( )

(च) प्लेटोक जन्म ईस्वी सन ४२७ मे भेल छलनि । ( )

लेखन-शिल्प (लिखनाइ)

१०. निम्नाङ्कित शब्दकेँ अर्थ स्पष्ट होएबाक हिसाबसँ वाक्यमे प्रयोग करू :

आलोचना, विचारधारा, तर्क-वितर्क, सार्वजनिक, विशिष्टीकरण, सान्दर्भिक ।

११. निच्चा देल गेल अशुद्ध शब्दसभकेँ शुद्ध कऽ अभ्यास-पुस्तिकामे उतारू :

दार्सनिक, विध्यार्थी, व्यतित, अद्यापन, साशन, राजनिती, अथार्थ, साहित्त ।

१२. जीवनीक आधारपर निम्नाङ्कित प्रश्नसभक संक्षिप्त उत्तर लिखू :

(क) प्लेटो किएक दास बनाओल गेलाह आ कोना दासतामुक्त भेलाह ?

(ख) पाठमे उल्लिखित एकेडेमीक सम्बन्धमे अहाँ की जनैत छी ?

(ग) प्लेटोक रचनासभक की विशेषता छलनि ?

(घ) द रिपब्लिकक सम्बन्धमे विद्वानसभ की-की विचार व्यक्त कएलनि अछि ?

(ङ) प्लेटोक आदर्श राज्य सम्बन्धी परिकल्पनामे कोन-कोन शर्तक उल्लेख अछि ?

(च) स्त्री आ पुरुषमे समानतापर प्लेटो किएक जोड़ देलनि अछि ?

१३. क आ ख समूहक घटना आ समयक बीच तालमेल मिलाउ :

समूह क	**समूह ख**
एकेडेमीक स्थापना	ईसापूर्व ४२७
प्लेटोक मृत्यु	ईस्वी सन ५२९
एकेडेमीक खारिजी	ईसापूर्व ३४७
प्लेटोक जन्म	ईसापूर्व ३८७
	ईस्वी सन २१५

१४. पाठक प्रारम्भक तीनटा अनुच्छेद पढ़िकऽ ओकरा संक्षेपीकरण कऽ अनुच्छेदमे लिखू ।

१५. प्लेटोक आदर्श राज्यक परिकल्पना लेल आवश्यक तीनटा शर्तकेँ अलग-अलग रूपमे व्याख्या करू ।

१६. प्लेटोक द रिपब्लिक कृतिक विषयमे टिप्पणी लिखू ।

१७. प्रयोगात्मक अभ्यास :

(क) प्लेटोक आदर्श राज्यक विशेषतासभक वर्णन करू ।

(ख) आजुक सन्दर्भमे प्लेटोक विचारक सार्थकतापर प्रकाश दिअ ।

(ग) अपन भाषामे प्लेटोक चरित्र चित्रण करू ।

सृजनात्मक अभ्यास

(क) प्लेटोक जीवनी पढ़िकऽ ओही आधारपर शिक्षकक सहयोगसँ वा इन्टरनेटक मदतिसँ सुकरातक जीवनी लिखू ।

(ख) निम्नलिखित विषयपर कक्षामे साथीसभ सङे विचार-विमर्श करू : (वेबसाइटक मदति सेहो लेल जा सकैछ ।)

- पायथागोरियन सिद्धान्त
- आदर्श राज्य
- स्त्री-पुरुषमे समानता

वर्ण विन्यास

१९. मैथिली भाषाक लेखन करैत काल "ऽ" चिह्नक प्रयोगमे आ एहि चिह्नक उच्चारण करैत काल सेहो किछु भ्रम रहल करैत अछि । एहि सम्बन्धमे निम्नलिखित तथ्यक अध्ययन करू :

"ऽ" चिह्नकेँ बिकारी वा दीर्घताबोधक चिह्न कहल जाइत अछि । जाहि अक्षर वा वर्णक बाद ई चिह्न अबैत अछि, ताहि वर्ण वा अक्षरक अन्तिम स्वरमे ई विकार उत्पन्न कऽ दैत अछि, अर्थात ओहि स्वरपर आन स्वरसभक अपेक्षा किछु बेसी जोड़ देबऽ पड़ैत छैक । जेना :

लिखनाइ सम्पन्न भऽ गेल । एहि वाक्यमे भ अक्षरक बाद ऽ चिह्न आएल अछि आ तँ भमे रहल अ स्वरपर जोड़ देबऽ पड़ैत छैक । कोनो-कोनो संवाददपरक साहित्यिक रचनामे, खास कऽ नाटक इत्यादिमे जँ सामान्यसँ बेसी जोड़ देबाक अवस्था रहैछ तँ दू वा तीनोटा ऽक प्रयोग सेहो भेटैत अछि । जेना : बेचना रौऽऽऽ । रौ, फेकनाक बड़द सभटा जजाति खाऽ लेलकौ रौऽऽ ।

एहिठाम रौक औ स्वरपर सामान्यसँ बेसी जोड़ देबाक अवस्था अछि ।

तहिना, ओ खाऽ लेलक ? एहि प्रश्नार्थक वाक्यमे खामे रहल आ स्वरपर जोड़ देबऽ पड़ैत छैक । अर्थात नहि खेबाक छल, मुदा खा लेलक ।

तोरा कीऽ भेलौ ? एहिठाम कीमे रहल ई स्वरपर जोड़ देल जाएत ।

लिखैत कालमे जँ स्वरपर जोड़ नहि देबाक अछि तँ ऽ चिह्न नहि देबाक चाही ।

द्रष्टव्य : किछु गोटे सम्बन्ध कारकक क लिखैत काल सेहो अज्ञानतावश ऽ चिह्न लगा दैत छथि । जेना : समाजक व्यवस्था नीक बनएनाइ सभक काज छियैक । एहि वाक्यमे समाजकक बदलामे समाजकऽ लिखनाइ गलत अछि । तँ एहिदिस सावधानी आवश्यक अछि ।

प्रश्न : निम्नलिखित वाक्यमे आवश्यक स्थानपर ऽ चिह्नक प्रयोग करू :

हमरासभक विकास तखने कएल जा सकैछ जखन सभगोटे जागरुक भ जाएत । जुटिक काज कएलापर किछुओ सम्भव भ सकैछ । तँ प्रण लक लागि गेनाइ अति आवश्यक अछि । जहिना घरक काज अपनहि करैछी, तहिना समाजक काज मिलिक क लेबाक चाही ।

द्रटव्य : आइ-काल्हि कम्प्यूटर फन्ट नहि भेटलापर केओ-केओ ऽक स्थानपर ' अर्थात stress mark अथवा apostrophe क प्रयोग करऽ लागल छथि । मुदा ऽ क अपन मौलिकता अछि, जकर त्याग उचित नहि ।

२०. निम्नलिखित वाक्यसभमे कोन-कोन भाव अछि, तालिकामे (✓) लगाकऽ देखाउ :

(क) शिक्षकक सल्लाह मानि लिअ ।

(ख) अहाँक उन्नति होउ ।

(ग) जँ मेहनति करबह,तँ उत्तीर्ण होएबे करबह ।

(घ) हेमकान्त परसूए आएल ।

(ङ) तोँ गाम कहिआ जएबह ?

(च) ओकर बेटी सुखी रहए ।

(छ) जँ हमर गप मानितह,तँ झग्गड़ नहि होइतह ।

(ज) सत्य बाजू आ धर्मक आचरण करू ।

(झ) ओ जँ बुझि जाइतए, तँ दरबर नहि मारितए ।

(ञ) सलमा खातुन जलखै खएलक ।

वाक्य	निश्चयात्मक भाव	अनिश्चयात्मक भाव	अनुज्ञात्मक भाव	कामनात्मक भाव

२१. **निम्नलिखित वाक्यसभमे कोष्ठकसँ उपयुक्त विकल्प चयन कऽ रिक्त स्थानमे भरू :**

(क) महानन्द बाबू घर ..... । (जा रहल अछि/जा रहल छथि/ जा रहल छलीह)

(ख) विद्यादेवी भण्डारी नेपालक दोसर राष्ट्रपति ..... । (भेलाह/भेलीह/भेलनि)

(ग) विद्यार्थीसभ पाठ ..... । (पढ़ल/पढ़लीह/पढ़लक)

(घ) अहाँसभ भोजमे ..... । (गेल छल/गेल छलाह/गेल छलहुँ)

(ङ) शिक्षकलोकनि छुट्टीमे गाम ..... । (जाएत/जएताह/जएतीह)

(च) हम नीक अक्षरमे .....। (लिखैत छथिन/लिखैत छह/लिखैत छी)

(छ) तोँ कखन .....? (खएलेँ/खएलौँ/खएलखिन)

(ज) .....कतऽ रहैत छथि ? (ओगण/ओलोकनि/हमसभ)

द्रष्टव्य : नाम पदजकाँ क्रियापदमे वचनक अनुसार रूप परिवर्तन नहि होइत छैक । (पं. गोविन्द झा)

२२. **उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष आ अन्य पुरुषक सर्वनामक सङ्ग क्रियापदक पदसङ्गति मादे निम्नलिखित**

तालिकाक अध्ययन करू :

वर्तमानकाल

पुरुष आ वचन	सर्वनाम	क्रियाक पदसङ्गति
उत्तम पुरुष : एकवचन	हम	सुतैत छी, सुतै छी, खाइत छी, जाइत छी आदि
उत्तम पुरुष : बहुवचन	हम, हमसभ, हमरालोकनि	सुतैत छी, सुतै छी, खाइत छी, जाइत छी, आदि
मध्यम पुरुष : एकवचन	तोँ अहाँ, अहाँसभ, अपने	सुतैत छेँ, खाइत छेँ, जाइत छेँ आदि सुतैत छी, सुतै छी, खाइत छी, जाइत छी आदि
अन्य पुरुष : एकवचन	ई, ओ	सुतैत अछि, खाइत अछि, जाइत अछि, जाइछ आदि
अन्य पुरुष : बहुवचन	ईसभ, ओसभ, अपनेलोकनि	सुतैत छथि, खाइत छथि, जाइत छथि आदि

भूतकाल

पुरुष आ वचन	सर्वनाम	क्रियाक पदसङ्गति
उत्तम पुरुष : एकवचन	हम	सुतलौं, सुतैत छलौं, खाइत छलहुँ, खएलहुँ आदि
उत्तम पुरुष : बहुवचन	हम, हमसभ, हमरालोकनि	सुतलौं, सुतैत छलौं, खाइत छलहुँ, खएलहुँ आदि
मध्यम पुरुष : एकवचन	तोँ अहाँ, अहाँसभ, अपने	सुतैत छलेँ, खाइत छलेँ, जाइत छलेँ, गेलेँ आदि सुतलौं, सुतैत छलौं, खाइत छलहुँ, खएलहुँ आदि
अन्य पुरुष :पुलिङ्ग,एकवचन	ई, ओ	सुतैत छल, सुतल, खएलक, खाइत छल आदि
अन्य पुरुष : स्त्रीलिङ्ग, एकवचन	ई, ओ, सीता	सुतैत छली, सुतलि, खइलनि, खाइत छली आदि
अन्य पुरुष : बहुवचन, पुलिङ्ग	ईसभ, ओसभ, अपनेलोकनि	सुतैत छलाह, खाइत छलाह, जाइत छलथि आदि
अन्य पुरुष : बहुवचन, स्त्रीलिङ्ग	ईसभ, ओसभ, अपनेलोकनि	सुतैत छलीह, खाइत छलीह, जाइत छलथि आदि

भविष्यतकाल

पुरुष आ वचन	सर्वनाम	क्रियाक पदसङ्गति
उत्तम पुरुष : एकवचन	हम	सुतब, खाएब आदि
उत्तम पुरुष : बहुवचन	हम, हमसभ, हमरालोकनि	सुतब, खाएब, पढ़ब, लिखब आदि
मध्यम पुरुष : एकवचन	तोँ अहाँ, अहाँसभ, अपने	सुतबेँ, खएबेँ, पढ़बेँ, लिखबेँ आदि सुतब, खाएब, पढ़ब, लिखब आदि
अन्य पुरुष : पुलिङ्ग, एकवचन	ई, ओ	सुतत, खाएत, पढ़त, लिखत आदि
अन्य पुरुष : स्त्रीलिङ्ग, एकवचन	ई, ओ	सुततीह, खएती, पढ़ती, लिखतीह आदि
अन्य पुरुष : बहुवचन, पुलिङ्ग	ईसभ, ओसभ, अपनेलोकनि	सुतताह, लिखताह, पढ़ताह, खएताह आदि
अन्य पुरुष : स्त्रीलिङ्ग, बहुवचन	ई, ओ	सुततीह, सुतती, खएती, पढ़तीह, लिखतीह आदि

सुगरक बाप

■ *धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'*

गामसँ फराक लखनदेइ नदीक किन्हेरमे मनचनमा डोमक घर रहैक। घर की मोश्किलसँ आठ हाथ नाम आ पाँच हाथ चाकर दूगोट खोपड़ी छल, जकर उँचाइयो पाँच हाथसँ बेसी नहि छलै। दुनू खोपड़ीक बीचमे तीन-चारि हाथक अङनइ छल आ उत्तर-पूवक कोनमे बाँसक बातीक बनल सुगरक खोभारी। पछुआड़मे पाँच हाथ नाम आ डेढ़ हाथ चाकर बाड़ी छलै, जाहिमे मनचनमा सागपात उपजएबाक सऽख पूरा करए। इएह छल मनचनमाक बासा।

परिवारमे सदस्यक सङ्ख्या तीन छल– अपने रहए, घरवाली रहै आ एकटा बेटा छलै। ओना भेल तँ रहै पाँचगोट, मुदा तीनटा हैजामे चलि गेलै आ चारिमके लखनदेइक बाढ़ि गीरि गेल। आब तँ ओकरा अइ एक्कोटाक भरोस नहि रहि गेल छलै।

सात फीट नाम, लक-लक पातर मर्द। भीतर धँसल गोल-गोलसन चमकैत आँखि। तेलक अभावमे भुल्ल भेल केश। डाँरमे कोनो गृहस्थक देल पुरान धोती लपेटने। माथपर फहराइत गमछी। कान्हपर कमचीक बोझ। हाथमे एकगोट बाँसक मोटका टोँटा आ चक्कू नेने दुलकी चालिए दौगैत मनचनमा जखन सुगरक पाछू 'हुइ-हुइ' करैत चलए, तँ लोक बुझि जाए जे डोमबा आएल अछि आ दरबज्जेपरसँ हाक पारिकऽ कहै–

“फुलडाली पठा दिहऽ” – कोनो भक्तराज ।

“चलनी पठा दिहऽ” – कोनो गृहस्थिन ।

“अमलालए एगो धामी” – कोनो बचिया ।

आ कनिये-कनिये दौगैत ओ ‘जरूर-जरूर’ कहिकऽ सभकेँ सन्तुष्ट कऽ दिअए ।

बगड़ाक खोँतासन केशवाली डोमिनियो बड़ नीक स्वभावक रहैक । ओ प्रायः बेरखन कऽ गाममे चँगेरी, फुलडाली आ धामी लऽकऽ फेरी दैलए आबए । एहि वस्तुसभक बिक्रीसँ कैँचा तँ भेटबे करै, कखनो कऽ कोनो आङनक नेनाकेँ बाँससँ बनल खेलौनाक वचन दऽ ओ कनियाँ-बौआसिनसभसँ अपना लेल फाटल-पुरान आ दुकौड़ियाक लेल पैन्ट आ गञ्जी माङि लिअए । ओकर नाम भगवान जानथि, लोक ओकरा ‘डोमिन’ कहैक । दुकौड़िया छल ओकर बेटा, जकरा ओ कोनो पड़ोसियाक हाथेँ दू कौड़ीमे बेचि पुनः किनि लेने छल, जाहिसँ ओ पड़ोसियाक भइयोकऽ जीबए । डाक दऽकऽ नइ चलि जाए ।

पेट काटिकऽ मनचनमा सुगरक एकगोट जोड़ा किनने छल आ जखन बरखक भितरे सुगरनी गाभिन भऽ गेल तँ मनचनमाक मन्सूबाक ठेकान नइ रहल ।

–“दुकौड़ियाक माए ! रामजीक आसरासँ यदि चारिगोट पाउर भेलै तँ बुझऽ जे दूगोकेँ बेचि देबै आ तखन देखिहक– तोरालए ललका साड़ी, अपनालए कलगैयाँ लोटा आ दुकौड़ियालए जम्मा लेबइ । आ फेर एगो बँसबिट्टी जोगर जमीन जरूरे किनबै आ फेर..... रामजीक आसरासँ देखिहक ।”

मुदा मनचनमाक कर्मक खेल ! जतऽ दोसराक सुगरनीकेँ अठ-अठटा बच्चा होइ छलै ताहिठाम मनचनमाक सुगरनीकेँ एक्कहिटा पाउर भेलै ।– “ ... अरे की हेतै ! – पहिल खेप छियै । एक्कहिगो पाउर कोन कम ?–अस्सीसँ कममे थोड़बे बिकेतै ! देखिहक ।”

पाउर जखन मास-डेढ़ मासक बाद चरी करैलए बाहर जाए लागल तँ मनचनमा बड़ चौचङ्ग रहए जे कतौ कोनो कुकुर ने झपटि लै अथवा पानिमे ने डुबि जाए । ओ बड़ इन्तजामसँ ओकरा केसौरक बोनमे लऽ जाए आ करमीक कन्दी चिबबैलए दै ।

“हौ, बाबू साहेब !... ” – मनचनमा पाउरसँ कहैक, “मोथा खाह, मोथा । तिलबा संक्रान्तिक दिन खिच्चड़ि देबह । हमरा तँ भात बनतै, मुदा बौआलालकेँ तँ खिच्चड़ि चाही ने । से भेटतै भाइ, भेटतै– देखिहक ।... ”

आत्मभाषणसँ मिलैत-जुलैत मनचनमाक ई उक्ति यदि केओ सुनितए तँ निश्चय ओकरा एकर ताल-भजारे ने लगितै । मुदा एहिसँ मनचनमा के की ?– मोनक राजापर बन्हन के लगाओत ?

से पाउर बढ़ैत-बढ़ैत चारि सालक पट्ठा भऽ गेल । आब कखनो-कखनो खोँ-खोँ कऽ लोकोपर छुटए । ओकर उभरल पुट्ठा मनचनमाक मन्सूबाकेँ तीव्र कऽ दैक । अस्सीसँ कम की हएत !– ओ हरदमे से

सोचए आ पुनः घरबालीक साड़ी, कलगैयाँ लोटा, छौंड़ाक पैन्ट आ बँसबिट्टीक सपना ओकर करेजपर हिलि-हिलि उठए ।

होइत-होइत पाउरक गाहकि आबि गेल । उएह रजगरामवला डोमबा । मोल-मोलाइ होइत-होइत सत्तरि रुपैयामे पाउर बिका गेल । रुपैया गनबाक काल मनचनमाक मोन आनन्दसँ भरल छल । अपन सपना आब ओकरा साकारसन लगैत छलै । काल्हि, काल्हिये जा कऽ ओ सभकिछु लऽ आओत । आ मनचीत मड़रकेँ सेहो आर पँचधुरही भिट्टाक मादे कहि देतै जे ओ तैयार अछि । अहा ! केहन नीक लोक अछि मनचीत मड़र । नहि तँ डोमकेँ एतऽ जमीन देब ककरा पसिन्द छै ?

गाहकि पाउर लऽकऽ चलि गेल । रुपैयाकेँ बगुलीमे बन्द कऽ मनचनमा घरवालीकेँ जुगताकऽ राखि देबाक आदेश देलकै । फेर चिलम सुनगाकऽ खोभारीलग बैसि गेल । सुगर आ सुगरनी अल्हुआक लतियाहा कन्द चिबा रहल छल । मनचनमा खोभारीपर दृष्टि देलक । खोभारी जेना ओकरा उदास-पुदाससन लगलै आ ओकरा इहो बुझैलै मने किछु हेरा गेल हो !– मुदा चिलमक तीन-चारि दम मारि ओ जाली बनएबाक लेल कमची चीरऽ लागल । 'खप्प-खर्र ... खप्प-खर्र'क ध्वनि वातावरणमे पसरैत रहल ।

भीतर अङनइमे डोमिन मड़ुआ उला रहल छल मने । किएक तँ बेसी लागि गेल मड़ुआक गन्ध ओकरा नाकक पूरामे प्रविष्ट भऽ रहल छलै । सूर्य सेहो डुबि गेलाह । कौआसभ दक्षिण दिशामे कररा गाछीदिस चलि गेल । मनचनमा छिललहा कमचीसभ एकट्ठा कऽकऽ राखि देलक आ डाँरसँ चुनौटी बाहर कऽ खैनी चुनबऽ लागल । एहि बीचमे ओकर नजरि एकबेर पुनः खोभारीपर चलि गेलै । ओ ओकरा उदाससन बुझएलै ।

मनचनमाकेँ किछु उपटल-उपटलसन लागऽ लगलै आ मोन बहटारबाक हेतु दोसरे दिनजकाँ गुनगुनाए लागल ओ, "परथम परमेसर तोहेँऽ ... हे ... सलहेस राजा !..." मुदा गीतो ओ बेसीकालधरि नहि गाबि सकल । आब एक्कहिटा उपाय छल जे ओ रोटी खा कऽ सुति रहए आ सएह ओ कएलक ।

रातिमे एकबेर दुकौड़ियाक माएकेँ जगौलकै, "दुकौड़ियाक मतारी ! सुनै छऽ ? सुगर-सुगरनी लगैए आइ उदास अछि । एकोबेर किल्हारि सुनलहकए ?"

दुकौड़ियाक माए ओकरा फज्जतिजकाँ करैत बाजलि, "...उँह ! की-कहाँ सोचैत रहै छै । सुगर-सुगरनी किएक उदास रहतै बलू । सुति रहै ।" आ ओ ओकरे कथानानुसार सुति रहल ।

भोरमे जखन दुकौड़ियाक माए ओकरा झिकझोड़िकऽ उठौलक तँ खूब अबेर भऽ गेल छल, "... उएह देखहक– बाहरमे के अएलैक अछि ...कहै छै जे ओकरा पाउरकेँ तोँही लऽ अनलहक अछि ।"

"... अएँ ! के थिक ?" कहैत जखन ओ बाहर आएल तँ देखलक जे उएह कल्हुके गाहकिसभ छल ।

ओइमेसँ एकगोटे तमतमाइतजकाँ बाजल, "... हुँ ! खूब हिसाब लगौने छऽ ! दिनमे बेचि दी आ रातिमे खोलिकऽ लऽ आबी ।"

मनचनामा पहिने तँ मुह बौने ठाढ़ रहल । पुनः बाजल, "...की गप्प थिकै ?"

"गप्प की रहतै । काल्हि दिनमे तोँ सुगरक पट्ठा हमरा हाथेँ बेचलह आ रातिमे खोलिकऽ लऽ अनलह । पञ्जा देखैत-देखैत अएलहुँ अछि ।"

मनचनमाकेँ तैयो किछु बुझबामे नहि अएलैक । आ ओ खालि सफाइ देबाक ढङ्गमे कहलकै, "...खोभारी देखि लएह । हम एहेन काज किएक करब ? अपने बहुत अछि । बुझै की छहक ? एक मन सूखल भात देखा सकैत छिअ । एक सए अस्सी घर महतोँ डेबै छी । हँ ..... देखि लएह खोभारी । ..."

आ मनचनमाक आश्चर्यक ठेकान नहि रहल, जखन खोभारीमे ओ सुगर-सुगरनीक अतिरिक्त पाउरोकेँ 'घुर्र-घुर्र' करैत देखलकै ! क्षणभरि तँ ओकरा ठकिया लागि गेलै । पुनः हाथ जोड़ि ओ गाहकिसभकेँ खोभारीक टुटल बाती देखौलक, जकरा तोड़िकऽ पाउर घुसिया गेल छल । ओहोसभ मानि गेलै ।

"... देखह तमाशा !" –ओइमेसँ एकगोटे बिहुँसैत बाजल आ जाबतधरि ओसभ पाउरकेँ बन्हबाक लेल फन्ना तैयार करए, मनचनमा तेजीसँ आङन जा बाहर भेल आ फन्ना बनौनिहारकेँ रोकैत बाजल, "... देखऽ भाइ ! फन्ना नइ बनाबऽ !... हम आब एकरा नइ बेचब । लऽ लएह अपन रुपैया ।" आ ओ रुपैयाक गेँट गाहकिलग राखि खोभारीक फड़की लगबऽ लागल ।

गाहकिसभ हल्ला मचबऽ लागल । बहुतरास लोक जमा भऽ गेल । सभटा खेड़हा सुनलक आ बुझबैतजकाँ कहलकै, "... मनचन ! ... ई तँ बड़ अधलाह गप्प थिक । पाउर किएक ने दैत छहक ? पाउर तोँ बेचि देने छलह ।..."

मनचनमा जेना ककरो गप्प सुनबाक लेल तैयार नहि छल, "हँ ! हँ ! काल्हि बेचि देने छलियै मुदा आइ नइ बेचबै ।"

"... किएक ने बेचबऽ ? कतौ तँ बेचबे करबऽ । ओना रुपैयाक तरपट हुअऽ तँ बात दोसर थिक ।"– दोसरगोटे बाजल ।

काल्हिवला गाहकि पाउरक पुट्ठाकेँ मोन पाड़ैत बाजल, "हँ, रुपैयाक लोभ भऽ गेल हुअओ तँ पाँच रुपैया हम आर देबह ।... "

मनचनमा चिचिआइतजकाँ बाजल, "नइ बेचबै । कतबो देबऽ तैयो ने । कहियो ने बेचबै । ... जखन ओ हमर दुआरि नइ छोड़ऽ चाहैत अछि तँ कहियो ने बेचबै । एतइ बूढ़ भऽ मरतै ।..."– आ गमछीसँ नोर पोछैत ओ खोभारीक फड़की लगा देलकै ।

शब्दार्थ

किन्हेर	= धारक कात, कछेर, किनार	कैँचा	= पाइ, ढौआ
गाभिन	= गर्भिणी, बच्चा देबाक अवस्था	मन्सूबा	= सुखद कल्पना, योजना
चौचङ्ग	= सावधान, होशियार	इन्तजाम	= व्यवस्था, देखरेख
आत्मभाषण	= अपनहि सङ्ग बातचीत	उक्ति	= कथा, बात
ताल-भजार	= ठेकान	पँचधुरही	= पाँच धुरक
बगुली	= जेबी	नाकक पूरा	= नाकक भूर
चुनौटी	= तमाकुल राखऽ वला डिब्बी	फज्जति	= गारि, बात
झिकझोड़ब	= देह पकड़िकऽ हिलाएब, झमाड़ब	खेड़हा	= खिस्सा, गप्प

अभ्यास

श्रवण-शिल्प (सुननाइ)

१. **कथाक प्रारम्भिक तीनटा अनुच्छेद शिक्षकसँ सुनि निम्न वाक्यसभमे रहल रिक्त स्थानकेँ उचित शब्दसँ भरू :**

(क) मनचनमाक घर .....क किन्हेरपर रहैक ।

(ख) सुगरक खोभारी .....सँ बनल छल ।

(ग) मनचनमाक परिवारमे जम्मा-जम्मी .....गोटे छल ।

(घ) मनचनमाक .....गोट सन्तान जीवित अछि ।

(ङ) ओ जरूर-जरूर कहिकऽ सभकेँ .....करैत छल ।

२. **शिक्षकद्वारा निर्धारित कथाक कोनहु दूटा अनुच्छेदक श्रुतिलेखन करू ।**

३. **निम्नलिखित शब्दसभ शिक्षकसँ सुनू आ कहू जे ओ शब्द स्त्रीलिङ्ग थिक कि पुलिङ्ग :**

डोम, मर्द, भक्तराज, गृहस्थिन, बचिया, डोमिन, बौआसिन, दुकौड़िया, सुगरनी, बौआलाल, राजा, छौँड़ा, गाहकिसभ, घरवाली, महतो ।

कथन-शिल्प (बजनाइ)

४. **निम्नलिखित शब्दसभक शुद्ध रूपें उच्चारण करू :**

किन्हेर, मोश्किल, मन्सूबा, इन्तजाम, पुट्ठा, प्रविष्ट, फज्जति, फन्ना, गाहकि ।

५. **उपर्युक्त शब्दसभक प्रयोग करैत एक-एकटा अपन वाक्य बनाऽ कहू ।**

६. **कथाक आधारपर मनचनमाक पारिवारिक अवस्थाक सम्बन्धमे अपन-अपन विचार व्यक्त करू ।**

पठन-शिल्प (पढ़नाइ)

७. **कथाक प्रत्येक अनुच्छेद बेरा-बेरी सस्वर पढ़िऽ सुनाउ ।**

८. **कथाक आधारपर निम्नलिखित घटनासभकेँ सही क्रममे मिलाऽ लिखू :**

(क) बाँसक सामान बनाऽ बेचनाइ आ सुगर पोसनाइ मनचनमाक पेशा छल ।

(ख) सुगरनीकेँ एकटा पाउर भेल, जकरा मनचन बेचि देलक ।

(ग) गाहकिकेँ रुपैया लौटाऽ मनचनमा पाउरकेँ नहि बेचबाक प्रतिज्ञा कएलक ।

(घ) लखनदेइ धारक कातमे मनचनमाक घर छल ।

(ङ) मनचनमाकेँ पाँचटा बेटा भेल छल, मुदा आब एकेटा जीवैत अछि ।

(च) सुगरक पाउर रातारती भागिऽ फेरो ओकरे लग चल आएल ।

९. **कथाकेँ पढ़ू आ निम्नलिखित प्रश्नसभक संक्षिप्त उत्तर लिखू :**

(क) मनचनमा डोमक घर कतऽ रहैक ?

(ख) मनचनमाक परिवारमे के-के छल ?

(ग) डोमिनक बेटाक नाम दुकौड़िया कोना पड़लैक ?

(घ) मनचनमा किएक चौचङ्ग रहऽ लागल ?

(ङ) मनचनमाकेँ खोभारी उदास-पुदाससन किएक लगलैक ?

(च) मनचनमाकेँ आश्चर्यक ठेकान किएक नहि रहलैक ?

(छ) गमछीसँ नोर पोछैत मनचनमा की कएलक ?

(ज) सुगरक बाप कथाक कथाकार के छथि ?

लेखन-शिल्प (लिखनाइ)

१०. निम्नलिखित शब्दक अर्थ लिखि वाक्यमे प्रयोग करू ।

किन्हेर, अडनइ, खोभारी, पछुआड़, बौआसिन, मन्सूबा, पाउर, जम्मा, कमची, तरपट, फड़की, टाँटा ।

११. निम्नलिखित प्रश्नसभक संक्षिप्त उत्तर दिअ ।

(क) मनचनमाक बासा केहन रहैक ?

(ख) कथाकार मनचनमाक रूपक चित्रण कोन तरहक कएने छथि ?

(ग) सुगरनी गाभिन भेलाक बाद मनचनमा की कल्पना करऽ लागल ?

(घ) पाउर बेचलाक बाद मनचनमाक मनस्थिति केहन भेलैक ?

(ङ) मनचनमा गाहकिकेँ पाइ किएक घुरा देलकैक ?

१२. रिक्त स्थानक पूर्ति करू ।

(क) दुनू खोपड़ीक बीचमे तीन-चारि हाथक ..... छल ।

(ख) दुकौड़ियाक माएकेँ लोक ..... कहैक ।

(ग) पाउर कखनो-कखनो ..... लोकोपर छुटए ।

(घ) रुपैया गनबाक काल मनचनमाक मोन ..... सँ भरल छल ।

(ङ) मड़ुआक गन्ध ओकरा ..... मे प्रविष्ट भऽ रहल छलैक ।

(च) ओ सुगर-सुगरनीक अतिरिक्त पाउरोकेँ .....करैत देखलक ।

(छ) नोर पोछैत मनचन ..... क फड़की लगा देलक ।

१३. सप्रसङ्ग व्याख्या करू ।

(क) लोक ओकरा 'डोमिन' कहैक । दुकौड़िया छल ओकर बेटा, जकरा ओ कोनो पड़ोसियाक हाथेँ दू कौड़ीमे बेचि पुनः किनि लेने छल, जाहिसँ ओ पड़ोसियाक भइयोकऽ जीबए । डाक दऽकऽ नहि चलि जाए ।

(ख) पाउर बढ़ैत-बढ़ैत चारि सालक पट्ठा भऽ गेल । आब कखनो-कखनो खाँ-खाँ कऽ लोकोपर छुटए । ओकर उभरल पुट्ठा मनचनमाक मन्सूबाकेँ तीव्र कऽ दैक । अस्सीसँ कम की हएत ! –ओ हरदमे से सोचए आ पुनः घरवालीक साड़ी, छौँड़ाक पैन्ट आ बँसबिट्टीक सपना ओकर करेजपर हिलि-हिलि उठए ।

१४. सृजनात्मक प्रश्न :

(क) कथाक आधारपर मनचनमाक मनोविश्लेषण करू ।

(ख) सुगरक बाप कथाक शीर्षकक सार्थकता स्पष्ट करू ।

(ग) एहि कथाक आधारपर डोम जातिक जीवनचर्याक सम्बन्धमे अपन विचार लिखू ।

(घ) सुगरक बाप कथामे रहल मुख्य-मुख्य घटनासभ विन्दुगत रूपेँ लिखू ।

१५. उपर्युक्त प्रश्न सङ्ख्या ३ मे रहल शब्दसभकेँ :

(क) लिङ्ग परिवर्तन करू अर्थात पुलिङ्ग होए तँ स्त्रीलिङ्ग आ स्त्रीलिङ्ग होए तँ पुलिङ्गमे रूपान्तरित करू ।

(ख) वचन परिवर्तन करू अर्थात एकवचन होए तँ बहुवचन आ बहुवचन होए तँ एकवचन बनाउ ।

१६. निम्नलिखित वाक्यसभमे आवश्यक परिवर्तन करैत कोष्ठकमे कएल गेल निर्देश अनुसार रूपान्तरित करू :

जेना : राजा घर गेल छलाह । (लिङ्गक आधारपर परिवर्तन करू)

= रानी घर गेल छलीह ।

(क) छौँड़ा सुतल छल । (लिङ्गक आधारपर रूपान्तरित करू))

(ख) शिक्षक समयपर आबि रहल छथि । (वचनक आधारपर रूपान्तरित करू))

(ग) हमसभ समदाओन गाबैत छलहुँ । (पुरुषक आधारपर दूबेर रूपान्तरित करू)

(घ) तोँ की करैत छलेँ ? (आदरसूचक वाक्यमे रूपान्तरित करू)

(ङ) रहमान भाइ आइ मस्जिद नहि जएताह । (करण वाक्यमे रूपान्तरित करू)

(च) कुलदीप खिस्सा कहने छल । (पूर्ण भविष्यत कालमे रूपान्तरित करू)

(छ) गजेन्द्र बैसारमे अवश्य आओत । (सामान्य वर्तमान कालमे रूपान्तरित करू)

(ज) हीरानन्द सूर्यास्तसँ पहिनहि अओताह । (अकरण वाक्यमे रूपान्तरित करू)

(झ) कुम्हारिन पड़बा पोसने छलीह । (लिङ्गक आधारपर रूपान्तरित करू)

(ञ) ओसभ झगड़ाक खोँच ताकि रहल अछि । (पुरुषक आधारपर दूबेर रूपान्तरित करू)

(ट) नेतासभ भाषण करबामे प्रवीण होइत अछि । (आदरसूचक वाक्यमे रूपान्तरित करू)

१७. लिङ्ग, वचन, पुरुष, आदरसूचक, करण, अकरण वाक्यक स्वरूपक आधारपर निम्नलिखित वाक्यसभ शुद्ध अछि कि अशुद्ध, पता लगाउ आ जँ अशुद्ध अछि तँ ओकरा शुद्ध कऽ अभ्यास-पुस्तिकामे लिखू :

(क) सीता किताब पढ़ने छलाह ।

(ख) श्यामजी नीक समाचार लिखैत छी ।

(ग) मनचनमा सुगर पोसने छलखिन ।

(घ) अहाँलोकनि कतऽ गेल छलीह ।

(ङ) आइ बुध छी । काल्हि बृहस्पतिदिन प्रधानमन्त्री भारत गेलाह ।

(च) हमसभ नहि घर जा रहल छी ।

(छ) हम सभटा आम खा लेलखिन ।

(ज) तोँ कतऽ पढ़ि रहल छह ?

१८. निम्नलिखित विधानार्थक (करण) वाक्यकेँ निषेधात्मक (अकरण) वाक्यमे परिवर्तन करू :

उदाहरण : आम गाछमे लटकल अछि ।

निषेधार्थक : आम गाछमे नहि लटकल अछि ।

(क) ओकर हस्तलिपि अनुकरणीय अछि ।

(ख) दशमीमे मेला लागल छल ।

(ग) जितियामे हम ओठघन करब ।

(घ) आदित्यराज मेहनत कऽ रहल अछि ।

(ङ) दिल्ली दूर अछि ।

१९. पाठमेसँ कोनहु दशटा सूचनार्थक वाक्य सङ्कलन करू आ तकरा अधिकसँ अधिक प्रश्नार्थक वाक्यमे परिवर्तित करू ।

जेना : गामसँ फराक लखनदेइ नदीक किन्हेरमे मनचनमा डोमक घर छल ।

(क) मनचनमाक घर कतऽ छल ?

(ख) नदीक किन्हेरमे ककर घर छल ? आदि

२०. अपन विद्यालयमे अहाँकेँ की-की नीक लगैत अछि आ की-की नहि नीक लगैत अछि, तकर उल्लेख करैत हमर विद्यालय विषयपर एकटा कमसँ कम १५० शब्दक निबन्ध लिखू ।

विदेहक नगरी

■ *डा. पशुपतिनाथ झा*

जनकपुरधाम नेपालहिमे नहि, अपितु समस्त संसारमे प्रसिद्ध अछि । संसारक एहन कोनो हिन्दू नहि होएत जकरा जनकपुरधामक गरिमा नहि बुझल होएतैक । जनकवंशी राजालोकनिक समयमे ई मिथिलाक राजधानी छल । ओहि समयमे एकरा मिथिलापुरी कहल जाइत छलैक । ई पुरी शब्द कोनो राज्यक महत्त्वपूर्ण नगरक द्योतक होइत छल । प्रायः एहन नगर राज्यक राजधानी होइत छल । तेँ एहिमे पुरी शब्द जोड़िकऽ सम्बोधित कएल जाइत छलैक । उदाहरणक रूपमे अयोध्यापुरी, द्वारिकापुरी, लङ्कापुरी, मिथिलापुरी आदि । एहि शब्दसभमेसँ 'पुरी' हटा देलाक बाद ओ शब्दसभ राज्यक द्योतक भऽ जाइत अछि आ पुरी शब्द लगा देलाक बाद ओहि राज्यक राजधानी । तेँ एहिमे कनेको शङ्का नहि होएबाक चाही जे प्राचीन मिथिलापुरी जनकपुरधामहिकेँ कहल जाइत छल । एहिमे धाम शब्द सेहो लागल छैक । धामक शाब्दिक अर्थ होइत अछि पुण्यभूमि । अतः एकर गन्ती संसारक पुण्यभूमिमे कएल जाइत छैक ।

जनकपुरक सीमा मिथिला-महात्म्यमे निम्नाङ्कित रूपेँ देखाओल गेल अछि–

समाभ्य महाभाग पूर्वे हरिहरालयम् ।
तथा मैत्रेय निर्दिष्टा पश्चिमे वा जलेश्वरम् ॥
गिरिजालय मारभ्य यवद्वैधनुषास्थितिः ।
इति दुर्गस्य मर्यादा मिथिला सा महापुरी ॥

अर्थात हे मैत्रेय ! पूर्वमे हरिहरालयसँ प्रारम्भ भऽकऽ पश्चिममे जलेश्वरधरि तथा दक्षिणमे गिरिजास्थानसँ लऽकऽ उत्तरमे धनुषाधरि मिथिला महापुरीक दुर्गक सीमा अछि। पं. ताराप्रसाद उपाध्याय हरिहरालयक पर्याय रूप कमला नदीसँ लेलनि अछि जे उपयुक्त नहि बुझना जाइत अछि। हरिहरालयदिस नजरि दौड़ेलाक बाद प्रायः हरिपुरक आसपासमे जे शिवमन्दिर अछि ओहिपर जा कऽ दृष्टि रुकैत अछि।

कहल जाइत अछि जे एकर चारूकात महादेव रक्षकक रूपमे छलाह। एकरो उल्लेख हमरालोकनिकेँ मिथिला-महात्म्यमे भेटैत अछि, जे निम्नाङ्कित रूपसँ देखल जाइत अछि–

शिलानाथाभिधांलिङ्गे तथा वै कपिलेश्वरम्।

सर्वसिद्धिप्रदं नृशां पूर्व प्रतिष्ठतम्॥

कुपेश्वरं तथाग्नेय लिङ्गम् सर्वाधनाशनम्।

याम्यां सिद्धिप्रदं लिङ्गम् कल्याणेश्वर नामकम्।

सर्वसिद्धिकरं लिङ्गम् वारुण्यांच जलेश्वरम्॥

सौम्ये जलाधिनाथास्यं तथा क्षीरेश्वर मतम्।

ऐशान्यां त्रिजगत्ख्यातं नाम्ना वै मिथिलेश्वरम्।

भैरवाख्यो महादेवो नैऋत्यां ग्रामरक्षकः॥

अर्थात सभ प्रकारक सिद्धि देनिहार शिलानाथ एवं कपिलेश्वर महादेव पूर्वमे प्रतिष्ठापित छथि। आग्नेय कोणमे कूपेश्वर लिङ्ग छथि जे सभ तरहक पापक नाश करऽ वला छथि। दक्षिणमे सभ प्रकारक सिद्धि देबऽ वला कल्याणेश्वर छथि। सर्वसिद्धि देबऽ वला जलेश्वरनाथ पश्चिममे छथि। उत्तरमे जलधिनाथ तथा क्षीरेश्वर छथि। तीनू लोकमे ख्यात मिथिलेश्वर इशान कोणमे तथा नैऋत्य कोणमे भैरवनाथ महादेव ग्रामरक्षकक रूपमे छथि।

वर्तमानमे जनकपुरक भौगोलिक अवस्थिति देखल जाए तँ ई सीतामढ़ी तथा जलेश्वरसँ उत्तर-पूब, जयनगरसँ उत्तर-पश्चिम, धनुषासँ दक्षिण-पश्चिम तथा मलङ्गवासँ दक्षिण-पूबमे पड़ैत अछि।

नेपालक एक मात्र रेल-सेवा एकरा भारतक जयनगरसँ जोड़ैत अछि। जलेश्वर तथा सीतामढ़ी जएबाक हेतु पक्की सड़क अछि। नेपालक राजधानी काठमाण्डूसँ जोड़बाक काज पूर्व-पश्चिम राजमार्ग, बी.पी. राजमार्ग तथा नारायणघाट-काठमाण्डू राजमार्ग करैत अछि। पूबमे धरान तथा विराटनगर जएबाक लेल पूर्व-पश्चिम राजमार्गक प्रयोग आवश्यक भऽ जाइत अछि। ओहिना पश्चिममे नेपालक दक्षिणी द्वार अर्थात वीरगञ्ज जएबाक लेल सेहो ई राजमार्ग आवश्यक अछि। यद्यपि पूर्व-पश्चिम राजमार्ग जनकपुर होइत नहि जाइत अछि तथापि जनकपुरक लेल एकर उपयोगिता बहुत छैक। एकटा चौड़गर पक्की सड़कद्वारा ई अपनाकेँ ओहि राजमार्गसँ जोड़ि लैत अछि। जाहि स्थानपर राजमार्ग तथा पक्की

सड़क मिलैत अछि ओहि स्थानकेँ ढल्केबर कहल जाइत छैक । आइ-काल्हि ढल्केबरसँ किछु पश्चिम बर्दिवाससँ काठमाण्डूकेँ जोड़ऽ बला वी.पी.मार्ग बनि गेलाक बाद जनकपुरसँ काठमाण्डूक यात्रा सहज भऽ गेल अछि । राजधानी काठमाण्डू जएबाक लेल जनकपुरसँ हवाइसेवा सेहो उपलब्ध छैक ।

उत्तर वैदिक कालसँ लऽकऽ एखनधरि जनकपुर बहुत उत्थान आ पतन देखलक अछि । राजा जनक (सीरध्वज) क समयमे एकर गरिमा आकाश छुबैत छलैक । ओहि समयमे एकरा विद्या, धन तथा सुन्दरता तीनू चीजक दाबी छलैक । तेँ तँ तुलसीदास लिखैत छथि– 'निज करनी विधि कतहु न देखा ।' अर्थात रामक विवाहमे जखन ब्रह्माजी जनकपुर अएलाह तँ अपन बनाओल चीज कतहु नहि देखलनि । सभकिछु बदलल छलैक । एहिठामक महल-अटारी एहन छल जे चकरीगुम्म कऽ दैक । लोकक सुन्दरता देखिकऽ चकबिदोर लागि जाइत छलैक । आ विद्याक तँ कोनो बाते नहि हुअए । दरबार विद्वानलोकनिसँ खचाखच भरल रहैत छल । दरबारमे सदिखन शास्त्रार्थ होइत रहैत छल ।

जनकवंशक अन्तिम राजा कराल अपकर्मी छलाह । तेँ एकटा जनआन्दोलनमे मारल गेलाह । एहि बातक उल्लेख चाणक्य निम्नाङ्कित रूपेँ करैत छथि– जाहि प्रकारसँ दाण्डक्य नामक भोजवंशी राजा ब्राह्मण कन्याक सङ्ग बलात्कारक कारणे मारल गेलाह ओही प्रकारसँ विदेह कराल सेहो । हिनक कथनक पुष्टि अश्वघोष करैत छथि । एहि तरहेँ जनकवंशी राजाक अन्त भेलाक बाद जनकपुरकेँ जे स्वतन्त्र राज्यक राजधानी होएबाक गरिमा प्राप्त छलैक, से समाप्त भऽ गेलैक । कारण, मिथिला आठ राज्यक एकटा सङ्घक रूपमे चलि गेल, जकरा बज्जी सङ्घ कहल जाइत छलैक । बादमे मगधक राजा अजातशत्रु एकरा अपना राज्यमे मिला लेलनि । एकर बाद तँ ई कतेको राजवंशक हाथमे जाइत-अबैत रहल । जेना– नन्दवंश, मौर्यवंश, गुप्तवंश, पालवंश, कर्णाटवंश आदि ।

कर्णाटवंशक बाद मिथिला दू भागमे विभाजित भऽ गेल । एकर दक्षिणी भागपर ओइनवारवंश तथा उत्तरी भागपर द्रोणवारवंशक शासन प्रबन्ध कायम भऽ गेलैक । ओहि समयमे जनकपुर द्रोणवारवंशी राजाक अधीनमे छल । द्रोणवारवंशक अन्त भेलाक बाद सेनवंशक उदय भेल । पाल्पाक राजा मुकुन्दसेनक कनिष्ठ पुत्र लोहाङ्गसेन एहि क्षेत्रपर अधिकार जमौलनि । एही सेनवंशी राजालोकनिक समयमे जनकपुरक भाग्योदय भेलैक ।

आइ जाहिठाम जनकपुर अछि ओहिठाम घनगर जङ्गल छल । तेँ ई कहब कोनो गलत नहि होएत जे जनकपुरक गरिमा खालि इतिहासे आ पुराणेमे छल । एहनसन अन्धकारमय स्थितिमे जयपुर राज्यक लोहागढ़सँ एकटा सन्त अएलाह । हुनक नाम सूरकिशोर छलनि । हुनकहिद्वारा जनकपुरक अन्वेषण भेल । एहिठाम ओ एकटा कुटी बनाकऽ श्रीजानकीजीकेँ प्रतिष्ठापित कएलनि । बादमे जनकपुरक उदय होएबाक बात सुनिकऽ गिरिनारसँ चतुर्भुज गिरि अएलाह । ओ राम मन्दिरक स्थान निश्चित कएलनि । ई संन्यासी छलाह । हिनक जे शिष्यलोकनि भेलाह से सभ संन्यासीए । तेँ आइपर्यन्त राम मन्दिरक महन्थ संन्यासीए होइत छथि । एहि दुनू मन्दिरक सञ्चालनक हेतु मकवानी सेन राजाद्वारा १४०० बिघा जमीन प्रदान कएल गेल । बादमे ओ जमीन दुनू मन्दिरकेँ बाँटि देल गेल ।

आइ जे जानकी मन्दिर भव्य रूपमे अछि ओकर निर्माण एक शताब्दी पूर्व टीकमगढ़क रानी वृषभानु कुँवरिद्वारा भेल छल । एहिमे नओ लाख रुपैया खर्च भेल छल । तेँ एकरा नओलखा मन्दिर सेहो कहल जाइत छैक । ई मन्दिर राजस्थानी वास्तुकलाक एकटा नीक नमूनाक रूपमे अछि । एहि मन्दिरक चारूकात कोठलीसभ अछि, जाहिमे महन्थ, सन्त, पुजारी तथा सेवकलोकनि रहैत छथि । मन्दिरक सटले उत्तरमे मड़वा अछि । एकर भव्यता देखितहिँ बनैत अछि । एकर चारू कोणमे राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न युगल जोड़ीक रूपमे प्रतिष्ठापित छथि । मध्यमे राम-जानकीसहित अपन-अपन पुरहितक सङ्ग दशरथ तथा जनक विराजमान छथि । मण्डपक प्रत्येक खाम्हमे विभिन्न देवी-देवताक दर्शन कएल जा सकैछ । जानकी मन्दिरसँ सटले लक्ष्मणमन्दिर सेहो अछि ।

श्रीराम मन्दिर जनकपुरक दोसर दर्शनीय स्थल अछि । एहि मन्दिरक निर्माण वि.सं. १८३९ सालमे भेल । ई मन्दिर नेपाली वास्तुकलाक एकटा उत्तम नमूना अछि । एहि मन्दिरसँ सटले पूबमे धनुषसागर अछि । एहिना सटले उत्तरमे एकटा भवनमे राजदेवी प्रतिष्ठित छथि । हिनक आकार गोसाउनिजकाँ पीड़ी आकारक छनि । ई जनकवंशी राजालोकनिक कुलदेवी छलथिन । कुलदेवीक स्थान घरेमे होइछ । तेँ हिनक मन्दिर नहि बनल छनि ।

रङ्गभूमि जनकपुरक एकटा ऐतिहासिक स्थल अछि । ई मैदानक रूपमे अछि । एकर रकबा बारह बिघा होएबाक कारणे एकरा बरबिघवा सेहो कहल जाइत छैक । एही स्थलपर सीताक स्वयंवर रचल गेल छल आ विभिन्न देशक भूपलोकनि उपस्थित भेल छलाह । एखनहुँ विवाह-पञ्चमीक अवसरपर बरियाती एकत्रित भऽकऽ एहिठामसँ जानकी मन्दिर जाइत अछि । सङहि कोनो पैघ सभाक आयोजन वर्तमानमे एही स्थलपर कएल जाइछ ।

जनकपुरक ख्याति रामायणे कालमे नहि, अपितु महाभारत कालमे सेहो छल । एहि समयमे मिथिलाक राजा क्षेमाधि छलाह । हिनके समयमे बलराम जनकपुर आएल छलाह आ दुर्योधनक पुत्र लक्ष्मण सेहो बलरामसँ एहीठाम गदायुद्धक शिक्षा प्राप्त कएने छलाह । एखनहुधरि ओ स्थल अछिए, जकरा लक्ष्मण अखाड़ा कहल जाइत छैक । एहिठाम एकटा पाथर छैक, जकरा लोक लक्ष्मणक गदाक रूपमे बुझि रहल अछि ।

जनकपुरक पहिचानक सम्बन्धमे एकटा लोकोक्ति बहुत प्रचलित अछि– 'बाबन कुटी बहत्तर कुण्डा, फिरहिं सन्तजन झुण्डहि-झुण्डा ।' अर्थात जनकपुरमे बाबनटा कुटी तथा बहत्तरिटा कुण्ड (पोखरि) अछि । एहिठाम झुण्डक-झुण्ड सन्तजन (साधु) घुमैत रहैत छथि । एहन कुटीसभमे सरहन्तिया कुटी, बराही कुटी, कलवार कुटी आदि मुख्य अछि । एकर अतिरिक्त किछु कुटीसभ ओहन अछि जे विभिन्न पोखरिसभपर अवस्थित अछि आ ओही पोखरिक नामसँ जानल जाइत अछि । जेना– बिहारकुण्ड, अग्निकुण्ड, रत्नसागर, सीताकुण्ड, महाराजसागर, मध्यमासर, पार्वतीसर, अङ्गराजसर आदि । जनकपुरक आश्रमसभमे श्रीरामानन्द आश्रम उल्लेखनीय अछि । एहि आश्रमकेँ दुलहा-दुलहिन मन्दिर सेहो कहल जाइत छैक । एहि आश्रमसँ बहुत धार्मिक ग्रन्थसभक प्रकाशन भेल अछि । तहिना रङ्गभूमिक दक्षिणमे सन्त तुलसी स्मारक अछि ।

जनकपुरक सङ्कटमोचन मन्दिर सेहो उल्लेखनीय अछि। एहि मन्दिरमे हनुमानजी प्रतिष्ठापित छथि। एहिठाम शनि आ मङ्गल कऽ भक्तजनक भीड़ लागल रहैत अछि।

जनकपुरसँ सटले पश्चिममे दुग्धमति नदी बहैत अछि, जकर अपने महिमा छैक। जनकपुरमे जतेक सरोवर अछि, ओहिमे गङ्गासागरक विशेष महत्त्व अछि। कहल जाइत अछि जे निमिक शापित शरीरकेँ छुलासँ ऋषि-मुनिलोकनिकेँ दोष लागि गेल छलनि। ओ दोष पावन नदी आ समुद्रक जलसँ दूर भऽ गेलनि। जखन ओ नदी आ समुद्र अपन-अपन स्थानपर जाए लागल तँ श्रीहरि अपन-अपन अंश छोड़ि जएबाक हेतु कहलथिन। ओहि अंशसभसँ गङ्गासागर बनल अछि। तेँ एकर महत्ता बहुत बेसी छैक। भक्तजन एहि सागरमे स्नान कऽकऽ विभिन्न देवी-देवताक दर्शन करैत छथि। एहि सागरक भीरपर शिव मन्दिर अछि। सङहि एकटा धर्मशाला सेहो छैक।

आधुनिक जनकपुरक निर्माणमे साधु-सन्तक महत्त्वपूर्ण भूमिका रहल अछि। एहने सन्तमे एकटा मौनी बाबा सेहो छलाह। हुनकहिद्वारा याज्ञवल्क्य संस्कृत पाठशालाक निर्माण भेल छल। ओ जनकपुरक अन्तर्गृह परिक्रमा निर्माण करा परिक्रमाक दुनू कात वृक्षरोपण सेहो कएने छलाह। सङहि जतेक सरोवरसभ अछि ओहि सभमे एकटा शिला गड़बौने छलाह। ओहि शिलापर सरोवरक नाम अङ्कित छल।

जनकपुर अपना सम्बन्धमे बहुतरास किंवदन्ती समेटने अछि। ओहिमेसँ एकटा किंवदन्ती ई अछि– जे कोनो हिन्दू जनकपुर नहि जाइत छथि हुनक अगिला जन्म कौआक रूपमे होइत छनि। दोसर किंवदन्ती ई अछि– जे केओ व्यक्ति जगन्नाथजी जाइत छथि हुनका अनिवार्य रूपसँ जनकपुर आबऽ पड़ैत छनि। एहि किंवदन्तीक पाछाँ ई तर्क काज करैत अछि जे ओहिठाम अटका खएलाक बाद जे दोष लगैत छैक ओकर निवारण जनकपुर अएलाक बादे होइत छैक। एहि बातसँ ई सहजहिँ अनुमान लगाओल जा सकैत अछि जे जनकपुरक भूमि कतेक पावन अछि।

जनकपुर अपन धार्मिक महत्ताक अतिरिक्त उद्योग तथा मिथिला पेन्टिङ लेल सेहो जानल जाइत अछि। जनकपुरधक दक्षिणी भाग कूआमे नारी कल्याण केन्द्र अछि। एहिमे कतेको महिला कार्यरत छथि। एकसँ एक मिथिला पेन्टिङ हुनकालोकनिद्वारा बनाओल जाइत अछि, जकर ख्याति नेपालहिटामे नहि, अपितु विदेशमे सेहो अछि। जनकपुरक हेतु ई निश्चय एकटा गौरवक बात अछि।

एहिठाम समय-समयपर मेला लगैत आएल अछि। यथा– विवाहपञ्चमी, रामनवमी, झुला आदि। यद्यपि ओहुना लोक तीर्थाटन, पर्यटन, मिथिलाक केन्द्र भेने वा अन्य कारणे एहिठाम अबितहि रहैत अछि। जनकपुरवासीसभक ई कर्त्तव्य भऽ जाइत छनि जे एना आबऽ वलासभक स्वागत करथि। कारण अतिथिकेँ देवता मानबाक हमरासभक संस्कृति अछि। हमरालोकनिक इएह भावना जनकपुरक प्राचीन गरिमाकेँ अक्षुण्ण राखि सकैत अछि।

शब्दार्थ

गरिमा	= महिमा	द्योतक	= प्रकाश करऽवला
भौगोलिक	= भूगोलसम्बन्धी	अवस्थिति	= अवस्थान, ठहराव
प्रतिष्ठापित	= स्थापित (कोनो देवमूर्त्तिक हेतु प्रतिष्ठापित शब्द अबैछ।)		
पतन	= अवनति, नाश	विधि	= विधाता, ब्रह्मा
अटारी	= महलक उपरका भाग	चकरीगुम्म	= चकित
खचाखच	= पूर्ण रूपसँ	अपकर्मी	= खराब काज करऽवला
कनिष्ठ	= छोट	भाग्योदय	= भाग्यक उदय
सन्त	= साधु	वास्तुकला	= गृहनिर्माण-कला
रकबा	= क्षेत्रफल	उत्थान	= उठान
स्वयंवर	= एकटा प्राचीन रीति, जाहिमे कन्याद्वारा विवाहक अभिलाषासँ प्रस्तुत किछु वरमेसँ एकटा वरकेँ चुनल जाइत छल		
सर	= पोखरि	पावन	= पवित्र
सरोवर	= पोखरि	शिला	= पाथर
किंवदन्ती	= जनप्रवाद, जनश्रुति, लोककथन		
अटका	= जगन्नाथजीक प्रसाद (एहि प्रसादमे छुआछूतिक विचार नहि कएल जाइत अछि)		

अभ्यास

श्रवण-शिल्प (सुननाइ)

१. **निबन्धक पहिल अनुच्छेद शिक्षकसँ सुनू आ निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर दिअ :**

(क) जनकपुर कतऽ-कतऽ प्रसिद्ध अछि ?

(ख) कोन राजालोकनिक समयमे मिथिलाक राजधानी जनकपुर छल ?

(ग) "पुरी" शब्दसँ की बुझल जाइत छल ?

(घ) प्राचीन मिथिलापुरी कोन नगरकेँ कहल जाइत छल ?

(ङ) "धाम" शब्दक शाब्दिक अर्थ की होइत अछि ?

२. **एहि निबन्धक अन्तिम दूटा अनुच्छेदक श्रुतिलेखन करू ।**

३. **निबन्धक "नेपालक एक मात्र रेलसेवा" सँ लऽकऽ "हवाइसेवा सेहो उपलब्ध छैक" धरिक पाठ शिक्षकसँ सुनू आ निम्नलिखित रिक्त स्थानसभकेँ भरू :**

(क) रेलमार्ग जनकपुरकेँ भारतक .....सँ जोड़ैत अछि ।

(ख) धरान आ विराटनगर जएबाक लेल .....आवश्यक भऽ जाइत अछि ।

(ग) .....सँ जाएवला पक्की सड़क जनकपुरकेँ राजमार्गसँ जोड़ैत अछि ।

(घ) .....जएबाक लेल जनकपुरसँ हवाइसेवा उपलब्ध अछि ।

(ङ) जनकपुरसँ सीतामढ़ी जएबाक लेल .....सड़क अछि ।

कथन-शिल्प (बजनाइ)

४ **विदेहक नगरी ककरा आ किएक कहल गेल अछि ? निबन्धक आधारपर ई तथ्य कक्षामे सभकेँ सुनाउ ।**

५. **मिथिला महात्म्य अनुसार जनकपुरक सीमा एकगोटे संस्कृतमे आ दोसरगोटे मैथिलीमे कक्षामे सभकेँ सुनाउ । बेरा-बेरी सभ केओ एहिना करू ।**

६. **निम्नलिखित शब्दसभक शुद्ध उच्चारण करू**

द्योतक, प्रतिष्ठापित, अवस्थिति, शास्त्रार्थ, उल्लेखनीय, याज्ञवल्क्य, किंवदन्ती, अक्षुण्ण, संस्कृति ।

७. **"बाबन कुटी बहत्तर कुण्डा" कहलासँ कथीक बोध होइत अछि ? कक्षामे अपन-अपन विचार सुनाउ ।**

पठन-शिल्प (पढ़नाइ)

८. **एकगोटे एकटा अनुच्छेद आ दोसरगोटे दोसर करैत निबन्धक सभ अनुच्छेदक बेरा-बेरी सस्वर वाचन करू ।**

९. **एहि निबन्धक आधारपर निम्नलिखित प्रश्नसभक संक्षिप्त उत्तर दिअ :**

(क) जनकवंशी राजालोकनिक समयमे जनकपुर की छल ?

(ख) पुरी शब्द कोन चीजक सूचक अछि ?

(ग) धामक की अर्थ होइत अछि ?

(घ) प्राचीन समयमे जनकपुरकेँ की कहल जाइत छलैक ?

(ङ) जनकपुरक चारूकात रक्षकक रूपमे के छलाह ?

(च) कतऽ-कतऽ जएबाक लेल जनकपुरसँ हवाइसेवा उपलब्ध छैक ?

(छ) ककरा समयमे जनकपुरक गरिमा आकाश छुबैत छल ?

(ज) कराल जनक किएक मारल गेलाह ?

(झ) कोन वंशक समयमे जनकपुरक उत्थान भेलैक ?

(ञ) जनकपुरक अन्वेषक के छलाह ?

(ट) जानकी मन्दिर के बनबौलनि ?

(ठ) राम मन्दिरक निर्माण कहिया भेल ?

(ड) लक्ष्मण अखाड़ा किनका नामपर अछि ?

(ढ) जनकपुरक सम्बन्धमे कोन लोकोक्ति प्रचलित अछि ?

(ण) नारी कल्याण केन्द्रमे की होइत छैक ?

१०. **निम्न शब्दसभकेँ अर्थ स्पष्ट होएबाक हिसाबेँ वाक्यमे प्रयोग करू :**

पुण्यभूमि, दृष्टि, ग्रामरक्षक, पतन, चकरी गुम्म, महल-अटारी, अपकर्मी, कनिष्ठ, चकबिदोर ।

११. शिक्षकद्वारा निर्धारित कोनहुँ एकटा अनुच्छेदकेँ शुद्ध उच्चारणपूर्वक बेरा-बेरी पढ़ू आ अहाँकेँ कतेक मिनट समय लागल, से अभिलेखित करू। सभसँ कम समय लगौनिहार विद्यार्थीकेँ शिक्षक प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कृत कऽ सकैत छथि।

लेखन-शिल्प (लिखनाइ)

१२. निम्नलिखित शब्दसभक विपरीतार्थक शब्द लिखू :

प्रारम्भ, रक्षक, विभाजित, सटले, उत्तम, बेसी, अगिला, मजगूती, स्वागत, प्राचीन।

१३. निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर दिअ :

(क) प्राचीन समयमे जनकपुरक सीमा की छल ?

(ख) जनकपुरक रक्षक मानल जाएवला कोन-कोन महादेव कोम्हर-कोम्हर छथि ?

(ग) जनकपुरक वर्तमान भौगोलिक अवस्थिति की अछि ?

(घ) मौनी बाबाक कार्यक उल्लेख करू।

(ङ) बरबिघबाक परिचय दिअ।

(च) जनकपुरक ख्याति महाभारतो कालमे छल से अहाँ कोना बुझैत छी ?

(छ) गङ्गासागर किएक पवित्र सरोवर मानल गेल अछि ?

(ज) जनकपुरक सम्बन्धमे केहन किंवदन्तीसभ अछि ?

१४. कोष्ठकमे सही जवाबक क्रम राखि जोड़ा मिलाउ।

समूह क		समूह ख
(क) जनकवंशी राजा	( )	(अ) मौनी बाबा
(ख) जलेश्वर	( )	(आ) वृषभानु कुँवरि
(ग) राजधानी	( )	(इ) कुलदेवी
(घ) जानकी मन्दिर	( )	(ई) कराल
(ङ) राजदेवी मन्दिर	( )	(उ) पश्चिम
(च) लक्ष्मण	( )	(ऊ) बरबिघबा
(छ) परिक्रमा सड़कक निर्माण	( )	(ए) दुर्योधन
(ज) अटका	( )	(ऐ) जगन्नाथधाम
	( )	(ओ) वैद्यनाथधाम

१५. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(क) जनकपुरक गन्ती .....मे कएल जाइत छैक ।

(ख) पूबमे हरिहरालयसँ लऽकऽ पश्चिममे ..... मिथिला महापुरीक दुर्गक सीमा छल ।

(ग) तीनू लोकमे ख्यात मिथिलेश्वर ..... पड़ैत छथि ।

(घ) एकटा ..... जनकपुरकेँ पूर्व-पश्चिम राजमार्गसँ जोड़ैत अछि ।

(ङ) जखन ब्रह्माजी जनकपुर अएलाह तँ ..... कतहु नहि देखलनि ।

(च) आइ जाहिठाम जनकपुर अछि ताहिठाम पहिने ..... छल ।

(छ) श्रीराम मन्दिर जनकपुरक दोसर .....अछि ।

(ज) ..... भीरपर शिव मन्दिर अछि ।

(झ) अटका खएलाक दोषक निवारण ..... अएलाक बादे होइत छैक ।

१६. निम्नलिखित उद्धरण्क सप्रसङ्ग व्याख्या करू :

जनकपुरवासीसभक ई कर्त्तव्य भऽ जाइत छनि जे एना आबऽ वलासभक स्वागत करथि । कारण, अतिथिकेँ देवता मानबाक हमरासभक संस्कृति अछि । हमरालोकनिक इएह भावना जनकपुरक प्राचीन गरिमाकेँ अक्षुण्ण राखि सकैत अछि ।

सृजनात्मक अभ्यास

(क) जनकपुरक ऐतिहासिक तथा भौगोलिक परिचय दिअ ।

(ख) आधुनिक जनकपुरक विवरण प्रस्तुत करू ।

(ग) प्रस्तुत निबन्धक आधारपर अपन जिलाक कोनो एकटा ऐतिहासिक स्थानक सम्बन्धमे २०० शब्दक लगभगमे एकटा निबन्ध लिखू ।

व्याकरण

१८. कक्षा ९ मे हमसभ जानि चुकल छी जे स्वरूपक आधारपर वाक्य चारि प्रकारक होइत अछि । ओसभ थिक : सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य, मिश्र वाक्य आ मिश्रित । तहिना अर्थक आधारपर वाक्य पाँच प्रकारक होइत अछि । १. विधिवाचक २. निषेधवाचक ३. आज्ञार्थक ४. प्रश्नार्थक ५. विस्मयादिबोधक ।

निम्नलिखित संवादमे रहल वाक्यसभ अर्थक आधारपर केहन वाक्य थिक, से देखाउ :

बिल्टू : रौदी छह हौ । हौ रौदी । (स्त्री घरसँ बहराइत अछि ।)

सबैलावाली : नइ छथिन, बैठू न ।

बिल्टू : नइ ठीके छी । रौदी भाइ कतऽ गेल हए ?

सबैलावाली : जनकपुर गेलै गऽ, पण्डीजीके जमीन देलकै ने, तकरे रहटरी करबऽ ।

बिल्टू : आखिर सोनाके टुकड़ा बिलहाइए गेल ?

सबैलावाली : की कहू, हमरा मोन पड़ै हए तऽ छाती दड़कऽ लगै हए ।

विल्टू : छाती दड़किकऽ होत ? इमहर जमीनो गेल आ ओमहर बेटियोके ....।

सबैलावाली : की भेलै गऽ हमरा बेटीके ?

बिल्टू : आइ हम ओही गाम दऽकऽ अबै छली तऽ सोचलियै जे बौवाके कुशल-छेम पुछि लै छियै ।

सबैलावाली : एऽऽ । तऽ की केना ?

बिल्टू : आओर सब तऽ निमने, देह भारी हइ से तऽ बुझले होत ?

सबैलावाली : बुझल हए की !

बिल्टू : सातम मास हइ आ देह हइ काँटो-काँट ।

सबैलावाली : खान-पानमे दुःख हइ ?

बिल्टू : घर तऽ भरल-पुरल हइ । बच्चा देह हइ ने, तकतियानमे कमी बुझाइए ।

सबैलावाली : कुछो कहबो केलक ?

बिल्टू : बड़ पुछलियै, छानि-छानिकऽ, नइ कुछो बजलै । इहो पुछलियै जे गामपर जएबैं ? नइ बजलै कुछो ।

सबैलावाली : सब मरदबाके किरदानी हइ ।

बिल्टू : एना नइ हदरु अहाँ ।

सबैलावाली : एनामे मोन थीर रहतै, कहू तऽ !

बिल्टू : हमरा लगै हए– एक तऽ जान भारी, बच्चा देह आ तैपरसँ घर-बाहर कामो करऽ पड़ै हइ ।

सबैलावाली : मेझमानके बाप आ भाइसुन चण्डाल हइ, हमरा बेटीके खा कऽ रहत ।

बिल्टू : एह, एना कियो बाजए !

सबैलावाली : बाजू नइ तऽ की करू ? (रौदी अबैत अछि ।) इहो तऽ अएलै ।

बिल्टू : की बात हौ ? सब ठीक छह ने ?

सबैलावाली : कथी ठीक रहतै ? कते रोकलियै, जे बिआह नइ करबौ, एखनी खिच्चा-बतिया हइ .... तऽ उखमा उठा देलकै ।

रौदी : की भेलै, बातो तऽ बुझियै !

सबैलावाली : बात बुझै हइ, जेना कथू नइ रहै बुझल, सत्यानाशी कहींके ।

बिल्टू : भौजी, अहाँ मोनके थीर करू ।

सबैलावाली : थीर होइ हए जे करू ? छाती धड़-धड़ करै हए ।

बिल्टू : तैयो कनी काल चुप रहू न । ..... देखह रौदी भैया, भारी जानमे एते कमजोरी ठीक नइ हइ, से लऽ अबहक दैयाके ।

रौदी : हम कहलियैए नइ लएबै जे ई आफन धुनने हइ ?

सबैलावाली : हमरा आँखिके आगाड़ी खालि बौएके मुह नँचै हए तऽ हम की करू ?

रौदी : हौ बिल्टू, एकरा देखैत रहियह, हम जाइ छी ।

बिल्टू : जाह ।

सबैलावाली : बौआके लइएकऽ अउतै ।

रौदी : लऽकऽ अएबै ।

सबैलावाली : कोनो बहन्ना हम नइ मानबै ।

रौदी : होतै ।

विधिवाचक	निषेधवाचक	आज्ञार्थक	प्रश्नार्थक	विस्मयादिबोधक

द्रष्टव्य : जँ कोनो प्रकारक वाक्य एहि संवादमे नहि भेटए तँ अपनादिससँ वाक्य ताकिकऽ लिखू ।

१९. कल्पना करू जे अहाँ विराटनगरसँ काठमाण्डू जएबाक नियार कएलहुँ अछि आ बस-टिकट लेबाक लेल टिकट-काउन्टरपर छी। उपर्युक्त पाँचो प्रकारक वाक्यक प्रयोग करैत अहाँ आ टिकट-विक्रेता बीच भेल संवाद कमसँ कम १५० शब्दमे लिखू।

वर्णविन्यास

२०. एहि निबन्धमे कवर्ग सँ लऽकऽ पवर्ग धरिक पञ्चमाक्षरक प्रयोग भेल आ अनुस्वारक प्रयोग भेल शब्दसभ ताकिकऽ लिखू।

पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार :

पञ्चमाक्षर अन्तर्गत ङ, ञ, ण, न एवं म अबैत अछि। संस्कृत भाषामे शब्दक अन्तमे जाहि वर्गक अक्षर रहैत अछि ओही वर्गक पञ्चमाक्षर अबैत अछि।

जेना–

अङ्क (क) वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ङ् आएल अछि।)

पञ्च (च) वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ञ आएल अछि।)

खण्ड (ट) वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ण आएल अछि।)

सन्धि (त) वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे न आएल अछि।)

खम्भ (प) वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे म आएल अछि।)

उपर्युक्त बात मैथिलीमे कम देखल जाइत अछि। पञ्चमाक्षरक बदलामे अधिकांश जगहपर अनुस्वारक प्रयोग कएल जाइछ। जेना– अंक, पंच, खंड, संधि, खंभ आदि। भाषाविद एवं व्याकरणविद पण्डित गोविन्द झाक कहब छनि जे कवर्ग, चवर्ग आ टवर्गसँ पूर्व अनुस्वार लिखल जाए तथा तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व पञ्चमाक्षरे लिखल जाए। जेना– अंक, चंचल, अंडा, अन्त तथा कम्पन। मुदा हिन्दीक निकट रहल आधुनिक लेखक एहि बातकेँ नहि मानैत छथि। ओलोकनि अन्त आ कम्पनक जगहपर सेहो अंत आ कंपन लिखैत देखल जाइत छथि।

नवीन पद्धति किछु सुविधाजनक अवश्य छैक। किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक बचत होइत छैक। मुदा कतोकबेर हस्तलेखन वा मुद्रणमे अनुस्वारक छोटसन विन्दु स्पष्ट नहि भेलासँ अर्थक अनर्थ होइत सेहो देखल जाइत अछि। अनुस्वारक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भावना सेहो ततबए रहैत अछि। एतदर्थ कसँ लऽकऽ पवर्गधरि पञ्चमाक्षरेक प्रयोग करब उचित अछि। यसँ लऽकऽ ज्ञधरिक अक्षरक सङ्ग अनुस्वारक प्रयोग करबामे कतहु कोनो विवाद नहि देखल जाइछ।

एक शब्द आ विभिन्न प्रयोग

मैथिलीमे कतेको एहन शब्द अछि जकर अर्थ प्रसङ्गक कारणे बदलि जाइत अछि, मुदा ओकर विकारमे कोनो अन्तर नहि अबैत अछि। एहन शब्दसभक किछु उदाहरण निम्नाङ्कित रूपेँ देल जा-रहल अछि :

१. **विचार–** राय : अहाँक की विचार अछि ?

निर्देश : अहाँ सही विचार दिअ।

दशा : ओ कोनो विचार बाँकी नहि रखलक।

सलाह : अहाँसँ विचार करऽ आएल छी।

संस्कार : अहाँ विना विचारक लोक छी।

मन्तव्य : अहाँक विचार नीक अछि।

दया : अपने हमरापर विचार कएल जाओ।

निर्णय : अहाँ की विचार कएलहुँ ?

२. **चालि–** गति : साइकिलक चालि बढ़ियाँ नहि छैक।

छल : ओ हमरासङ्ग शतरञ्जक चालि चलैत अछि।

चरित्र : एहि चालिपर हमरा तामस उठैत अछि।

धोखा : राम उमाक चालिमे आबि गेल।

३. **पानि–** जल : ओ पानि पीबैत अछि।

लालच : तेतरि देखिते ओकरा मुहमे पानि आबि गेलैक।

अत्यधिक : ओ पानिजकाँ रुपैया बहौलक।

शाण : एहि छुरीपर पानि चढ़ा दियौक।

गर्व : ओकर पानि उतरि गेलैक।

परास्त : हम ओकरा पानि पियाकऽ छोड़बै।

गति : एहि बड़दक पानि मन्द छैक।

सस्त : ओ पानिक मोल सामान बेचि देलक।

आवोहवा : एहिठामक पानि नहि नीक छैक।

सहारा : रमेस्सर बुढ़बाकेँ पानियो देनिहार केओ नहि छैक।

संवेदनशीलता : ओकरा आँखिमे पानि नहि छैक ।

सामर्थ्य : ओ कतेक पानिमे अछि से हमहुँ देखबैक ।

४ **खराब–** गन्दा : हमर धोती खराब भऽ गेल ।

नोक्सान : हमर समय खराब कऽ गेल ।

दूषित : एहिठामक पानि खराब छैक ।

बेकार : हमर घड़ी खराब अछि ।

गड़िखड़ : ओकर मुह खराब छैक ।

बर्बाद : हमर भोजन खराब भऽ गेल ।

स्वादहीन : लोहियाक तरकारी खराब अछि ।

अस्वस्थ : ओकर मोन खराब छैक ।

दुराचारी : ओ आदमी खराब छैक, ओकर सङ्ग नहि करह ।

५. **फुटब–** बिगड़ब : हमर तँ भाग्ये फुटि गेल अछि ।

निकलब : धान फुटि गेल ।

नष्ट होएब : घैल फुटि गेल ।

पीज निकलब : हमर घाओ फुटि गेल ।

अलग होएब : ओ हमरासँ फुटि गेल ।

जोड़सँ : ओ फुटिकऽ कानऽ लागल ।

६. **डुबब–** अस्त : सूर्य डुबि गेल ।

समाप्त : एहि परिवारक प्रतिष्ठा डुबि रहल छैक ।

बुड़ब : हमर पूजी डुबि रहल अछि ।

मृत्यु : रोगीक नाड़ी डुबि रहल छैक ।

मग्न : रमेश किताबमे डुबल अछि ।

पानिमे डुबब : ओ नदीमे डुबि रहल अछि ।

७. **बढ़ब–** झञ्झट : बात नहि बढ़ाउ ।

देबाक हेतु आग्रह : कलम बढ़ा दिअ ।

बेसी होएब : सभक उमेर बढ़ैत छैक ।

नमहर : आब कटहरक गाछ बढ़तैक ।

साहस : के हमरासँ लड़त से आगाँ बढ़ओ ।

पैघ : माता-पितासँ बढ़ि संसारमे केओ नहि ।

उन्नति : व्यापारमे ओ खूब आगू बढ़ि गेल ।

आगाँ चलब : अहाँ बढ़ू, हम कने बिलमब ।

८. **लहरि–** तरङ्ग : समुद्रमे लहरि उठैत छैक ।

क्रोध : हमर तरबाक लहरि मगजपर चलि गेल ।

पीड़ा (जलन) : हमर घाओ लहरि रहल अछि ।

जोश/उमङ्ग : विश्वमे साम्यवादी दलक लहरि चलल अछि ।

व्यथा : मोनक लहरि ओ की जानऽ गेलैक ।

पसरब : आगि चारूदिस लहरि गेल ।

९. **हाथ–** अङ्ग : ओकरा हाथमे घाओ छैक ।

कानूनी अधिकार : ओ अपन हाथ काटिकऽ महेशकेँ दऽ देलकैक ।

पहुँच : ओकर हाथ उपरधरि छैक ।

सहभागिता : एहि झगड़ामे देवचन्द्रक हाथ छैक ।

तुलना : एहि बातमे लक्ष्मणक हाथ उपर छैक ।

कञ्जूस : ओ हाथक सक्कत अछि ।

सामर्थ्य : ई हमरा हाथक बात नहि अछि ।

स्थिति : एहि मुकदमामे ओकर हाथ उपर छैक ।

बल : ओ हमर दहिन हाथ अछि ।

१०. **पता–** ठेकान : अहाँक की पता अछि ?

भेद : एहि बातक पता ओकरा नहि चलतैक ।

जानकारी : अहाँक कोनो पता हमरा नहि रहैत अछि ।

सही : ई पताक बात कहलहुँ ने ।

११. **हृदय–** अङ्ग : शरीरमे हृदयक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि ।

बीच : जनकचौक जनकपुरक हृदयस्थलमे अवस्थित अछि ।

करुणा : एकरा पासमे हृदय नहि छैक ।

मोनमे : हम सदिखन अहाँकेँ हृदयमे रखने रहब ।

पैघ त्याग : हम अपन हृदय काटिकऽ दऽ देबैक तैयो ओ हमर नहि हएत ।

अत्यन्त प्रिय : अहाँ हमर हृदय छी ।

१२. **तोड़ब–** खूब : ओ कलम तोड़िकऽ लिखलक ।

विच्छेद : ओ हमरासँ सम्बन्ध तोड़ि लेलक ।

कीर्तिमान : सन्तोष रेकॉर्ड तोड़ि देलक ।

अलग करब : हम ओकर गाछसँ एकटा आम तोड़लहुँ ।

टुकड़ा करब : रामचन्द्र शिवजीक धनुष तोड़लनि ।

१३. **गाए–** जानवर : गाएक सेवा करू ।

सज्जन : अमरेश गाए अछि ।

१४. **उत्तर–** जवाब : एकर उत्तर दिअ ।

दिशा : उत्तर मुहेँ नहि सुतबाक चाही ।

पछाति : बीच जङ्गल पहुँचलाउत्तर एकटा कुटी देखाइ पड़ल ।

१५. **विषम–** बहुत : जेठमे विषम ज्वाला रहैत छैक ।

बेजोड़ा : ई विषम सङ्ख्या अछि ।

कठिन : ओकर परिस्थिति विषम छैक ।

१६. **अर्थ–** धन : अर्थक अभावमे किछु नहि भऽ सकैछ ।

माने : अहाँक कविताक अर्थ हम नहि बुझलहुँ ।

प्रयोजन : हुनकासँ भेट करबाक कोन अर्थ छैक ?

एहिना कऽ आओरो बहुतरास शब्दसभ अछि, जकर विभिन्न प्रयोग होइत छैक । बहुते अर्थ रहल एहन शब्दसभ मैथिली शब्दकोशसँ ताकू आ शिक्षककेँ देखाउ ।

मिथिला-गान

■ *धीरन्द्र प्रेमर्षि*

मानैत छी जे नहि अछि एक्खन, दुनियाकेर भूगोलमे
तैयो छी हम बचाकऽ रखनहि जकरा माइक बोलमे
सोहर, लगनी, जटाजटिन कि झिझिया, साँझ, परातीमे
एकहकटा मिथिला जीबैए, एकहक मैथिल छातीमे

लोहछल नस-नसमे एखनहु तिरहुतिया सोनित बरकैए
केहनहु बज्जर मैथिलकेर धड़कनमे मिथिलहि धड़कैए
जिनगीक तुलसी चौरामे नित बरैत दीपक बातीमे
एकहकटा मिथिला जीबैए, एकहक मैथिल छातीमे

बगय-बानि बदलल रहितहुँ माथा संस्कारक पाग जतऽ
विद्यापतिकेर गीतक सङ्ग पसरल मधुमय अनुराग जतऽ
होरीक रङ्ग, धुरखेलक सङ्ग सुकरातीक उक्कापातीमे
एकहकटा मिथिला जीबैए, एकहक मैथिल छातीमे

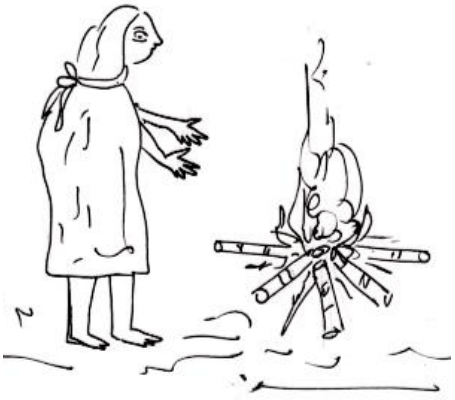

सुरुजक अगुआनीलए जइठाँ महिँस-पीठपर पसर खुलै
सैर बराबरि गबैत जतऽ पौरखिया चाँचर प्रेम झुलै
करसी जरबैत घूरमे आ कनकन्नी पचबैत गाँतीमे
एकहकटा मिथिला जीबैए, एकहक मैथिल छातीमे

मन-मन दहकैत चिनगीकेँ हवा लगाकऽ प्रखर करी
अन्हड़िमे बहकैत जिनगी ठेकनाएल पथपर मुखर करी
कतऽ-कतऽ बौआएब कते, जोड़ी मन-तार गतातीमे
एकहकटा मिथिला जीबैए एकहक मैथिल छातीमे

शब्दार्थ

भूगोल = भूमिसँ सम्बन्धित

धुरखेल = धूरा-गर्दासँ खेलाएल जाएवला पारम्परिक खेल

माइक बोल = मातृभाषा

सुकराती = सुखरात्रि, दिआबाती

सोहर = बच्चाक जन्मपर गाएल जाएवला पारम्परिक गीत

लगनी = कोनो मेहनतिया काज करैत काल गाओल जाएवला बेदनाएल गीत

जटा-जटिन = महिला समूहमे गाएल जाएवला हँस्सी- चौलसँ भरल गीत, मान्यता छैक जे ई गीत वर्षा करबैत छैक

झिझिया = नवरात्रक समयमे महिलासभद्वारा मिलि नाचल-गाएल जाएवला पारम्परिक गीत, जकरा तान्त्रिक महत्त्वक दृष्टिसँ सेहो देखल जाइत छैक

साँझ = सन्ध्या कालमे गाएल जाएवला पारम्परिक गीत

पराती = भोरहरियामे गाएल जाएवला पारम्परिक गीत

लोहछल = मर्माहत, चोटिल

तिरहुतिया = तिरहुत वा मिथिलासँ सम्बन्धित

सोनित = रक्त, खून

बज्जर = बज्जर, नीरस

तुलसी-चौरा = अङनामे तुलसी रोपल विशेष तरहक पीड़ी

बगय-बानि = मुह-कान, रूप-रङ्ग, चालि-ढालि

मधुमय = मधुभरल, मधुर

अनुराग = प्रेम-भाव

उक्कापाती = दिआबातीमे ऊँक बारिक॰ खेलएबाक प्रक्रिया

अगुआनी = आदरपूर्वक आनब

पसर = अन्हरोखे उठिक॰ महींसकेँ चरएबाक प्रक्रिया

सैर-बराबरि = गबहा सकराँतिमे धनखेतीमे जा समान रूपेँ सभ सीस बहरएबाक कामनासँ कहल जाएवला शब्द

पौरखिया = मेहनतिया, अपन पौरुषपर भरोसा भेनिहार

चाँचर = चौरी

करसी = घूर बार॰ लेल जमा कएल गेल खढ़पात आ गोहालीक गन्दगी

कनकन्नी = अधिक जाड़सँ ठिठुराब॰ वला अवस्था

गाँती = जाड़मे धीयापुताकेँ बान्हल जाएवला विशेष प्रकारक ओढ़ना

प्रखर = तेज

अन्हड़ि = बिहाड़ि, तूफान

ठेकनाएल = निर्धारित, मोनमे ठानल

मुखर = स्पष्ट, सोझ

गताती = चिन्हल-जानलमे जोड़ल जाएवला सम्बन्ध

बौआएब = भटकब

अभ्यास

श्रवण-शिल्प (सुननाइ)

१. **मिथिला-गान कविताक पहिल आ दोसर श्लोक शिक्षकसँ सुनू आ निम्नलिखित कथन सही वा गलत की अछि, छुटिआउ :**

(क) मिथिला नामक देश भूगोलमे विद्यमान अछि ।

(ख) साँझ आ पराती एक प्रकारक गीतक नाम छियैक ।

(ग) तिरहुतियाक अर्थ मैथिल होइत अछि ।

(घ) बज्जर मैथिलक हृदयमे मिथिलाक प्रति कोनो संवेदना नहि छैक ।

२. **पाँचम श्लोक शिक्षकसँ सुनू आ मिथिलाक विकासक सम्बन्धमे कविक धारणा कक्षामे सुनाउ ।**

३. **तेसर आ चारिम श्लोक शिक्षकसँ सुनिकऽ श्रुति लेखन करू ।**

कथन-शिल्प (बजनाइ)

४. **मिथिला-गान कविता स्पष्ट उच्चारण करैत कक्षामे गीत-शैलीमे वाचन करू । (इन्टरनेटक माध्यमेँ एहि गीति-कविताक अंश आ सन्दर्भ ताकिकऽ एक-आपसमे विमर्श करू ।**

५. **मिथिला-गान कविताक आधारपर निम्नलिखित प्रश्नसभक मौखिक उत्तर दिअ :**

(क) कवितामे कोन-कोन प्रकारक गीतसभक उल्लेख कएल गेल अछि ?

(ख) मैथिलसभ मिथिलाकेँ कोनाकऽ बचाकऽ रखने छथि ?

(ग) जिनगीक तुलना कथीसँ कएल गेल अछि ?

(घ) लोकक माथपर कथीक पाग होएबाक बात कहल गेल अछि ?

(ङ) घूरमे कथी जराएल जाइत अछि ?

६. **मिथिला-गान कवितामे व्यक्त भावकेँ लऽकऽ कविक दृष्टिकोणक मादे कक्षाक साथीसभसङ्गे विचार-विमर्श करू ।**

७. **कविताक पहिल चारि पाँति मुहजवानी इयाद कऽकऽ सङ्गीसभकेँ सुनाउ ।**

पठन-शिल्प (पढ़नाइ)

८. कविताकेँ एकबेर फेरसँ पढ़िकऽ निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर दिअ :

(क) मिथिलाकेँ हमसभ कतऽ बचाकऽ रखने छी ?

(ख) मिथिला वर्तमानमे कोन ठाम नहि छैक ?

(ग) मिथिला कतऽ जीबि रहल अछि ?

(घ) मैथिलसभक माथापर की छैक ?

(ङ) मिथिलामे विद्यापतिक गीतक सङ्ग आओर की पसरल छैक ?

(च) मिथिला-गान कविताक रचयिता के छथि ?

९. एहि कविताक आधारपर ठीक वाक्यमे (✓) आ गलतमे (✗) चिह्न लगाउ :

(क) मिथिला हमरासभक भाषा आ संस्कारमे जीवैत अछि ।

(ख) मैथिलसभक हृदयमे पञ्जाब धड़कैत छैक ।

(ग) विद्यापतिक गीतक सङ्ग मधुमय अनुराग पसरल छैक ।

(घ) हमसभ जूड़शीतलमे रङ्ग-अवीर खेलाइत छी ।

(ङ) पौरखियासभक चौरी-चाँचर उजाड़ भेल रहैत छैक ।

(च) हमसभ गाँती बान्हिकऽ केहनो कनकन्नी पचा लैत छी ।

(छ) मोनक तार हमरासभक गतातीएमे जोड़बाक चाही ।

लेखन-शिल्प (लिखनाइ)

१०. निम्नाङ्कित शब्दसभक अर्थ स्पष्ट होएबाक हिसाबेँ वाक्यमे प्रयोग करू :

नस-नस, धड़कन, बाती, संस्कार, होरी, चिनगी, पौरुष, अनुराग, पाग, दीप, घूर

११. निम्नाङ्कित शब्दसभक बीच तादात्म्य स्थापित होएबाक हिसाबेँ जोड़ा मिलाउ :

होरी	उक्कापाती
महीँस	रङ्ग
सुकराती	पसर
करसी	पाग
माथा	चिनगी
दहकैत	घूर
गाँती	कनकन्नी

१२. निम्नाङ्कित प्रश्नसभक संक्षिप्त उत्तर दिअ :

(क) मैथिलसभक छातीमे मिथिला कोना जीबि रहल अछि ?

(ख) मिथिलाकेँ जीवन्त रखनिहार संस्कृतिक आधारसभ की-की छैक ?

(ग) मैथिल लोकजीवनमे समानता आ प्रगतिशीलताकेँ कोना समाहित कएल गेल छैक ?

(घ) कोन-कोन धार्मिक क्रियाकलाप मिथिलाकेँ एकटा फूट पहिचान दैत छैक ?

(ङ) मिथिलाक गरिमाकेँ घुरएबाक लेल हमरासभकेँ की करबाक चाही ?

१३ निम्नलिखित पद्यांशसभक सप्रसङ्ग व्याख्या करू :

(क) मानैत छी जे नहि अछि एक्खन, दुनियाकेर भूगोलमे
तैयो छी हम बचाऽ रखनहि जकरा माइक बोलमे
सोहर, लगनी, जटाजटिन कि झिझिया, साँझ, परातीमे
एकहकटा मिथिला जीबैए, एकहक मैथिल छातीमे

(ख) सुरुजक अगुआनीलए जइठाँ महिँस-पीठपर पसर खुलै
सैर बराबरि गबैत जतऽ पौरखिया चाँचर प्रेम झुलै
करसी जरबैत घूरमे आ कनकन्नी पचबैत गाँतीमे
एकहकटा मिथिला जीबैए, एकहक मैथिल छातीमे

विवेचनात्मक उत्तर दिअ :

१४. मिथिला-गान कविताक भाव आजुक सन्दर्भमे अहाँकेँ केहन बुझाइत अछि, विवेचनात्मक रूपसँ स्पष्ट करू ।

१५. कवितामे व्यक्त भावकेँ लऽकऽ कविक दृष्टिकोणक मादे कक्षाक साथीसभसङ्गे विचार-विमर्श करू ।

१६. कवितामे उल्लेख कएल गेल मिथिलाक सांस्कृतिक आधारसभजकाँ अन्य आधारसभ अपन गाम-समाजमे अहाँ की-की देखैत छियैक, लिखू ।

१७. शिक्षकक सलाहमे अथवा इन्टरनेटक मदतिसँ मिथिलाक मुख्य-मुख्य लोकगीतक सूची तैयार करू ।

१८. मिथिलाक कमजोरीसभकेँ रेखाङ्कित करैत एकटा छोटसन कविता लिखू ।

१९. परोपकार आ आपसी सहयोगक मिथिलामे कोन-कोन उदाहरण पाओल जाइत छैक, आधार सहित लिखू ।

व्याकरण

२०. निम्नलिखित सरल वाक्यसभकेँ उदाहरणमे कएल गेलजकाँ वाक्य-विश्लेषण करू :

उदाहरण :

सरल वाक्य : मिथिलाक राजा जनक सीताक विवाहक हेतु स्वयंवरक आयोजन कएलनि ।

विश्लेषण :

उद्देश्य		विधेय	
साधारण	विस्तार	साधारण	विस्तार
जनक	मिथिलाक राजा	कएलनि	सीताक विवाहक हेतु, स्वयंवरक आयोजन

(क) होनहार व्यक्ति बच्चेसँ सुन्दर लक्षण, तेज बुद्धि आ सुन्दर संस्कारसँ युक्त होइत अछि ।

(ख) सफलताक रस्ता काँटसँ भरल होइछ ।

(ग) प्राचीन राज्य मिथिला एखन संसारक भूगोलमे नहि अछि ।

(घ) एकहकटा मैथिल छातीमे एकहकटा मिथिला जीबैए ।

(ङ) मन-मनमे दहकैत चिनगीकेँ हवा लगाक॰ प्रखर करबाक चाही ।

२१. निम्नलिखित संयुक्त वाक्यसभकेँ उदाहरणमे कएल गेल जकाँ वाक्य-विश्लेषण करू :

संयुक्त वाक्य : हम राजविराज गेलहुँ, मुदा अध्यक्षजी भेटबे नहि कएलाह ।

वाक्य-विश्लेषण : (अ) हम राजविराज गेलहुँ – स्वतन्त्र खण्डवाक्य

(आ) अध्यक्षजी भेटबे नहि कएलाह – स्वतन्त्र खण्डवाक्य

(इ) मुदा – संयोजक

(क) आलम स्कूल जएताह वा दोकान पर बैसताह ।

(ख) महेश्वर बाबू पढ़ल-लिखल छथि, परन्तु दशगोटेमे बाज॰ नहि अबैत छनि ।

(ग) ओ तिरहुता सिखने अछि, तेँ प्रतियोगितामे भाग लेलक अछि ।

(घ) कमलेश दिल्लीसँ परसू गाम आएल आ आइए चलि गेल ।

(ङ) पाइ कमेनाइ आसान अछि, खर्चो कएनाइ आसान अछि, मुदा जोगाकऽ रखनाइ कठिन अछि ।

२२. निम्नलिखित मिश्र वाक्यसभकेँ उदाहरणक आधारपर वाक्य-विश्लेषण करू :

मिश्र वाक्य : जँ लोक अपन-अपन गामक उन्नतिदिस ध्यान नहि देत तँ एसगर सरकारे की करत ?

वाक्य-विश्लेषण : (अ) जँ लोक अपन.....नहि देत – सहायक खण्डवाक्य

(आ) एसगर सरकारे की करत – मुख्य खण्डवाक्य

(इ) 'जँ' आ 'तँ' – संयोजक

(क) भविष्यमे की हएत, केओ नहि जानि सकैछ ।

(ख) इएह ओ सप्तरी भूमि थिक जतऽ रामराजा बाबू आ गजेन्द्र बाबूसन नेताक जन्म भेल छल ।

(ग) अपन मातृभाषाक प्रति जँ प्रेम अछि तँ स्कूलमे मैथिली पढ़ू ।

(घ) ई निश्चय जानि राखू जे ओ मनुष्य मनुष्य नहि थिक जकरा हृदयमे मातृभूमि आ मातृभाषाक प्रति प्रेम नहि अछि ।

(ङ) मैथिली बाजिकऽ की हएत आ मैथिली पढ़िकऽ की हएत, से जानि लेनाइ अति आवश्यक अछि ।

२३. निम्नलिखित विमुक्त वाक्यसभक उदाहरणजकाँ वा आओरो तरीकासँ वाक्य-संश्लेषण करू :

विमुक्त वाक्य : जुगल किशोर एक होनिहार विद्यार्थी छल । ओ एसइइ परीक्षामे शामिल भेल । ओ परीक्षा उत्तीर्ण कएलक । ओ नीक अङ्क अनलक । ओकरा ए प्लस ग्रेड भेटलैक । सभ ओकर प्रशंसा करऽ लागल ।

वाक्य-संश्लेषण : नीक अङ्क आनि ए प्लस ग्रेडसँ एसइइ परीक्षा उत्तीर्ण कएनिहार होनहार विद्यार्थी जुगल किशोरक सभ प्रशंसा करऽ लागल ।

(क) मैथिली एक भाषा थिक । ई स्वतन्त्र भाषा अछि । एकर अपन साहित्य आ व्याकरण छैक । हमर मातृभाषा मैथिली अछि ।

(ख) होरी उल्लासमय पावनि थिक । ई रङ्गक पावनि थिक । एहिमे अबीरक प्रयोग सेहो होइत अछि । एहि पावनिमे नीक-निकुत खाएल जाइत अछि । एहि पावनिमे सभ केओ आनन्द मनबैत अछि ।

(ग) रमाकान्त काठमाण्डू गेल । ओकरा ओतऽ गेना तीन वर्ष भऽ गेलैक । ओ ओतऽ नोकरी करऽ लागल । ओ बहुत पाइ कमएलक । ओ ओतऽ एकटा घरो बनौलक । ओ आब सुखमय जीनव बिता रहल अछि ।

(घ) परिवारमे माए रहैत अछि । परिवारमे बाबू सेहो रहैत छथि । पत्नी, बेटा आ बेटी सेहो परिवारमे छथि । भाए आ बहिन परिवारक अङ्ग छैक । एहन परिवारकेँ सुखी परिवार कहल जाइछ ।

(ङ) नीक विद्यार्थी समयपर सभ काज करैत अछि । ओ समयपर उठैत अछि आ समयपर सुतैत अछि । समयपर स्कूल गेनाइ आ सभटा गृहकार्य तथा परियोजना कार्य कएनाइ सेहो ओकर काज होइत अछि । एहन विद्यार्थीक सभठाम प्रशंसा होइत अछि । ओ जीवनक हरेक क्षेत्रमे सफल होइत अछि ।

वाक्यक सम्बन्धमे किछु जानकारी

स्वरूपक आधारपर वाक्य चारि प्रकारक होइछ ।

(१) सरल वाक्य (२) संयुक्त वाक्य

(३) मिश्र वाक्य (४) मिश्रित वाक्य

(१) **सरल वाक्य :** जाहि वाक्यमे एकेटा पूर्ण क्रिया आ कर्त्ता रहए ताहि वाक्यकेँ सरल वाक्य कहल जाइछ ।

जेना : दीपिका मैथिली पढ़ि रहल अछि ।

(एहिठाम एकेटा कर्त्ता आ एकेटा क्रिया अछि)

(२) **संयुक्त वाक्य :** जाहि वाक्यमे दू वा दूसँ अधिक सदृश अर्थात एके प्रकारक खण्डवाक्य रहए ताहि वाक्यकेँ संयुक्त वाक्य कहल जाइछ । एहि वाक्यक प्रत्येक खण्डवाक्य स्वतन्त्र रहैत अछि । एहि वाक्यमे आ, ओ, आओर, तथा, मुदा इत्यादि अव्ययक प्रयोग कएल जाइछ ।

जेना : घुरन लाल पढ़बामे तेज अछि, मुदा ओ उपद्रवी अछि ।

(३) **मिश्र वाक्य :** जाहि वाक्यमे दू वा दूसँ बेसी खण्डवाक्य रहए, मुदा एकटा मुख्य खण्डवाक्य आ अन्य सहायक खण्डवाक्य होए तकरा मिश्र वाक्य कहल जाइछ ।

जेना : जँ वर्षा नहि हएत तँ अकाल पड़त । (एहिठाम 'अकाल पड़त' मुख्य खण्डवाक्य आ अन्य वाक्य सहायक खण्डवाक्य थिक ।

(४) **मिश्रित वाक्य** : जाहि वाक्यमे एकसँ अधिक मुख्य खण्डवाक्य आ तहिना सहायक खण्डवाक्य रहए, तकरा मिश्रित वाक्य कहल जाइछ ।

जेना : जे छात्र अध्ययनशील होइछ, से सफलता प्राप्त करैछ, मुदा जे खेलौड़िया होइछ से असफल होइछ ।

द्रष्टव्य : एकटा वाक्यक भीतर दूटा अथवा दूसँ बेसी वाक्यसभ जँ रहैत अछि तँ ओकरा खण्डवाक्य (Clause) कहल जाइछ ।

जेना : हम घर जाएब आ सुति रहब ।

एहिठाम आसँ आगू आसँ पाछू दूटा वाक्य (Clause) अछि ।

खण्डवाक्य (Clause) दू प्रकारक होइछ :

(क) स्वतन्त्र खण्डवाक्य (Principal Clause) : जे एसगरो-एसगर अपन अर्थ पूरा करैत अछि, ककरोपर आश्रित नहि रहैत अछि । जेना : हम पढ़ैत छी आ ओ खेलाइत अछि । (दुनू स्वतन्त्र खण्डवाक्य ।)

(ख) सहायक खण्डवाक्य : जे वाक्यसभ एसगर अर्थ पूरा नहि करैत अछि, एक-दोसरपर आश्रित रहैत अछि, तकरा सहायक खण्डवाक्य (Sub-ordinate Clause) कहल जाइछ । जेना : जँ वर्षा हएत तँ हम नहि जाएब । (दुनू सहायक खण्डवाक्य)

कवितामे लोकोक्ति

कोनहु साहित्यक मौलिकताक परख करबाक लेल सम्बन्धित भाषाक लोकोक्ति एवं लोकजीवनक विविध पक्षक ओहिमे अपेक्षा कएल जाइत अछि । मैथिली भाषा-साहित्यक प्राचीनता एवं समृद्धिकेँ एहिमे प्रयोग भेनिहार लोकोक्तिसभ सेहो प्रमाणित करैत अछि । मैथिली साहित्यक अन्यान्य विधामे तँ सहजहिँ, पद्यमय कवितामे पर्यन्त लोकोक्तिक सुललित प्रयोग पाओल जाइत अछि । एहिठाम कविवर सीताराम झाद्वारा लोकोक्तिएसभपर लिखल गेल किछु कवितांश प्रस्तुत कएल जा रहल अछि, जाहिमे लोकोक्तिक प्रयोगसँ विलक्षण दृश्य उपस्थित कएल गेल अछि ।

१. सबसौं बुड़िबक दीनानाथ :

सब क्यौ लै लै बन्सी डोर, मारै माछ खाय नित झोर ।

हमरा कहइछ चाली गाँथ, सबसौं बुड़िबक दीनानाथ ॥

२. **कड़रिक थम्हपर सितुआ चोख :**

सब जन जानि सबलमें दोष, क्यौ नहि मनमें आनथि रोष ।

डाँटथि निर्बलकैं भरिपोख, कड़रिक थम्हपर सितुआ चोख ॥

३. **घरमें मुसरी खीचन्हि दण्ड :**

निज पूर्वज गौरवसौं चूर, अपने कर्म-धर्मसौं दूर ।

बाहर बाबू भरल घमण्ड, घरमें मुसरी खीचन्हि दण्ड ॥

४. **चाटै साधुक मूँह कुकूर :**

जे परहित साधनमें शूर, सब तकरहिपर रोषै चूर ।

लुच्चा लङ्गटसौं पुनि दूर, चाटै साधुक मूँह कुकूर ॥

५. **ऊँटक मुँहमें जीरक फोरन :**

पूर पसेरी चूड़ा अँकड़ा, दही छाँछभरि जलखै तकरा ।

की हो चटने पाभरि जोरन, ऊँटक मुँहमें जीरक फोरन ॥

६. **मूर्खक लाठी माँझ कपार :**

निज हित अनहितकैं नहिं जानि, सुनितहि बात उठै अछि फानि ।

मनमें किछु नहिं करै विचार, मूर्खक लाठी माँझ कपार ॥

७. **भाग्यवानकैं भूत कमाय :**

जनक कनेक चलावल फार, सीता ततै लेल अवतार ।

विनु तकनहि पुनि राम जमाय, भाग्यवानकैं भूत कमाय ॥

८. **एहन बाढ़ि कहियो नहि देखल :**

कलियुग महिमा देखि देखिकै, होइछ मनमें शोक ।

नहिं छल ई विधि पूर्व प्रजासुख, बाजै आबक लोक ॥

जनमलि सावन मास गिदरनी, भादव आएल बाढ़ि ।

एहन बाढ़ि कहियो नहिं देखल, बाजलि झट भै ठाढ़ि ॥

कतेक जतनसँ

■ *रमेश रञ्जन*

दृश्य : एक | स्थान : आङन | समय : बेरिया

(बाहरसँ दुनू परानी घरमे अबैत अछि, ओकरासङ्गे एकटा बारह-तेरह वर्षक लड़की रहैत छै। दुनूक हाथमे आ माथपर सामान रहैत छै। ओ रखैत अछि।)

रौदी : फटक खोलौक।

(सबैलावाली आगू बढ़ैत अछि। फटक ठेलैत अछि। सबैलावाली भीतर जाइत अछि। भीतरसँ मुहथरिपर अबैत अछि।)

सबैलावाली : मूस तऽ उधबा उठा देने हइ। मोनक मोन माटि घरमे ढेरिया देने हइ।

रौदी : त्त्, ई मूसो लोकके दुखे दै हइ। एकरो कहलियै मुसकाँरी लगा दौ तऽ काने-बात नइ दै हइ।

सबैलावाली : मूस भऽ गेलै आदमीयोसँ चलाक। मुसकाँरीमे एकोटा नइ फसै हइ। आ घरमे जेतै तऽ खढ़िया जिका रहै हइ दरबर मारैत।

रौदी : छोड़ौ। भन्साभातके ओरियानमे लागि जाउक। फेनो ओइ अरजेन्टसँ नइ भेटबै तऽ बातो ने बिगड़ि जाइ।

सबैलावाली : बात तँ केने छलियै जनु। कथी कहने रहए ?

रौदी : कहने हइ जे बलु मासक भीतरे उड़ा देबौ।

सबैलावाली : होतै। ई पोखरिदिसनसँ आबौ, ताले हमर काम भऽ गेल रहतै। (फूलोसँ) गे फूलो ! कनि अङनामे बढ़नी मारि दही। (फूलो बाढ़नि लऽकऽ आङन बहारऽ लगैत अछि। रौदी बाहर जेबाक हेतु उद्यत होइत अछि, पण्डितजीक प्रवेश।)

पण्डितजी : की रौ रौदी, एकबेर तोरा लग्घीके काज पड़ल तऽ ताँ लग्घीए केनाइ छोड़ि देलें ?

रौदी : नइ मालिक, से बात नइ हइ।

पण्डितजी : ओइ दिन काज गछि लेलेँ आ फेर कतऽ निपत्ता भऽ गेलेँ ? एना धोखा नइ ने देबाक चाही ।

रौदी : नइ बाबू, हम धोखा नइ देली । धीयापुतासभ मामागाम गेल रहै, ओकरा लाबऽ जाए पड़ल ।

पण्डित : दू दिन बादे जइतेँ तऽ ओहिठाम तोरा धीयापुताके गीड़ जइतौ कियो ?

रौदी : नइ । से बात नइ हइ । घरनी नइ मानलकै । कहऽ लगलै जे हमरा धीयापुताके देखैलए मोन कछमछाइ हए ।

पण्डित : चल ठीक छै । हमर काज बिगड़ल तँ बिगड़ल, तोहर काज बनि गेलौ तँ भऽ गेलै की !

रौदी : बाबू अपनेसभके की बिगडतै ! तते ने हाथ-पएर हइ जे .....

पण्डित : कतेक छै । तोरे जतेक छै ने रौ, एँ ? सुन, दोसर जँ एना हमरा संगे केने रहैत तँ हम ... । मुदा तोँ सबदिनमा हीत छेँ हमर । रे तोहर बाप हमरे भार ढोइत-ढोइत मरलौ । ओकर क्रियाकर्म कोना भेलै आ स्वजातीयसभ दरबज्जापर कोना पानि हेरेलकौ से तऽ बुझल छौ ने ?

रौदी : अपनहि देने रहियै मालिक ।

पण्डित : तेँ कतौ जाइ छेँ तँ जो, मुदा सब उँचनीच दायाँबायाँ विचारिकऽ ।

रौदी : की कहलियै ? नइ बुझली ।

पण्डित : कहिया जाइ छेँ ?

रौदी : कहलकै गऽ अइ महिनाके टपैत-टपैत उड़ा देबौ ।

पण्डित : पाइ-ढउआके व्यवस्था भेलौ ?

रौदी : हमर सारसभ कहलकै गऽ जे मेहमान अहाँ फिकिर नइ करू, भऽ जेतै ।

पण्डित : मने सासुरमे भऽ गेलौ । धीयापुतासभ सेहो सासुरेमे रहतौ की ?

रौदी : अपन घर छोड़िकऽ ओतऽ कैलए रहतै ?

पण्डित : कए वर्षलए जाइ छेँ ?

रौदी : कहै हइ तीन बरख ।

पण्डित : तखन ?

रौदी : की ?

पण्डित : रे घरनी तऽ कहुना रहि लेतौ । बेटीके बयसदिस ध्यान जाइ छौ ?

रौदी : कोन बयस भेलैए बाबू ? ऊ तऽ अखनी बच्चे हइ ।

पण्डित : बारह-तेरहसँ कम हेतै ? तीन वर्ष बाद तोँ एबही, तखन ? तखनो बच्चे रहतौ ?

रौदी : तऽ की करबै ?

पण्डित : रे समय-साल ठीक नइ छै । आ तइमे कहाँदुन इसकुल सेहो पढ़बै छही । कोनो दायाँ-बायाँ भऽ गेलौ तँ ..... ।

रौदी : एँ !

पण्डित : हँ, से विचारि ले बौआ रे, बेटी धन अनकर होइ छै । जतेक जल्दी होइक, धनवलाके सौँपि दी ।

रौदी : एऽऽ ... हुँ ... ।

पण्डित : हम तँ इएह कहबौ बौआ जे कुटमैती फरिया ले आ जखने मन होउक तखने उड़ि जो । अहुना बारह वर्षक बाद बेटीके घरमे राखब पाप छियै । मुदा से हम नइ कहै छियौ, शास्त्र कहै छै ।

रौदी : अपने तऽ आँखि खोलि देली पण्डीजी । हम बिचारै छियै ।

पण्डित : रे विचार कम कर आ काज बेसी कर । कोनो समस्या-बात हेतौ तँ हम कहिया काज एबौ ? आखिर तोँ निरजथा तँ नइ छेँ जे पाइ-ढउवा दुआरे तोहर काज खगि जेतौ !

रौदी : होतै बाबू । बात कतौ थीर होइते अपनेके भेट करब ।

पण्डित : जरूर, जरूर भेटिहेँ । (पण्डितजी जाइत अछि ।)

दृश्य : दू

(फूलो किताब-काँपी लऽकऽ बैसल पढ़ि रहल अछि । घरमे माए-बाबूमे बातचीत भऽ रहल छैक ।)

सबैलावाली : बेकारके झमेलामे नइ पड़ौक । ई अरबसँ औतै तब बिआह-दान होतै ।

रौदी : ई तऽ बुझै हइ कुछो नइ आ माथाके गुद्दा चाटऽ लगै हइ । रे बेटीचाटीके घरमे रखनाइ कोनो निमन बात हइ ?

सबैलावाली : तऽ भसिया दौ न कमलामे लऽ जा के ।

रौदी : एकर तऽ बाते खौरछाह होइ हइ !

सबैलावाली : हमर बात कैलए खौरछाह होत ? जखनीसँ ऊ पण्डीजी मन्तर फूकि देलकैए, तखनीएसँ एकरा निसाँ चढ़ल हइ ।

रौदी : ऊ कोनो बेजाय नइ कहलकै गऽ ।

सबैलावाली : कथी निमन कहलकै गऽ ऊ ?

रौदी : बेटी भार होइ हइ, उतरि जएतै तऽ निमने होतै ने ।

सबैलावाली : भार उतारै हइ ! हमर सन्तान हए, ऊ भार नइ हए । अखनी ऊ पढ़ै हइ । बिआह नइ होतै ओकर ।

रौदी : से तऽ हमहूँ बुझलियै .... मुदा ... ।

सबैलावाली : मुदा की ?

रौदी : हम गामपर रहबै नइ । समय-साल सेहो ठीक नइ हइ । तइसँ बिआह कइए देनाइ ठीक हइ ।

सबैलावाली : समय-सालके कथी भऽ गेलै गऽ ? अपने मोनमे छ-पाँच होइ हइ तऽ अलग बात ।

रौदी : देखौ, हम बाहरो रहब तऽ धियान अही जऽ टाङल रहत ।

सबैलावाली : ककर धियान ने अपना बालबच्चापर रहै हइ ! ई भाभट समटौ आ जाएके सरञ्जाममे लागि जाउ ।

रौदी : बेसी फटर-फटर नइ बोलौ ई । जाले बेटीके बिआह नइ कऽ लेबै ताले नइ जेबै हम ।

सबैलावाली : हम कैलए कुछो बोलब ! जे मोन होइ हइ से करौ । मुदा एगो बात कहि दै छियै– बिआह धीयापुताके खेल नइ हइ जे जखनी मोन भेल कऽ लेली ।

रौदी : हँ, ओते अमरुख हमहूँ नइ छियै । हमहूँ देख-सूनिकऽ, ठोकि-बजाकऽ करबै की !

सबैलावाली : एकरा जे मोन हइ से करौक, हमर चीत नइ मानैहए ।

(दुनू ओछाओन झाड़ऽ लगैत अछि । फूलो उठैत अछि, घरक मुँहथरि भरि जाइत छैक । फेर किताब - कापी समेटिकऽ ओकरा पजियौने रहैत अछि ।)

दृश्य : तीन	स्थान : घर/आङन/दलान	समय : राति

(घरमे बिआहक वातावरण अछि । बिआहक समय अनुसार घरक शृङ्गार कएल गेल छै । लोकक चहल-पहल छै । वर-बरियाती अबै छै । मिथिलाक सांस्कृतिक परम्परा अनुसार गीत-नाद, विध-व्यवहार सङ्ग विवाह सम्पन्न होइ छै । फेर विदागरी कएल जाइ छै ।)

दृश्य : चारि | स्थान : आङन | समय : भोर

(रौदी आ सबैलावाली बैसल अछि।)

सबैलावाली : हमरा तऽ लगैए जानु कुछो हेरा गेल गऽ।

रौदी : हमरो एकोरत्ति निमन नइ लगै हए, घर कटाउन जिका लगै हए।

सबैलावाली : केना घरके उड़ियौने रहै छलै ! बुझाइ हइ जेना सबकुछ अपने जोरे लेने चलि गेलै।

रौदी : हमरा याद पड़ि जाइ हए तऽ छाती फाटऽ लगै हए, केनाकऽ बौआ रहैत होतै ओइ जग !

सबैलावाली : सेहे..... हमरा तऽ सोचिएकऽ करेज उन्टऽ लगै हए। कहियो थरियो ने धुअऽ देलियै।

रौदी : तकर चिन्ता नइ करौ, भार पड़ै हइ तऽ कहुना निमाहिए लै हइ।

सबैलावाली : हे दैव, ओकर उमेर खेलै-खेलाइके हइ, केनाकऽ रहैत होत फूलो हमर ?

रौदी : निमन लोकसभ हइ।

सबैलावाली : कतबो निमन रहौ न, ओकरा लेल तऽ सब अनचिन्हारे हइ ! कियो सुख-दुख बतिआइवला सेहो नइ हइ।

रौदी : पहुना छथिन ने ?

सबैलावाली : उहे कोन करमके छथिन ! ओहने खिच्चा।

रौदी : ओते नइ सोचौ। सबके तऽ अहिनत्ती होइ हइ। इहे अएलै बसऽ लए तऽ उमेर कते रहै ! बात-बातमे पोटा सुड़कै।

सबैलावाली : ऊँह...एकरा ठट्ठा फुराइ हइ ! एकरा कथी बुझल हइ जे हम की ... की भोगली ! हट्ठोघरि ताना मारलक। मुहमे कपड़ा कोँचिकऽ बैठल रहै छली। जहाँ मुह खूजल कि महाभारत मचि गेल।

रौदी : आब इहो पुरना पन्ना उल्टाबऽ लगलै।

सबैलावाली : पन्नाके बात नइ हइ। ई कतौ चलि जाइ छलै तऽ एकरापरके पित्त हमरेपर झाड़ि दै छलै।

रौदी : धुर, चुपौ।

सबेलावाली : सेहे सोचाइत रहै हए जे हमरा बेटीके हमरे नाहित तऽ नइ होइत होतै !

रौदी : कुछो नइ होतै। हम जाइ छी। कनी पण्डीजी ओइजऽ जाए पड़तै।

सबैलावाली : कथीलए ?

रौदी : बिआह कर्जे लऽकऽ भेल रहै से बिसरि गेलै ! फरिछाबऽ नइ पड़तै ?

सबैलावाली : ओनहरसँ अउतै तऽ दऽ देतै ।

रौदी : नइ मानतै । कहै हइ जे हम इज्जत बचा देलियौ, आब हमर पाइ दे कि जमीन दऽ दे ।

सबैलावाली : तऽ की सोचलकै ग ?

रौदी : अखनी ढउवा कतऽ सऽ अउतै ? खेते दऽ देबै ।

सबेलावाली : ओहन खेत दऽ देतै ?

रौदी : तऽ की करबै ?

सबैलावाली : जे मोन होइ हइ से करौ । हम कुछो नइ बोलै छी ।

रौदी : ठीक हइ, नइ बोलौ । हमरो मोन निमन नइ हए । (रौदी बाहरदिस जाइत अछि आ सबैलावाली घरदिस ।

दृश्य : पाँच | स्थान : दलान | समय : भोर

दुलारचन : हइ, कतऽ हइ ? बहिँ रन-रन करैत रहै छलै से अखनू जेना सबके सुसना पकड़ि लेलकै ।

बेलावाली : सुसना कैलए पकड़तै, केहन सुन्नर हइ सब ।

दुलारचन : केहन सुन्नर हइ तऽ मालजाल कैलए हाकरोस करै हइ !

बेलावाली : भनसा-भातमे लागल छलियै ।

दुलारचन : भनसा-भातमे लागल छलियै ? अपना भनसाके एते फिकिर हइ आ जकरा कारणसँ भनसा बनतै तकर कनिको फिकिरे नइ ?

बेलावाली : फिकिर-फिकिर नइ करौ, जाइ छी सानी बोझि दै छियै । (सुशीलक प्रवेश)

दुलारचन : रे, तोँ कतऽ मटरगस्ती करै छलेँ ?

सुशील : नइ कतौ ।

दुलारचन : तऽ कतऽ छलेँ ?

सुशील : टीशन ।

दुलारचन : टीशनपर कथी हइ ?

सुशील : ट्रेनवला टीशनपर नइ, पढ़ाइवला टीशनपर गेल छलियै ।

दुलारचन : ईह ! पढ़े हए ! हमर देह दुहा गेल आ .... ।

सुशील : तऽ हम कथी करियह ?

दुलारचन : ताँ कथी करबैं ? पढ़ाइ-लिखाइ बन्न कर । कामपर धियान दे ।

बेलावाली : एकरो बात अनसोहाँते होइ हइ । ऊ कथी कमएतै, ई नइ हइ कमाएवला ?

दुलारचन : ई कथी बुझै हइ ! जेठका आ मझिला तऽ हमर मथाके गुद्दा खा गेल । हट्ठोघरि कहै हए जे बलु हमसुन कमाउ आ ऊ मौज करत ?

बेलावाली : तऽ ऊ सभ मौज नइ केने हइ ?

दुलारचन : रे ऊ बात नइ हइ । एसगरिए रहितै तऽ कोनो बात नइ । बिआह भऽ गेलै ने ! कहै हइ जे दुनूके खर्च जोडू हमसभ ? आँखि लगै हइ ।

बेलावाली : आँखि लगै हइ तऽ दू कौर बेसी खा लौक । ऊसब जेहे-जेहे कहतै सेहे-सेहे नइ होतै ।

दुलारचन : तब घरमे फसाद उठतै ।

बेलावाली : कैलए उठतै फसाद ? अखनी ई अपने कमौआ हइ, दोसर ककरो बात नइ चलतै ।

दुलारचन : घरमे भिन-भिनाउज भऽकऽ रहतै ।

बेलावाली : भिन-भिनाउज ! के करतै ?

दुलारचन : उहे दुनू छौंड़ा करतै, आरो के करतै ?

बेलावाली : इह, अपने मोने कऽ लेतै ?

दुलारचन : ई बात कैलए ने बुझै हइ ?

बेलावाली : कथी नइ बुझै छियै ?

दुलारचन : ई छौंड़ा काम नइ करै हइ, नइ कोनो बात, लेकिन बहुरियो तऽ कुछो नइ करै हइ !

बेलावाली : अखनी ऊ कथी करतै ?

दुलारचन : कथी करतै, नइ करतै से हम की जाने गेलियै ! ऊसब कहै हइ तऽ कहलियैए । ओकरासबके कहब हइ जे हमरासबके घरबाली घास-भुस्सा करत आ ऊ महरानी बनल रहतै ?

बेलावाली : ई सनकि गेलै गऽ ? ऊ छौंड़ा कहने रहै बिआह करा दएह ? नइ तऽ कैलए करौलकै ?

दुलारचन : बियाह तऽ सबके होइ हइ !

सुशील : हम तऽ कहनेहे रहियह जे हमरा पढ़ैके हए । तैयो तीनू बापते मीलिकऽ हमर कण्ठ कैलए दबा देलह ?

दुलारचन : रे, पढ़िकऽ कोनो पण्डित हुअऽ के हउ ?

सुशील : पढ़िकऽ पण्डित नइ होतै तऽ बिन पढ़ने ?

दुलारचन : तऽ कही घरबालीके घास-भुस्सा करतौ, तब तोँ पढ़िहेँ ।

सुशील : ऊ घासभुस्सा करऽ जोग हइ ?

बेलावाली : हइ मरदबा, केनाकऽ पुतहुआके चौरी-चाँचर पठाकऽ बेपर्द करऽ चाहै हइ !

सुशील : सेहे कही न, घरके काम तऽ करिते हउ !

बेलावाली : करबे करै हइ की !

दुलारचन : बड़ सुकमारि हउ तोहर बौहु, चौरीमे केना जएतौ !

बेलावाली : सुकुमारि कैला ने हइ ? हइ । ई उमेर हइ काम करैके ?

सुशील : सेहे त, ऊ थरिया तऽ धोबे नइ करै छलै ।

दुलारचन : रे, तोँ अपन घरबालीके धूप-आरती करैत रह । ऊसब जखनी बाँस करतौ तब बुझिअही ।

(जाइत अछि)

बेलावाली : एकरा भूत लगा दै हइ छौँड़ासब ।

सुशील : लगा दै हइ तऽ हम की करियौ ?

बेलावाली : तोँ कथी करबही ? चुप्प रह । अखिर बोलबो करै हउ तऽ बाउए-भाइ बोलै हउ ने !

सुशील : हमरा हट्ठोघरि खोँचारैत रहै हए ।

बेलावाली : तैयो चुप्प रह ।

(घरसँ फूलो अबैत अछि ।)

फूलो : अहाँ बाबूसँ मुह कैलए लगबै छी ?

सुशील : कहाँ मुह लगबै छियै ?

फूलो : जे काज घरके हइ से हम कऽ देबै ने !

सुशील : अहाँके घास काटिकऽ होत लाएल ?

फूलो : से तऽ हम कहियो ने कटने छी ।

सुशील : तब ?

बेलावाली : तब की ? बहरिया काम करै लेल हम अपने काफी छी । हम ओकरासबके मुह बन्द कऽ देबै ।

सुशील : हमरा इस्कुल जाएके हए, खाइलए दे ।

(बेलावाली घरमे जाइत अछि । फूलो सुशीलके लगमे आबिकऽ बैसि जाइत अछि ।)

फूलो : सुनू न ।

सुशील : की सुनू ?

(फूलो कानमे किछु कहैत अछि । सुशील खुशीसँ कुदकऽ लगैत अछि । फेर चिन्तित ।)

फूलो : कैलए मुह लटकि गेल ?

सुशील : अहिना तऽ जरै छलै आ ई सुनतै तऽ पढ़ाइ-लिखाइ बन्द करा देतै ।

फूलो : अहाँ पढ़ाइ नइ छोडू । हमरा तऽ नहिएँ पढ़ऽ देलक, अहूँ नइ पढ़बै तऽ जुलुमे भऽ जेतै ।

सुशील : हमरा तऽ पढ़ैके मोन हए । लेकिन...।

फूलो : अहाँ लेकिन...सेकिन...नइ करू । जे होतै...होतै, पढ़ाइ नइ छोड़ैके हइ ।

सुशील : आब तऽ हमरा अहूँके चिन्ता ने करऽ पड़तै ।

फूलो : अहाँ पढ़ाइमे धियान दू, हमरालए माइ छित्ते हइ ।

सुशील : माइके कहबै ?

फूलो : कहबै नइ तऽ ?

सुशील : लाज नइ होत ?

फूलो : माइके कहैमे कोन लाज ?

सुशील : आब तऽ हमरा कथूमे ने मोन लागत, हट्ठोघरि अहींपर मोन टाङल रहत ।

फूलो : (हँसैत) हमरो की....! माइ नइ रहितै तऽ हम तऽ कौआ-काठी नाहित रहिती अइ घरमे ।

सुशील : सेहे तऽ ।

बेलावाली : (घरसँ) रे भात परसि देलियौ, खा ने ले ।

(सुशील आ फूलो घरदिस जाइत अछि)

दृश्य : छओ | स्थान : दलान/आङन | समय : बेरिया

(रौदीक घर । बिल्टू बाहरसँ अबैत अछि ।)

बिल्टू : रौदी छह हौ । हौ रौदी । (स्त्री घरसँ बहराइत अछि ।)

सबैलावाली : नइ छथिन, बैठू न ।

बिल्टू : नइ ठीके छी । रौदी भाइ कतऽ गेल हए ?

सबैलावाली : जनकपुर गेलै गऽ, पण्डीजीके जमीन देलकै ने, तकरे रहटरी करबऽ ।

बिल्टू : आखिर सोनाके टुकड़ा बिलहाइए गेल ?

सबैलावाली : की कहू, हमरा मोन पड़ै हए तऽ छाती दड़कऽ लगै हए ।

बिल्टू : छाती दड़किकऽ होत ? इमहर जमीनो गेल आ ओमहर बेटियोके ....।

सबैलावाली : की भेल गऽ हमरा बेटीके ?

बिल्टू : आइ हम ओही गाम दऽकऽ अबै छली तऽ सोचलियै जे बौवाके कुशल-छेम पुछि लै छियै ।

सबैलावाली : एऽऽ । तऽ की केना ?

बिल्टू : आओर सब तऽ निमने, देह भारी हइ से तऽ बुझले होत ?

सबैलावाली : बुझल हए की !

बिल्टू : सातम मास हइ आ देह हइ काँटो-काँट ।

सबैलावाली : खान-पानमे दुःख हइ ?

बिल्टू : घर तऽ भरल-पुरल हइ । बच्चा देह हइ ने, तकतियानमे कमी बुझाइए ।

सबैलावाली : कुछो कहबो केलक ?

बिल्टू : बड़ पुछलियै, छानि-छानिकऽ, नइ कुछो बजलै । इहो पुछलियै जे गामपर जएबँ ? नइ बजलै कुछो ।

सबैलावाली : सब मरदबाके किरदानी हइ ।

बिल्टू : एना नइ हदरु अहाँ ।

सबैलावाली : एनामे मोन थीर रहतै, कहू तऽ !

बिल्टू : हमरा लगै हए– एक तऽ जान भारी, बच्चा देह आ तैपरसँ घर-बाहर कामो करऽ पड़ै हइ ।

सबैलावाली : मेझमानके बाप आ भाइसुन चण्डाल हइ, हमरा बेटीके खा कऽ रहत ।

बिल्टू : एह, एना कियो बाजए !

सबैलावाली : बाजू नइ तऽ की करू ? (रौदी अबैत अछि ।) इहो तऽ अएलै ।

बिल्टू : की बात हौ ? सब ठीक छह ने ?

सबैलावाली : कथी ठीक रहतै ? कते रोकलियै, जे बिआह नइ करबौ, एखनी खिच्चा-बतिया हइ .... तऽ उखमा उठा देलकै ।

रौदी : की भेलै, बातो तऽ बुझियै !

सबैलावाली : बात बुझै हइ, जेना कथू नइ रहै बुझल, सत्यानाशी कहींके ।

बिल्टू : भौजी, अहाँ मोनके थीर करू ।

सबैलावाली : थीर होइ हए जे करू ? छाती धड़-धड़ करै हए ।

बिल्टू : तैयो कनी काल चुप रहू न । ..... देखह रौदी भैया, भारी जानमे एते कमजोरी ठीक नइ हइ, से लऽ अबहक दैयाके ।

रौदी : हम कहलियैए नइ लएबै जे ई आफन धुनने हइ ?

सबैलावाली : हमरा आँखिके आगाड़ी खालि बौएके मुह नँचै हए तऽ हम की करू ?

रौदी : हौ बिल्टू, एकरा देखैत रहियह, हम जाइ छी ।

बिल्टू : जाह ।

सबैलावाली : बौआके लइएकऽ अउतै ।

रौदी : लऽकऽ अएबै ।

सबैलावाली : कोनो बहन्ना हम नइ मानबै ।

रौदी : होतै । (रौदी जाइत अछि । सबैलावाली दुहारि तक छोड' जाइत अछि ।)

दृश्य : सात	स्थान : रस्ता	समय : साँझ

(रस्तामे रौदी झटकारैत जा रहल अछि। दुलारचन उमहरसँ आबि रहल छै। एक-दोसरके नमस्कार करैत।)

रौदी : केमहर.... समधी....? हमरा तऽ भगमाने भेट गेल। हम अहीँ जऽ जाइ छली। (समधीक प्रतिक्रिया नइ)

कुछो बोलै नइ छी समधी ? बोलू न। की बात कहू न। कोनो तकलीफ बात..? कतऽ चलली ?

दुलारचन : कतऽ जाएब, लाहेब भऽ गेल समधी !

रौदी : की...की...लाहेब...?

दुलारचन : हमरा नइ बोलल होत ....।

रौदी : की...नइ बोलल... ?

दुलारचन : बहुरिया....बहुरिया...चलि गेलै।

रौदी : कहाँ चलि गेलै ?

दुलारचन : भगमान घर।

रौदी : भगमान घर...? भगमान घर...., एना कैलए बोलै छी समधी ? ऊ अहिना केना चलि जेतै ! ओकर तऽ खाइ-खेलाइके समय छै....केना चलि जएतै ? अहाँके भरम भेल गऽ। अहाँ कोनो दोसर बात कहऽ चाहै छली। याद करू तऽ की कहऽ चाहै छली ? कोनो माँग-उँग हए ? दहेज आउरसँ ककरो नइ पुगै हइ। देखियौ हम गरीब छी ... लेकिन बेटीके लेल हम अपनाके बेच देबै। अहाँ चिन्ता नइ करू। माँग करू। हम देब।

अहाँ ठीके कहलियै ? ठीके कहलियै ने ? हमर फूलो उपर चलि गेलै। ओकर मुह आब नइ देखबै। मरलो मुह नइ देखबै। बोलू न, अँचियापर चढ़ाकऽ जरा देलियै। हमरा फूलोके जरा...जरा...देलियै ने ! छोड़ि दू ...।

छोड़ि दू हमरा...हमरा की भेल गऽ...जे हमरा पकड़ै छी ! हम तऽ केहन चिक्कन छी। भेल गऽ तऽ हमरा फूलोके। फूलो...फूलो...हमहीँ मारि देलियै .... हम अपना फूलोके।

इज्जति...आब बेटी गेलौ...इज्जतिके फुदना बान्हिकऽ कुद...। कुद रौदिया कुद। बेटी गेलौ ... बहु जेतौ ... धन गेलौ ... कुद रौदिया कुद ....

(कुदैत रहैत अछि, दुलारचन सम्हारक प्रयत्न करैत रहैत छै। अन्हार।)

शब्दार्थ

जतन = प्रयास, सावधानी
फटक = केवाड़ (खासकऽ बाँसक बनल केवाड़)
मुसकाँरी = मूस पकड़बाक पिजराक आकारक यन्त्र
गछनाइ = स्वीकार कएनाइ, प्रतीज्ञा कएनाइ
निरजथा = निजगही, सम्पतिहीन
निमन = बढ़िया, नीक
हाकरोस = आक्रोस, व्यर्थक हल्ला
हट्ठोधरि = हरदम, हरबखत
हदरु = विचलित होउ, खौंझाउ
मेझमान = मेहमान, जमाएक लेल प्रयुक्त शब्द
उधवा उठेनाइ = उपद्रव कएनाइ
पानि हरेनाइ = (विशेष अर्थमे) लोककेँ भोजन करेनाइ
कैलए = कथीलए, किएक
मोन छओ-पाँच भेनाइ = असमञ्जसमे पड़नाइ
अमरुख = मूर्ख
लाहेब = बर्बाद, तबाह, भयङ्कर क्षति
बहुरिया = (विशेष अर्थमे) भाबहु वा पुतहु

परानी = पति-पत्नी
मुहथरि = बाहरक द्वार
लग्घी = पेसाब
ढउवा = रुपैया-पैसा
खौरछाह = तीताह बोल
सरञ्जाम = ओरिआओन
मटरगस्ती = ढहनेनाइ, बेकार घुमफिर
बिलहनाइ = बँटनाइ, बँटवारा कएनाइ
दुहारी = द्वारि
हमसुन = हमसभ
टपैत-टपैत = पूरा करैत-करैत
अही जऽ = अहीठाम, अही जगह
अहीनत्ती = अहिना
छित्ते हइ = अछिए
भारी जान = (विशेष अर्थमे) गर्भावस्था

अभ्यास

श्रवण-शिल्प (सुननाइ)

१. दृश्य एकक पाठ शिक्षकसँ सुनू आ एहिमे कतेक गोटे संवाद कऽ रहल अछि, कहू। पात्रसभक नाम सेहो कहू।

२. दृश्य दूक सम्पूर्ण पाठ शिक्षकसँ सुनू आ दुनूगोटेक बीचमे कोन विषयमे तर्क-वितर्क भऽ रहल छैक, से कहू। अहाँकेँ ककर तर्क पसिन्न पड़ैत अछि आ किएक, से कक्षामे बताउ।

३. दृश्य सातमे रहल रौदीक अन्तिम संवादक श्रुतिलेखन करू।

कथन-शिल्प (बजनाइ)

४. कक्षाकेँ दू समूहमे बाँटिकऽ एक समूहक विद्यार्थी रौदी आ दोसर समूहक विद्यार्थी सबैलावाली बनिकऽ कक्षामे बेराबेरी दृश्य दूक अभिनय प्रस्तुत करू।

५. एहि एकाङ्कीक आधारपर निम्नलिखित प्रश्नसभक उत्तर दिअ :

(क) रौदीक पिताक क्रियाकर्ममे के सहयोग कएने छल ?

(ख) रौदी कहिआ विदेश जएबाक नियार कएने छल ?

(ग) रौदी कमएबाक लेल विदेश गेल कि नहि ?

(घ) फूलो ककर नाम छियैक ?

(ङ) रौदीक जमाएक नाम की छैक ?

६. एकाङ्कीमे निम्नाङ्कित पात्रसभक बीच कोन सम्बन्ध छैक ?

(क) सबैलाबाली आ रौदी (ख) रौदी आ फूलो

(ग) सबैलाबाली आ बेलाबाली (घ) दुलारचन आ फूलो

(ङ) दुलारचन आ रौदी (च) सुशील आ फूलो

७. एकाङ्कीमे बेलाबाली आ दुलारचनमेसँ ककर चरित्र अहाँकेँ नीक लगैत अछि ? किएक, स्पष्ट करू।

पठन-शिल्प (पढ़नाइ)

८. निम्नाङ्कित कथोपकथन पढ़ू आ पुछल गेल प्रश्नक उत्तर दिअ :

आखिर सोनाके टुकड़ा बिलहाइए गेल ।

(क) के कहैछ ? (ख) ककरा कहैछ ?

(ग) कखन कहैछ ? (घ) एहिठाम सोनाक टुकड़ाक की अर्थ ?

९. खाली जगहपर संवाद भरू :

(क) बिल्टू : रौदी भाइ कतऽ गेल हए ?

सबैलावाली : जनकपुर गेलै गऽ, ... ।

बिल्टू : ..... बिलहाइए गेल ?

सबैलावाली : ....., हमरा मोन पड़ै हए तऽ ..... ।

(ख) सबैलावाली : हमरा आँखिके अगाड़ी खालि ..... ?

रौदी : ..... हम जाइ छी ।

बिल्टू : जाह ।

सबैलावाली : .....।

रौदी : लऽकऽ अएबै ।

सबैलावाली : कोनो बहन्ना हम नइ मानबै ।

रौदी : .....।

१०. निम्नाङ्कित प्रश्नक उत्तर दिअ :

(क) कतेक जतनसँ एकाङ्कीक लेखक के छथि ?

(ख) फूलोक बिआह कतेक उमेरमे भेल ?

(ग) सुशीलक परिवारमे सभसँ निर्दयी के छल ?

(घ) बिल्टू कोन समाद लऽकऽ आएल छल ?

(ङ) फूलो सुशीलक कानमे की कहलकैक ?

(च) सुशीलकेँ कएकटा भाए छलैक ?

(छ) बिल्टू खेत किएक बेचलक ?

(ज) फूलोक मृत्युक कारण की रहल हएतैक ?

लेखन-शिल्प (लिखनाइ)

११. निम्नाङ्कित शब्दसभक अर्थ स्पष्ट होएबाक हिसाबेँ वाक्य बनाउ–

इज्जति, दरबर, कुटमैती, झमेला, करेज, हाकरोस, भिन-भिनाउज, घास-भुस्सा, अँचिया ।

१२. नाटकमे पात्रक अनुसार भाषाक प्रयोग होइत छैक, मुदा ओकर मानक स्वरूप किछु भिन्न होइत अछि । जनकाक सङ्कल्प कथामे सेहो एकर उदाहरण अछि । एहि एकाङ्कीमे प्रयोग भेल पात्रानुसारक भाषा ताकि तकर मानक स्वरूप निच्चा लिखल तालिकामे लिखू । जेना : हइ : अछि

पात्रानुसारक भाषा	मानक स्वरूप
जिका	जकाँ
दिसन	दिस
ताले	ताबत

१३. निम्नलिखित नाट्यांशक सप्रसङ्ग व्याख्या करू :

(क) रे समय-साल ठीक नइ छै । आ तइमे कहाँदुन इसकुल सेहो पढ़बै छही । कोनो दायाँ-बायाँ भऽ गेलौ तँ .....।

(ख) जेठका आ मझिला तऽ हमर मथाके गुद्दा खा गेल । हट्ठोधरि कहै हए जे बलु हमसुन कमाउ आ ऊ मौज करत ?

विवेचनात्मक उत्तर दिअ :

१४. कतेक जतनसँ एकाङ्कीमे कोन-कोन सामाजिक कुरीतिसभकेँ मुख्य विषयवस्तु बनाएल गेल छैक ? करीब ५० शब्दमे वर्णन करू ।

१५. कतेक जतनसँ एकाङ्कीमे पात्रसभक बीच कोन विषयवस्तुपर द्वन्द्व अछि ? उल्लेख करू ।

सृजनात्मक अभ्यास

(क) कतेक जतनसँ एकाङ्कीक तैयारी कऽ कोनो कार्यक्रममे एकर अभिमञ्चन करू ।

(ख) अहाँक समुदायमे विद्यमान कोनहु एकटा विसङ्गति वा कुरीतिकेँ विषयवस्तु बना तीन दृश्यक एकाङ्की लिखू ।

(ग) कतेक जतनसँ एकाङ्कीमे कोन-कोन मूल सन्देश देल गेल अछि ? फरिछाकऽ लिखू ।

१६. मूल रूप अङरेजी शब्दसभ मैथिलीमे रूपान्तरित भऽ तद्भव शब्द बनलापर उच्चारण आ हिज्जे बदलि जाइत अछि । जेना, एहि नाटकमे रहल निम्नलिखित अङरेजी शब्दसभक रूपान्तरण भेल अछि :

अरजेन्ट = एजेन्ट

इसकुल = स्कूल

टीशन = स्टेशन वा ट्युशन

रहटरी = रजिष्ट्री .....आदि.....

अहाँकेँ जानल-बुझल एहन अङरेजी शब्दक मैथिली रूपान्तरित हिज्जे आ उच्चारणवला शब्द ताकिकऽ लिखू ।

व्याकरण

१८. एकाङ्कीक दृश्य एकमे रहल वाक्यसभ "विधिवाचक, निषेधवाचक, आज्ञार्थक, प्रश्नार्थक, विस्मयादिबोधक" कोन प्रकारक वाक्य थिक, छुटिआउ ।

विधिवाचक	निषेधवाचक	आज्ञार्थक	प्रश्नार्थक	विस्मयादिबोधक

१९. निम्नलिखित वाक्यसभ "सरल वा मिश्र वा संयुक्त" कोन प्रकारक वाक्य थिक, छुटिआउ :

(क) बात तँ कएने छलियै ।

(ख) हमर काज बिगड़ल तँ बिगड़ल, तोहर काज बनि गेलौ तँ भऽ गेलौ की !

(ग) हमर सारसभ कहलकै गऽ जे मेहमान अहाँ फिकिर नइ करू ।

(घ) बारह वर्षक बाद बेटी घरमे राखब पाप छियै ।

(ङ) रे विचार कम कर आ काज बेसी कर ।

(च) यदि धनिक बनबाक इच्छा अछि तँ खूब मेहनत करू ।

२०. आबऽवला दशमी छुट्टीमे अहाँ की-की करबाक नियार कएने छी, तकर उल्लेख करैत पोखरामे रहनिहार अपन ममियौत भाएकेँ एकटा चिट्ठी लिखू । एहि चिट्ठीमे सरल वाक्य, मिश्र वाक्य आ संयुक्त वाक्यक बेसीसँ बेसी प्रयोग करू ।

२१. कतेक जतनसँ एकाङ्कीमे पूर्ण पक्षक वाक्यसभ खोजिकऽ अभ्यास पुस्तिकामे लिखू ।

२२. भूतकाल आ भविष्यतकालक पूर्ण पक्षक वाक्य समावेश करैत निम्नलिखित विन्दुसभक सहयोगसँ एकटा कथा लिखू :

एकटा घर–जङ्गलक कातमे–घरमे एकटा ओकिल–एक दिन ओ दाढ़ी काटैत–खिड़कीपर एकटा बानर–ओ दाढ़ी कटैत देखलक–ओकिल नहाए गेल– बानर घरमे–सेफ्टी रेजर लऽकऽ ओहो दाढ़ी काटए लागल– गाल कटल–नाको कनेक कटि गेलै–खून बहऽ लागल–चिचिआइत भागल–एहि कथासँ की शिक्षा ?

विघटन

■ *धूमकेतु*

छौंड़ा छगुन्तामे रहए। कतेको मास पहिनेसँ माए-बाप मिलिकऽ जे अभ्रुका प्रोग्राम बनबथिन आ बदलथिन, छौंड़ा ताहिसँ अभ्रुका दिनक प्रति बहुत उत्साहित भऽ गेल छल। कतेको वर्षधरि आँचर खोलिकऽ जलमे ठाढ़ि भऽ सूर्यकेँ अर्घ देलाक बाद वरदान रूपमे छौंड़ा माएकेँ प्राप्त भेल छलनि। मुदा तेहन कोनो उत्सव ओकरा देखबामे नहि आबि रहल छलैक। ओना भोरे नहा-सोनाकऽ नेभी-कप्तानक ड्रेस पहिरा देल गेल छलैक। बस ततबेपर उत्साहित भऽ मामक सङ्ग कान्हपर कुसियार उघिकऽ अनने छल। मुदा एक टोनीपर लोभ कएलक तँ माम हाथसँ झपटि लेलकै, "बाप रे एखनि ? चरक फुटि जेतौ।" छौंड़ा हतप्रभ भऽ गेल। मुदा अपन पक्ष प्रस्तुत कएलक, "छड़ फुटे-फुटे छै। हम एक टोनी लेबै तँ की हेतै ?"

मुदा माम डपटि देलकै, "फेर उएह बात ? चरक फुटि जेतौ।" गामपर पहुँचिकऽ अवश्य कुसियार-गाथा सुनाकऽ न्याय मङने छल। माए चुप रहलथिन तँ पीठमे धक्का देबऽ लगलनि। माएक हाथक झाँझक बैलेन्स गड़बड़ाए लगलनि। लोहियामे ठकुआ छलनि, सहनशक्ति जवाब दऽ देलकनि। बाँहि

पकड़िकऽ कात ठेलि देलथिन, "इह, अकच्छ प्राण कऽ देलक ई छौँड़ा। दिनकरके अंश खेता। चरक फुटि जेतनि तकर होशे ने।"

छौँड़ा खसि पड़ितए। मुदा नानी सम्हारि लेने रहथिन, "धौर, एकर मुद्दइके फुटौ।" छौँड़ाक मोनमे फेर प्रश्न जगलै। सभटा पूजा-पाठ अही लेल ने जे छठि परमेसरी देवतालोकनिसँ छिनिकऽ ओकरा माएक पेटमे धऽ देलथिन। मुदा जाहि तरहेँ पदे-पदे ओकरा अपन उपेक्षा देखबामे आबऽ लगलै ताहिसँ ओ उदास भेल। कोनो बात कतौ सहजे बनैत नहि देखऽ मे अबैक। ओकरा भेल रहैक जे छठि परमेसरी आ ओ अपने, दुनू अइ उत्सवमे समान महत्त्वक थिक। मुदा से छलैक नहि।

नानी भुसबा बनाकऽ उठलि छलथिन। कथजकाँ भुसबा चङेरामे सैँतल रहैक। नानी ओकरा कात हटबैत गाल छू लेलथिन। छौँड़ाकेँ गालपर प्रायः लटकि गेल चिकसक कण अनुभव भेलैक, आङुरसँ झाड़िकऽ आँखिसँ देखलक आ आङुरके मुहदिस लऽ जाए लागल। नानीकेँ हँसी लागि गेलनि। लपकिकऽ हाथ पकड़ि लेलथिन। छौँड़ा लाड़ कएलकनि, "एकटा ओइमेसँ दे ने।" नानीक आँखि कपारपर चलि गेलनि। अपन दुनू कान पकड़ैत जीह कुचि लेलनि, "अरे बाप रे बाप ! से नै बाजी।" छौँड़ा चिनवारसँ हेँठ भऽ गेल आ पएर पटकैत बाजल, "किए नइ बाजी ? एकटा हुनका कम्मे चढ़तनि तँ की हेतै ?" मुदा बूढ़ी जवाब नहि दऽकऽ ओकरा पाँजमे लेने दूर चलि गेलि छलथिन। आ फुसुर-फुसुर कानमे बुझौने छलथिन, "छठि परमेसरी कोनो खाइ थोड़े छथिन बौआ। कनेक काल धैर्य धरू। उसरगल भऽ जेतै तँ अहीँ खाएब कि ने।"

छौँड़ाकेँ ई देवता क्रूर आ रहस्यात्मक बुझाए लागल रहथिन। तत्काल कम्प्रोमाइजे ठीक बुझाएल छलैक। ओ चर्चिलक सिपाहीजकाँ पाछू हटि गेल आ बाजल, "तखन दूटा लेबौ।" बूढ़ी बेटाक बाँहिमे चुट्टी कटैत बाजलि छलीह, "हँ-हँ, दुनू हाथमे। एखनि जाउ। मामालग खेलाउ गऽ।"

मुदा छौँड़ाकेँ ने हटबे बुधियारी बुझाइ छलै आ ने मामेक कतौ दर्शन भेल छलै। जाहि ड्रेसपर ओकर मोन टाङल छलै, से ओ पहिरिए चुकल छल। पावनि ओकरा बहुत मनहूससन लगलै। ने ढोल-पिपही, ने बजार-हाट, ने लाउडस्पीकर। जे किछु से बस चिनवारेभरि। सेहो सभ चुप, सभ सावधान। एकाधबेर ओ चिनवारलग नुरिआएल अबस्से। नानीकेँ आवाजो देलकनि, "गै, हम धैर्य नै धरबौ। हम भुसबे लेबौ।" मुदा नानी फेर उत्साहे दियौने छलथिन, "एह, आब बेरे कतेक ? कनेक काल धैर्य आर राख बेटा।" छौँड़ा मात्र अपन क्षोभ प्रकट कऽकऽ रहि गेल छल। बूढ़ीकेँ मुह दूसिकऽ बाहर चलि आएल, "हँ-हँ, झुट्टे धैर्य धरू, धैर्य धरू। भुसबा नहि धरऽ देती ......।"

बेर लुक-झुक भेलै तँ छौँड़ाकेँ सूर-सार किछु बदलल लागल रहैक। माम घाटपरक व्यवस्था ठीक कऽकऽ अपन वीरताक बखान माए-बहिनकेँ सुना रहल छल। छौँड़ाकेँ माम कोरामे उठाकऽ गमछासँ मुह-कान पोछि देने रहैक, "चल आब घाटपर ..... चकाचक ...... पूजा-पाठ ..... गीतनाद ..... ।" छौँड़ा किलकल छल।

केश खोलने माए आ नूआ डाली लेने नानी बीच आङनमे चलि आएल छलथिन । माम ढाकी उठाकऽ आदमीक माथपर देलकैक आ केराक घौर अपने कन्हेठलक । छौंड़ाक आङुर पकड़ैक चेष्टा कएलकैक तँ छौंड़ा झमारिकऽ एहनसन तनल विदा भेल जेना सभ ओकरे सङ्ग जाइत होइक ।

घाटपरक दृश्यसँ ओ जरूर उत्साहित भेल छल । चारूकात रङ्ग-विरङ्गक साड़ीमे डाँड़भरि पानिमे ठाढ़ डुबैत सूर्यक चक्काकेँ अर्घ दैत आँखि मुनने आत्मविभोर स्त्रीगण । हजारक-हजार पसरल कोनिञा-डगरी, सूप-चङेरा, सरबा-कोसिया, हाथीक पीठपर जड़ैत चौमुख दीप । छौंड़ा अन्दाज लगौने छल– सभटा ठकुआ-भुसबाकेँ एकठाम जमा कऽ दौक तँ ओकर हाथ उपरतक पहुँचबो नहि करतै । दुनू हाथ उपर उठाकऽ अङैठीमोड़ कएने छल आ डाँड़पर टाइट होइत पैन्टकेँ डोलाकऽ पएर पटकिकऽ कने स्मार्ट होएबाक प्रयास कएने छल । नानीक ध्यान, मामक चौकसी, ओकरा लागल छलैक जे आब किछु काल धैर्ये राखब उचित । तसदीक वास्ते ओ नानीकेँ पुछि लेने छल, "आब तँ डेरा आपस ?" नानी ठाढ़ि होइत बाजलि छलथिन, "हँ, आब एखनि एतबे ।" एतऽ तक बात ठीक छलैक । छौंड़ा हर्षित छल । ओ धैर्य निभा लेने छल । जे बात ओकरा झूठ आ बइमानी बूझि पड़ल छलैक से ई जे एखनो कोनो पदार्थतक ओकर पहुँच वर्जित छलैक । पूजा भेलै, परसाद चढ़लै, तखनि आब फेर बाँटल किए ने जेतै ? छौंड़ा विश्वस्त भऽ गेल जे परसादसँ ओकरा वञ्चित रखबाक हेतु कोनो गूढ़ षड़यन्त्र अवश्य छैक । आ ताहीसँ ओकरा भीतरमे एकटा अजब उत्तेजना लहकि उठल छलैक । जे परिधान भरिदिन गौरवपूर्वक धारण कएने छल से ओकरा नितान्त अपमानजनक लागल छलैक । तेँ ओ चौरा बजाकऽ घोषणा कऽ देने छलैक जे आब ने ओ धैर्य धरत आ ने ड्रेस पहिरत । मुदा अइसभ विद्रोहक अछैतो ढाकीकेँ बहुत पवित्रतापूर्वक घरक कोनमे राखि देल गेलैक आ ओइपर कड़ा पहरा बैसा देल गेलैक । छौंड़ा अपन विद्रोहकेँ असफल जाइत देखि तामसे माहुर भऽ गेल । ड्रेस-त्रेस खोलि-खालि दिगम्बर रूप माटिपर ओङ्घरा गेल । नानी पाँजमे लेबाक चेष्टा कएने छलथिन । मुदा लल्लो-चप्पोकेँ मोजर नहि दऽ छौंड़ा हुनकादिस आग्नेय दृष्टियेँ तकैत झमाड़ि देने छलनि ।

बूढ़ी अपन अभेद्य सुरक्षा व्यवस्थाक प्रति आश्वस्त छली । छौंड़ा अनशनपर छल, तेँ जागल छल । मोन ततबा बली भऽ गेल छलैक जे अवधारि नेने छल– जे भावी से भावी, चरक हेतै तँ हेतै ! असलमे चरक शब्दक अर्थ ओ नहि बुझैत छल ।

माझ घरक चौकीपर तीन पुस्त तीन मनस्थितिमे त्रिभुजाकार पड़ल छल । तकियाक एक कात माथ देने घोकड़िआएल माए, दोसर छोरपर ढाकीपर नजरि जमौने सजग नानी आ दुनूगोटेक पौदानमे गाढ़ निद्रामे होएबाक नाट्य कएने छौंड़ा । चौकीदार पहरा दऽकऽ चलि गेलै तँ बगलक कोठलीसँ पिताक ठर्रठर्र पुनः शुरू भऽ गेल छलनि । छौंड़ाक मोन माए-नानीसँ आश्वस्त नहि छलै, मुदा हठात खतरा उठा बैसल । पहिने गँवसँ करोट फेरलक । उनटिकऽ चौकीक कोरपर चलि आएल आ निश्शब्द छहलिकऽ ढाकीलग पहुँचब आ ओइमे हाथ घोसिआएब, दुनू सङ्ग भेलै । आ ठीक ओही सङ्ग इहो भेलै जे ओकरा हाथमे एकटा भुसबा अभरलै । मुदा अइसँ पहिने जे ओ भुसबा ओकर मुहधरिक यात्रा करितै, ठनकाजकाँ बूढ़ीक आर्तनादक सङ्ग हुनक दुनू हाथ एकर बाँहि पकड़ि लेलकै । क्रोध

आ अवज्ञासँ छौंड़ा लहकि उठल । बूढ़ीकेँ झमाड़ि देलकनि । मुदा ता माए उठलथिन तँ छौंड़ा आर सकपञ्ज भऽ गेल । बूढ़ी चिचिअएली, "हे छठि परमेसरी, ई कोन उफाँटि अइ छौंड़ाकेँ लगा देलियै । रच्छा करियौ हे माता ।" मुदा छठि परमेसरी रोकऽ नहि सकलथिन । अइसँ पहिने जे माए ई हाथ छोड़ि ओ पकड़ितथिन, छौंड़ाक हबक भुसबापर बजड़ि चुकल छलैक । नानीक चीत्कार आब आँखियोसँ बहऽ लगलनि, "बाल-बोध छै हे माता ! अनजान-सनजान-महाकल्याण .... छमा करबै ।"

मुदा छौंड़ाक कौशल माएक अनुभवी बुद्धिलग परास्त भऽ गेलै । कब्जापरसँ छुटल माएक पञ्जा गलफरपर कसा गेल छलैक । मुहमे गेल पदार्थ घाँटब असम्भव भऽ गेल छलैक । बताहिजकाँ माए एक्कहिटा रटना धऽ लेने छलथिन, "थुकड़ थुकड़ ।" छौंड़ाक भुसबावला हाथपर नानीक पकड़ ढील छलैक । देहकेँ गैंचाकऽ जोड़ कएलक तँ गलफरपरसँ माएक पञ्जा छुटि गेलैक । मुदा ठीक ओहीकालमे जे चटकन गालपर बजरलै से अनायास मुह खोलि देलकै । अधीर पिता कखन दुर्वासा भेल केबाड़ खोलिकऽ चलि आएल रहथिन, से केओ ने बूझि सकल छलैक । हकमैत मामाकेँ कहलथिन, "जिभिया नेने आउ तँ ..... शैतान छौंड़ा रे ..... हमरा तोँ हीरोपनी देखबै छऽ ? सेप घाँटलऽ तँ ठामे घँट टीप देबऽ ।"

माए आँचर सम्हारैत कानऽ लगलथिन, "लिखलाहा जे कहै छै ..... ।" नानीकेँ अविरल अश्रु चुबै छलनि, "बालबोधकेँ छमा करबै हे माता । परुकाँसँ एक जोड़ा हाथी-कुरवार बैसाएब । माझ अर्घक दिन एहन विघटन ..... ।"

छौंड़ाकेँ तेसर घरमेच पड़ि चुलक छलैक । विवश आक्रोश आँखि आ नाकबाटे बहऽ लागल छलैक । जिभिया करै काल खखसिकऽ कण्ठसँ सम्भावित भुसबाक कण बाहर निकालैत सभ आदेशक पालन करैत गेल । एकबेर बड़ी जोड़सँ जीहो ओकिएलै । मुदा परिणामस्वरूप तेसर चटकन चानिपर पड़लैक, "मरि जो अभगला ।" छौंड़ाक माथ जमीनपर आबि बजरलै तँ माएक मोन विखिन्न भऽ गेलनि । समटिकऽ कोराकऽ लऽ लेलथिन, "ओह-ओह मारियो नइ । आब जे हेबाक हेतै .... ।" पिता आग्नेय दृष्टिसँ देखैत अपन कोठली चलि गेलथिन तँ माए-बेटी दुनूक निन्न हरण भऽ गेल छलनि । बेटी खखसिकऽ कण्ठ साफ कएलथिन, "पेटमे तँ नइ पहुँचऽ देलियै..... तखनि दाँत काटिए लेलकै ।" बूढ़ीक आँखिसँ फेर पानि बहऽ लगलनि, "बाल-बोधकेँ माते रच्छा करथिन । आर ककर आसरा ?"

छौंड़ा घोकड़िआएल, सुन्न, भरिदिनका कबाएदक झमाड़सँ श्रान्त करोटिया ओङ्घराएल छल । मुदा आँखिसँ लहास फेकिते रहै । रहि-रहि भीतरसँ उठैत हिचकीक ज्वारिटा कण्ठ फोड़िकऽ बाहर निकलि अबैक ।

कनियेँ कालक बाद फेर गलगल शुरू भेलैक । फेर डाली साजल गेल । आदमीक माथ ढाकी आ मामक माथ केराक घौर फेर चढ़ल । छौंड़ाकेँ उठाबक हेतु माए-बेटी, दुनू एक सङ्ग झुकलथिन । मुदा छौंड़ा देह गैंचिकऽ जे हाथ झमाड़लक तँ दुनूगोटे कात हटि गेली । सभ तीनसँ तिरपट भऽ गेल,

छौंड़ा टससँ मस नहि भेलनि । घाटपर फेर पीह-पाह भेलै । रवाइस छुटलै आ भिनसुरका अर्घ दऽकऽ सभ घुमि आएल । मुदा छौंड़ा जखनि कोनो प्रलोभनपर नहि उठल तँ माए छौंड़ाक माथपर हाथ दऽ देलथिन, " बाबू ..... ।"

हाथसँ भुसबा छुटिकऽ ओड्घरा गेलनि । छौंड़ाकेँ समटिकेँ लऽ लेलथिन, "बाप रे, एकर देह तँ काह फुटै छै ।" नानी टोकलथिन, "बौआ, परसाद नइ खेबेँ ?" छौंड़ाक लाल सिमरिफ आँखि खुजलै, "नइ खेबौ, नइ खेबौ । हम हुनकर किछु ने खेबनि । कुसियारो ने । छठि परमेसरी माफ कऽ देती कि ने !" नानीकेँ बकौर लागि गेलनि । मुहसँ बकार नै फुटलनि । छौंड़ा हकमैत बाजल, "नइ माफ करती तँ पूजो ने करबनि, नइ गे माए ?" माए विकल भऽकऽ माथ हँसोथऽ लगलथिन, "एह, कत्ते बजैछेँ ? अस्यास बढ़ि जेतौ !"

शब्दार्थ

छगुन्ता	= आश्चर्य	अर्घ	= पूजा
सहनशक्ति	= सहबाक सामर्थ्य	उसरगल	= चढ़ाएल
क्रूर	= निर्दय	कम्प्रोमाइज	= सम्झौता
मनहूस	= उदासी भरल	क्षोभ	= व्याकुल
कन्हेठलक	= कान्हपर उठौलक	आत्मविभोर	= हर्षित
चौमुख	= चरिमुहा	तसदीक	= पुष्टि
गूढ़ षड़यन्त्र	= भितरिया साजिश	परिधान	= पोशाक
दिगम्बर	= नाङट	आग्नेय	= आगिसनक
अभेद्य	= जकरा तोड़ल नहि जा सकए	आश्वस्त	= डर समाप्त भऽ जएबाक अवस्था
आर्तनाद	= दुख भरल आवाज	अवज्ञा	= आज्ञा नहि मानब
अश्रु	= नोर	विखिन्न	= विषाक्त, खिन्नता भरल
श्रान्त	= थाकल	लहास	= आगिजकाँ
प्रलोभन	= लालच	काह फुटब	= अतिशय गरम हएब
बकार	= आवाज	विकल	= बेचैन
बकौर	= कण्ठमे किछु बाझलसनक, बाजब अवरुद्ध होएब		

अभ्यास

श्रवण-शिल्प (सुननाइ)

१. कथाक प्रारम्भिक तीनटा अनुच्छेद शिक्षकसँ सुनू आ निम्नलिखित कथन ठीक छैक कि गलत, से कहू :

(क) छौँड़ा एकटा टोनी कुसियार खा लेलक ।

(ख) छौँड़ा अपन माए-बापक एसगर सन्तान छल ।

(ग) ई सभटा परिदृश्य छठि पावनिक दिनक थिक ।

(घ) माएक पीठमे धक्का देलाक बादो ओ शान्ते रहलीह ।

(ङ) छौँड़ाकेँ अपन महत्त्व कम बुझा रहल छलैक ।

२. कथाक कोनहु दूटा अनुच्छेदक श्रुतिलेखन करू ।

३. कथा विघटनकेँ फेरसँ सुनिऽ एकर मुख्य-मुख्य घटनासभ संक्षेपमे टिपाउत करू ।

कथन-शिल्प (बजनाइ)

४. कथाक एक-एकटा अनुच्छेद बेरा-बेरी पढ़िऽ कक्षामे सुनाउ ।

५. एहि कथाक शीर्षक विघटन कतेक उपयुक्त अछि ? अपन तर्क प्रस्तुत करू ।

६. की चौठचन्द्र पावनि वा आन कोनो पावनिमे विघटन कथाक छौँड़ाजकाँ अहूकेँ कहियो अनुभव भेल छल ? जँ हँ तँ कक्षामे सभकेँ सुनाउ । जँ नहि तँ किएक नहि, सएह सभकेँ सुनाउ ।

७. निम्नलिखित शब्दसभक शुद्ध-शुद्ध उच्चारण करू :

उत्साहित, ठाढ़ि, हतप्रभ, मुद्दइ, रहस्यात्मक, बिखिन्न, प्रलोभन, अस्यास ।

पठन-शिल्प (पढ़नाइ)

८. कथाकेँ बेरा-बेरी सभगोटे तीन-तीन मिनट क्रमशः पढ़ू आ कतेक सङ्ख्यामे शब्द पढ़ि सकलहुँ, तकर अभिलेख राखू । सभसँ बेसी सङ्ख्यामे शब्द पढ़निहार/पढ़निहारिकेँ शिक्षकद्वारा पुरस्कृत कएल जा सकैछ ।

९. **पूरे कथाकेँ बेरा-बेरी पढ़ू (द्रूत वाचन) आ कथामे रहल पात्रसभक नाम बताउ ।**

१०. **निम्नाङ्कित प्रश्नसभक एक-एक वाक्यमे उत्तर दिअ :**

(क) वरदानक रूपमे माएकेँ की प्राप्त भेल छलनि ?

(ख) मामा अपन माए-बहिनकेँ कोन बखान सुना रहल छलथिन ?

(ग) नानीकेँ हँसी किएक लागि गेलनि ?

(घ) छौँड़ा किएक तामसे माहुर भऽ गेल ?

११. **गति, यति आ लय मिलाकऽ विघटन कथाक वाचन करू ।**

लेखन-शिल्प (लिखब)

१२. **विघटन कथामे छगुन्ता, टोनीसन किछु देशज शब्दसभ आ प्रोग्रामसन अङरेजी भाषासँ आएल किछु विदेशज शब्दसभ अछि । ओहि शब्दसभक सङ्कलन करू ।**

जेना : देशज शब्द : छगुन्ता,.....

विदेशज शब्द : प्रोग्राम,.....

१३. **निम्नाङ्कित शब्दसभक अर्थ स्पष्ट करैत अपन वाक्य बनाउ :**

भुसबा, उसरगब, चिनवार, नुरिआएल, ढाकी, डाली, अर्घ, कोसिया, ठकुआ, परसाद, उफाँटि, घरमेच, बकौर ।

१४. **निम्नलिखित प्रश्नसभक संक्षिप्त उत्तर दिअ :**

(क) छौँड़ाकेँ माम किएक डँटलथिन ?

(ख) छठि परमेसरी छौँड़ाकेँ किएक क्रूर आ रहस्यमय लगलखिन ?

(ग) घाटपरक दृश्य केहन छलैक ?

(घ) नानीकेँ किएक बकौर लागि गेलनि ?

(ङ) छौँड़ाक आक्रोश कोन माध्यमसँ व्यक्त भऽ रहल छल ?

(च) अस्यास कोना बढ़ि जाइत छैक ?

१५. समूह 'क' क वाक्यांशकेँ समूह 'ख' सँ जोड़ा मिलाउ :

समूह 'क'	समूह 'ख'
(१) नानी ओकरा कात हटबैत	(क) सेहो सभ चुप आ सावधान ।
(२) जे किछु से बस चिनवारेभरि	(ख) जे ओकरा हाथमे एकटा भुसबा अभरलै ।
(३) ओकर हाथ उपरतक	(ग) तँ पूजो ने करबनि ।
(४) ठीक ओही सङ्ग इहो भेलै	(घ) गाल छू लेलथिन ।
(५) परुकाँसँ एक जोड़ा हाथी	(ङ) आ कुरबार बैसाएब ।
(६) नइ माफ करती	(च) पहुँचबो नहि करतै ।

१६. निम्नलिखित उद्धरणक सप्रसङ्ग व्याख्या करू :

(क) माझ घरक चौकीपर तीन पुस्त तीन मनस्थितिमे त्रिभुजाकार पड़ल छल ।

(ख छौंड़ाकेँ तेसर घरमेच पड़ि चुकल छलैक । विवशता आ आक्रोश आँखि आ नाकबाटे बहऽ लागल छलैक ।

सृजनात्मक अभ्यास

(क) कथाक आधारपर निम्नलिखित पात्रसभक चरित्र चित्रण करू :

(अ) छौंडा (आ) नानी

(ख) निम्नलिखित विषयसभमेसँ कोनहु एक विषयपर बेसीसँ बेसी २०० शब्दमे निबन्ध लिखू :

(अ) फगुआ (आ) सिरुवा वा जुड़शीतल (इ) चौरचन (चौठचन्द्र)

१८. कथाक आधारपर छठि पावनिमे प्रयोग होबऽ वला सामग्रीसभक एकटा सूची बनाउ आ ओहि सामग्रीक ओरिआओनमे प्रयुक्त सामानसभक नाम सेहो लिखू ।

१९. अहाँसभ जनैत छी जे अन्तमे ह्रस्व इ (ि) क मात्रा रहलापर इक उच्चारण पहिनहि करऽ पड़ैत छैक आ ह्रस्व उ (ु) रहलापर उक उच्चारण पहिनहि ।

जेना : छठिक उच्चारण होइछ : छइठ ।

विघटन कथासँ एहन शब्दसभ ताकू आ तकर उच्चारण करऽ शिक्षककेँ सुनाउ ।

व्याकरण

२०. क्रियापदमे 'ककरा' आ 'की/कथी' प्रश्न कएलापर जँ उत्तर अएबाक सम्भावना अछि तँ ओहि क्रियापदकेँ सकर्मक क्रिया कहल जाइत अछि। जँ उत्तर अएबाक सम्भावना नहि अछि तँ ओहि क्रियापदकेँ अकर्मक कहल जाइत अछि।

जेना : पढ़ब – सकर्मक क्रिया थिक, किएक तँ कथी पढ़ब ? प्रश्नक उत्तर आबि सकैछ : किताब पढ़ब, कथा पढ़ब आदि।

मुदा, हँसब – अकर्मक क्रिया थिक, किएक तँ कथी हँसब, ककरा हँसब ? प्रश्नक उत्तर नहि आबि सकैछ।

विघटन कथामेसँ प्रारम्भमे कर्ता आ अन्तमे सकर्मक क्रियापद रहल वाक्यसभ सङ्कलित करू :

जेना : (क) माए-बाप अभ्रुका प्रोग्राम बनबथिन।

२१. सकर्मक क्रियापद रहल उपर्युक्त वाक्यसभक वाच्य परिवर्तन करू :

जेना : (क) माए-बापद्वारा अभ्रुका प्रोग्राम बनाओल जाइत छल।

२२. आब एहि कथामेसँ शुरूमे कर्ता आ अन्तमे अकर्मक क्रियापद रहल वाक्यसभ सङ्कलित करू :

जेना : (क) छौँड़ा सुति रहितए।

२३. आब उपर्युक्त वाक्यसभक वाच्य परिवर्तन करू :

जेना : (क) छौँड़ासँ सुतल जाइत।

द्रष्टव्य : ज्ञात अछि जे कर्ताक प्रधानता अर्थात वाक्यक शुरूमे कर्ता रहल वाक्यकेँ कर्तृवाच्य कहल जाइत अछि। सकर्मक क्रियापदक वाच्य परिवर्तन भेलापर ओकरा कर्मवाच्य कहल जाइत अछि। तहिना अकर्मक क्रियापदक वाच्य परिवर्तन भेलापर ओ भाववाच्य कहबैत अछि।

२४. निम्नलिखित वाक्यक वाच्य परिवर्तन करू अर्थात कर्तृवाच्यकेँ कर्मवाच्य वा भाववाच्यमे आ कर्मवाच्य वा भाववाच्यकेँ कर्तृवाच्यमे परिवर्तन करू :

(क) महेश सुति रहल अछि।

(ख) सरिता पत्र लिखलक।

(घ) हमरासँ बड़का अपराध कएल गेल ।

(ङ) कंसकेँ के मारलक ?

(च) नानीद्वारा मन्दिरमे प्रसाद चढ़ाओल गेल ।

(छ) अब्दुल सभ दिन नमाज पढ़ैत छथि ।

कालक पक्षक हिसाबसँ वाच्य परिवर्तनक किछु उदाहरण

निम्नलिखित वाक्यसभक अवलोकन करू आ वाच्य परिवर्तनमे क्रियापदक स्वरूप कोना बदलैत अछि, विचार करू :

(क) सामान्य वर्तमानकाल : राम खाइत अछि ।

वाच्य परिवर्तन : रामद्वारा खाएल जाइत अछि ।

(ख) तात्कालिक वर्तमानकाल : रमेश पुस्तक पढ़ि रहल अछि ।

वाच्य परिवर्तन : रमेशद्वारा पुस्तक पढ़ल जा रहल अछि ।

(ग) सन्दिग्ध वर्तमानकाल : विद्यार्थीसभ पढ़ैत होएत ।

वाच्य परिवर्तन : विद्यार्थीसभद्वारा पढ़ल जाइत होएत ।

(घ) सामान्य भूतकाल : गणेश लिखलक ।

वाच्य परिवर्तन : गणेशद्वारा लिखल गेल ।

(ङ) आसन्न भूतकाल : हमसभ जलखै कएने छी ।

वाच्य परिवर्तन : हमरासभद्वारा जलखै कएल गेल छैक ।

(च) पूर्ण भूतकाल : रूपेश फोन कएने छल ।

वाच्य परिवर्तन : रूपेशद्वारा फोन कएल गेल छल ।

(छ) अपूर्ण भूतकाल : अखिलेश पुस्तक लिखि रहल छल ।

वाच्य परिवर्तन : अखिलेशद्वारा पुस्तक लिखल जा रहल छल ।

(ज) सन्दिग्ध भूतकाल : आरती पूजा कएने होएतीह ।

वाच्य परिवर्तन : आरतीद्वारा पूजा कएल गेल होएत ।

(झ) हेतु-हेतु-मद् भूतकाल : हम जँ चाहितहुँ तँ मन्दिर बना लितहुँ ।

वाच्य परिवर्तन : हमराद्वारा जँ चाहल जैतैक तँ मन्दिर बनाओल जैतैक ।

(ञ) सामान्य भविष्यत काल : सुनील गीत लिखताह ।

वाच्य परिवर्तन : सुनिलद्वारा गीत लिखल जाएत ।

(ट) अपूर्ण भविष्यत काल : डोली नाचैत रहतीह ।

वाच्य परिवर्तन : डोलीद्वारा नाचल जाइत रहत ।

(ठ) पूर्ण भविष्यत काल : अञ्जू गीत रेकर्डिङ कएने रहतीह ।

वाच्य परिवर्तन : अञ्जूद्वारा गीत रेकर्डिङ कएल गेल रहत ।

(ड) सम्भाव्य भविष्यत काल : ओसभ समाचार लिखए ।

वाच्य परिवर्तन : ओकरासभद्वारा समाचार लिखल जाए ।

तिरहुता

तिरहुता मैथिली भाषाक अपन लिपि अछि। एकरा मिथिलाक्षर सेहो कहल जाइत छैक। एहि लिपिक इतिहास बहुत पुरान अछि। वर्तमानमे एकर प्रयोग एकदम कम भऽ रहल अछि, तथापि भाषाक समृद्धि एवं सम्पूर्णताक बोध करएबामे एकर महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। एहिठाम मिथिलाक्षर वा तिरहुता लिपिक सामान्य जानकारी देल जा रहल अछि।

तिरहुताक वर्णमाला

𑒁	𑒂	𑒃	𑒄	𑒅	𑒆	𑒇
अ	**आ**	**इ**	**ई**	**उ**	**ऊ**	**ऋ**

𑒉	𑒊	𑒋	𑒌	𑒍	𑒎
ए	**ऐ**	**ओ**	**औ**	**अं**	**अः**

𑒏	𑒐	𑒑	𑒒	𑒓
क	**ख**	**ग**	**घ**	**ङ**

𑒔	𑒕	𑒖	𑒗	𑒘
च	**छ**	**ज**	**झ**	**ञ**

𑒙	𑒚	𑒛	𑒜	𑒝
ट	**ठ**	**ड**	**ढ**	**ण**

𑒞	𑒟	𑒠	𑒡	𑒢
त	**थ**	**द**	**ध**	**न**

𑒣 𑒤 𑒥 𑒦 𑒧

प फ ब भ म

𑒨 𑒩 𑒪 𑒫 𑒬 𑒭 𑒮 𑒯 𑒏𑓂𑒭 𑒞𑓂𑒩 𑒖𑓂𑒘

य र ल व श ष स ह क्ष त्र ज्ञ

मात्रासभ (𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒮𑒦)

𑒏 𑒏𑒰 𑒏𑒱 𑒏𑒲 𑒏𑒳 𑒏𑒴 𑒏𑒹 𑒏𑒻 𑒏𑒼 𑒏𑒾 𑒏𑓀 𑒏𑓁

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

𑒐 𑒐𑒰 𑒐𑒱 𑒐𑒲 𑒐𑒳 𑒐𑒴 𑒐𑒹 𑒐𑒻 𑒐𑒼 𑒐𑒾 𑒐𑓀 𑒐𑓁

ख खा खि खी खु खू खे खै खो खौ खं खः

𑒑 𑒑𑒰 𑒑𑒱 𑒑𑒲 𑒑𑒳 𑒑𑒴 𑒑𑒹 𑒑𑒻 𑒑𑒼 𑒑𑒾 𑒑𑓀 𑒑𑓁

ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गं गः

𑒒 𑒒𑒰 𑒒𑒱 𑒒𑒲 𑒒𑒳 𑒒𑒴 𑒒𑒹 𑒒𑒻 𑒒𑒼 𑒒𑒾 𑒒𑓀 𑒒𑓁

घ घा घि घी घु घू घे घै घो घौ घं घः

𑒔 𑒔𑒰 𑒔𑒱 𑒔𑒲 𑒔𑒳 𑒔𑒴 𑒔𑒹 𑒔𑒻 𑒔𑒼 𑒔𑒾 𑒔𑓀 𑒔𑓁

च चा चि ची चु चू चे चै चो चौ चं चः

𑒕 𑒕𑒰 𑒕𑒱 𑒕𑒲 𑒕𑒳 𑒕𑒴 𑒕𑒹 𑒕𑒻 𑒕𑒼 𑒕𑒾 𑒕𑓀 𑒕𑓁

छ छा छि छी छु छू छे छै छो छौ छं छः

𑒖 𑒖𑒰 𑒖𑒱 𑒖𑒲 𑒖𑒳 𑒖𑒴 𑒖𑒹 𑒖𑒻 𑒖𑒼 𑒖𑒾 𑒖𑓀 𑒖𑓁
ज जा जि जी जु जू जे जै जो जौ जं जः

𑒗 𑒗𑒰 𑒗𑒱 𑒗𑒲 𑒗𑒳 𑒗𑒴 𑒗𑒹 𑒗𑒻 𑒗𑒼 𑒗𑒾 𑒗𑓀 𑒗𑓁
झ झा झि झी झु झू झे झै झो झौ झं झः

𑒙 𑒙𑒰 𑒙𑒱 𑒙𑒲 𑒙𑒳 𑒙𑒴 𑒙𑒹 𑒙𑒻 𑒙𑒼 𑒙𑒾 𑒙𑓀 𑒙𑓁
ट टा टि टी टु टू टे टै टो टौ टं टः

𑒚 𑒚𑒰 𑒚𑒱 𑒚𑒲 𑒚𑒳 𑒚𑒴 𑒚𑒹 𑒚𑒻 𑒚𑒼 𑒚𑒾 𑒚𑓀 𑒚𑓁
ठ ठा ठि ठी ठु ठू ठे ठै ठो ठौ ठं ठः

𑒛 𑒛𑒰 𑒛𑒱 𑒛𑒲 𑒛𑒳 𑒛𑒴 𑒛𑒹 𑒛𑒻 𑒛𑒼 𑒛𑒾 𑒛𑓀 𑒛𑓁
ड डा डि डी डु डू डे डै डो डौ डं डः

𑒜 𑒜𑒰 𑒜𑒱 𑒜𑒲 𑒜𑒳 𑒜𑒴 𑒜𑒹 𑒜𑒻 𑒜𑒼 𑒜𑒾 𑒜𑓀 𑒜𑓁
ढ ढा ढि ढी ढु ढू ढे ढै ढो ढौ ढं ढः

𑒞 𑒞𑒰 𑒞𑒱 𑒞𑒲 𑒞𑒳 𑒞𑒴 𑒞𑒹 𑒞𑒻 𑒞𑒼 𑒞𑒾 𑒞𑓀 𑒞𑓁
त ता ति ती तु तू ते तै तो तौ तं तः

𑒟 𑒟𑒰 𑒟𑒱 𑒟𑒲 𑒟𑒳 𑒟𑒴 𑒟𑒹 𑒟𑒻 𑒟𑒼 𑒟𑒾 𑒟𑓀 𑒟𑓁
थ था थि थी थु थू थे थै थो थौ थं थः

𑒠 𑒠𑒰 𑒠𑒱 𑒠𑒲 𑒠𑒳 𑒠𑒴 𑒠𑒹 𑒠𑒻 𑒠𑒼 𑒠𑒾 𑒠𑓀 𑒠𑓁
द दा दि दी दु दू दे दै दो दौ दं दः

ধ ধা ধি ধী ধ্ ধূ ধে ধৈ ধো ধৌ ধং ধঃ
ধ ধা ধি ধী ধু ধূ ধে ধৈ ধো ধৌ ধং ধঃ

ন না নি নী ন্ব নূ নে নৈ নো নৌ নং নঃ
ন না নি নী নু নূ নে নৈ নো নৌ নং নঃ

প পা পি পী প্ব পূ পে পৈ পো পৌ পং পঃ
প পা পি পী পু পূ পে পৈ পো পৌ পং পঃ

ফ ফা ফি ফী ফ্ ফূ ফে ফৈ ফো ফৌ ফং ফঃ
ফ ফা ফি ফী ফু ফূ ফে ফৈ ফো ফৌ ফং ফঃ

ৱঁ ৱাঁ ৱিঁ ৱীঁ ৱুঁ ৱূঁ ৱেঁ ৱৈঁ ৱোঁ ৱৌঁ ৱঁং ৱঃ
ব বা বি বী বু বূ বে বৈ বো বৌ বং বঃ

ভ ভা ভি ভী ভ্ ভূ ভে ভৈ ভো ভৌ ভং ভঃ
ভ ভা ভি ভী ভু ভূ ভে ভৈ ভো ভৌ ভং ভঃ

ম মা মি মী ম্ মূ মে মৈ মো মৌ মং মঃ
ম মা মি মী মু মূ মে মৈ মো মৌ মং মঃ

য যা যি যী য্ যূ যে যৈ যো যৌ যং যঃ
য যা যি যী যু যূ যে যৈ যো যৌ যং যঃ

ৰ ৰা ৰি ৰী ৰ্ ৰূ ৰে ৰৈ ৰো ৰৌ ৰং ৰঃ
র রা রি রী রু রূ রে রৈ রো রৌ রং রঃ

ন	না	নি	নী	নু	নূ	নে	নৈ	নো	নৌ	নং	নঃ
ল	লা	লি	লী	লু	লূ	লে	লৈ	লো	লৌ	লং	লঃ

র	রা	রি	রী	রু	রূ	রে	রৈ	রো	রৌ	রং	রঃ
ব	বা	বি	বী	বু	বূ	বে	বৈ	বো	বৌ	বং	বঃ

শে	শো	শি	শী	শু	শূ	শে	শৈ	শো	শৌ	শং	শঃ
শ	শা	শি	শী	শু	শূ	শে	শৈ	শো	শৌ	শং	শঃ

ষ	ষা	ষি	ষী	ষু	ষূ	ষে	ষৈ	ষো	ষৌ	ষং	ষঃ
ষ	ষা	ষি	ষী	ষু	ষূ	ষে	ষৈ	ষো	ষৌ	ষং	ষঃ

স	সা	সি	সী	সু	সূ	সে	সৈ	সো	সৌ	সং	সঃ
স	সা	সি	সী	সু	সূ	সে	সৈ	সো	সৌ	সং	সঃ

হ	হা	হি	হী	হু	হূ	হে	হৈ	হো	হৌ	হং	হঃ
হ	হা	হি	হী	হু	হূ	হে	হৈ	হো	হৌ	হং	হঃ

ক্ষ	ক্ষা	ক্ষি	ক্ষী	ক্ষু	ক্ষূ	ক্ষে	ক্ষৈ	ক্ষো	ক্ষৌ	ক্ষং	ক্ষঃ
ক্ষ	ক্ষা	ক্ষি	ক্ষী	ক্ষু	ক্ষূ	ক্ষে	ক্ষৈ	ক্ষো	ক্ষৌ	ক্ষং	ক্ষঃ

ত্র	ত্রা	ত্রি	ত্রী	ত্রু	ত্রূ	ত্রে	ত্রৈ	ত্রা	ত্রৌ	ত্রং	ত্রঃ
ত্র	ত্রা	ত্রি	ত্রী	ত্রু	ত্রূ	ত্রে	ত্রৈ	ত্রো	ত্রৌ	ত্রং	ত্রঃ

জ্ঞ	জ্ঞা	জ্ঞি	জ্ঞী	জ্ঞু	জ্ঞূ	জ্ঞে	জ্ঞৈ	জ্ঞো	জ্ঞৌ	জ্ঞং	জ্ঞঃ
জ্ঞ	জ্ঞা	জ্ঞি	জ্ঞী	জ্ঞু	জ্ঞূ	জ্ঞে	জ্ঞৈ	জ্ঞো	জ্ঞৌ	জ্ঞং	জ্ঞঃ

अङ्कसभ (𑒁𑓂𑒓𑒏𑒮𑒦)

𑓐	𑓑	𑓒	𑓓	𑓔	𑓕	𑓖	𑓗	𑓘	𑓙	𑓑𑓐
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०

𑒮𑓀𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 **(संयुक्ताक्षर)**

𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒮𑓀𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 **(क वर्गक संयुक्ताक्षर)**

𑒏𑓂𑒏	𑒏𑓂𑒐	𑒑𑓂𑒑	𑒏𑓂𑒞	𑒏𑓂𑒩	𑒐𑓂𑒪	𑒒𑓂𑒢
क्क	क्ख	ग्ग	क्त	क्र	ख्ल	घ्न

𑒏𑓂𑒧	𑒏𑓂𑒨	𑒐𑓂𑒨	𑒑𑓂𑒨	𑒑𑓂𑒩	𑒒𑓂𑒩	𑒑𑓂𑒪
क्म	क्य	ख्य	ग्य	ग्र	घ्र	ग्ल

𑒓𑓂𑒏	𑒑𑓂𑒡	𑒓𑓂𑒑	𑒓𑓂𑒒	𑒏𑓂𑒮	𑒐𑓂𑒫	𑒑𑓂𑒠
ङ्क	ग्ध	ङ्ग	ङ्घ	क्स	ख्व	ग्द

𑒔 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒮𑓀𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 **(च वर्गक संयुक्ताक्षर)**

𑒔𑓂𑒔	𑒘𑓂𑒖	𑒖𑓂𑒖	𑒔𑓂𑒕	𑒖𑓂𑒨	𑒗𑓂𑒨	𑒔𑓂𑒫
च्च	ञ्ज	ज्ज	च्छ	ज्य	झ्य	च्व

𑒖𑓂𑒫	𑒘𑓂𑒔	𑒘𑓂𑒗	𑒕𑓂𑒩	𑒘	𑒖𑓂𑒫	𑒘𑓂𑒕
ज्व	ञ्च	ञ्झ	छ्र	ञ	ज्व	ञ्छ

𑒙 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒮𑓀𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 **(ट वर्गक संयुक्ताक्षर)**

𑒙𑓂𑒙 𑒛𑓂𑒛 𑒝𑓂𑒝 𑒙𑓂𑒚 𑒜𑓂𑒨 𑒝𑓂𑒨 𑒙𑓂𑒨
ट्ट ड्ड ण्ण ट्ठ ढ्य ण्य ट्य

𑒙𑓂𑒩 𑒛𑓂𑒑 𑒝𑓂𑒙 𑒝𑓂𑒜 𑒙𑓂𑒫 𑒛𑓂𑒩 𑒛𑓂𑒜
ट्र ड्ग ण्ट ण्ढ ट्व ड्र ड्ढ

𑒞 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒮𑓀𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 **(त वर्गक संयुक्ताक्षर)**

𑒞 𑒠𑓂𑒠 𑒢𑓂𑒢 𑒞𑓂𑒢 𑒢𑓂𑒠 𑒢𑓂𑒡 𑒞𑓂𑒏𑓂𑒭
त द्द न्न त्न न्द न्ध त्क्ष

𑒞𑓂𑒧 𑒞𑓂𑒨 𑒟𑓂𑒨 𑒠𑓂𑒨 𑒡𑓂𑒨 𑒞𑓂𑒮 𑒠𑓂𑒡
त्म त्य थ्य द्य ध्य त्स द्ध

𑒞𑓂𑒩 𑒟𑓂𑒩 𑒠𑓂𑒩 𑒞𑓂𑒫 𑒠𑓂𑒡 𑒢𑓂𑒡 𑒢𑓂𑒫
त्र थ्र द्र त्व द्ध न्ध न्व

𑒣 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒮𑓀𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 **(प वर्गक संयुक्ताक्षर)**

𑒣𑓂𑒣 𑒥𑓂𑒥 𑒧𑓂𑒧 𑒣𑓂𑒞 𑒣𑓂𑒢 𑒧𑓂𑒢 𑒣𑓂𑒨
प्प ब्ब म्म प्त प्न म्न प्य

𑒣𑓂𑒩 𑒦𑓂𑒩 𑒣𑓂𑒪 𑒧𑓂𑒪 𑒣𑓂𑒫 𑒦𑓂𑒫 𑒧𑓂𑒫
प्र भ्र प्ल म्ल प्व भ्व म्व

𑒧𑓂𑒥 𑒧𑓂𑒤 𑒥𑓂𑒡 𑒥𑓂𑒖 𑒧𑓂𑒦 𑒧𑓂𑒨 𑒤𑓂𑒢

म्ब म्फ ब्ध ब्ज म्भ म्य फ्न

𑒁𑒢𑓂𑒞𑒮𑓂𑒟𑒰𑒠𑒱 𑒮𑓀𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 **(अन्तस्थादि संयुक्ताक्षर)**

𑒨𑓂𑒨 𑒫𑓂𑒫 𑒮𑓂𑒮 𑒫𑓂𑒩 𑒬𑓂𑒩 𑒮𑓂𑒩 𑒯𑓂𑒫

य्य व्व स्स व्र श्र स्र ह्व

𑒨𑓂𑒫 𑒪𑓂𑒫 𑒬𑓂𑒫 𑒮𑓂𑒫 𑒯𑓂𑒫 𑒩𑓂𑒏 𑒩𑓂𑒑

य्व ल्व श्व स्व ह्व र्क र्ग

𑒪𑓂𑒏 𑒭𑓂𑒏 𑒪𑓂𑒣 𑒪𑓂𑒧 𑒬𑓂𑒧 𑒭𑓂𑒧 𑒯𑓂𑒧

ल्क ष्क ल्प ल्म श्म ष्म ह्म

𑒪𑓂𑒨 𑒬𑓂𑒨 𑒯𑓂𑒨 𑒬𑓂𑒪 𑒫𑓂𑒪 𑒮𑓂𑒪 𑒯𑓂𑒫

ल्य श्य ह्य श्ल व्ल स्ल ह्व

𑒬𑓂𑒔 𑒮𑓂𑒢 𑒯𑓂𑒢 𑒭𑓂𑒙 𑒭𑓂𑒝 𑒮𑓂𑒐 𑒮𑓂𑒟

श्च स्न ह्न ष्ट ष्ण स्ख स्थ

𑒠𑒴𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒏 𑒮𑓀𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 **(दूसँ बेसी वर्णक संयुक्ताक्षर)**

𑒏𑓂𑒞𑓂𑒨 𑒏𑓂𑒭𑓂𑒨 𑒓𑓂𑒏𑓂𑒨 𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨 𑒔𑓂𑒕𑓂𑒨 𑒝𑓂𑒛𑓂𑒨 𑒞𑓂𑒨

क्त्य क्ष्य ङ्क्य त्म्य च्छ्य ण्ड्य त्य

𑒏𑓂𑒞𑓂𑒩 𑒏𑓂𑒞𑓂𑒫 𑒏𑓂𑒭𑓂𑒫 𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧 𑒝𑓂𑒛𑓂𑒩 𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒝𑓂𑒚𑓂𑒨

क्त्र कत्व क्ष्व क्ष्म ण्ड्र न्द्र ण्ठ्य

तिरहुता सम्बन्धी जानकारीक लेल अतिरिक्त सामग्री

तिरहुता वा मिथिलाक्षर मैथिली भाषाक आधिकारिक लिपि अछि। एहि लिपिक इतिहास बहुत पुरान अछि। पछिला समयमे मैथिली भाषाक अध्ययन-अध्यापन तथा प्रयोग नीकजकाँ होबऽ लागल अछि। मुदा एहनोमे कतिपय मैथिली भाषाभाषी स्वयं एहि बातसँ अनभिज्ञ छथि जे मैथिलीक अपन लिपियो छैक। कारण एखनुक समयमे मैथिलीक अधिकांश काज देवनागरीए लिपिमे होइत अछि। वस्तुतः समुचित प्रचार-प्रसार आ कार्य-व्यवहारमे अभावक कारणे तिरहुता वा मिथिलाक्षर लिपि छाँहमे पड़ैत जा रहल अछि। लेखनमे सहजता तथा मैथिली भाषाकेँ समुचित वाणी देबाक क्षमतासन अनेको विशेषता एहि लिपिमे निहित अछि। एतबा होइतो एकर पतनक बहुत रासे कारणसभ छैक। एहिमेसँ प्रमुख अछि तत्कालीन मिथिलाक स्वतन्त्रता एवं भौगोलिकताक समाप्ति।

यवनसभक आक्रमणक बाद मिथिलापर इस्लामी शासन व्यवस्था कायम भऽ गेल। ओसभ मिथिलाक उत्कर्षमे पहुँचल हरेक पक्षकेँ नष्ट-भ्रष्ट करऽ लागल। एहिसँ मैथिली भाषा, संस्कृति, साहित्य, कला आदि क्षेत्रमे नकारात्मक प्रभाव पड़ल। बादमे मिथिलासँ मुसलमानी प्रभुत्व तँ हटल, मुदा तऽबसँ उछटिकऽ भुम्हुरमे वला कहबी एहिठाम लागू भऽ गेल। अङरेजी शासनसँ मुक्तिक अभियानक बीच भाषा-संस्कृतिजन्य संवेदनशीलतादिस लोकक ध्याने नहि गेलैक। मैथिलीपर सभसँ पैघ वज्रपात तखन भेलैक जखन सुगौली सन्धिक बाद मिथिला नेपाल आ भारत दू देशमे बँटि गेल। घुसकैत रहल राजनीतिक सीमा आ प्रभुत्वक कारणे मिथिलाक जनजीवन अस्थिरप्रायः रहल। एहि अस्थिरताकेँ बाट बदलैत रहऽ वला मिथिलाक नदीसभ सेहो बढ़ाबा देलक। एहन अनेक कारणसभसँ सेहो मैथिली भाषा-साहित्यमे नकारात्मक असर पड़ैत रहलैक।

आजुक समयमे राष्ट्रीय सम्पत्तिक रूपमे एकर संरक्षण-सम्वर्द्धनदिस सरकारकेँ विशेष संवेदनशील होएबाक चाही। मुदा मैथिली भाषा आ एहिसँ सम्बद्ध अन्य आधारदिस अपेक्षित संवेदनशीलता दुनू देशमे नहिएँजकाँ देखल जा रहल अछि।

एतेक रासे बाधा-व्यवधानक अछैतो मैथिली भाषा-साहित्य-संस्कृति एखनधरि अपन गरिमाकेँ कायमहि रखने अछि। एहन अवस्था बनल रहबामे एकर सुदीर्घ साहित्यिक परम्परा, वाणीमे मधुरता, मौलिक वैज्ञानिक लिपि आदिक हाथ अछि। भारतीय उपमहाद्वीपमे छापा मशीनक विस्तारक समयमे तिरहुता लिपिवला प्रेसक अभाव सेहो मिथिलाक्षरक ह्रासोन्मुखताक कारण अछि। तथापि विगत कालहिसँ शिलालेख आदिमे एहि लिपिक प्रयोग होइत रहद। बादमे ब्राह्मण, कायस्थ, वैश्य आदि किछु जातिमे वैवाहिक मञ्जूरीनामा अर्थात सिद्धान्त लिखबाक लेल मिथिलाक्षरक प्रयोग अनिवार्य रूपेँ होइत रहल। पछिला समयमे पुस्तकक शीर्षक, भिजिटिङ कार्ड आदिमे लोक एकर प्रयोग करऽ लागल। कतेक लोक मिथिलाक्षरक सेहो प्रयोग कऽ किछु पोथीयोसभ निकालि रहल छथि। ईसभ काज अत्यन्त विषम परिस्थितिमे सेहो मिथिलाक्षरक हुकहुकी बचौने रहल।

आब आएल कम्प्यूटर-प्रविधि आ मैथिलसभमे बढ़ैत भाषिक, साहित्यिक चेतनासँ एकर अवस्थामे सुधार आबि रहल अछि। यूनिकोड प्रविधिमे तिरहुता लिपिक फोन्टसभक निर्माण एवं प्रयोग एहि लिपिक अवस्थामे सुधार अएबाक आश बन्हबैत अछि।

मैथिलीक अधिकांश प्राचीन पोथीसभक हस्तलिखित पाण्डुलिपिसभ मिथिलाक्षरमे उपलब्ध अछि। स्पष्ट अछि जे मिथिलाक प्राचीन कला, संस्कृति, इतिहास आदिक अध्येतालोकनि ताधरि ओहि पोथीसभक सही अध्ययन नहि कऽ सकैत छथि, जाधरि एहि लिपिक समुचित ज्ञान नहि हएतनि। तेँ तिरहुता लिपिक अध्ययन अपरिहार्य अछि।

अभ्यास

१. निम्नलिखित प्रश्नसभक संक्षिप्त उत्तर दिअ :

(क) मैथिलीक स्वतन्त्र लिपि रहल बात सुनि मैथिलसभ किएक आश्चर्यचकित होइत छथि ?

(ख) तिरहुता लिपि आइ किएक छाँहमे पड़ि गेल छैक ?

(ग) भाषा-संस्कृतिदिस लोकक संवेदनशीलता किएक कमि गेल अछि ?

(घ) मैथिलीपर सभसँ पैघ सङ्कट कखन अएलैक ?

(ङ) मिथिलाक्षरक संरक्षणादिमे सरकारक भूमिका केहन देखल जाइत अछि ?

(च) मैथिली भाषाक गरिमा एखनहुधरि कायम रहबाक पाछाँ कोन कारण छैक ?

(छ) तिरहुता लिपिक भविष्य अहाँ केहन देखैत छी ?

२. निम्न शब्दसभकेँ मिथिलाक्षरसँ देवनागरीमे लिखू :

𑒩𑒰𑒖𑒏𑒰𑒖 𑒩𑒰𑒖𑒡𑒰𑒢𑒲 𑒞𑓂𑒩𑒰𑒯𑒱𑒧𑒰𑒧 𑒞𑒩𑒏𑓂𑒏𑒲 𑒮𑒩𑒮𑓂𑒫𑒞𑒲 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒰 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳 𑒧𑒯𑒰𑒢 𑒫𑒱𑒩𑒰𑒙𑒢𑒑𑒩 𑒧𑒩𑒱𑒔𑒨𑒰 𑒏𑒰𑒚𑒧𑒰𑒝𑓂𑒛𑒴 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒳𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒭𑒠 𑒫𑒲𑒩𑒑𑒘𑓂𑒖।

३. निम्न शब्दसभकेँ देवनागरीसँ मिथिलाक्षरमे लिखू :

भक्त, अङ्ग, क्लेश, सज्जन, चञ्चल, बज्र, छुट्टी, ट्रेन, अक्षुण्ण, आत्मा, उद्योग, अन्याय, अप्राप्य, प्रारब्ध, दम्भ, पुनश्च, ब्रह्म, सरस्वती, लक्ष्मी, मिथिलाक्षर, प्रेमर्षि, मार्कण्डेय, देवेन्द्र।

४. **निम्नलिखित वाक्यसभकेँ मिथिलाक्षरसँ देवनागरीमे लिखू :**

(क) 𑒏𑒐𑒢 𑒯𑒩𑒥 𑒠𑒳𑓁𑒐 𑒧𑒼𑒩 𑒯𑒹 𑒦𑒼𑒪𑒰𑒢𑒰𑒟।

(ख) 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱𑒏 𑒂𑒨𑒳 𑒁𑒫𑒮𑒰𑒢।

𑒏𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒡𑒫𑒪 𑒞𑓂𑒩𑒨𑒼𑒠𑒬𑒲 𑒖𑒰𑒢।

(ग) 𑒔𑒢𑓂𑒠𑒰 𑒗𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒫𑒲𑒬𑓂𑒫𑒩𑒏 𑒅𑒣𑒰𑒡𑒱 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱।

(घ) 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒫𑒵𑒯𑒞𑓂 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒔𑒲𑒢 𑒂 𑒌𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮𑒱𑒏 𑒁𑒕𑒱।

(ङ) 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒲𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒩𑒰𑒧𑒏 𑒮𑒓𑓂𑒑 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪।

(च) 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒞𑒵𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒮𑒥𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒁𑒕𑒱।

५. **निम्नलिखित वाक्यसभकेँ देवनागरीसँ मिथिलाक्षरमे लिखू :**

(क) विद्यापति मैथिली भाषाक महाकवि छथि ।

(ख) मैथिलीक अनेको बोलीसभ अछि ।

(ग) गणतन्त्र नेपालक पहिल राष्ट्रपति डा. रामवरण यादव भेलाह ।

(घ) प्राचीन विदेह राज्यक राजधानी जनकपुर अछि ।

(ङ) नेपालमे भूकम्पक त्रास एखनहु अछिए ।

(च) मुन्ना, अङ्कुर आ भानु मातृकक लेल प्रस्थान कएलक ।

(छ) अम्बुज डाक्टर बनि गेलाह ।

(ज) आवेश सत्ते सुन्दर, स्वस्थ आ बुद्धिमान छथि ।

(झ) प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम, षष्ठम, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम ।

६. **अपन स्कूलक वर्णन करैत कोनो सङ्गीकेँ मिथिलाक्षरमे एकटा पत्र लिखू ।**

व्याकरण

७. निम्नलिखित वाक्यसभमे संज्ञा वा सर्वनाम छुटिआकऽ ओहिमे कोन-कोन विभक्तिक प्रयोग भेल अछि, लिखू :

(क) मैथिलीक आ कोनहु मातृभाषाक तिरस्कारसँ देशक कल्याण केओ नहि कऽ सकैत छथि ।

(ख) कोनो देशकेँ आन देशक उपनिवेश बनबासँ तखने बचाएल जा सकैछ, जखन नागरिकमे राष्ट्रीयताक भावना कुटि-कुटिकऽ भरल रहत ।

(ग) हे साथीलोकनि ! हमरासभकेँ अपनहि हाथसँ बनल खाद्यवस्तु आनि साथीसभकेँ खुअएबा-पिएबाक चाही ।

(घ) मिथिलाक राजा जनकक बेटी सीताकेँ अयोध्याक राजा दशरथक पुत्र रामक सङ्ग जङ्गल जाए पड़लनि, जतऽ रावणद्वारा हुनक हरण कएल गेल आ रामद्वारा सपरिवार रावण मारल गेल ।

(ङ) नेपालक राजधानी काठमाण्डूमे विभिन्न महानुभावद्वारा कलात्मकतासँ भरल मन्दिर आ ऐतिहासिक संरचनासभ बनाओल गेल अछि ।

८. एकटा एहन वाक्य बनाउ जाहिमे आठोटा कारकक प्रयोग भेल हो ।

९. केँ, सँ, हेतु, मे, पर, क, लेल - विभक्तिक प्रयोग करैत वाक्यसभ बनाउ ।

१०. निम्नलिखित वाक्यसभक रिक्त स्थानकेँ कोष्ठमेसँ उपयुक्त शब्द चुनिकऽ भरू :

(क) सीता.....साइकिल नीक अछि । (क, केँ, मे)

(ख) ओकर अफिस .....दूटा लैपटप छैक । (केँ, मे, सँ)

(ग) अभिनव माए ..... खाए लेल मङलक । (पर, मे, सँ)

(घ) तोरा ..... हम दुनू भाए एक्कहि रङ्ग छी । (मे, पर, लेल)

(ङ) उर्मिला अपन पोता ..... मलार कऽ रहल छथि । (क, केँ, के)

द्रष्टव्य : (अ) मैथिली भाषामे विभक्तिकेँ प्रायः मूल शब्दसँ जोड़िकऽ लिखल जाइत छैक ।

जेना :

घरमे आम अछि । (ठीक)

घर मे आम अछि । (गलत)

(आ) "मे" आ "नहि" क उपर अनुस्वार अथवा चन्द्रविन्दु नहि लगाओल जाइछ। जेना :

गाममे शान्ति अछि। (ठीक)

गाममें शान्ति अछि। (गलत)

भाषातत्त्व सम्बन्धी किछु विशेष जानकारी

कारक आ विभक्ति

कोनो वाक्यमे एक वा एकसँ अधिक संज्ञाक प्रयोग होइत अछि। एहि संज्ञाक कार्य आ वाक्यक क्रियापदक बीच रहल सम्बन्ध अलग-अलग होइत अछि। क्रियाक सङ्ग सम्बन्ध राखऽ वला शब्दकेँ कारक कहल जाइत अछि। ई क्रियामे निहित कार्य व्यक्त करबामे सहायक होइत अछि। जेना : जवाहर विजयकेँ किताब देलक।

एतऽ देबाक काज जवाहर विजयकेँ करैत अछि आ किताब संज्ञाक प्रयोगद्वारा व्यक्त कएल गेल अछि। क्रियाद्वारा व्यक्त कार्यक सम्पादनमे संज्ञाक भूमिकाकेँ कारक कहल जाइत अछि। कारकीय अर्थ स्पष्ट करबाक लेल जे रूप प्रयोग होइत अछि ओ विभक्ति कहबैत अछि। जेना : विजयकेँ।

मैथिली भाषामे कारकक आठ भेद होइत अछि :

(१) कर्ता	(२) कर्म	(३) करण	(४) सम्प्रदान
(५) अपादान	(६) सम्बन्ध	(७) अधिकरण	(८) सम्बोधन

द्रष्टव्य : उपर्युक्त कारकसभमेसँ मैथिलीमे कर्ताक कोनहु विभक्ति नहि होइत अछि, जकरा सरल कारक कहल जाइत अछि। जाहि कारकमे वचन, लिङ्ग अदिक कारणे कोनो परिवर्तन नहि होइत अछि, तकरा सरल कारक कहल जाइत अछि।

जेना : हम गाम जाइत छी।

एहिठाम हम एक वचन अथवा बहुवचन दुनूमे समान होइत अछि। तेँ हम सरल कारक थिक।

कर्ता कारकक अतिरिक्त आओर जतेक संज्ञा वा सर्वनाम अछि, ताहिमे कोनहु ने कोनहु विभक्ति जोड़ल रहैछ। एहन कारककेँ तिर्यक कारक कहल जाइत अछि। जेना :

सञ्जीव रमेशकेँ पढ़एलक। गाछसँ आम खसल। आदि .....।

एहि तरहेँ वाक्यमे प्रयोग होइत काल कारकक रूपमे कोनहु ने कोनहु प्रकारेँ विकार आबि गेल कारककेँ तिर्यक कारक कहल जाइत अछि। मूल कारकमे विभक्ति चिह्न लागिकऽ, बहुवचनबोधक प्रत्यय लागिकऽ, आदरार्थी प्रत्यय लागिकऽ कारकक रूपमे परिवर्तन होइत अछि आ ओ तिर्यक कारक कहबैत अछि। जेना : घरक सफाइ करबाके चाही।

एहिठाम घरक तिर्यक कारक थिक।

(१) कर्ताकारक : जे काज करैत अछि से कर्ताकारक कहबैत अछि। जेना : विजय सुतल। एतऽ सुतबाक काज कएनिहार विजय अछि। अतः विजय कर्ता थिक। कर्ताकारकमे कोनो विभक्ति नहि लगैत अछि। अर्थात कर्ताकारकक शून्य विभक्ति होइत अछि।

(२) कर्मकारक : जाहि कारकपर क्रियाक फल पड़ए से कर्मकारक कहबैत अछि। जेना : राम किताब पढ़लक। एतऽ पढ़लक क्रियाक फल किताबपर पड़ैत अछि। अतः किताब कर्मकारक थिक। कर्मकारक निर्जीव रहलापर शून्य विभक्ति लगैत अछि। मुदा कर्मकारक सजीव रहलापर केँ विभक्ति लगैत अछि। जेना : राम हरिकेँ पिटलक।

(३) करणकारक : जाहि कारकद्वारा क्रियाक सम्पादनमे मदति भेटए से करणकारक कहबैत अछि। जेना : छात्र कलमसँ चिट्ठी लिखि रहल अछि। एतऽ कलमसँ चिट्ठी लिखबाक कार्य भऽ रहल अछि। अत : कलम करणकारक अछि। करणकारकमे सँ, द्वारा विभक्ति लगैत अछि।

(४) सम्प्रदान : जाहि कारकक लेल क्रियाक सम्पादन हो से सम्प्रदानकारक कहबैत अछि। जेना : हम धनक लेल मेहनति करतै छी। एतऽ धनक लेल सम्प्रदानकारक थिक। सम्प्रदान कारकमे के, लेल, हेतु विभक्ति लगैत अछि।

(५) अपादानकारक : जाहि कारकसँ सम्बन्ध टुटबाक बोध हो से अपादानकारक कहबैत अछि। जेना : गाछसँ फल खसल। एतऽ गाछसँ फलक सम्बन्ध टुटैत अछि। अतः गाछसँ अपादानकारक थिक। अपादानकारकमे सँ विभक्ति लगैत अछि।

(६) सम्बन्धकारक : जाहि कारकसँ कारकीय सम्बन्धक बोध हो से सम्बन्धकारक कहबैत अछि। जेना : दशरथ रामक पिता छलाह। एतऽ रामसँ दशरथक सम्बन्धक बोध होइत अछि। सम्बन्ध कारकमे क, केर विभक्ति लगैत अछि।

(७) अधिकरणकारक : जे कारक क्रियाक आधार हो से अधिकरणकारक कहबैत अछि। जेना : हम पाठशालामे पढ़ैत छी। पाठशालामे पढ़नाइ क्रियाक आधार अछि। अतः पाठशालामे अधिकरणकारक थिक। अधिकरण कारकमे मे, पर, माझ, -हि विभक्ति लगैत अछि।

(८) सम्बोधनकारक : जाहि कारककेँ क्रियाक सम्पादन लेल सम्बोधित कएल जाए से सम्बोधनकारक कहबैत अछि। जेना : औ विद्यार्थीलोकनि ! अहाँसभ ठीकसँ पढू। एतऽ क्रियाक सम्पादन लेल

विद्यार्थीलोकनिकेँ सम्बोधन कएल गेल अछि। अतः विद्यार्थीलोकनि सम्बोधनकारक थिक। सम्बोधनकारकमे औ, हौ, रे, रौ, गे, हेऔ आदि चिह्न लगैत अछि।

केओ-केओ सम्बोधन कारककेँ कारकक भेद नहि मानैत छथि। हुनकालोकनिक तर्क ई छनि जे सम्बोधन कएलासँ एकर प्रत्यक्ष सम्बन्ध क्रियाक सम्पादनसँ नहि देखल जाइछ। मुदा किछु वैयाकरणलोकनि एकरा समीचीन नहि मानैत छथि। ओलोकनि कहैत छथि जे मैथिलीयोमे ककरो सोर पाड़ल जाइत छैक, ककरो ध्यान आकृष्ट करऽ पड़ैत छैक आ तखन क्रियाक सम्पादनमे असर होइत छैक।

कारक आ विभक्तिक चिह्न-तालिका

कारक	विभक्ति	विभक्ति चिह्न
कर्ता	प्रथम	----
कर्म	द्वितीय	केँ
करण	तृतीय	सँ, द्वारा
सम्प्रदान	चतुर्थी	लेल, हेतु,
अपादान	पञ्चमी	सँ
सम्बन्ध	षष्ठी	क, के, केर
अधिकरण	सप्तमी	पर, मे,
सम्बोधन	सम्बोधन	----

मैथिलीक वर्ण विन्यास सम्बन्धी किछु आओर जानकारी

(१) य आ ज : कतहु-कतहु यक उच्चारण जजकाँ कएल जाइत देखल जाइत अछि, मुदा ओकरा ज नहि लिखबाक चाही। उच्चारणमे जज्ञ, जदि, जमुना, जुग, जाबत, जोगी, जदु, जम आदि कहल जाएवला शब्दसभकेँ क्रकशः यज्ञ, यदि, यमुना, युग, याबत, योगी, यदु, यम लिखबाक चाही।

(२) ए आ य : मैथिलीक वर्तनीमे ए आ य दुनू लिखल जाइत अछि।

प्राचीन वर्तनी– कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि।

नवीन वर्तनी– कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि।

सामान्यतया शब्दक शुरूमे ए मात्र अबैत अछि। जेना– एहि, एना, एकर, एहन आदि। एहि शब्दसभक स्थानपर यहि, यना, यकर, यहन आदिक प्रयोग नहि करबाक चाही। यद्यपि मैथिलीभाषी थारूसहित किछु जातिमे शब्दक आरम्भोमे एकेँ य कहि उच्चारण कएल जाइत अछि।

ए आ यक प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीने पद्धतिक अनुसरण करब उपयुक्त मानि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएल गेल अछि। किएक तँ दुनूक लेखनमे कोनो सहजता आ दुरूहताक बात नहि अछि। आ मैथिलीक सर्वसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एसँ बेसी निकट छैक। खास कऽ कएल, हएब आदि कतिपय शब्दकेँ कैल, हैब आदि रूपमे कतहु-कतहु लिखल जाएब सेहो एक प्रयोगकेँ बेसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि। कैल कहलासँ रङ्गाक बोध सेहो होइत अछि। जेना : हमर बरद कैल अछि। तेँ कएल लिखनाइ समीचीन।

(३) हि, हु तथा एकार, ओकार : मैथिलीक प्राचीन लेखन-परम्परामे कोनो बातपर बल दैत काल शब्दक पाछाँ हि, हु लगाओल जाइत छैक। जेना– हुनकहि, अपनहु, ओकरहु, तत्कालहि, चोट्टहि, आनहु आदि। मुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकार एवं हुक स्थानपर ओकारक प्रयोग करैत देखल जाइत अछि। जेना– हुनके, अपनो, तत्काले, चोट्टे, आनो आदि।

लेखन तथा उच्चारणक दृष्टिएँ नवीन पद्धति सहज अछि, मुदा एनामे मैथिली भाषाक मिठास किछु अंशमे कमि जाइत अछि। अतः एहि सन्दर्भमे हमरालोकनिकेँ पुरने पद्धतिक अनुसरण करबाक चाही।

(४) ध्वनि-लोप : निम्नलिखित अवस्थामे शब्दसँ ध्वनि-लोप भऽ जाइत अछि :

(क) क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य वा ए लुप्त भऽ जाइत अछि। ओहिमेसँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भऽ जाइत अछि। ओकर आगाँ लोप-सूचक चिह्न वा विकारी ('/ऽ) लगाओल जाइछ। जेना–

पढ़ए / पढ़य / पढ़ऽ गेलाह, कए / कय / कऽ लेल, उठए / उठय / उठऽ पड़तौक।

(ख) पूर्वकालिक कृत आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) लुप्त भऽ जाइछ, मुदा लोप-सूचक विकारी नहि लगाओल जाइछ। जेना–

पूर्ण रूप : खाए (य) गेल, पठाय (ए) देब, नहाए (य) अएलाह।

अपूर्ण रूप : खा गेल, पठा देब, नहा अएलाह।

(ग) स्त्री प्रत्यय इक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनूमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना–

पूर्ण रूप : दोसरि मालिनि चलि गेलि।

अपूर्ण रूप : दोसर मालिन चलि गेल।

(घ) वर्तमान कृदन्तक अन्तिम त लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना–

पूर्ण रूप : पढ़ैत अछि, बजैत अछि, गबैत अछि।

अपूर्ण रूप : पढ़ै अछि/पढ़ैछ, बजै अछि/बजैछ, गबै अछि/गबैछ।

(ङ) क्रियापदक अवसान इक, उक, ऐक तथा हीकमे क लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना–

पूर्ण रूप : छियौक, छियैक, छहीक, छौक, छैक, अबितैक, होइक।

अपूर्ण रूप : छियौ, छियै, छही, छौ, छै, अबितै, होइ।

(च) क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, हु तथा हकारक लोप भऽ जाइछ। जेना–

पूर्ण रूप : छन्हि, कहलन्हि, कहलहुँ, गेलह, नहि।

अपूर्ण रूप : छनि, कहलनि, कहलौं, गेलऽ, नइ, नञि, नै।

(५) ध्वनि स्थानान्तरण : कोनो-कोनो स्वर-ध्वनि अपना जगहसँ हटिकऽ दोसरठाम चलि जाइत अछि। जेना–

शनि (शइन), पानि (पाइन), दालि (दाइल) माटि (माइट), काछु (काउछ), मासु (माउस) आदि। मुदा लिखैत काल शनि, दालि, मासु, काछु इएह रूप लिखबाक परम्परा अछि ।

(६) हलन्त (्) क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त (्) क आवश्यकता नहि होइत अछि। कारण जे शब्दक अन्तमे अ उच्चारण नहि होइत अछि। मुदा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे आएल (तत्सम) शब्दसभमे हलन्त प्रयोग कएल जाइत अछि। एहि पोथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शब्दकेँ मैथिली भाषा सम्बन्धी नियमअनुसार हलन्तविहीन राखल गेल अछि। मुदा व्याकरण सम्बन्धी प्रयोजनक लेल अत्यावश्यक स्थानपर कतहु-कतहु हलन्त देल गेल अछि।